UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

संघ लोक सेवा आयोग

परीक्षा नोटिस सं. 05/2011-सीएसपी **दिनांक 19.02.2011**

(आवेदन प्रपत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख 21.03.2011)

सिविल सेवा परीक्षा, 2011

(आयोग की वेबसाइट - http://www.upsc.gov.in)

एफ. सं. 1/8/2010-प. 1 (ख)-भारत के असाधारण राजपत्र दिनांक **19 फरवरी, 2011** में कार्मिक औ
प्रशिक्षण विभाग द्वारा प्रकाशित नियमों के अनुसार नीचे उल्लिखित सेवाओं औ
सेवा आयोग द्वारा **12 जून, 2011** को सिविल सेवा परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा ली जाएगी.

(i) भारतीय प्रशासनिक सेवा
(ii) भारतीय विदेश सेवा
(iii) भारतीय पुलिस सेवा
(iv) भारतीय डाक एवं तार लेखा औ
(v) भारतीय लेखा परीक्षा औ
(vi) भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क औ
(vii) भारतीय रक्षा लेखा सेवा, ग्रुप 'क'
(viii) भारतीय राजस्व सेवा (आयकर), ग्रुप 'क'
(ix) भारतीय आयुध कारखाना सेवा, ग्रुप 'क' (सहायक कर्मशाला प्रबंधक, प्रशासनिक)
(x) भारतीय डाक सेवा, ग्रुप 'क'
(xi) भारतीय सिविल लेखा सेवा, ग्रुप 'क'
(xii) भारतीय रेलवे यातायात सेवा, ग्रुप 'क'
(xiii) भारतीय रेलवे लेखा सेवा, ग्रुप 'क'
(xiv) भारतीय रेलवे कार्मिक सेवा, ग्रुप 'क'
(xv) रेलवे सुरक्षा बल में ग्रुप 'क' के सहायक सुरक्षा आयुक्त के पद
(xvi) भारतीय रक्षा संपदा सेवा, ग्रुप 'क'
(xvii) भारतीय सूचना सेवा (कनिष्ठ ग्रेड), ग्रुप 'क'
(xviii) भारतीय व्यापार सेवा, ग्रुप 'क' (ग्रेड-III)
(xix) भारतीय कारपोरेट विधि सेवा, ग्रुप 'क'
(xx) सशस्त्र सेना मुख्यालय सिविल सेवा, ग्रुप 'ख' (अनुभाग अधिकारी ग्रेड)
(xxi) दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन व दीव एवं दादरा व नगर हवेली सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'
(xxii) दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन व दीव एवं दादरा व नगर हवेली पुलिस सेवा, ग्रुप 'ख'
(xxiii) पांडिचेरी सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'
(xxiv) पांडिचेरी पुलिस सेवा, ग्रुप 'ख'.

- ❒ परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरी जाने वाली रिक्तियों की संख्या लगभग 880 है वृद्वि हो सकती है
- ❒ सरकार द्वारा निर्धारित रीति से अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़ी श्रेणियों तथा शारीरिक रूप से अक्षम श्रेणियों के उम्मीदवारों के लिए रिक्तियों का आरक्षण किया जाएगा.

नोट (I) सिविल सेवा परीक्षा 2011 में सम्मिलित सेवाओं की सूची अस्थाई है

नोट (II) : शारीरिक रूप से विकलांग वर्ग के लिए उपयुक्त पाई गई सेवाएं तथा उन सेवाओं में उनके लिए कार्यात्मक वर्गीकरण तथा शारीरिक अपेक्षाएं निम्नलिखित है :

क्रम संख्या	सेवा का नाम	श्रेणी (श्रेणियों) जिसके लिए पहचान की गई	*कार्यात्मक वर्गीकरण	*शारीरिक अपेक्षाएं
1.	भारतीय प्रशासनिक सेवा	(i) लोकोमोटर अक्षमता	बीए, ओएल, ओए, बीएच, एमडब्ल्यू	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, एच, आरडब्ल्यूटी
		(ii) दृष्टि बाधित	पीबी	
		(iii) श्रवण बाधित	पीडी	
2.	भारतीय विदेश सेवा	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, आरडब्ल्यू, सी, एमएफ, एसई
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
3.	भारतीय राजस्व सेवा (सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क), ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओएल, ओए	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एल, एसई, एमएफ, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) श्रवण बाधित	एचएच	
4.	भारतीय डाक एवं तार लेखा औ वित्त सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल,	एस, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
5.	भारतीय लेखा परीक्षा तथा लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल	एस,एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
6.	भारतीय रक्षा लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
7.	भारतीय राजस्व सेवा (आयकर), ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, सी
		(ii) श्रवण बाधित	एचएच	

महत्त्वपूर्ण

1. परीक्षा के लिए उम्मीदवार अपनी पात्रता सुनिश्चित कर लें :

परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि वे परीक्षा में प्रवेश हेतु सभी पात्रता शर्तो को पूरा करते है
करने की शर्त के अध्यधीन पूर्णत: अनंतिम होगा ।
उम्मीदवार को मात्र प्रवेश पत्र जारी किए जाने का अर्थ यह नहीं होगा कि उसकी उम्मीदवारी आयोग द्वारा अंतिम रूप से सुनिश्चित कर दी गई है
उम्मीदवारों के साक्षात्कार/व्यक्तित्व परीक्षण में अर्हक घोषित किए जाने के बाद ही मूल दस्तावेजों के संदर्भ में आयोग द्वारा पात्रता की शर्तों की जांच की जाती है

2. आवेदन कै

(क) उम्मीदवार **http://www.upsconline.nic.in** वेबसाइट का इस्तेमाल करके ऑनलाइन आवेदन करें। ऑनलाइन आवेदन करने संबंधी विस्तृत अनुदेश उपर्युक्त वेबसाइट पर उपलब्ध है
(ख) उम्मीदवार, आयोग द्वारा उसकी परीक्षाओं के लिए निर्धारित सामान्य आवेदन प्रपत्र में ऑफलाइन आवेदन भी कर सकते है III में उल्लिखित)
से ₹ 30/- (तीस रूपए मात्र) के नकद भुगतान पर खरीदा जा सकता है
के लिए केवल एक ही बार प्रयोग में लाया जा सकता है
यदि उम्मीदवारों को विनिर्दिष्ट प्रधान डाकघरों/डाकघरों से आवेदन प्रपत्र प्राप्त करने में कोई कठिनाई हो, तो उन्हें तत्काल संबंधित डाकपाल अथवा संघ लोक सेवा आयोग के "प्रपत्र आपूर्ति निगरानी प्रकोष्ठ" की दूरभाष सं. 011-23389366/फै
(ग) उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है II (क) में दिए गए "ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र भरने के लिए अनुदेश" औ II (ख) में दिए गए "ऑफलाइन आवेदन प्रपत्र भरने के लिए अनुदेश" सावधानीपूर्वक पढ़ लें ।

3. आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख :

(क) ऑनलाइन :

ऑनलाइन आवेदन पत्र 21 मार्च, 2011 को रात्रि 11 बजकर 59 मिनट तक भरे जा सकते है बाद लिंक निष्कि य हो जाएगा ।

(ख) ऑफलाइन :

सभी ऑफलाइन आवेदन पत्र दस्ती या पोस्ट/स्पीड पोस्ट या कुरियर द्वारा "परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग,धौ " के पास 21 मार्च, 2011 या उससे पहले पहुंच जाने चाहिएं ।
उम्मीदवारों को यह नोट कर लेना चाहिए कि निर्दिष्ट काउंटर (काउंटरों) पर सिर्फ 5 बजे तक दस्ती रूप में एक बार में केवल एक ही आवेदन पत्र प्राप्त किया जाएगा औ
जाएंगें ।
तथापि, विदेशों में या इस नोटिस के पै
में, केवल डाक/स्पीड पोस्ट द्वारा (दस्ती या कुरियर द्वारा नहीं) आवेदन पत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख 28 मार्च, 2011 है

4. गलत उत्तरों के लिये दंड :

उम्मीदवार यह नोट कर लें कि वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न पत्रों में उम्मीदवार द्वारा दिए गए गलत उत्तरों के लिए दंड (ऋणात्मक अंकन) दिया जायेगा ।

5. उम्मीदवारों के मार्गदर्शन हेतु सुविधा काउन्टर :

उम्मीदवार अपने आवेदन पत्र उम्मीदवारी आदि से संबंधित किसी भी प्रकार के मार्गदर्शन/जानकारी/स्पष्टीकरण के लिए कार्यदिवसों में प्रात: 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे के बीच आयोग परिसर में गेट 'सी' के निकट संघ लोक सेवा आयोग के सुविधा काउंटर पर व्यक्तिगत रूप से अथवा दूरभाष सं.011-23385271/ 011-23381125/011-23098543 पर संपर्क कर सकते है

6. मोबाइल फोन प्रतिबंधित:

(क) जहां परीक्षा आयोजित की जा रही है
यंत्रों की अनुमति नहीं है
परीक्षाओं से विवर्जन सहित अनुशासनिक कार्रवाई की जाएगी ।
(ख) उम्मीदवारों को उनके हित में सलाह दी जाती है
कोई भी प्रतिबंधित सामग्री न लाएं, क्योंकि इनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती ।

7. उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है
उनकी सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की जा सकती । आयोग इस संबंध में किसी नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं होगा ।

उम्मीदवारों को ऑनलाइन आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है

क्रम संख्या	सेवा का नाम	श्रेणी (श्रेणियों) जिसके लिए पहचान की गई	*कार्यात्मक वर्गीकरण	*शारीरिक अपेक्षाएं
8.	भारतीय आयुध कारखाना सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
9.	भारतीय डाक सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, आरडब्ल्यू, एसई, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	बी, एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	

"सरकार ऐसे कार्यबल के लिए प्रयत्नशील है

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

क्रम संख्या	सेवा का नाम	श्रेणी (श्रेणियों) जिसके लिए पहचान की गई	*कार्यात्मक वर्गीकरण	*शारीरिक अपेक्षाएं
10.	भारतीय सिविल लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
11.	भारतीय रेलवे लेखा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
12.	भारतीय रेलवे कार्मिक सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	बी, एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
13.	भारतीय रक्षा संपदा सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एमएफ, पीपी, केसी, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) नेत्रहीनता या अल्प दृष्टि	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
14.	भारतीय सूचना सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	बी, एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
15.	भारतीय व्यापार सेवा, ग्रुप 'क' (ग्रेड-III)	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एमएफ, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
16.	भारतीय कारपोरेट विथि सेवा, ग्रुप 'क'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, बीएल	एसटी, आरडब्ल्यू, एसई, एस, बीएन, एच
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
17.	सशस्त्र सेना मुख्यालय सिविल सेवा, ग्रुप 'ख' (अनुभाग अधिकारी ग्रेड)	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, एमएफ, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
18.	दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन एवं दीव तथा दादरा एवं नागर हवेली सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एमएफ, एच, सी
		(ii)दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	
19.	दिल्ली, अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, दमन एवं दीव तथा दादरा एवं नागर हवेली पुलिस सेवा, ग्रुप 'ख'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, बीएन, पीपी, केसी, एमएफ, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) श्रवण बाधित	एचएच	
20.	पांडिचेरी सिविल सेवा, ग्रुप 'ख'	(i) लोकोमोटर अक्षमता	ओए, ओएल, ओएएल, बीएल	एस, एसटी, डब्ल्यू, एसई, आरडब्ल्यू, एच, सी
		(ii) दृष्टि बाधित	एलवी	
		(iii) श्रवण बाधित	एचएच	

* कार्यात्मक वर्गीकरण तथा शारीरिक अपेक्षाओं का विस्तृत विवरण कृपया इस नोटिस के पै

2. (क) परीक्षा के केन्द्र : परीक्षा निम्नलिखित केन्द्रों पर आयोजित की जाएगी :

अगरतला	भोपाल	गंगटोक	कोच्चि	पटना	श्रीनगर
अहमदाबाद	चंडीगढ़	है	कोहिमा	पुडुचेरी	तिरुवनंतपुरम
ऐजल	चेन्नई	इम्फाल	कोलकाता	पोर्ट ब्लेयर	तिरुपति
अलीगढ़	कटक	ईटानगर	लखनऊ	रायपुर	उदयपुर
इलाहाबाद	देहरादून	जयपुर	मदुरै	रांची	विशाखापटनम
औ	दिल्ली	जम्मू	मुम्बई	संबलपुर	
बंगलौ	धारवाड	जोधपुर	नागपुर	शिलांग	
बरेली	दिसपुर	जोरहाट	पणजी (गोवा)	शिमला	

आयोग यदि चाहे तो, परीक्षा के उपर्युक्त केन्द्रों तथा उसके प्रारंभ होने की तारीख में परिवर्तन कर सकता है. यद्यपि परीक्षा हेतु उम्मीदवारों को उनकी पसंद का केन्द्र आवंटन करने का हर संभव प्रयत्न किया जाएगा फिर भी आयोग अपनी विवक्षा पर परिस्थितिवश किसी उम्मीदवार को कोई भिन्न केन्द्र आवंटित कर सकता है. परन्तु, दृष्टिहीन उम्मीदवारों को यह परीक्षा इन 7 में से किसी एक परीक्षा केन्द्र अर्थात दिल्ली, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ, चेन्नई, मुंबई और दिसपुर पर ही देनी होगी. इस परीक्षा में प्रवेश प्राप्त उम्मीदवारों को परीक्षा की समय–सारणी तथा स्थान अथवा स्थानों के बारे में सूचित किया जाएगा.

उम्मीदवारों को नोट करना चाहिए कि केन्द्र परिवर्तन हेतु उनके अनुरोध को सामान्यतः स्वीकार नहीं किया जाएगा. किन्तु यदि कोई उम्मीदवार अपने आवेदन प्रपत्र में परीक्षा के लिए निर्दिष्ट केन्द्र में परिवर्तन चाहता है तो उसे इस बात का पूरा औचित्य बताते हुए कि वह परीक्षा केन्द्र में परिवर्तन क्यों चाहता है, एक पत्र परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग को भेजना चाहिए. ऐसे अनुरोधों पर गुण–दोष के आधार पर विचार किया जाएगा. किन्तु 20 अप्रैल, 2011 के बाद प्राप्त अनुरोधों पर किसी भी स्थिति में विचार नहीं किया जाएगा और न ही ऐसे पत्रों का उत्तर दिया जाएगा.

(ख) परीक्षा की योजना :

सिविल सेवा परीक्षा की दो अवस्थाएं होंगी (नीचे परिशिष्ट– I खंड–I के अनुसार).

(i) प्रधान परीक्षा के लिए उम्मीदवारों के चयन हेतु सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा (वस्तुपरक) तथा

(ii) उपर्युक्त विभिन्न सेवाओं और पदों में भर्ती हेतु उम्मीदवारों को चयन करने के लिए सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा (लिखित तथा साक्षात्कार).

केवल प्रारंभिक परीक्षा के लिए अब आवेदन प्रपत्र आमंत्रित किए जाते हैं. जो उम्मीदवार प्रधान परीक्षा में प्रवेश के लिए आयोग द्वारा पात्र घोषित किए जाएंगे उनको विस्तृत आवेदनप्रपत्र में पुनः आवेदन करना होगा, जो कि उनको भेजे जाएंगे. प्रधान परीक्षा संभवतः अक्तूबर/नवम्बर, 2011 में होगी.

3. पात्रता की शर्तें :

(i) राष्ट्रीयता :

(1) भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय पुलिस सेवा का उम्मीदवार भारत का नागरिक अवश्य हो.

(2) अन्य सेवाओं के उम्मीदवार को या तो
(क) भारत का नागरिक होना चाहिए, या
(ख) नेपाल की प्रजा, या
(ग) भूटान की प्रजा, या
(घ) ऐसा तिब्बती शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से रहने के इरादे से पहली जनवरी, 1962 से पहले भारत आ गया हो, या
(ङ) कोई भारतीय मूल का व्यक्ति जो भारत में स्थायी रूप से रहने के इरादे से पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, पूर्वी अफ्रीकी देशों, कीनिया, उगांडा, संयुक्त गणराज्य तंजानिया, जाम्बिया, मालावी, जैरे, इथियोपिया तथा वियतनाम से प्रव्रजन कर के आया हो.

परन्तु (ख), (ग), (घ) और (ङ) वर्गों के अंतर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत सरकार द्वारा जारी किया गया पात्रता (एलिजीबिलिटी) प्रमाणपत्र होना चाहिए.

एक शर्त यह भी है कि उपर्युक्त (ख), (ग) और (घ) वर्गों के उम्मीदवार भारतीय विदेश सेवा में नियुक्ति के पात्र नहीं होंगे. ऐसे उम्मीदवार को भी उक्त परीक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है जिसके बारे में पात्रता प्रमाणपत्र प्राप्त करना आवश्यक हो, किन्तु भारत सरकार द्वारा उसके संबंध में पात्रता प्रमाणपत्र जारी किए जाने के बाद ही उसको नियुक्ति प्रस्ताव भेजा जा सकता है.

(ii) आयु–सीमाएं :

(क) उम्मीदवार की आयु **1 अगस्त, 2011** को पूरे 21 वर्ष की हो जानी चाहिए, किन्तु 30 वर्ष की नहीं होनी चाहिए अर्थात उसका जन्म **2 अगस्त, 1981** से पहले और **1 अगस्त, 1990** के बाद का नहीं होना चाहिए.

(ख) ऊपर बताई गई अधिकतम आयु–सीमा में निम्नलिखित मामलों में छूट दी जाएगी :

(i) यदि उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का हो तो अधिक से अधिक 5 वर्ष.

(ii) अन्य पिछड़ी श्रेणियों के उन उम्मीदवारों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष तक जो ऐसे उम्मीदवारों के लिये लागू आरक्षण को पाने के पात्र हों.

(iii) ऐसे उम्मीदवारों के मामले में, जिन्होंने 01 जनवरी, 1980 से 31 दिसम्बर, 1989 तक की अवधि के दौरान साधारणतया जम्मू और कश्मीर राज्य में अधिवास किया हो, अधिकतम 5 वर्ष तक.

(iv) किसी दूसरे देश के साथ संघर्ष में या किसी अशांतिग्रस्त क्षेत्र में फौजी कार्यवाही के दौरान विकलांग होने के फलस्वरूप सेवा से निर्मुक्त किए गए रक्षा कार्मिकों को अधिक से अधिक 3 वर्ष.

(v) जिन भूतपूर्व सैनिकों (कमीशन प्राप्त अधिकारियों तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित) ने **1 अगस्त, 2011** को कम से कम 5 वर्ष की सैनिक सेवा की हो और जो (i) कदाचार या अक्षमता के आधार पर बर्खास्त न होकर अन्य कारणों से कार्यकाल के समापन पर कार्यमुक्त हुए हैं, (इनमें वे भी सम्मिलित हैं जिनका कार्यकाल **1 अगस्त 2011** से एक वर्ष के अंदर पूरा होना है), या (ii) सैनिक सेवा से हुई शारीरिक अपंगता, या (iii) अक्षमता के कारण कार्यमुक्त हुए हैं, उनके मामले में अधिक से अधिक 5 वर्ष तक.

(vi) आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालीन सेवा के कमीशन प्राप्त अधिकारियों के उन मामलों में जिन्होंने **1 अगस्त, 2011** को सैनिक सेवा के 5 वर्ष की सेवा की प्रारंभिक अवधि पूरी कर ली है और जिनका कार्यकाल 5 वर्ष से आगे भी बढ़ाया गया है तथा जिनके मामले में रक्षा मंत्रालय एक प्रमाणपत्र जारी करता है कि वे सिविल रोजगार के लिए आवेदन कर सकते हैं और चयन होने पर नियुक्ति प्रस्ताव प्राप्त करने की तारीख से तीन माह के नोटिस पर उन्हें कार्यभार से मुक्त किया जाएगा. अधिकतम 5 वर्ष.

(vii) नेत्रहीन, मूक–बधिर तथा शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों के मामले में अधिकतम 10 वर्ष तक.

टिप्पणी–I : अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति व अन्य पिछड़े वर्गों से संबंधित वे उम्मीदवार, जो उपर्युक्त पैरा 3 (ii) (ख) के किन्हीं अन्य खंडों अर्थात, जो भूतपूर्व सैनिकों, जम्मू तथा कश्मीर राज्य में अधिवास करने वाले व्यक्तियों, दृष्टिहीन, मूक–बधिर एवं शारीरिक रूप से अपंग आदि की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं, दोनों श्रेणियों के अंतर्गत दी जाने वाली संचयी आयु सीमा–छूट प्राप्त करने के पात्र होंगे.

टिप्पणी–II : भूतपूर्व सैनिक शब्द उन व्यक्तियों पर लागू होगा जिन्हें समय–समय पर यथासंशोधित भूतपूर्व सैनिक (सिविल सेवा और पद में पुनः रोजगार) नियम, 1979 के अधीन भूतपूर्व सैनिक के रूप में परिभाषित किया जाता है.

टिप्पणी–III : आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों/अल्पकालीन सेवा के कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित वे भूतपूर्व सैनिक तथा कमीशन अधिकारी, जो स्वयं के अनुरोध पर सेवामुक्त हुए हैं, उन्हें उपर्युक्त पैरा 3 (ii) (ख) (v) तथा (vi) के अधीन आयु सीमा में छूट नहीं दी जाएगी.

टिप्पणी–IV : उपर्युक्त पैरा 3(ii) (ख) (vii) के अंतर्गत आयु में छूट के बावजूद शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार की नियुक्ति हेतु पात्रता पर तभी विचार किया जा सकता है जब वह (सरकार या नियोक्ता प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, द्वारा निर्धारित शारीरिक परीक्षण के बाद) सरकार द्वारा शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवारों को आवंटित संबंधित सेवाओं/पदों के लिए निर्धारित शारीरिक एवं चिकित्सा मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करता हो.

ऊपर की व्यवस्था को छोड़कर निर्धारित आयु–सीमा में किसी भी हालत में छूट नहीं दी जा सकती.

आयोग जन्म की वह तारीख स्वीकार करता है जो मैट्रिकुलेशन या माध्यमिक विद्यालय छोड़ने के प्रमाण पत्र या किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा मैट्रिकुलेशन के समकक्ष माने गए प्रमाणपत्र या किसी विश्वविद्यालय द्वारा अनुरक्षित मैट्रिकुलेटों के रजिस्टर में दर्ज की गई हो और वह उद्धरण विश्वविद्यालय के समुचित प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित हो या उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या उसकी समकक्ष परीक्षा प्रमाणपत्र में दर्ज हो. ये प्रमाणपत्र सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए आवेदन करते समय ही प्रस्तुत करने हैं.

आयु के संबंध में कोई अन्य दस्तावेज जैसे जन्म कुंडली, शपथपत्र, नगर निगम से और सेवा अभिलेख से प्राप्त जन्म संबंधी उद्धरण तथा अन्य ऐसे ही प्रमाण स्वीकार नहीं किए जाएंगे.

अनुदेशों के इस भाग में आये ''मैट्रिकुलेशन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाणपत्र'' वाक्यांश के अंतर्गत उपर्युक्त वैकल्पिक प्रमाणपत्र सम्मिलित हैं.

टिप्पणी–I : उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि आयोग जन्म की उसी तारीख को स्वीकार करेगा जो कि आवेदन–पत्र प्रस्तुत करने की तारीख को मैट्रिकुलेशन/उच्चतर माध्यमिक परीक्षा प्रमाणपत्र या समकक्ष परीक्षा के प्रमाणपत्र में दर्ज है और इसके बाद उसमें परिवर्तन के किसी अनुरोध पर न तो विचार किया जाएगा न ही उसे स्वीकार किया जायेगा.

टिप्पणी–II : उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि उनके द्वारा परीक्षा में प्रवेश के लिए जन्म की तारीख एक बार लिख भेजने और आयोग द्वारा उसके स्वीकृत हो जाने के बाद, बाद में या किसी परीक्षा में उसमें किसी भी आधार पर कोई परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जायेगी.

टिप्पणी–III : उम्मीदवारों को प्रारंभिक परीक्षा के लिए आवेदन प्रपत्र के कॉलम 3 में जन्म तिथि भरते समय उचित सावधानी बरतनी चाहिए. यदि बाद में किसी अवस्था में, जांच के दौरान उनके द्वारा भरी गई जन्म तिथि की उनके मैट्रिक या समकक्ष परीक्षा के प्रमाणपत्र में दी गई जन्म तिथि से कोई भिन्नता पाई गई तो आयोग द्वारा उनके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी.

(iii) न्यूनतम शैक्षिक योग्यता :

उम्मीदवार के पास भारत के केन्द्र या राज्य विधानमंडल

रंगाबाद
र

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

द्वारा निगमित किसी विश्वविद्यालय की या संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 के खंड 3 के अधीन विश्वविद्यालय के रूप में मानी गई किसी अन्य शिक्षा संस्था की डिग्री अथवा समकक्ष योग्यता होनी चाहिए.

टिप्पणी–I : कोई भी उम्मीदवार जिसने ऐसी कोई परीक्षा दे दी है जिसमें उत्तीर्ण होने पर वह आयोग की परीक्षा के लिए शैक्षिक रूप से पात्र होगा परन्तु उसे परीक्षा फल की सूचना नहीं मिली है तथा ऐसा उम्मीदवार भी जो ऐसी अर्हक परीक्षा में बैठने का इरादा रखता है, प्रारंभिक परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र होगा. सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए अर्हक घोषित किए गए सभी उम्मीदवारों को प्रधान परीक्षा के लिए आवेदन प्रपत्र के साथ–साथ उत्तीर्ण होने का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा. जिसके प्रस्तुत न किए जाने पर ऐसे उम्मीदवारों को प्रधान परीक्षा में प्रवेश नहीं दिया जाएगा. प्रधान परीक्षा के लिए आवेदन–प्रपत्र **जुलाई/अगस्त, 2011** माह में किसी समय मंगाए जाएंगे.

टिप्पणी–II : विशेष परिस्थितियों में संघ लोक सेवा आयोग ऐसे किसी भी उम्मीदवार को परीक्षा में प्रवेश पाने का पात्र मान सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई अर्हता न हो, बशर्ते कि उम्मीदवार ने किसी संस्था द्वारा ली गई कोई ऐसी परीक्षा पास कर ली हो जिसका स्तर आयोग के मतानुसार ऐसा हो कि उसके आधार पर उम्मीदवार को उक्त परीक्षा में बैठने दिया जा सकता है.

टिप्पणी–III : जिन उम्मीदवारों के पास ऐसी व्यावसायिक और तकनीकी योग्यताएं हों, जो सरकार द्वारा व्यावसायिक और तकनीकी डिग्रियों के समकक्ष मान्यताप्राप्त हैं वे भी उक्त परीक्षा में बैठने के पात्र होंगे.

टिप्पणी–IV : जिन उम्मीदवारों ने अपनी अंतिम व्यावसायिक एमबीबीएस अथवा कोई अन्य चिकित्सा परीक्षा पास की हो लेकिन उन्होंने सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा का आवेदनप्रपत्र प्रस्तुत करते समय अपना इण्टर्नशिप पूरा नहीं किया है तो वे भी अनन्तिम रूप से परीक्षा में बैठ सकते हैं, बशर्ते कि वे अपने आवेदन–प्रपत्र के साथ संबंधित विश्वविद्यालय/संस्था के प्राधिकारी से इस आशय के प्रमाणपत्र की एक प्रति प्रस्तुत करें कि उन्होंने अपेक्षित अंतिम व्यावसायिक चिकित्सा परीक्षा पास कर ली है. ऐसे मामलों में उम्मीदवारों को साक्षात्कार के समय विश्वविद्यालय/संस्था के संबंधित सक्षम प्राधिकारी से अपनी मूल डिग्री अथवा प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने होंगे कि उन्होंने डिग्री प्रदान करने हेतु सभी अपेक्षाएं (जिनमें इण्टर्नशिप पूरा करना भी शामिल है) पूरी कर ली हैं.

(iv) अवसरों की संख्या :

सिविल सेवा परीक्षा में बैठने वाले प्रत्येक उम्मीदवार को जो अन्यथा पात्र हों चार बार बैठने की अनुमति दी जाएगी.

परन्तु अवसरों की संख्या से संबद्ध यह प्रतिबंध अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के अन्यथा पात्र उम्मीदवारों पर लागू नहीं होगा.

परन्तु आगे यह और भी है कि अन्य पिछड़ी श्रेणियों के उम्मीदवारों को, जो अन्यथा पात्र हों, स्वीकार्य अवसरों की संख्या सात होगी. यह रियायत/छूट केवल वैसे अभ्यर्थियों को मिलेगी जो आरक्षण पाने के पात्र हैं.

बशर्ते यह भी कि शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवार को उतने ही अवसर अनुमत होंगे जितने कि उसके समुदाय के अन्य उन उम्मीदवारों को जो शारीरिक रूप से विकलांग नहीं हैं या इस शर्त के अध्याधीन है कि सामान्य वर्ग से संबंधित शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवार सात अवसरों के पात्र होंगे. यह छूट शारीरिक रूप से विकलांग उन उम्मीदवारों को उपलब्ध होगी जो कि ऐसे उम्मीदवारों पर लागू होने वाले आरक्षण को प्राप्त करने के पात्र होंगे.

टिप्पणी :

1. प्रारंभिक परीक्षा में बैठने को परीक्षा में बैठने का एक अवसर माना जाएगा.

2. यदि उम्मीदवार प्रारंभिक परीक्षा के किसी एक प्रश्न पत्र में वस्तुतः परीक्षा देता है तो उसका परीक्षा के लिए एक प्रयास समझा जाएगा.

3. अयोग्यता/उम्मीदवारी के रद्द होने के बावजूद उम्मीदवार की परीक्षा में उपस्थिति का तथ्य एक प्रयास गिना जाएगा.

(v) परीक्षा के लिए आवेदन करने पर प्रतिबंध :

कोई उम्मीदवार किसी पूर्व परीक्षा के परिणाम के आधार पर भारतीय प्रशासनिक सेवा अथवा भारतीय विदेश सेवा में नियुक्त हो जाता है और उस सेवा का सदस्य बना रहता है तो वह इस परीक्षा में प्रतियोगी बने रहने का पात्र नहीं होगा.

यदि ऐसा कोई उम्मीदवार सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011 के समाप्त होने के पश्चात भारतीय प्रशासनिक सेवा/भारतीय विदेश सेवा में नियुक्त हो जाता है तथा वह उस सेवा का सदस्य बना रहता है, तो वह सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा, 2011 में बैठने का पात्र नहीं होगा चाहे उसने प्रारंभिक परीक्षा, 2011 में अर्हता प्राप्त कर ली हो.

यह भी व्यवस्था है कि सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा, 2011 के प्रारंभ होने के पश्चात किन्तु उसके परीक्षा परिणाम से पहले किसी उम्मीदवार की भारतीय प्रशासनिक सेवा/भारतीय विदेश सेवा में नियुक्ति हो जाती है और वह उसी सेवा का सदस्य बना रहता है तो सिविल सेवा परीक्षा, 2011 के परिणाम के आधार पर उसे किसी सेवा/पद पर नियुक्ति हेतु विचार नहीं किया जाएगा.

(vi) शारीरिक मानक :

सिविल सेवा परीक्षा, 2011 में प्रवेश के लिए उम्मीदवारों को दिनांक 19 फरवरी, 2011 के भारत के राजपत्र (असाधारण) में प्रकाशित परीक्षा की नियमावली के परिशिष्ट–3 में दिए शारीरिक परीक्षा के बारे में विनियमों के अनुरूप शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए.

4. शुल्क :

(क) ऑनलाइन आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को कम किये गए ₹ 50/- (रुपये पचास मात्र) फीस के रूप में (अ.जा./अ.ज.जा./महिला/विकलांग उम्मीदवारों को छोड़कर जिन्हें कोई शुल्क नहीं देना होगा) या तो स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में नकद जमा करके या स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की नेट बैंकिंग सेवा का उपयोग करके या वीजा/मास्टर क्रेडिट/डेबिट कार्ड का उपयोग करके भुगतान करना होगा.

(ख) ऑफलाइन (सामान्य आवेदन प्रपत्र द्वारा) आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को एक केन्द्रीय भर्ती शुल्क स्टॉम्प द्वारा रु. 100/- (केवल सौ रुपये) की फीस अदा करनी होगी. केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट (डाक टिकट नहीं) डाकघर से प्राप्त करें और आवेदन प्रपत्र पर इसके लिए निर्धारित स्थान पर चिपका दें. जारी करने वाले डाकघर की तारीख की मोहर सहित उस टिकट को इस तरह से रद्द किया जाए कि रद्द करने की मोहर की छाप आंशिक रूप से आवेदन प्रपत्र पर भी किंतु आवेदन प्रपत्र में दिये गये स्थान के अंदर, अपने आप आ जाए. रद्द किए गए टिकट पर छाप स्पष्ट होनी चाहिए ताकि तारीख तथा जारी करने वाले डाकघर की पहचान स्पष्ट रूप से हो सके.

विदेश में रहने वाले उम्मीदवारों को निर्धारित शुल्क भारत के उच्च आयुक्त, राजदूत या विदेश में स्थित प्रतिनिधि के कार्यालय में, जैसी भी स्थिति हो इस अनुरोध के साथ जमा करना होगा ताकि वह ''051–लोक सेवा आयोग–परीक्षा शुल्क'' के लेखा शीर्ष में जमा हो जाए और आवेदन पत्र के साथ उसकी रसीद लगा कर भेजनी चाहिए.

सभी महिला उम्मीदवारों तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/शारीरिक रूप से विकलांग वर्गों से संबद्ध उम्मीदवारों को शुल्क के भुगतान से छूट प्राप्त है। तथापि, अन्य पिछड़े वर्ग के उम्मीदवारों को शुल्क में छूट प्राप्त नहीं है तथा उन्हें निर्धारित पूर्ण शुल्क का भुगतान करना होगा।

शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को शुल्क के भुगतान से छूट है बशर्ते कि वे इन सेवाओं/पदों के लिए चिकित्सा आरोग्यता (शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों को दी गई किसी अन्य विशेष छूट सहित) के मानकों के अनुसार इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरी जाने वाली सेवाओं/पदों पर नियुक्ति हेतु अन्यथा रूप से पात्र हों. शुल्क में छूट का दावा करने वाले शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्ति को अपने विस्तृत आवेदन प्रपत्र के साथ अपने शारीरिक रूप से अक्षम होने के दावे के समर्थन में, सरकारी अस्पताल/चिकित्सा बोर्ड से प्राप्त प्रमाण–पत्र की प्रमाणित प्रति प्रस्तुत करनी होगी.

टिप्पणी : शुल्क में छूट के उपर्युक्त प्रावधान के बावजूद शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार को नियुक्ति हेतु तभी पात्र माना जाएगा जब वह (सरकार या नियुक्ति प्राधिकारी, जैसा भी मामला हो, द्वारा निर्धारित ऐसी किसी शारीरिक जांच के बाद), सरकार द्वारा शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवार को आवंटित की जाने वाली संबंधित सेवाओं/पदों के लिए शारीरिक और चिकित्सा मानकों की अपेक्षाओं को पूरा करते हों.

''केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट'' के स्थान पर किसी भी हालत में डाक टिकटें स्वीकार नहीं की जाएंगी.

उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि **भारतीय पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट, मनीआर्डर, रेखांकित चेक, चलमुद्रा नोट या ट्रेजरी चालान इत्यादि** आयोग द्वारा स्वीकार नहीं किए जाएंगे तथा ऐसे आवेदन पत्रों को शुल्क रहित माना जाएगा तथा उन्हें एकदम अस्वीकृत कर दिया जाएगा.

टिप्पणी–I : जिन आवेदन–पत्रों के साथ निर्धारित शुल्क संलग्न नहीं होगा (शुल्क माफी के दावे को छोड़कर), उनको एकदम अस्वीकृत कर दिया जाएगा.

टिप्पणी–II : किसी भी स्थिति में आयोग को भुगतान किए गए शुल्क की वापसी के किसी भी दावे पर न तो विचार किया जाएगा और न ही शुल्क को किसी अन्य परीक्षा या चयन के लिए आरक्षित रखा जा सकेगा.

टिप्पणी–III : यदि कोई उम्मीदवार 2010 में ली गयी सिविल सेवा परीक्षा में बैठा हो और अब इस परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए आवेदन करना चाहता हो, तो उसे परीक्षाफल या नियुक्ति प्रस्ताव की प्रतीक्षा किए बिना ही अपना आवेदनपत्र भेज देना चाहिए ताकि वह निर्धारित तारीख तक आयोग के कार्यालय में पहुंच जाए.

टिप्पणी–IV : प्रधान परीक्षा में जिन उम्मीदवारों को प्रवेश दिया जायेगा, उनको पुनः रु. 200 (केवल दो सौ रुपये) के शुल्क का भुगतान करना होगा.

5. आवेदन कैसे करें :

(क) उम्मीदवार **http://www.upsconline.nic.in** वेबसाइट का इस्तेमाल करके ऑनलाइन आवेदन करें। ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने के लिए विस्तृत अनुदेश उपर्युक्त वेबसाइट पर उपलब्ध है

(ख) उम्मीदवार, आयोग द्वारा अपनी परीक्षाओं के लिए निर्धारित सामान्य (कॉमन) आवेदन पत्र में ऑफलाइन आवेदन भी कर सकते है

मशीनों पर प्रोसेस किया जा सकता है

प्रपत्र, एक सूचना विवरणिका के साथ, जिसमें प्रपत्र भरने के लिए सामान्य अनुदेश पावती कार्ड एवं आवेदन प्रपत्र भेजने के लिए एक लिफाफा शामिल है उक्त नोटिस के परिशिष्ट–III में सूचीबद्ध), देश भर के **निर्दिष्ट प्रधान डाकघरों/डाकघरों से ₹ 30 (केवल तीस रूपये) नगद भुगतान करके प्राप्त किया जा सकता है** प्रपत्र केवल निर्दिष्ट किए गए प्रधान डाकघरों से ही खरीदने चाहिएं, किसी अन्य एजेंसी से नहीं । **यह प्रपत्र एक परीक्षा के लिए केवल एक बार ही प्रयोग में लाया जा सकता है** ऑफलाइन आवेदन करने के इच्छुक उम्मीदवार, केवल सूचना विवरणिका के साथ दिए गए प्रपत्र का ही प्रयोग करें तथा उन्हें किसी भी स्थिति में प्रपत्र की छायाप्रति/प्रतिलिपि/अनधिकृत मुद्रित प्रति का प्रयोग नहीं करना चाहिए । चूंकि इस प्रपत्र की इलेक्ट्रानिक मशीन द्वारा जांच (स्कै

जाती है

उचित सावधानी बरतनी चाहिए । आवेदन प्रपत्र भरते समय, **कृपया इस नोटिस के परिशिष्ट–II (ख) में दिए गए विस्तृत अनुदेशों को देखें।** उम्मीदवारों को पावती कार्ड में संगत स्थानों पर अपनी आवेदन प्रपत्र संख्या औ

कार्ड पर ₹ 6/- (छ रूपये मात्र) का डाक टिकट लगाकर उसे आवेदकों को आवेदन प्रपत्र के साथ संघ लोक सेवा आयोग को भेजना होगा। यदि कोई आवेदक, वांछित मूल्य का डाक टिकट नहीं लगाता है

तथा आयोग पावती कार्ड आवेदक को प्राप्त न होने के लिये जिम्मेदार नहीं होगा । उसके बाद विधिवत रूप से भरा हुआ आवेदन प्रपत्र एवं पावती कार्ड सूचना विवरणिका के साथ दिए गए **विशेष लिफाफे में डाक से भेज देना चाहिए ।** उक्त लिफाफा परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग, धौ

नई दिल्ली–110069 को भेजने से पहले उम्मीदवार को उस पर परीक्षा का नाम अर्थात **सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011** भी लिखना चाहिए ।

(ग) सभी उम्मीदवारों को चाहे वे पहले से सरकारी नौकरी में हों या सरकारी औद्योगिक उपक्रमों में हों या इसी प्रकार के अन्य संगठनों में हों या गैर–सरकारी संस्थाओं में नियुक्त हों, अपने आवेदन प्रपत्र आयोग को सीधे भेजने चाहिए. अगर किसी उम्मीदवार ने अपना आवेदन प्रपत्र अपने नियोक्ता के द्वारा भेजा हो और वह संघ लोक सेवा आयोग में देर से पहुंचा हो तो उस आवेदन प्रपत्र पर विचार नहीं किया जायेगा भले ही वह नियोक्ता को आखिरी तारीख के पहले प्रस्तुत किया गया हो.

जो व्यक्ति पहले से सरकारी नौकरी में स्थायी या अस्थायी हैसियत से काम कर रहें हों या किसी काम के लिए विशिष्ट रूप से नियुक्त कर्मचारी हों, जिसमें आकस्मिक या दैनिक दर पर नियुक्त व्यक्ति शामिल नहीं हैं, उनको अथवा जो लोक उद्यमों के अधीन कार्यरत हैं उनको यह परिवचन (अण्डरटेकिंग) प्रस्तुत करना होगा कि उन्होंने लिखित रूप से अपने कार्यालय/विभाग के अध्यक्ष को सूचित कर दिया है कि उन्होंने इस परीक्षा के लिए आवेदन किया है.

उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि यदि आयोग को उनके नियोक्ता से उनके उक्त परीक्षा के लिए आवेदन करने/परीक्षा में बैठने से सम्बद्ध अनुमति रोकते हुए कोई पत्र मिलता है तो उनका आवेदन पत्र अस्वीकृत किया जा सकता है/उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी जा सकती है.

टिप्पणी–1 : उम्मीदवार को अपने आवेदन प्रपत्र में परीक्षा के लिए केन्द्र भरते समय सावधानी पूर्वक निर्णय लेना चाहिए. एक ही उम्मीदवार के अलग–अलग केन्द्र देते हुए एक से अधिक आवेदन प्रपत्र, किसी भी स्थिति में, स्वीकार नहीं किए जाएंगे, यदि कोई उम्मीदवार एक से अधिक पूरे भरे हुए आवेदन प्रपत्र भेजे तो भी आयोग अपने विवेक से केवल एक ही आवेदन प्रपत्र स्वीकार करेगा तथा इस संबंध में आयोग का निर्णय अंतिम होगा.

यदि कोई उम्मीदवार आयोग द्वारा प्रेषित प्रवेश प्रमाण पत्र में दर्शाये गये केन्द्र से इतर केन्द्र में बैठता है तो उस उम्मीदवार के प्रश्न पत्रों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा तथा उसकी उम्मीदवारी भी रद्द की जा सकती है.

टिप्पणी–2 : चूंकि इन आवेदन प्रपत्रों की जांच संगणक पद्धति द्वारा की जाएगी, उम्मीदवारों को अपने आवेदन पत्र को सावधानीपूर्वक ठीक से भरना चाहिए. आवेदन प्रपत्र भरने के लिए आवश्यक अनुदेश परिशिष्ट–II (ख) में देखें. आवेदन पत्र का कोई संबंधित कॉलम खाली न छोड़ा जाये. अधूरे या गलत भरे हुए आवेदन पत्रों को एकदम अस्वीकृत कर दिया जायेगा और किसी भी अवस्था में अस्वीकृति के संबंध में अभ्यावेदन या पत्र व्यवहार को स्वीकार नहीं किया जायेगा.

उम्मीदवारों को अपने आवेदन प्रपत्रों के साथ आयु तथा शैक्षिक योग्यता, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ी श्रेणी, शारीरिक रूप से अक्षम और शुल्क में छूट आदि का प्रमाणपत्र प्रस्तुत नहीं करना होगा. केवल प्रधान परीक्षा के समय इनकी जांच की जायेगी. परीक्षा में आवेदन करने वाले उम्मीदवार यह सुनिश्चित कर लें कि वे परीक्षा में प्रवेश पाने के लिये पात्रता की सभी शर्तें पूरी करते हैं. परीक्षा के उन सभी स्तरों, जिनके लिये आयोग ने उन्हें प्रवेश दिया है अर्थात प्रारंभिक परीक्षा, प्रधान (लिखित) परीक्षा तथा साक्षात्कार परीक्षण, में उनका प्रवेश पूर्णतः अनंतिम होगा तथा उनके निर्धारित पात्रता की शर्तों को पूरा करने पर आधारित होगा. यदि प्रारंभिक परीक्षा, प्रधान (लिखित) परीक्षा तथा साक्षात्कार परीक्षण के पहले या बाद में सत्यापन करने पर यह पता चलता है कि वे पात्रता की किन्हीं शर्तों को पूरा नहीं करते हैं तो आयोग द्वारा परीक्षा के लिये उनकी उम्मीदवारी रद्द कर दी जाएगी.

यदि उनके द्वारा किये गये दावे सही नहीं पाये जाते हैं तो उनके खिलाफ आयोग द्वारा सिविल सेवा परीक्षा, 2011 की नियमावली के नियम 14 की शर्तों जो कि नीचे उद्धृत हैं, के अनुसार अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है.

जिस उम्मीदवार ने :

(i) निम्नलिखित तरीकों से अपनी उम्मीदवारी के लिए समर्थन प्राप्त किया है अर्थात् :
(क) गैर कानूनी रूप से परितोषण की पेशकश करना, या
(ख) दबाव डालना, या
(ग) परीक्षा आयोजित करने से संबंधित किसी भी व्यक्ति को ब्लैकमेल करना, अथवा उसे ब्लैकमेल करने की धमकी देना, अथवा

(ii) नाम बदल कर परीक्षा दी है, अथवा

(iii) किसी अन्य व्यक्ति से छद्म रूप से कार्य साधन कराया है, अथवा

(iv) जाली प्रमाणपत्र या ऐसे प्रमाण प्रस्तुत किए हैं. जिनमें तथ्यों को बिगाड़ा गया हो, अथवा

(v) गलत या झूठे वक्तव्य दिए हैं या किसी महत्वपूर्ण तथ्य को छिपाया है, अथवा

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

(vi) परीक्षा के लिए अपनी उम्मीदवारी के संबंध में निम्नलिखित साधनों का उपयोग किया है. अर्थात् :
(क) गलत तरीके के प्रश्न–पत्र की प्रति प्राप्त करना,
(ख) परीक्षा से संबंधित गोपनीय कार्य से जुड़े व्यक्ति के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करना
(ग) परीक्षकों को प्रभावित करना, या
(vii) परीक्षा के समय अनुचित साधनों का प्रयोग किया हो, या
(viii) उत्तर पुस्तिकाओं पर असंगत बातें लिखना या भद्दे रेखाचित्र बनाना, अथवा
(ix) परीक्षा भवन में दुर्व्यवहार करना, जिसमें उत्तर–पुस्तिकाओं को फाड़ना, परीक्षा देने वालों को परीक्षा का बहिष्कार करने के लिए उकसाना अथवा अव्यवस्था तथा ऐसी ही अन्य स्थिति पैदा करना शामिल है, अथवा
(x) परीक्षा चलाने के लिए आयोग द्वारा नियुक्त कर्मचारियों को परेशान किया हो या अन्य प्रकार की शारीरिक क्षति पहुंचाई हो, या
(xi) परीक्षा के दौरान मोबाइल फोन/पेजर या किसी अन्य प्रकार का इलैक्ट्रॉनिक उपकरण या यंत्र अथवा संचार यंत्र के रूप में प्रयोग किए जा सकने वाला कोई अन्य उपकरण प्रयोग करते हुए या अपने पास रखे पाया गया हो; या
(xii) परीक्षा की अनुमति देते हुए उम्मीदवारों को भेजे गये प्रमाण–पत्रों के साथ जारी अनुदेशों का उल्लंघन किया है; अथवा
(xiii) उपर्युक्त खंडों में उल्लिखित सभी/किसी भी कार्य के द्वारा आयोग को अवप्रेरित करने का प्रयत्न किया हो, तो उन पर आपराधिक अभियोग (क्रिमिनल प्रॉसीक्यूशन) चलाया जा सकता है और उसके साथ ही उसे–
(क) आयोग द्वारा किसी उम्मीदवार को उस परीक्षा के लिये अयोग्य ठहराया जा सकता है जिसमें वह बैठ रहा है; और/अथवा
(ख) उसे स्थाई रूप से अथवा एक विशेष अवधि के लिए
(i) आयोग द्वारा ली जाने वाली किसी भी परीक्षा अथवा चयन के लिए
(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा उसके अधीन किसी भी नौकरी से वारित किया जा सकता है.
(ग) यदि वह सरकार के अधीन पहले से ही सेवा में है तो उसके विरुद्ध उपयुक्त नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है.
किंतु शर्त यह है कि इस नियम के अधीन कोई शास्ति तब तक नहीं दी जाएगी जब तक :
(i) उम्मीदवार को इस सम्बन्ध में लिखित अभ्यावेदन, जो वह देना चाहे, प्रस्तुत करने का अवसर न दिया गया हो और
(ii) उम्मीदवार द्वारा अनुमत समय में प्रस्तुत अभ्यावेदन पर, यदि कोई हो, विचार न कर लिया गया हो.

6. आवेदन–प्रपत्र प्राप्त करने की अंतिम तारीख :

(क) ऑनलाइन :

ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र **21 मार्च, 2011, रात्रि 11.59 बजे** तक भरे जा सकते हैं जिसके पश्चात लिंक निरूपयोज्य होगा.

(ख) ऑफलाइन :

(i) पूरी तरह से भरे हुए ऑफलाइन आवेदन प्रपत्र दस्ती या पोस्ट/स्पीड पोस्ट या कुरियर द्वारा **''परीक्षा नियंत्रक, संघ लोक सेवा आयोग, धौलपुर हाउस, शाहजहां रोड, नई दिल्ली–110069 को 21 मार्च, 2011** या इससे पहले पहुंच जाने चाहिए.

(ii) असम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा, सिक्किम, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिले और चम्बा जिले के पांगी उपमंडल, अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह अथवा लक्षद्वीप और विदेशों में रह रहे उम्मीदवारों से केवल डाक द्वारा (डाक/स्पीड पोस्ट द्वारा) प्राप्त होने वाले आवेदन प्रपत्रों के मामले में अंतिम तारीख **28 मार्च, 2011 सिर्फ 5 बजे तक है** . उपर्युक्त क्षेत्रों/प्रदेशों में रहने वाले उम्मीदवारों से आवेदन प्रपत्र प्राप्त करने के लिए दिया गया अतिरिक्त समय–सीमा का लाभ केवल **डाक/स्पीड पोस्ट** द्वारा प्राप्त आवेदन पत्रों के मामले में ही दिया जाएगा. वैयक्तिक रूप से अथवा कूरियर सेवा से प्राप्त आवेदन प्रपत्रों के मामलों में आवेदकों के निवास स्थान पर ध्यान दिए बिना अतिरिक्त समय सीमा का लाभ नहीं मिलेगा.

अतिरिक्त समय सीमा के लाभ का दावा करने वाले उम्मीदवारों को आवेदन के कालम 13 में अपने आवासीय पते में उस विशेष क्षेत्र अथवा प्रदेश, (अर्थात् असम, मेघालय, जम्मू एवं कश्मीर आदि) जहां वे रह रहे हैं, के क्षेत्र कोड का उल्लेख स्पष्ट रूप से करना चाहिए. यदि वे ऐसा नहीं कर पाते तो उन्हें अतिरिक्त समय का लाभ उठाने की अनुमति नहीं दी जाएगी.

टिप्पणी–I : उम्मीदवार स्पष्ट रूप से यह समझ लें कि आयोग उनका आवेदन प्रपत्र प्राप्त न होने अथवा किन्हीं अन्य कारणों से विलम्ब से प्राप्त होने के लिए किसी भी परिस्थिति में उत्तरदायी नहीं होगा. निर्धारित अंतिम तिथि के बाद प्राप्त होने वाले किसी भी आवेदन पत्र पर किसी भी परिस्थिति में विचार नहीं किया जाएगा और विलम्ब से प्राप्त होने वाले सभी आवेदन प्रपत्रों को तुरन्त अस्वीकार कर दिया जाएगा. अतः वे यह सुनिश्चित कर लें कि उनके आवेदन पत्र निर्धारित अंतिम तिथि तक आयोग के कार्यालय में पहुंच जाएं.

टिप्पणी–II: उम्मीदवार अपने आवेदन प्रपत्र आयोग के काउन्टर पर व्यक्तिगत रूप से जमा करके उसकी समुचित रसीद प्राप्त कर सकते हैं. आयोग के अन्य किसी पदधारी को जमा करने के लिए दिए गए आवेदनपत्रों के संबंध में आयोग उत्तरदायी नहीं होगा.

टिप्पणी–III: उम्मीदवारों को यह नोट कर लेना चाहिए कि निर्दिष्ट काउंटर पर सिर्फ 5 बजे तक एक बार में केवल एक ही आवेदन प्रपत्र प्राप्त किया जाएगा न कि बड़ी संख्या में.

टिप्पणी–IV: कूरियर सेवा अथवा कूरियर जैसी अन्य सेवा के माध्यम से प्राप्त आवेदन प्रपत्रों को आयोग के काउंटर पर ''दस्ती रूप से'' जमा किए गए आवेदन प्रपत्रों के रूप में माना जाएगा.

7. आवेदनों की पावती :

उम्मीदवार से आवेदन प्रपत्र प्राप्त होने के तत्काल बाद उम्मीदवार द्वारा आवेदन प्रपत्र के साथ जमा किए गए पावती कार्ड को उनके आवेदन की प्राप्ति के प्रमाणस्वरूप आयोग कार्यालय द्वारा विधिवत मुहर लगाकर पावती कार्ड उम्मीदवार को भेज दिए जाएंगे. यदि कोई उम्मीदवार 30 दिनों के अंदर पावती प्रमाण पत्र नहीं पाता है, तो उसे अपने आवेदन प्रपत्र संख्या एवं परीक्षा का नाम और वर्ष दर्शाते हुए आयोग से अविलंब संपर्क करना चाहिए. जो उम्मीदवार स्वयं आयोग के काउंटर पर अपने आवेदन प्रपत्र जमा कराते हैं उन्हें काउंटर पर ही पावती पत्र जारी कर दिया जाएगा. केवल इस तथ्य से कि उम्मीदवार का आवेदन प्रपत्र आयोग द्वारा प्राप्त कर लिया गया है इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि परीक्षा के लिए उसकी उम्मीदवारी को स्वीकार कर लिया गया है. उम्मीदवारों को उनके परीक्षा में प्रवेश अथवा उनका आवेदन प्रपत्र अस्वीकृत किये जाने के बारे में शीघ्रातिशीघ्र सूचित कर दिया जायेगा.

8. आयोग के साथ पत्र–व्यवहार :

निम्नलिखित को छोड़कर आयोग अन्य किसी भी मामले में उम्मीदवार के साथ पत्र–व्यवहार नहीं करेगा.

(i) इस परीक्षा के प्रत्येक उम्मीदवार को उसके आवेदन प्रपत्र के परिणाम की सूचना यथाशीघ्र दे दी जाएगी. परीक्षा में प्रवेशित उम्मीदवारों को अनुक्रमांक दर्शाते हुए प्रवेश प्रमाण पत्र प्रेषित किया जायेगा. प्रवेश प्रमाण पत्र पर उम्मीदवार के फोटोग्राफ का समावेश होगा. यदि किसी उम्मीदवार को परीक्षा प्रारंभ होने से **तीन सप्ताह** पूर्व प्रवेश प्रमाण पत्र अथवा उसकी उम्मीदवारी से संबद्ध कोई अन्य सूचना न मिले तो उसे आयोग से तत्काल संपर्क करना चाहिए. ऐसी किसी सूचना के प्राप्त होने पर प्रवेशित उम्मीदवार को प्रवेश प्रमाण पत्र अथवा उसकी अनुलिपि भेज दी जायेगी. इस संबंध में जानकारी आयोग परिसर में स्थित सुविधा काउन्टर पर व्यक्तिगत रूप से अथवा दूरभाष संख्या 011–23385271/011–23381125/011–23098543 से भी प्राप्त की जा सकती है. **यदि किसी उम्मीदवार से प्रवेश प्रमाण पत्र प्राप्त न होने के संबंध में कोई सूचना आयोग कार्यालय में परीक्षा प्रारंभ होने से कम से कम तीन सप्ताह पूर्व तक प्राप्त नहीं होती है तो प्रवेश प्रमाण पत्र प्राप्त न होने के लिये वह स्वयं ही जिम्मेदार होगा.** यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रवेश प्रमाण पत्र उम्मीदवार द्वारा आवेदन प्रपत्र में दिए गए पते की फोटो कापी लेकर प्रेषित किये जायेंगे. अतः उम्मीदवार ये सुनिश्चित कर लें कि उनके द्वारा आवेदन प्रपत्र में दिया गया पता पिन कोड सहित पूर्ण है.

सामान्यतः किसी भी उम्मीदवार को परीक्षा में प्रवेश प्रमाणपत्र के बिना बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी. प्रवेश प्रमाण पत्र प्राप्त होने पर इसकी सावधानीपूर्वक जांच कर लें तथा किसी प्रकार की विसंगति/त्रुटि होने पर आयोग को तुरंत इसकी जानकारी दें.

उम्मीदवारों को ध्यान रखना चाहिए कि परीक्षा में उनका प्रवेश उनके द्वारा आवेदन प्रपत्र में दी गई जानकारी के आधार पर अनंतिम रहेगा. यह आयोग द्वारा पात्रता की शर्तों के सत्यापन के अध्यधीन होगा. **केवल इस तथ्य का कि किसी उम्मीदवार को उक्त परीक्षा के लिए प्रवेश प्रमाण पत्र जारी कर दिया गया है यह अर्थ नहीं होगा कि आयोग द्वारा उसकी उम्मीदवारी अंतिम रूप से ठीक मान ली गई है या किसी उम्मीदवार द्वारा अपने प्रारंभिक परीक्षा के आवेदन प्रपत्र में की गई प्रविष्टियां आयोग द्वारा सही और ठीक मान ली गई हैं. उम्मीदवार ध्यान रखें कि आयोग उम्मीदवार के सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा में अर्हता प्राप्त कर लेने के बाद ही उसकी पात्रता की शर्तों का मूल प्रलेखों से सत्यापन का मामला उठाता है, आयोग द्वारा औपचारिक रूप से उम्मीदवारी की पुष्टि कर दिये जाने तक उम्मीदवारी अनंतिम रहेगी.** उम्मीदवार उक्त परीक्षा में प्रवेश का पात्र है या नहीं है इस बारे में आयोग का निर्णय अंतिम होगा. उम्मीदवार ध्यान रखें कि प्रवेश प्रमाण पत्र में कहीं–कहीं नाम तकनीकी कारणों से संक्षिप्त रूप से लिखे जा सकते हैं.

(ii) उम्मीदवार को आयोग से एक से अधिक प्रवेश प्रमाण–पत्र प्राप्त होने की स्थिति में, परीक्षा देने के लिए, उनमें से केवल एक ही प्रवेश प्रमाण पत्र का उपयोग करना चाहिए तथा अन्य आयोग के कार्यालय को लौटा दिए जाने चाहिए.

(iii) उम्मीदवार को इस बात की व्यवस्था कर लेनी चाहिए कि उसके आवेदन प्रपत्र में उल्लिखित पते पर भेजे गये पत्र आदि, आवश्यक होने पर, उसको बदले हुए पते पर मिल जाया करें. पते में किसी प्रकार का परिवर्तन होने पर आयोग को उसकी सूचना यथाशीघ्र दी जानी चाहिए. आयोग ऐसे परिवर्तनों पर ध्यान देने का पूरा–पूरा प्रयत्न करता है, किन्तु इस विषय में वह कोई जिम्मेदारी स्वीकार नहीं कर सकता.

(iv) उम्मीदवारों को सूचित किया जाता है कि प्रारंभिक परीक्षा केवल प्राक्चयन परीक्षण है; इसलिए आयोग द्वारा इस सम्बन्ध में सफल या असफल उम्मीदवारों को कोई अंक–पत्र नहीं भेजा जाएगा और कोई पत्र–व्यवहार नहीं किया जाएगा.

(v) यदि उम्मीदवार को निपटान की चूक के कारण किसी दूसरे उम्मीदवार से संबंधित प्रवेश प्रमाण पत्र मिल जाये तो उसे आयोग को तुरंत सही प्रवेश प्रमाण पत्र जारी करने के निवेदन के साथ लौटा दिया जाना चाहिए. उम्मीदवारों को यह नोट कर लेना चाहिए कि उन्हें किसी दूसरे उम्मीदवार को जारी प्रवेश प्रमाण पत्र के आधार पर परीक्षा देने की अनुमति नहीं दी जाएगी.

महत्त्वपूर्ण : आयोग के साथ सभी पत्र–व्यवहार में नीचे लिखा ब्यौरा अनिवार्य रूप से होना चाहिए.

1. परीक्षा का नाम और वर्ष.
2. आवेदन प्रपत्र संख्या
3. अनुक्रमांक नंबर (यदि प्राप्त हुआ हो).
4. उम्मीदवार का नाम (पूरा तथा मोटे अक्षरों में).
5. आवेदन प्रपत्र में दिया डाक का पूरा पता.

ध्यान दें–I : जिन पत्रों में यह ब्यौरा नहीं होगा, संभव है कि उन पर ध्यान न दिया जाए.

ध्यान दें–II : उम्मीदवारों को अपने आवेदन प्रपत्र की संख्या भविष्य में संदर्भ के लिए नोट कर लेनी चाहिए. उन्हें सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा की उम्मीदवारी के संबंध में इसे दर्शाना होगा.

9. शारीरिक रूप से अक्षम व्यक्तियों के लिए आरक्षित रिक्तियों के लिए आरक्षण का लाभ लेने के लिए पात्रता वही होगी जो "अक्षम व्यक्ति (समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) अधिनियम 1995" में है.

बशर्ते कि शारीरिक रूप से अक्षम उम्मीदवारों को शारीरिक अपेक्षाओं/कार्यात्मक वर्गीकरण (सक्षताओं/अक्षमताओं) के संबंध में उन विशेष पात्रता मानदण्डों को पूरा करना भी अपेक्षित होगा जो इसके संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी द्वारा निर्धारित अभिज्ञात सेवा/पद के अपेक्षाओं की संगत हो.

उदाहरणार्थ, शारीरिक अपेक्षाएं और कार्यात्मक वर्गीकरण निम्न में से एक या अधिक हो सकते हैं :–

कोड	शारीरिक अपेक्षाएं
एमएफ (MF)	1. हस्तकौशल (अंगुलियों से) द्वारा निष्पादित किए जाने वाले कार्य.
पीपी (PP)	2. खींच कर तथा धक्के द्वारा किए जाने वाले कार्य.
एल (L)	3. उठाकर किए जाने वाले कार्य.
केसी (KC)	4. घुटने के बल बैठकर तथा क्राउंचिंग द्वारा किए जाने वाले कार्य.
बीएन (BN)	5. झुककर किए जाने वाले कार्य.
एस (S)	6. बैठकर (बेंच या कुर्सी पर) किए जाने वाले कार्य.
एसटी (ST)	7. खड़े होकर किए जाने वाले कार्य.
डब्ल्यू (W)	8. चलते हुए किए जाने वाले कार्य.
एसई (SE)	9. देखकर किए जाने वाले कार्य.
एच (H)	10. सुनकर या बोलकर किए जाने वाले कार्य.
आरडब्ल्यू (RW)	11. पढ़कर तथा लिखकर किए जाने वाले कार्य.
सी (C)	12. वार्तालाप
कोड	**कार्यात्मक वर्गीकरण**
बीएल (BL)	1. दोनों पैर खराब लेकिन भुजाएं नहीं.
बीए (BA)	2. दोनों भुजाएं खराब क. दुर्बल पहुंच ख. पकड़ की दुर्बलता ग. एटेक्सिक (गति विभ्रमी)
बीएलए (BLA)	3. दोनों पैर तथा दोनों भुजाएं खराब.
ओएल (OL)	4. एक पैर खराब (दायां या बायां) (क) दुर्बल पहुंच (ख) पकड़ की दुर्बलता (ग) ऐटेक्सिक (गति विभ्रमी)
ओए (OA)	5. एक भुजा खराब (दाईं या बाईं) (क) दुर्बल पहुंच (ख) पकड़ की दुर्बलता (ग) ऐटेक्सिक (गति विभ्रमी)
ओएएल (OAL)	6. एक भुजा और एक पैर प्रभावित
एमडब्लयू (MW)	7. मांसपेशीय दुर्बलता तथा सीमित शारीरिक शक्ति
बी (B)	8. नेत्रहीन
एलवी (LV)	9. आंशिक दृष्टि
एच (H)	10. सुनना

टिप्पणी : उपर्युक्त सूची संशोधन के अध्यधीन है.

10. किसी भी उम्मीदवार को समुदाय संबंधी आरक्षण का लाभ, उसकी जाति को केन्द्र सरकार द्वारा जारी आरक्षित समुदाय संबंधी सूची में शामिल किए जाने पर ही मिलेगा । यदि कोई उम्मीदवार सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा के अपने प्रपत्र में यह उल्लेख करता है

कालांतर में अपनी श्रेणी को आरक्षित सूची की श्रेणी में तब्दील करने के लिए आयोग को लिखता है

आयोग द्वारा ऐसे अनुरोध को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जाएगा ।

जबकि उपर्युक्त सिद्वांत का सामान्य रूप से पालन किया जाएगा, फिर भी कुछ ऐसे मामले हो सकते है जिनमें किसी समुदाय विशेष को आरक्षित समुदायों की किसी भी सूची में शामिल करने के संबंध में सरकारी अधिसूचना जारी किए जाने औ

आवेदन पत्र जमा करने की तारीख के समय के बीच थोड़ा बहुत अंतर (अर्थात् 2–3 महीने) हुआ हो । ऐसे मामलों में, समुदाय को सामान्य से आरक्षित समुदाय में परिवर्तित करने संबंधी अनुरोध पर आयोग द्वारा मै

के आधार पर विचार किया जाएगा ।

11. आवेदनों की वापसी :

उम्मीदवार द्वारा अपना आवेदन प्रपत्र प्रस्तुत कर देने के बाद उम्मीदवारी वापस लेने से संबद्ध उसके किसी भी अनुरोध को किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा.

(विनय प्रकाश सिंह)
संयुक्त सचिव
संघ लोक सेवा आयोग

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

परिशिष्ट–1

खंड– I

परीक्षा की योजना

इस प्रतियोगिता परीक्षा में दो क्रमिक चरण हैं.

(1) प्रधान परीक्षा के लिए उम्मीदवारों के चयन हेतु सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा (वस्तुपरक) तथा

(2) विभिन्न सेवाओं तथा पदों पर भर्ती हेतु उम्मीदवारों का चयन करने के लिए सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा (लिखित तथा साक्षात्कार).

2. प्रारंभिक परीक्षा में वस्तुपरक (बहुविकल्पीय प्रश्न) प्रकार के दो प्रश्न पत्र होंगे तथा खंड–II के उपखंड (क) में दिए गए विषयों में अधिकतम 400 अंक होंगे. यह परीक्षा केवल प्राक्चयन परीक्षण के रूप में होंगी. प्रधान परीक्षा में प्रवेश हेतु अर्हता प्राप्त करने वाले उम्मीदवार द्वारा प्रारंभिक परीक्षा में प्राप्त किए गए अंकों को उनके अंतिम योग्यता क्रम को निर्धारित करने के लिए नहीं गिना जाएगा. प्रधान परीक्षा में प्रवेश दिये जाने वाले उम्मीदवारों की संख्या उक्त वर्ष में विभिन्न सेवाओं तथा पदों में भरी जाने वाली रिक्तियों की कुल संख्या का लगभग बारह से तेरह गुना होगी. केवल वे ही उम्मीदवार जो आयोग द्वारा किसी वर्ष की प्रारंभिक परीक्षा में अर्हता प्राप्त कर लेते हैं उक्त वर्ष की प्रधान परीक्षा में प्रवेश के पात्र होंगे बशर्ते कि वे अन्यथा प्रधान परीक्षा में प्रवेश हेतु पात्र हों.

3. प्रधान परीक्षा में लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार परीक्षण होगा. लिखित परीक्षा में खंड–II के उप खंड (ख) में दिए गए विषयों में परम्परागत निबन्धात्मक शैली के 9 प्रश्न पत्र होंगे. खंड II (ख) के पैरा 1 के नीचे नोट (II) भी देखें.

4. जो उम्मीदवार प्रधान परीक्षा के लिखित भाग में उतने न्यूनतम अर्हक अंक प्राप्त कर लेगा जितने आयोग अपने निर्णय से निश्चित करे उन्हें आयोग व्यक्तित्व परीक्षण हेतु खंड–II में उप खंड "ग" के अनुसार साक्षात्कार के लिए बुलाएगा, किन्तु भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के प्रश्न पत्रों में केवल अर्हता प्राप्त करनी होगी. खंड–II (ख) के पैरा के नीचे टिप्पणी (II) भी देखें. इन प्रश्न पत्रों में प्राप्त अंकों को योग्यता क्रम निर्धारित करने में गिना नहीं जाएगा. साक्षात्कार के लिए बुलाए जाने वाले उम्मीदवारों की संख्या भरी जाने वाली रिक्तियों की संख्या से लगभग दुगनी होगी. साक्षात्कार के लिए 300 अंक होंगे. (कोई न्यूनतम अर्हक अंक नहीं है).

इस प्रकार उम्मीदवारों द्वारा प्रधान परीक्षा (लिखित भाग तथा साक्षात्कार) में प्राप्त किए गए अंकों के आधार पर उनका अंतिम योग्यता क्रम निर्धारित किया जायेगा. परीक्षा में उम्मीदवारों की स्थिति तथा विभिन्न सेवाओं और पदों के लिए उनके द्वारा दिए गए वरीयता क्रम को ध्यान में रखते हुए उन्हें विभिन्न सेवाओं में आवंटित किया जायेगा.

खंड–II

1. प्रारंभिक तथा प्रधान परीक्षा की रूपरेखा तथा विषय :

क. प्रारंभिक परीक्षा :

परीक्षा में दो अनिवार्य प्रश्न पत्र होंगे जिसमें प्रत्येक प्रश्न पत्र 200 अंकों का होगा।

नोट :

(i) दोनों ही प्रश्न–पत्र वस्तुनिष्ठ **(बहुविकल्पीय)** प्रकार के होंगे ।

(ii) प्रश्न–पत्र हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में तैयार किए जाएंगे । तथापि, दसवीं कक्षा स्तर के अंग्रेजी भाषा के **बोधगम्यता** कौशल से संबंधी प्रश्नों का परीक्षण, प्रश्नपत्र में केवल अंग्रेजी भाषा के उष्रणों के माध्यम से, हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराए बिना किया जाएगा ।

(iii) पाठ्यक्रम संबंधी विवरण खंड–III के भाग–क में दिया गया है ।

(iv) प्रत्येक प्रश्नपत्र दो घंटे की अवधि का होगा । तथापि, नेत्रहीन उम्मीदवारों को प्रत्येक प्रश्न पत्र में बीस मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा ।

ख. प्रधान परीक्षा :

लिखित परीक्षा में निम्नलिखित प्रश्न पत्र होंगे :

प्रश्न पत्र–I	संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं में से उम्मीदवारों द्वारा चुनी गई कोई एक भारतीय भाषा	300 अंक
प्रश्न पत्र–II	अंग्रेजी	300 अंक
प्रश्न पत्र–III	निबंध	200 अंक
प्रश्न पत्र–IV	सामान्य अध्ययन	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 300 अंक
प्रश्न पत्र–V		प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 300 अंक
प्रश्न पत्र–VI, VII, VIII और IX	नीचे पैरा 2 में दिए गए ऐच्छिक विषयों की सूची में से चुने जाने वाले कोई दो विषय, प्रत्येक विषय के दो प्रश्न पत्र होंगे.	प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए 300 अंक

साक्षात्कार परीक्षण 300 अंकों का होगा.

टिप्पणी

(i) भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के प्रश्न पत्र मैट्रिकुलेशन अथवा समकक्ष स्तर के होंगे जिनमें केवल अर्हता प्राप्त करनी होगी. इन प्रश्न पत्रों में प्राप्त अंकों को योग्यता क्रम निर्धारित करने में नहीं गिना जाएगा.

(ii) सभी उम्मीदवारों के पेपरों नामश: 'निबंध', 'सामान्य अध्ययन' तथा 'वैकल्पिक विषयों' का मूल्यांकन 'भारतीय भाषाओं' तथा 'अंग्रेजी' के उनके अर्हक पेपरों के मूल्यांकन के साथ ही किया जाएगा लेकिन केवल उन्हीं उम्मीदवारों के 'निबंध', 'सामान्य अध्ययन', तथा 'वैकल्पिक विषयों' के प्रश्न पत्रों का मूल्यांकन किया जाएगा जो 'भारतीय भाषा' तथा 'अंग्रेजी' के अर्हक प्रश्न पत्रों में आयोग द्वारा अपने विवेक से निर्धारित न्यूनतम स्तर प्राप्त कर लेंगें। अत: 'भारतीय भाषा' तथा 'अंग्रेजी' में निर्धारित न्यूनतम स्तर प्राप्त करने में असफल उम्मीदवारों के 'निबंध', 'सामान्य अध्ययन' तथा 'वैकल्पिक विषयों' के अंक बताए नहीं जाएंगे।

(iii) तथापि भारतीय भाषाओं का प्रथम प्रश्न पत्र उन उम्मीदवारों के लिए अनिवार्य नहीं होगा जो उत्तर पूर्वी राज्यों अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम तथा नागालैंड के निवासी हैं तथा उन उम्मीदवारों के लिए भी जो सिक्किम राज्य के निवासी हैं.

(iv) भाषा के प्रश्न पत्रों में उम्मीदवार निम्न प्रकार से लिपि का प्रयोग करेंगे.

भाषा	लिपि
असमिया	असमिया
बंगला	बंगला
बोडो	देवनागरी
डोगरी	देवनागरी
गुजराती	गुजराती
हिन्दी	देवनागरी
कन्नड़	कन्नड़
कश्मीरी	फारसी
कोंकणी	देवनागरी
मैथिली	देवनागरी
मलयालम	मलयालम
मणिपुरी	बंगाली
मराठी	देवनागरी
नेपाली	देवनागरी
उड़िया	उड़िया
पंजाबी	गुरुमुखी
संस्कृत	देवनागरी
संताली	देवनागरी या आलचिकी
सिन्धी	देवनागरी या अरबी
तमिल	तमिल
तेलुगु	तेलुगु
उर्दू	फारसी

टिप्पणी : संताली भाषा के लिए प्रश्न पत्र देवनागरी लिपि में छपेंगे किन्तु उम्मीदवारों को उत्तर देने के लिए देवनागरी या ओलचिकि लिपि के प्रयोग का विकल्प होगा.

2. प्रधान परीक्षा के लिए ऐच्छिक विषयों की सूची

कृषि विज्ञान
पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान
नृविज्ञान
वनस्पति विज्ञान
रसायन विज्ञान
सिविल इंजीनियरी
वाणिज्य शास्त्र तथा लेखा विधि
अर्थशास्त्र
वैद्युत इंजीनियरी
भूगोल
भू–विज्ञान
इतिहास
विधि
प्रबंध
गणित
यांत्रिक इंजीनियरी
चिकित्सा विज्ञान
दर्शन शास्त्र
भौतिकी
राजनीति विज्ञान तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंध
मनोविज्ञान
लोक प्रशासन
समाज शास्त्र
सांख्यिकी
प्राणि विज्ञान

निम्नलिखित में से किसी **एक** भाषा का साहित्य : अरबी, असमिया, बंगला, बोडो, चीनी, डोगरी, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पाली, फारसी, पंजाबी, रूसी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू.

टिप्पणी (i) उम्मीदवारों को निम्नलिखित विषय एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी.

(क) राजनीति विज्ञान **तथा** अंतर्राष्ट्रीय संबंध तथा लोक प्रशासन
(ख) वाणिज्य शास्त्र **तथा** लेखा विधि तथा प्रबंध
(ग) मानव विज्ञान **तथा** समाजशास्त्र
(घ) गणित तथा सांख्यिकी
(ङ) कृषि विज्ञान **तथा** पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान
(च) प्रबंध **तथा** लोक प्रशासन
(छ) इंजीनियरी विषयों जैसे सिविल इंजीनियरी, वैद्युत इंजीनियरी तथा यांत्रिक इंजीनियरी में एक से अधिक विषय नहीं.
(ज) पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान **तथा** चिकित्सा विज्ञान

(ii) परीक्षा के लिए प्रश्न पत्र परम्परागत निबंध शैली के होंगे.

(iii) प्रत्येक प्रश्न पत्र तीन घंटे की अवधि का होगा. तथापि दृष्टिहीन उम्मीदवारों को प्रत्येक प्रश्न–पत्र के लिए तीस मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा.

(iv) प्रश्न पत्रों के उत्तर भारतीय भाषाओं के प्रश्न पत्रों अर्थात उपर्युक्त प्रश्न पत्रों 1 और 2 को छोड़कर संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किसी भी एक भाषा में अथवा अंग्रेजी में देने की उम्मीदवारों को छूट होगी.

(v) संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं में से किसी एक भाषा में 3 से 9 तक के प्रश्न पत्रों के उत्तर देने का विकल्प लेने वाले उम्मीदवार यदि चाहे तो केवल तकनीकी शब्दों के यदि कोई हैं, विवरण का उनके द्वारा चुनी गई भाषा के साथ अंग्रेजी रूपान्तरण कोष्ठकों में दे सकते हैं.

किन्तु उम्मीदवार ध्यान रखें कि यदि वे उक्त नियम का दुरूपयोग करते हैं तो इसके कारण उनके अन्यथा मिलने वाले कुल अंकों में से कटौती कर ली जाएगी, अत्यांतिक मामले में उनकी उत्तर पुस्तिका (एं) अनाधिकृत माध्यम में होने के कारण मूल्यांकित नहीं की जाएगी.

(vi) भाषा संबंधी प्रश्न पत्रों को छोड़कर बाकी सभी प्रश्न पत्र हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे.

(vii) पाठ्यक्रम का पूरा विवरण खंड III के भाग "ख" में दिया गया है.

"सामान्य अनुदेश (प्रारंभिक तथा प्रधान परीक्षा)"

(i) उम्मीदवारों को प्रश्नपत्रों के उत्तर स्वयं लिखने चाहिएं. किसी भी परिस्थिति में उन्हें उत्तर लिखने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी. तथापि दृष्टिहीन उम्मीदवारों को लेखन सहायक (स्क्राइब) की सहायता से परीक्षा में उत्तर लिखने की अनुमति होगी.

(ii) केवल सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए, उन उम्मीदवारों को जो चलने में असमर्थ हैं तथा प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात से पीड़ित हैं और जहां उनकी यह असमर्थता, उनकी कार्य–निष्पादन क्षमता (लेखन) (न्यूनतम 40% अक्षमता) को प्रभावित करती है, उन्हें प्रत्येक घण्टे में 20 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जाएगा. तथापि ऐसे उम्मीदवारों को स्क्राइब लेने की अनुमति नहीं होगी.

टिप्पणी–1 : किसी लेखन सहायक (स्क्राइब) की योग्यता की शर्तें, परीक्षा हाल में उसके आचरण तथा वह सिविल सेवा परीक्षा के उत्तर लिखने में दृष्टिहीन उम्मीदवारों की किस प्रकार और किस सीमा तक सहायता कर सकता है इन सब बातों का नियमन संघ लोक सेवा आयोग द्वारा जारी अनुदेशों के अनुसार किया जाएगा. इन सभी या इनमें से किसी एक अनुदेश का उल्लंघन होने पर दृष्टिहीन उम्मीदवार की उम्मीदवारी रद्द की जा सकती है. इसके अतिरिक्त संघ लोक सेवा आयोग लेखन सहायक के विरूद्ध अन्य कार्रवाई भी कर सकता है.

टिप्पणी –2 : इन नियमों का पालन करने के लिए किसी उम्मीदवार को तभी दृष्टिहीन उम्मीदवार माना जाएगा यदि दृष्टिदोष का प्रतिशत 40 या इससे अधिक हो, दृष्टि दोष की प्रतिशतता निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित कसौटी को आधार माना जाएगा.

सुधारों के बाद

	स्वस्थ आंख	खराब आंख	प्रतिशतता
वर्ग 0	6/9–6/18	6/24 से 6/36 तक	20%
वर्ग I	6/18–6/36	6/60 से शून्य तक	40%
वर्ग II	6/60–4/60 अथवा दृष्टि का क्षेत्र 10–20°	3/60 से शून्य तक	75%
वर्ग III	3/60–1/60 अथवा दृष्टि का क्षेत्र 10°	एफ.सी. एक फुट से शून्य तक	100%
वर्ग IV	एफ.सी. 1 फुट से शून्य तक दृष्टि का क्षेत्र 100°	एफ.सी. 1 फुट से शून्य तक दृष्टि का क्षेत्र 100°	100%
एक आंख वाला व्यक्ति	6/6	एफ.सी. 1 फुट से शून्य तक	30%

टिप्पणी– 3 : दृष्टिहीन उम्मीदवारों को स्वीकार्य छूट प्राप्त करने के लिए संबंधित उम्मीदवार को **प्रधान परीक्षा के आवेदन पत्र के** साथ निर्धारित प्रपत्र में केन्द्र/राज्य सरकार द्वारा गठित बोर्ड से इस आशय का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा.

टिप्पणी –4 : (i) दृष्टिहीन उम्मीदवारों को दी जाने वाली छूट निकटदृष्टिता से पीड़ित उम्मीदवारों को देय नहीं होगी.

(ii) आयोग अपने विवेक से परीक्षा के किसी भी एक या सभी विषयों में अर्हक अंक निश्चित कर सकता है.

(iii) यदि किसी उम्मीदवार की लिखावट आसानी से न पढ़ी जा सके तो उसको मिलने वाले अंकों में से कुछ अंक काट लिए जायेंगे.

(iv) सतही ज्ञान के लिए अंक नहीं दिए जाएंगे.

(v) परीक्षा के सभी विषयों में कम से कम शब्दों में की गई संगठित, सूक्ष्म और सशक्त अभिव्यक्ति को श्रेय मिलेगा.

(vi) प्रश्न पत्रों में यथा आवश्यक एस.आई. (S.I.) इकाईयों का प्रयोग किया जाएगा.

(vii) उम्मीदवार प्रश्न पत्रों के उत्तर देते समय केवल भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप (जैसे 1, 2, 3, 4, 5, 6 आदि) का ही प्रयोग करें.

(viii) उम्मीदवारों को संघ लोक सेवा आयोग की परंपरागत (निबंध) शैली के प्रश्न पत्रों के लिए साइंटिफिक (नान प्रोग्रामेबल) प्रकार के कैलकुलेटरों का प्रयोग करने की अनुमति है. यद्यपि प्रोग्रामेबल प्रकार के कैलकुलेटरों का प्रयोग उम्मीदवार द्वारा अनुचित साधन अपनाया जाना माना जाएगा. परीक्षा भवन में केलकुलेटरों को मांगने या बदलने की अनुमति नहीं है.

यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि उम्मीदवार वस्तुपरक प्रश्न पत्रों (परीक्षण पुस्तिका) का उत्तर देने के लिए कैलकुलेटरों का प्रयोग नहीं कर सकते. अत: वे उन्हें परीक्षा भवन में न लाएं.

ग. साक्षात्कार परीक्षण :

1. उम्मीदवार का साक्षात्कार एक बोर्ड द्वारा होगा जिसके सामने उम्मीदवार के परिचयवृत्त का अभिलेख होगा. उससे सामान्य रुचि की बातों पर प्रश्न पूछे जायेंगे. यह साक्षात्कार इस उद्देश्य से होगा कि सक्षम और निष्पक्ष प्रेक्षकों का बोर्ड यह जान सके कि उम्मीदवार लोक सेवा के लिए व्यक्तित्व की दृष्टि से उपयुक्त है या नहीं. यह परीक्षा उम्मीदवार की मानसिक क्षमता को जांचने के अभिप्राय: से की जाती है. मोटे तौर पर इस परीक्षा का प्रयोजन वास्तव में न केवल उसके बौद्धिक गुणों को अपितु उसके सामाजिक लक्षणों और सामाजिक घटनाओं में उसकी रुचि का भी मूल्यांकन करना है. इसमें उम्मीदवार की मानसिक सतर्कता, आलोचनात्मक ग्रहण शक्ति, स्पष्ट और तर्क संगत प्रतिपादन की शक्ति, संतुलित निर्णय की शक्ति, रुचि की विविधता और गहराई, नेतृत्व और सामाजिक संगठन की योग्यता, बौद्धिक और नैतिक ईमानदारी की भी जांच की जा सकती है.

2. साक्षात्कार में प्रति परीक्षण (क्रास एग्जामिनेशन) की प्रणाली नहीं अपनाई जाती. इसमें स्वाभाविक वार्तालाप के माध्यम से उम्मीदवार के मानसिक गुणों का पता लगाने का प्रयत्न किया जाता है, परन्तु वह

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

वार्तालाप एक विशेष दिशा में और एक विशेष प्रयोजन से किया जाता है.

3. साक्षात्कार परीक्षण उम्मीदवारों के विशेष या सामान्य, ज्ञान की जांच करने के प्रयोजन से नहीं किया जाता, क्योंकि उसकी जांच लिखित प्रश्न पत्रों से पहले ही हो जाती है. उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि वे न केवल अपने विद्यालय के विशेष विषयों में ही पारंगत हों बल्कि उन घटनाओं पर भी ध्यान दें जो उनके चारों ओर अपने राज्य या देश के भीतर और बाहर घट रही हैं तथा आधुनिक विचारधारा और नई–नई खोजों में भी रूचि लें जो कि किसी सुशिक्षित युवक में जिज्ञासा पैदा कर सकती है.

खंड-III
परीक्षा का पाठ्य विवरण
भाग–क
प्रारंभिक परीक्षा

प्रारंभिक परीक्षा में अब 200-200 अंकों के दो अनिवार्य प्रश्नपत्र होंगे

प्रश्नपत्र-I (200 अंक) अवधि : दो घंटे

- ❑ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएं.
- ❑ भारत का इतिहास और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन.
- ❑ भारत एवं विश्व भूगोल – भारत एवं विश्व का प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक भूगोल
- ❑ भारतीय राज्यतन्त्र और शासन – संविधान, राजनैतिक प्रणाली, पंचायती राज, लोक नीति, अधिकारों संबंधी मुद्दे, आदि।
- ❑ आर्थिक और सामाजिक विकास – सतत विकास, गरीबी, समावेशन, जनसांख्यिकी, सामाजिक क्षेत्र में की गई पहल आदि।
- ❑ पर्यावरणीय पारिस्थितिकी जैव–विविधता और मौसम परिवर्तन संबंधी सामान्य मुद्दे, जिनके लिए विषयगत विशेषज्ञता आवश्यक नहीं है।
- ❑ सामान्य विज्ञान

प्रश्नपत्र–II (200 अंक) अवधि : दो घंटे

- ❑ बोधगम्यता
- ❑ संचार कौशल सहित अंतर – वैयक्तिक कौशल
- ❑ तार्किक कौशल एवं विश्लेषणात्मक क्षमता
- ❑ निर्णय लेना और समस्या समाधान
- ❑ सामान्य मानसिक योग्यता
- ❑ आधारभूत संख्यनन (संख्याएं और उनके संबंध, विस्तार क्रम आदि) (दसवीं कक्षा का स्तर), आंकड़ों का निर्वचन (चार्ट, ग्राफ, तालिका, आंकड़ों की पर्याप्तता आदि – दसवीं कक्षा का स्तर)
- ❑ अंग्रेजी भाषा में बोधगम्यता कौशल (दसवीं कक्षा का स्तर)

टिप्पणी 1 दसवीं कक्षा स्तर के अंग्रेजी भाषा में बोधगम्यता कौशल (प्रश्नपत्र–II के पाठ्यक्रम में अंतिम मद) से संबद्ध प्रश्नों का परीक्षण, प्रश्नपत्र में केवल अंग्रेजी भाषा के उद्धरणों के माध्यम से, हिंदी अनुवाद उपलब्ध कराए बिना किया जाएगा।

टिप्पणी 2 प्रश्न बहुविकल्पीय, वस्तुनिष्ठ प्रकार के होंगे।

भाग– ख
प्रधान परीक्षा

प्रधान परीक्षा का उद्देश्य उम्मीदवार की जानकारी और स्मरण शक्ति का परीक्षण करना ही नहीं बल्कि उनकी समग्र बौद्धिक प्रतिभा और अवबोधन क्षमता को आंकना है.

इस परीक्षा के वैकल्पिक विषयों के प्रश्न पत्र लगभग आनर्स डिग्री स्तर के होंगे अर्थात् बैचलर डिग्री से कुछ अधिक और मास्टर डिग्री से कुछ कम. इंजीनियरी और विधि के मामले में यह स्तर बैचलर डिग्री का होगा.

अनिवार्य विषय
अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाएं

इन प्रश्न पत्रों का उद्देश्य अंग्रेजी/संबंधित भारतीय भाषा में अपने विचारों को स्पष्ट तथा सही रूप में प्रकट करना तथा गंभीर तर्क पूर्ण गद्य को पढ़ने और समझने में उम्मीदवार की योग्यता की परीक्षा करना है.

प्रश्न पत्रों का स्वरूप आमतौर पर निम्न प्रकार का होगा.

अंग्रेजी

(1) दिए गए गद्यांश को समझना.
(2) संक्षेपण
(3) शब्द प्रयोग तथा शब्द भंडार.
(4) लघु निबंध

भारतीय भाषाएं

(1) दिए गए गद्यांशों को समझना.
(2) संक्षेपण.
(3) शब्द प्रयोग तथा शब्द भंडार.
(4) लघु निबंध.
(5) अंग्रेजी से भारतीय भाषा तथा भारतीय भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद.

टिप्पणी–1 : भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी के प्रश्न पत्र मैट्रिकुलेशन या समकक्ष स्तर के होंगे जिनमें केवल अर्हता प्राप्त करनी है.

इन प्रश्न पत्रों के प्राप्तांक योग्यता क्रम के निर्धारण में नहीं गिने जायेंगे.

टिप्पणी–2 : अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं के प्रश्न पत्रों के उत्तर उम्मीदवारों को अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाओं में (अनुवाद प्रश्नों को छोड़कर) देने होंगे.

निबन्ध

उम्मीदवारों को किसी एक विनिर्दिष्ट विषय पर निबंध लिखना होगा. विषयों के सम्बन्ध में विकल्प दिया जाएगा. उनसे यह अपेक्षा की जाएगी कि वे अपने विचारों को क्रमबद्ध करते हुए निबन्ध के विषय से निकटता बनाए रखें और अपनी बात संक्षेप में लिखें. प्रभावशाली व सटीक अभिव्यक्तियों के लिए श्रेय दिया जाएगा.

सामान्य अध्ययन

सामान्य मार्ग-निर्देश

इस प्रश्न पत्र में प्रश्नों का स्वरूप और स्तर इस प्रकार का होगा कि कोई सुशिक्षित व्यक्ति बिना कोई विशेष अध्ययन किए इनके उत्तर दे सकेगा. प्रश्न इस प्रकार के होंगे कि इनसे विभिन्न विषयों के बारे में अभ्यर्थी की सामन्य जागरूकता की परीक्षा होगी, जिसकी सिविल सेवाओं में वृत्ति से प्रासंगिकता रहेगी. इन प्रश्नों से अभ्यर्थी की ऐसे सभी मुद्दों की आधारभूत समझ की तथा द्वन्द्वयुक्त सामाजिक आर्थिक लक्ष्यों, उद्देश्यों और मांगों के विश्लेाण की तथा उन पर राय कायम करने की योग्यता की परीक्षा हो सकेगी.

अभ्यर्थी को प्रासंगिक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित उत्तर देने होंगे.

प्रश्नपत्र-1

1. आधुनिक भारत का इतिहास एवं भारतीय संस्कृतिः

आधुनिक भारत के इतिहास के अंतर्गत उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग मध्य से देश का इतिहास होगा एवं इसमें स्वतंत्रता आंदोलन तथा सामाजिक सुधारों को रूप देने वाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संबंध में भी प्रश्न पूछे जाएंगे. भारतीय संस्कृति

2. भारत का भूगोल :

इस भाग के अंतर्गत भारत का संविधान

3. भारत ज का संविधा-ा एवं भारतीय राज्य व्यवस्था :

इस भाज के अंतर्जत भारत ज का संविधा-ा तथा साथ ही सांविधाि-ज, विधिज, प्रशासि-ज एवं देश में प्रचलित राज-ैतिज-प्रशासि-ज व्यवस्था से उभर-े वाले अ-य मुद्दे होंजे.

4. समसामयिज राष्ट्रीय मुद्दे एवं सामाजिज प्रासंजिज ता से संबंधित विषय :

इस भाज ज का अभिप्राय अभ्यर्थी ज समसामयिज राष्ट्रीय मुद्दों एवं वर्तमा-ा भारत के सामाजिज प्रासंजिज ता के विषयों के प्रति, जैसे कि -ीचे दिए जा रहे हैं ; जाजरूज ता ज परीजा ज र-ा है.

(i) भारतीय अर्थव्यवस्था एवं योज-ा, संसाध-ों के जुटाव, संवृद्धि, विज ास तथा रोजजार से संबंधित मुद्दे.
(ii) विज ास के लाभों से व्यापज वर्जो के सामाजिज एवं आर्थिज बहिष्ज रज से उभर-े वाले मुद्दे.
(iii) मा-व संसाध-ा के विज ास एवं प्रबंध से संबंधित अ-य मुद्दे.
(iv) स्वास्थ्य के मुद्दे जिसमें कि लोज स्वास्थ्य प्रबंध, स्वास्थ्य शिजा एवं स्वास्थ्य ज देजभाल से संबंधित -ैतिज सरोज ार, चिकि त्सजीय अ-ुसंधा-ा तथा भेषज ि-र्माज शामिल हैं.
(v) विधि प्रवर्त-ा, आंतरिज सुरजा तथा संबंधित मुद्दे जैसे कि सामुदायिज सामंजस्य ज ा परिरजज.
(vi) मा-वाधिज ारों के अ-ुरजज एवं लोज जीव-ा में सत्य-िष्ठा समेत सुशास-ा एवं -ाजरिज ों के प्रति उत्तरदायित्व से संबंधित मुद्दे.
(vii) पर्यावरज से जुड़े मुद्दे, पारिस्थितिज परिरजज, प्राकृतिज संसाध-ों एवं राष्ट्रीय विरासत ज ा संरजज.

प्रश्-ापत्र-2

1. भारत और वि'व :

इस भाज में ऐसे प्रश्-ा होंजे जि-ासे विभिन्न जेत्रों में, जैसे कि -ीचे दिए जा रहे हैं; भारत-विश्व संबंध के प्रति अभ्यर्थी की जाजरूकता की परीजा होजी :-

भारत के पड़ोसी देशों के साथ और जेत्र में संबंधों पर विशेष बल देते हुए विदेशी मामले.

सुरजा एवं रजा संबंधी मामले.

-ाभिकीय -ीति, मुद्दे एवं द्व-द्व.

विदेशों में भारतवंशी (भारतीय डायस्पोरा) और इसज ा भारत तथा विश्व को योजदा-ा.

2. भारत की विश्व के साथ पारस्परिज आर्थिज क्रि या:

इस भाज में आर्थिज एवं व्यापार के मुद्दों पर जैसे कि, विदेशी व्यापार, विदेशी नि-वेश; तेल, जैस एवं ऊर्जा प्रवाह से संबंधित आर्थिज एवं राज-ाय के मुद्दों पर; भारत के अ-य देशों एवं अंतराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ पारस्परिज आर्थिज क्रिया को प्रभावित ज र-े वाले अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष , विश्व बैंज, विश्व व्यापार संजठ-ा, WIPO आदि पर प्रश्-ा होंजे.

3. विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिजी, सूच-ा प्रौद्योजिजी एवं अंतरिज के जेत्र में विज ास

इस भाज में विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिजी, सूच-ा प्रौद्योजिजी, अंतरिज के जेत्रों में हुए विज ास एवं ज ंप्यूटर, रोबोटिक्स, -ै-ोटेक-ॉलॉजी, बायोटेक-ोलॉजी तथा बौद्धिज संपदा अधिज ारों से संबंधित मुद्दों की बुनियादी धारजा के प्रति अभ्यर्थी की जाजरूकता की परीजा के लिए प्रश्-ा होंजे.

4. अंतर्राष्ट्रीय मामले एवं संस्थाएं:

इस भाज में वैश्विज मामलों की महत्वपूर्ज घट-ाओं तथा अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के विषय में प्रश्-ा होंजे.

5. सांख्यिकीय विश्लेषज, आलेज एवं रेजाचित्र :

इस भाज से अभ्यर्थी सांख्यिकीय, आलेजों एवं रेजाचित्रों के रूप में प्रस्तुत सूच-ा से नि-ष्कर्ष नि-ाल-े और उ-ाज नि-र्वच-ा कर-े की योज्यता की परीजा की जाएजी.

कृषि विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

पारिस्थितिकी एवं मा-व के लिए उसकी प्रासंजिज ता, प्राकृतिज संसाध-ा, उ-ाके अ-ुरजज ज ा प्रबंध तथा संरजज. सस्य वितरज एवं उत्पाद-ा के जारजों के रूप में भौतिज एवं सामाजिज पर्यावरज. कृषि पारिस्थितिकी; पर्यावरज के संजेतज के रूप में सस्य प्रम. पर्यावरज प्रदूषज एवं फसलों को हो-े वाले इससे संबंधित जतरे. पशु एवं मा-ा. जलवायु परिवर्त-ा- अंतर्राष्ट्रीय अभिसमय एवं भूमंडलीय पहल. ग्री-ा हाऊस प्रभाव एवं भूमंडलीय ताप-ा. पारितंत्र विश्लेषज के प्रजत उपज रज- सुदूर संवेद-ा एवं भौजोलिज सूच-ा प्रजालियाँ.

देश के विभिन्न कृषि जलवायु जेत्रों में सस्य प्रम. सस्य प्रम में विस्थाप-ा पर अधिज पैदावार वाली तथा अल्पावधि जि स्मों ज ा प्रभाव. विभिन्न सस्य-ा एवं कृषि प्रजालियों की संज ल्प-ाएँ. जैव एवं परिशुद्धता कृषि. महत्वपूर्ज अ-ाज, दलह-ा, तिलह-ा, रेशा, शर्ज रा, वाजिज्यिज एवं चारा फसलों के उत्पाद-ा हेतु पैजे ज रीतियाँ.

विभिन्न प्रज ार के व-ा रोपज जैसे कि सामाजिज वानिकी, कृषि वानिकी एवं प्राकृतिज व-ों की मुज्य विशेषताएं तथा विस्तार. व-ा पादपों ज ा प्रसार. व-ोत्पाद. कृषि वानिकी एवं मूल्य परिवर्ध-ा. व-ों की व-ास्पतियों और जंतुओं ज ा संरजज.

जरपतवार, उ-ाकी विशेषताएं, प्रजीर्ज-ा तथा विभिन्न फसलों के साथ उ-ाकी संबद्धता; उ-ाज ा जुज-ा; जरपतवारों ज ा संवंधी, जैव तथा रासायनि-ज नियंत्रज.

मृदा-भौतिज, रासायनि-ज तथा जैविज जुजधर्म. मृदा रच-ा के प्रक्रम तथा ज ारज. भारत की मृदाएँ. मृदाओं के जनि-ज तथा ज ार्बनि-ज संघटज तथा मृदा उत्पादज ता अ-ुरजज में उ-ाकी भूमिज ा. पौधों के लिए आवश्यज पोषज तत्व तथा मृदाओं और पादपों के अ-य लाभज र तत्व. मृदा उर्वरता, मृदा परीजज एवं उर्वरज संस्ताव-ा के सिद्धांत. समाज लित पोषज तत्व प्रबंध. जैव उर्वरज . मृदा में -ाइट्रोज-ा की हानि, जलमज ्ा धा-ा-मृदा में -ाइट्रोज-ा उपयोज जमता. मृदा में -ाइट्रोज-ा योजिजीज रज. फास्फोरस एवं पोटैशियम ज ादज उपयोज. समस्याज-ाज मृदाएँ तथा उ-ाज ा सुधार. ग्री-ा हाऊस जैस उत्सर्ज-ा को प्रभावित ज र-े वाले मृदा ज ारज . मृदा संरजज, समाज लित जल-विभाज-ा प्रबंध-ा. मृदा अपरद-ा एवं इसज ा प्रबंध-ा. वर्षाधी-ा कृषि और इसकी समस्याएँ. वर्षा पोषित कृषि जेत्रों में कृषि उत्पाद-ा में स्थिरता ला-े की प्रौद्योजिजी.

सस्य उत्पाद-ा से संबंधित जल उपयोज जमता, सिंचाई ज ार्यक्रम के मा-दंड, सिंचाई जल की अपवाह हानि को ज म ज र-े की विधियाँ तथा साध-ा. ड्रिप तथा छिड़ज ाव द्वारा सिंचाई. जलाक्रांत मृदाओं से जलनि-ज ास, सिंचाई जल की जुजवत्ता, मृदा तथा जल प्रदूषज पर औद्योजिज बहिस्रावों ज ा प्रभाव. भारत में सिंचाई परियोज-ाएँ.

फार्म प्रबंध-ा, विस्तार, महत्व तथा विशेषताएँ, फार्म आयोज-ा. संसाध-ों ज ा इष्टतम उपयोज तथा बजट-ा. विभिन्न प्रज ार की कृषि प्रजालियों ज ा अर्थशास्त्र. विपज-ा प्रबंध-ा- विज ास की ज ार्य-ीतियाँ,

बाजार आसूच-ा. कीमत में उतार-चढ़ाव एवं उ-ाकी लाजत ;कृषि अर्थव्यवस्था में सहज ारी संस्थाओं की भूमिज ा; कृषि के प्रज ार तथा प्रजालियाँ और उ-ाके प्रभावित ज र-े वाले ज ारज . कृषि कीमत -ीति. फसल बीमा.

कृषि विस्तार, इसज ा महत्व और भूमिज ा, कृषि विस्तार ज ार्यक्रमों के मूल्यांज -ा की विधियाँ, सामाजिज -आर्थिज सर्वेजज तथा छोटे-बड़े और सीमांत कृषकों व भूमिही-ा कृषि श्रमिजों की स्थिति. विस्तार ज ार्यज र्ताओं के लिए प्रशिजज ज ार्यक्रम. कृषि प्रौद्योजिजी के प्रसार में कृषि विज्ञा-ा के -द्रों की भूमिज ा. जैर सरज ारी संजठ-ा तथा ग्रामीज विज ास के लिए स्व-सहायता उपाजम.

प्रश्-ापत्र-2

जोशिज ा संरच-ा, प्रज ार्य एवं जोशिज ा चक्र . आ-ुवंशिज उपादा-ा ज ा संश्लेषज, संरच-ा तथा प्रज ार्य. आ-ुवंशिज ता के नि-यम. जुजक्ता संरच-ा, जुजसूत्र विपथ-ा, सहलज-ाता एवं जी-ा-विनि-मय, एवं पु-र्योज-ा प्रज ा-ा में उ-ाकी सार्थज ता. बहुजुजिता, सुजुजित तथा असुजुजित. उत्परिवर्त-ा - एवं सस्य सुधार में उ-ाकी भूमिज ा. वंशाजतित्व, बंध्यता तथा असंयोज्यता, वर्जीज रज तथा सस्य सुधार में उ-ाज ा अ-ुप्रयोज. जोशिज ा द्रव्यी वंशाजति, लिंज सहलज-ा, लिंज प्रभावित तथा लिंज सीमित लजज.

पादप प्रज -ा-ा ज ा इतिहास. ज -ा-ा की विधियाँ, स्वनि-षेच-ा तथा संज रज प्रविधियाँ. सस्य पादपों ज ा उद्जम, विज ास एवं उपजाया जा-ा, उद्जम के -द्र, समजात श्रेजी ज ा नि-यम, सस्य आ-ुवंशिज संसाध-ा - संरजज तथा उपयोज. पादप प्रज -ा-ा के सिद्धांतों ज ा अ-ुप्रयोज, सस्य पादपों ज ा सुधार. आज्विज सूचज एवं पादप सुधार में उ-ाज ा अ-ुप्रयोज. शुद्ध वंशक्रम वरज, वंशावली, समूह तथा पु-ारावर्ती वरज, संयोजी जमता, पादप प्रज -ा-ा में इसज ा महत्व. संज र ओज एवं उसज ा उपयोज. ज ाय संज रज. रोज एवं पीड़ज प्रतिरोध के लिए प्रज -ा-ा. अंतराजातीय तथा अंतरावंशीय संज रज की भूमिज ा. सस्य सुधार में आ-ुवंशिज इंजीनि-यरी एवं जैव प्रौद्योजिजी की भूमिज ा. आ-ुवंशिज तः रूपांतरित सस्य पादप.

बीज उत्पाद-ा एवं प्रसंस्ज रज प्रौद्योजिजियां. बीज प्रमाज-ा, बीज परीजज एवं भंडारज. DNA फिंगरप्रिंटिंज एवं बीज पंजीज रज. बीज उत्पाद-ा एवं विपज-ा में सरज ारी एवं नि-जी जेत्रों की भूमिज ा. बौद्धिज संपदा अधिज ार संबंधी मामले.

पादप पोषज, पोषज तत्वों के अवशोषज, स्था-ा-तरज एवं उपापचय के संदर्भ में पादप ज ार्यिकी के सिद्धांत. मृदा-जल पादप संबंध.

प्रजि ज्व एवं पादप-वर्जज ; प्रज ाशसंश्लेषज- आधुनि-ज संज ल्प-ाएँ और इसके प्रक्रम को प्रभावित ज र-े वाले ज ारज, आक्सी व अ-ाक्सी श्वस-ा ; C_3, C_4 एवं CAM क्रियाविधियाँ. ज ार्बोहाइड्रेट, प्रोटी-ा एवं वसा

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

उपापचय. वृद्धि एवं परिवर्ध-ा ; दीप्तिजालिता एवं वसंतीजरज. पादप वृद्धि उपादा-ा एवं सस्य उत्पाद-ा में इ-ाजी भूमिजा. बीज परिवर्ध-ा एवं अ-ाुरज जी जार्यिजी; प्रसुप्ति. प्रतिबल जार्यिजी- वातप्रवाह, लवज एवं जल प्रतिबल. प्रमुज फल, बाजा-ा फसल, सब्जियाँ, मसाले एवं पुष्पी फसल. प्रमुज बागवा-ाी फसलों जी पैजेज रीतियाँ. संरजित जृषि एवं उच्च तज-ाीजी बागवा-ाी. तुड़ाई जे बाद जी प्रौद्योगिजी एवं फलों व सब्जियों जा मूल्यवर्ध-ा. भूसुदर्श-ाीजरज एवं वाजिज्यिज पुष्पजृषि. औषधीय एवं एरोमैटिज पौधे. मा-ाव पोषज में फलों व सब्जियों जी भूमिजा.

पीड़जों एवं फसलों, सब्जियों, फलोद्या-ाों एवं बाजा-ा फसलों जे रोगों जा निदा-ा एवं उ-ाजा आर्थिज महत्व. पीड़जों एवं रोगों जा वर्गीजरज एवं उ-ाजा प्रबंध-ा. भंडारज जे पीड़ज और उ-ाजा प्रबंध-ा. पीड़जों एवं रोगों जी जीव वैज्ञानिज रोजथाम. जा-ापदिज रोग विज्ञा-ा एवं प्रमुज फसलों जी पीड़जों व रोगों जा पूर्वा-ाुमा-ा. पादप संगरोध उपाय. पीड़ज -ााशज, उ-ाजा सूत्रज एवं जार्यप्रजार.

भारत में जाद्य उत्पाद-ा एवं उपभोज जी प्रवृत्तियां. जाद्य सुरजा एवं ज-ासंज्या वृद्धि-दृष्टि 2020 अन्न अधिशेष जे जारज. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जाद्य -ाीतियां, अधिप्राप्ति, वितरज जी बाध्यताएं.

जाद्यान्नों जी उपलब्धता, जाद्य पर प्रति व्यक्ति व्यय. जरीबी जी प्रवृत्तियाँ, ज-ा वितरज प्रजाली तथा जरीबी रेजा जे -ाीचे जी ज-ासंज्या, लज्यो-मुजी ज-ा वितरज प्रजाली (PDS)] भूमंडलीजरज जे संदर्भ में -ाीति जार्या-वय-ा. प्रज्रम बाध्यताएं. जाद्य उत्पाद-ा जा राष्ट्रीय आहार दिशा निर्देशों एवं जाद्य उपभोज प्रवृत्ति से संबंध. जुधाशम-ा जे लिए जाद्याधारित आहार उपाजम. पोषज तत्वों जी -ायू-ाता- सूज्म पोषज तत्व -ायू-ाता : प्रोटी-ा ऊर्जा जुपोषज या प्रोटी-ा जैलोरी जुपोषज (PEM या PCM), महिलाओं और बच्चों जी जार्यजमता जे संदर्भ में सूज्म पोषज तत्व -ायू-ाता एवं मा-ाव संसाध-ा विजास. जाद्यान्न उत्पादजता एवं जाद्य सुरजा.

पशुपाल-ा एवं पशुचिजित्सा विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

1. पशु पोषज :

1.1 पशु जे अंदर जाद्य ऊर्जा जा विभाज-ा. प्रत्यज एवं अप्रत्यज उष्मामिति. जार्ब-ा --ााइट्रोज-ा संतुल-ा एवं तुल-ाात्मज वध विधियां. रोमंथी पशुओं , सुअरों एवं जुक्कुटों में जाद्य जा ऊर्जामा-ा व्यक्त जर-ो जे सिद्धांत. अ-ाुरजज , वृद्धि, सजर्भता, स्त-य स्राव तथा अंडा, ऊ-ा एवं मांस उत्पाद-ा जे लिए ऊर्जा आवश्यजताएं.

1.2 प्रोटी-ा पोषज में -ावी-ातम प्रजति. ऊर्जा - प्रोटी-ा संबंध. प्रोटी-ा जुजता जा मूल्यांज-ा. रोमंथी आहार में NPN यौगिजों जा प्रयोज. अ-ाुरजज, वृद्धि, सजर्भता, स्त-य स्राव तथा अंडा, ऊ-ा एवं मांस उत्पाद-ा जे लिए प्रोटी-ा आवश्यजताएं.

1.3 प्रमुज एवं लेश ज-िज - उ-ाजे स्रोत , शरीरक्रियात्मज प्रजार्य एवं ही-ाता लजज. विषैले ज-िज. ज-िज अंतःक्रियाएं. शरीर में वसा-घुल-ाशील तथा जलघुल-ाशील ज-िजों जी भूमिजा, उ-ाजे स्रोत एवं ही-ाता लजज.

1.4 आहार संयोजी - मीथे-ा संदमज , प्रोबायोटिज , ए-जाइम , ऐंटिबायोटिज , हार्मो-ा , ओलिजो शर्जराइड , ऐंटिऑक्सिडेंट , पायसीजारज , संच संदमज , उभयरोधी, इत्यादि. हार्मो-ा एवं ऐंटिबायोटिक्स जैसे वृद्धिवर्धजों जा उपयोज एवं दुष्प्रयोज--ावी-ातम संजल्प-ााएं.

1.5 चारा संरजज. आहार जा भंडारज एवं आहार अवयव. आहार प्रौद्योगिजी एवं आहार प्रसंस्जरज में अभि-ाव प्रजति. पशु आहार में उपस्थित पोषजरोधी एवं विषैले जारज. आहार विश्लेषज एवं जुजता नियंत्रज. पाच-ाीयता अभिप्रयोज - प्रत्यज, अप्रत्यज एवं सूचज विधियां. चारज पशुओं में आहार ग्रहज प्राजुक्ति.

1.6 रोमंथी पोषज में हुई प्रजति. पोषज तत्व आवश्यजताएं. संतुलित राश-ा. बछड़ों, सजर्भ, जामजाजी पशुओं एवं प्रज-ा-ा सांड़ों जा आहार. दुधारू पशुओं जो स्त-यस्राव चक्र जी विभिन्न अवस्थाओं जे दौरा-ा आहार दे-ो जी युक्तियां. दुग्ध संयोज-ा आहार जा प्रभाव. मांस एवं दुग्ध उत्पाद-ा जे लिए बजरी / बजरे जा आहार. मांस एवं ऊ-ा उत्पाद-ा जे लिए भेंड़ जा आहार.

1.7 शूजर पोषज. पोषज आवश्यजताएं, विसर्पी, प्रवर्तज, विजास-ा एवं परिष्जारज राश-ा. बेचरबी मांस उत्पाद-ा हेतु शूजर - आहार. शूजर जे लिए जम लाजत जे राश-ा.

1.8 जुक्कुट पोषज. जुक्कुट पोषज जे विशिष्ट लजज. मांस एवं अंडा उत्पाद-ा हेतु पोषज आवश्यजताएं. अंडे दे-ो वालों एवं ब्रौलरों जी विभिन्न श्रेजियों जे लिए राश-ा संरूपज.

2. पशु शरीर क्रिया विज्ञा-ा :

2.1 रक्त जी जार्यिजी एवं इसजा परिसंचरज, श्वस-ा; उत्सर्ज-ा, स्वास्थ्य एवं रोजों में अंतःस्रावी ग्रंथि.

2.2 रक्त जे घटज - जुजधर्म एवं प्रजार्य - रक्त जोशिजा रच-ाा - हीमोज्लोबि-ा संश्लेषज एवं रसायनिजी - प्लाज्मा प्रोटी-ा उत्पाद-ा, वर्गीजरज एवं जुजधर्म, रक्त जा स्जंद-ा; रक्त स्रावी विजार - प्रतिस्जंदज -रक्त समूह -रक्त मात्रा - प्लाज्मा विस्तारज - रक्त में उभयरोधी प्रजाली. जैव रासायनिज परीजज एवं रोज -िदा-ा में उ-ाजा महत्व.

2.3 परिसंचरज - हृदय जी जार्यिजी, अभिहृद चक्र, हृदध्वनि, हृद्स्पंद, इलेक्ट्रोजार्डियोज्राम. हृदय जा जार्य और दजता - हृदय प्रजार्य में आय-ाों जा प्रभाव - अभिहृद पेशी जा उपापचय, हृदय जा तंत्रिजा - नियम-ा एवं रासायनिज नियम, हृदय पर ताप एवं त-ााव जा प्रभाव, रक्त दाब एवं अतिरिक्त दाब, परासरज नियम-ा, धम-ाी स्पंद, परिसंचरज जा वाहिजाप्रेरज नियम-ा, स्तब्धता, हृद एवं फुप्फुस परिसंचरज, रक्त मस्तिष्ज रोध - मस्तिष्ज तरल - पजियों में परिसंचरज.

2.4 श्वस-ा - श्वस-ा क्रिया विधि, गैसों जा परिवह-ा एवं विनिमय - श्वस-ा जा तंत्रिजा नियंत्रज, रसोज्राही, अल्पआक्सीयता, पजियों में श्वस-ा.

2.5 उत्सर्ज-ा - वृक्ज जी संरच-ाा एवं प्रजार्य - मूत्र निर्माज - वृक्ज प्रजार्य अध्यय-ा विधियां - वृक्जीय अम्ल - जार संतुल-ा नियम-ा :मूत्र जे शरीरक्रियात्मज घटज - वृक्ज पात - निश्चेष्ट शिरा रक्ताधिक्य - चूजों में मूत्र स्रवज - स्वेदग्रंथियां एवं उ-ाजे प्रजार्य. मूत्रीय दुष्क्रिया जे लिए जैवरासायनिज परीजज.

2.6 अंतः स्रावी ग्रंथियां - प्रजार्यात्मज दुष्क्रिया उ-ाजे लजज एवं निदा-ा. हार्मो-ाों जा संश्लेषज, स्रवज जी क्रियाविधि एवं नियंत्रज - हार्मो-ाीय ग्राही - वर्गीजरज एवं प्रजार्य.

2.7 वृद्धि एवं पशु उत्पाद-ा - प्रसवपूर्व एवं प्रसव पश्चात् वृद्धि, परिपक्वता, वृद्धिवक्र, वृद्धि जे माप, वृद्धि जो प्रभावित जर-ो वाले जारज, ज-फार्मेश-ा, शारीरिज जठ-ा, मांस जुजता.

2.8 दुग्ध उत्पाद जी जार्यिजी, ज-ा-ा एवं पाच-ा - स्त-ा विजास जे हार्मो-ाीय नियंत्रज जी वर्तमा-ा स्थिति, दुग्ध स्रवज एवं दुग्ध निष्जास-ा, -ार एवं मादा ज-ा-ा अंज, उ-ाजे अवयव एवं प्रजार्य. पाच-ा अंज एवं उ-ाजे प्रजार्य.

2.9 पर्यावरजीय जार्यिजी - शरीर क्रियात्मज संबंध एवं उ-ाजा नियम-ा, अ-ाुजूल-ा जी क्रिया विधि, पशु व्यवहार में शामिल पर्यावरजीय जारज एवं नियामज क्रियाविधियां, जलवायु विज्ञा-ा - विभिन्न प्राचल एवं उ-ाजा महत्व. पशु पारिस्थितिजी, व्यवहार जी जार्यिजी, स्वास्थ्य एवं उत्पाद-ा पर त-ााव जा प्रभाव.

3. पशु ज-ा-ा :

वीर्य जुजता - संरजज एवं जृत्रिम वीर्यसेच-ा - वीर्य जे घटज, स्पर्मेटाजोआ जी रच-ाा, स्जलित वीर्य जा भौतिज एवं रासायनिज जुजधर्म, जीवे एवं पात्रे वीर्य जो प्रभावित जर-ो वाले जारज. वीर्य उत्पाद-ा एवं जुजता जो प्रभावित जर-ो वाले जारज. संरजज, त-ाुजारजों जी रच-ाा, शुक्राजु संज्रेन्द्रज, त-ाुजृत वीर्य जा परिवह-ा. जायों, भेड़ों, बजरों शूजरों एवं जुक्कुटों में जह-ा प्रशीत-ा क्रियाविधियां. स्त्रीमद जी पहचा-ा तथा बेहतर जर्भाधा-ा हेतु वीर्यसेच-ा जा समय. अमद अवस्था एवं पु-ारावर्ती प्रज-ा-ा.

4. पशुध-ा उत्पाद-ा एवं प्रबंध :

4.1 वाजिज्यिज डेरी फार्मिंज - उन्नत देशों जे साथ भारत जी डेरी फार्मिंज जी तुल-ाा. मिश्रित जृषि जे अधी-ा एवं विशिष्ट जृषि जे रूप में डेरी उद्योज. आर्थिज डेरी फार्मिंज. डेरी फार्म शुरू जर-ाा, पूंजी एवं भूमि आवश्यजताएं, डेरी फार्म जा संजठ-ा. डेरी फार्मिंज में अवसर, डेरी पशु जी दजता जो निर्धारित जर-ो वाले जारज. यूथ अभिलेज-ा, बजट-ा, दुग्ध उत्पाद-ा जी लाजत, जीमत निर्धारज -ाीति, जार्मिज प्रबंध. डेरी जोपशुओं जे लिए व्यावहारिज एवं जिफायती राश-ा विजसित जर-ाा; वर्ष भर हरे चारे जी पूर्ति, डेरी फार्म हेतु आहार एवं चारे जी आवश्यजताएं. छोटे पशुओं एवं सांड़ों, बछियों एवं प्रज-ा-ा पशुओं जे लिए आहार प्रवृतियां; छोटे एवं वयस्ज पशुध-ा आहार जी -ाई प्रवृतियां, आहार अभिलेज.

4.2 वाजिज्यिज मांस, अंडा एवं ऊ-ा उत्पाद-ा - भेड़, बजरी, शूजर, जरजोश एवं जुक्कुट जे लिए व्यावहारिज एवं जिफायती राश-ा विजसित जर-ाा. चारे, हरे चारे जी पूर्ति, छोटे एवं परिपक्व पशुध-ा जे लिए आहार प्रवृतियां. उत्पाद-ा बढ़ा-ो एवं प्रबंध-ा जी -ाई प्रवृतियां. पूंजी एवं भूमि आवश्यजताएं एवं सामाजिज आर्थिज संजल्प-ाा.

4.3 सूजा, बाढ़ एवं अ-य -ौसर्जिज आपदाओं से ग्रस्त पशुओं जा आहार एवं उ-ाजा प्रबंध.

5. आ-ाुवंशिजी एवं पशु - प्रज-ा-ा :

पशु आ-ाुवंशिजी जा इतिहास. सूत्री विभाज-ा एवं अर्धसूत्री विभाज-ा: मेंडल जी वंशाजति; मेंडल जी आ-ाुवंशिजी से विचल-ा ;जी-ा जी अभिव्यक्ति; सहलज्-ाता एवं जी-ा - विनिमय-ा; लिंज निर्धारज, लिंज प्रभावित एवं लिंज सीमित लजज; रक्त समूह एवं बहुरूपता; जुजसूत्र विपथ-ा; जोशिज द्रव्य वंशाजति. जी-ा एवं इसजी संरच-ाा आ-ाुवंशिज पदार्थ जे रूप में DNA;आ-ाुवंशिज जूट एवं प्रोटी-ा संश्लेषज ;पु-ार्योजज DNA प्रौद्योगिजी. उत्परिवर्त-ा, उत्परिवर्त-ा जे प्रजार, उत्परिवर्त-ा एवं उत्परिवर्त-ा दर जो पहचा-ा-ो जी विधियां, पारज-ा-ा.

5.1 पशु प्रज-ा-ा पर अ-ाुप्रयुक्त समष्टि आ-ाुवंशिजी - मात्रात्मज और इसजी तुल-ाा में जुजात्मज विशेषज; हार्डी वी-ाबर्ज नियम; समष्टि और इसजी तुल-ाा में व्यष्टि; जी-ा एवं जी-ा प्ररूप बारंबारता; जी-ा बारंबारता जो परिवर्तित जर-ो वाले बल; यादृच्छिज अपसरज एवं लघु समष्टियां; पथ जुजांज जा सिद्धांत; अंत-प्रज-ा-ा, अंत-प्रज-ा-ा जुजांज आजल-ा जी विधियां, अंतः प्रज-ा-ा प्रजालियां, प्रभावी समष्टि आजार; विभिन्नता संवितरज; जी-ा प्ररूप x पर्यावरज सहसंबंध एवं जी-ा प्ररूप x पर्यावरज अंतःक्रिया; बहु मापों जी भूमिजा;संबंधियों जे बीच समरूपता.

5.2 प्रज-ा-ा तंत्र - पशुध-ा एवं जुक्कुटों जी -ास्लें, वंशाजतित्व, पु-ारावर्त-ाीयता एवं आ-ाुवंशिज एवं समलजजीय सहसंबंध, उ-ाजी आजल-ा विधि एवं आजल-ा परिशुद्धि; वरज जे साध-ा एवं उ-ाजी संजत योज्यताएं; व्यष्टि, वंशावली, जुल एवं जुलांतर्जत वरज; संतति परीजज; वरज विधियां; वरज सूचजों जी रच-ाा एवं उ-ाजा उपयोज; विभिन्न वरज विधियों द्वारा आ-ाुवंशिज लब्धियों जा तुल-ाात्मज मूल्यांज-ा; अप्रत्यज वरज एवं सहसंबंधित अ-ाुक्रिया; अंतःप्रज-ा-ा, बहिःप्रज-ा-ा, अपग्रेडिंज, संजरज एवं प्रज-ा-ा संश्लेषज; अंतः प्रजति लाइ-ाों जा वाजिज्यिज प्रयोज-ाों हेतु संजरज; सामा-य एवं विशिष्ट संयोज-ा योज्यता हेतु वरज; देहली लजजों जे लिए प्रज-ा-ा. सायर इंडेक्स.

6. विस्तार :

विस्तार जा आधारभूत दर्श-ा, उद्देश्य, संजल्प-ाा एवं सिद्धांत. जिसा-ाों जो ज्रामीज दशाओं में शिजित जर-ो जी विभिन्न विधियां. प्रौद्योगिजी पीढ़ी, इसजा अंतरज एवं प्रतिपुष्टि. प्रौद्योगिजी अंतरज में समस्याएं एवं जठि-ााइयां. ज्रामीज विजास हेतु पशुपाल-ा जार्यक्रम.

प्रश्-ापत्र-2

1. शरीर रच-ाा विज्ञा-ा , भेषज जुज विज्ञा-ा एवं स्वास्थ्य विज्ञा-ा :

1.1 ऊतज विज्ञा-ा एवं उतजीय तज-ाीज :उतज प्रज्रमज एवं H.E अभिरंज-ा जी पैराफी-ा अंतःस्थापित तज-ाीज - हिमीजरज माइक्रोटोमी - सूज्मदर्शिजी - दीप्त जेत्र सूज्मदर्शी एवं इलेक्ट्रा-ा सूज्मदर्शी. जोशिजा जी जोशिजाविज्ञा-ा संरच-ाा, जोशिजांज एवं अंतर्वेश-ा; जोशिजा विभाज-ा - जोशिजा प्रजार - ऊतज एवं उ-ाजा वर्गीजरज - भ्रूजीय एवं वयस्ज ऊतज - अंजों जा तुल-ाात्मज ऊतज विज्ञा-ा - संवह-ाी. तंत्रिजा, पाच-ा, श्वस-ा, पेशी जंजाली एवं ज-ा-ामूत्र तंत्र - अंतःस्रावी ग्रंथियां - अध्यावरज - संवेदी अंज.

1.2 भ्रूज विज्ञा-ा - पजिवर्ज एवं घरेलू स्त-ापायियों जे विशेष संदर्भ जे साथ जशेरुजियों जा भ्रूज विजास - युज्मज ज-ा-ा-निषेच-ा-ज-ा-ा स्तर- जर्भ झिल्ली एवं अपरा-यास - घरेलू स्त-ापायियों में अपरा जे प्रजार - विरूपताविज्ञा-ा - यमल एवं यमल-ा - अंजविजास - ज-ा-ा स्तर व्युत्पन्न - अंतश्चर्मी , मध्यचर्मी एवं बहिर्चर्मी व्युत्पन्न.

1.3 जो - शारीरिजी - जेत्रीय शारीरिजी : वृषभ जे पैरा-ासीय जोटर - लारग्रंथियों जी बहिस्तल शारीरिजी. अव-ोत्रजोटर, जंभिजा, चिबुज - जूपिजा, मा-सिज एवं शृंजी तंत्रिजा रोध जी जेत्रीय शारीरिजी. पराजशेरुज तंत्रिजाओं जी जेत्रीय शारीरिजी, जुह्य तंत्रिजा, मध्यम तंत्रिजा, अंतःप्रजोष्ठिजा तंत्रिजा एवं बहिः प्रजोष्ठिजा तंत्रिजा - अंतर्जंघिजा ,बहिर्जंघिजा एवं अंजुलि तंत्रिजाएं - जपाल तंत्रिजाएं - अधिदृढ़तानिजा संज्ञाहरज में शामिल संरच-ााएं - उपरिस्थ लसीजा पर्व - वजीय , उदरीय तथा श्रोजीय जुहिजा जे अंतरांजों जी बहिस्तर शारीरिजी - जतितंत्र जी तुल-ाात्मज विशेषताएं एवं स्त-ापायी शरीर जी जैवयांत्रिजी में उ-ाजा अ-ाुप्रयोज.

1.4 जुक्कुट शारीरिजी - पेशी - जंजाली तंत्र - श्वस-ा एवं उड़-ो जे संबंध में प्रजार्यात्मज शारीरिजी , पाच-ा एवं अंडोत्पाद-ा.

1.5 भेषज जुज विज्ञा-ा एवं भेषज बलजतिजी जे जोशिजीय स्तर. तरलों पर जार्यजारी औषधें एवं विद्युत अपघट्य संतुल-ा. स्वसंचालित तंत्रिजा तंत्र पर जार्यजारी औषधें. संज्ञाहरज जी आधुनिज संजल्प-ााएं एवं वियोजी संज्ञाहरज. ऑटाजॉइड. प्रतिरोजाजु एवं रोजाजु संक्रमज में रसाय-ा चिजित्सा जे सिद्धांत. चिजित्साशास्त्र में हार्मो-ाों जा उपयोज-परजीवी संक्रमजों में रसाय-ा चिजित्सा. पशुओं जे जाद्य ऊतजों में औषध एवं आर्थिज सरोजार - अर्बुद रोजों में रसाय-ा चिजित्सा. जीट-ााशजों, पौधों, धातुओं, अधातुओं , जंतुविषों एवं जवजविषों जे जारज विषालुता.

1.6 जल, वायु एवं वासस्था-ा जे संबंध जे साथ पशु स्वास्थ्य विज्ञा-ा - जल, वायु एवं मृदा प्रदूषज जा आजल-ा - पशु स्वास्थ्य में जलवायु जा महत्व - पशु जार्य एवं निष्पाद-ा में पर्यावरज जा प्रभाव - पशु जृषि एवं औद्योजीजरज जे बीच संबंध - विशेष श्रेजी जे घरेलू पशुओं, यथा, सजर्भा जौ एवं शूजरी, दुधारू जाय, ब्रायलर पजी जे लिए आवास आवश्यजताएं - पशु वासस्था-ा जे संबंध में त-ााव, श्रांति एवं उत्पादजता.

2. पशु रोज :

2,1 जोपशु , भेड़ तथा अजा, घोड़ा , शूजर तथा जुक्कुट जे संक्रामज रोजों जा रोजजारज , जा-ापदित रोज विज्ञा-ा, रोजज-ा-ा, लजज, मरजोत्तर विजति, निदा-ा एवं नियंत्रज.

2.2 जोपशु, घोड़ा , शूजर एवं जुक्कुट जे उत्पाद-ा रोजों जा रोजजारज , जा-ापदित रोज विज्ञा-ा, लजज, निदा-ा, उपचार.

2.3 घरेलू पशुओं और पजियों जे ही-ाता रोज.

2.4 अंतर्घट्ट-ा, अफरा, प्रवाहिजा ,अजीर्ज , निर्जलीजरज, आघात, विषाक्तता जैसी अविशिष्ट दशाओं जा निदा-ा एवं उपचार.

2.5 तंत्रिजा वैज्ञानिज विजारों जा निदा-ा एवं उपचार.

2.6 पशुओं जे विशिष्ट रोजों जे प्रति प्रतिरजीजरज जे सिद्धांत एवं विधियां - यूथ प्रतिरजा - रोजमुक्त जेत्र शू-य रोज संजल्प-ाा - रसाय-ा रोज निरोध.

2.7 संज्ञाहरज - स्थानिज , जेत्रीय एवं सार्वदेहिज -

संज्ञाहरज पूर्व औषध प्रदा-ा. अस्थिभंज एवं संधिच्युति में लजज एवं शल्य व्यतिजरज. हर्निया, अवरोध, चतुर्थ आमाशयी विस्थाप-ा - सिजेरिया-ा शस्त्रजर्म. रोमंथिजा - छेद-ा - ज-ाद-ााश-ा.

2.8 रोज जांच तज-ाीज - प्रयोजशाला जांच हेतु सामज्री - पशु स्वास्थ्य जे-द्रों जी स्थाप-ाा - रोजमुक्त जेत्र.

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

3. **सार्वजनिक पशु स्वास्थ्य :**

3.1 पशुज-य रोज - वर्जीकरज, परिभाषा, पशुज-य रोजों की व्यापकता एवं प्रसार में पशुओं एवं पक्षियों की भूमिका - पेशाजत पशुज-य रोज.

3.2 जा-पदिक रोज विज्ञा-ा - सिद्धांत, जा-पदिक रोज विज्ञा-ा संबंधी पदावली की परिभाषा, रोज तथा उ-की रोकथाम के अध्यय-ा में जा-पदिक रोजविज्ञा-ी उपायों का अ-ुप्रयोज. वायु जल तथा जाद्य जनित संक्रमणों के जा-पदिक रोज विज्ञा-ीय लजज, OIE वि-ियम, WTO स्वच्छता एवं पादप - स्वच्छता उपाय.

3.3 पशुचिकित्सा विधिशास्त्र - पशुजुजवत्ता सुधार तथा पशु रोज निवारज के लिए नियम एवं वि-ियम - पशुजनित एवं पशु उत्पाद जनित रोजों के निवारज हेतु राज्य एवं के-द्र के नियम -SPCA-पशु चिकित्सा - विधिक मामले - प्रमाजपत्र - पशु चिकित्सा - विधिक जांच हेतु -मू-ों के संग्रहज की सामग्रियां एवं विधियां.

4. **दुग्ध एवं दुग्धोत्पाद प्रौद्योजिकी :**

4.1 बाजार का दूध : कच्चे दूध की जुजता, परीजज एवं कोटि निर्धारज. प्रसंस्करज, परिवेष्ट-ा, भंडारज, वितरज, विपज-ा, दोष एवं उ-की रोकथाम. नि-ालिजित प्रकार के दूध को ब-ा-ा:पाश्चुरीकृत, मा-कित, टो-ड, डबल टो-ड, निर्जीवाजुकृत, समांगीकृत, पु-र्निमित पु-र्संयोजित एवं सुवासित दूध. संवर्धित दूध तैयार कर-ा, संवर्ध-ा तथा उ-का प्रबंध, योजर्ट, दही, लस्सी एवं श्रीजंड. सुवासित एवं निर्जीवाजुकृत दूध तैयार कर-ा. विधिक मा-क. स्वच्छ एवं सुरजित दूध तथा दुग्ध संयंत्र उपस्कर हेतु स्वच्छता आवश्यकताएं.

4.2 दुग्ध उत्पाद प्रौद्योजिकी : कच्ची सामग्री का चय-ा, क्रीम, मक्ज-ा, घी, जोया, छे-ा, चीज, संघनित, वाष्पित, शुष्कित दूध एवं शिशु आहार, आइसक्रीम तथा कुल्फी जैसे दुग्ध उत्पादों का प्रसंस्करज, भंडारज, वितरज एवं विपज-ा;उपोत्पाद, छे-े के पा-ी के उत्पाद, छाछ (बटर मिल्क), लैक्टोज एवं केसी-ा. दूध उत्पादों का परीजज, कोटि - निर्धारज, उ-हें परज-ा. BISएवं एजमार्क वि-िर्देश-ा, विधिक मा-क, जुजता नियंत्रज एवं पोषक जुज. संवेष्ट-ा, प्रसंस्करज एवं संक्रियात्मक नियंत्रज. डेरी उत्पादों का लाजत निर्धारज.

5. **मांस स्वास्थ्य विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिकी :**

5.1 मांस स्वास्थ्य विज्ञा-ा

5.1.1 जाद्य पशुओं की मृत्यु पूर्व देजभाल एवं प्रबंध, विसंज्ञा, वध एवं प्रसाध-ा संक्रिया; वधशाला आवश्यकताएं एवं अभिकल्प ;मांस निरीजज प्रक्रियाएं एवं पशुशव मांसजंडों को परज-ा - पशुशव मांस जंडों का कोटि निर्धारज - पुष्टिकर मांस उत्पाद-ा में पशुचिकित्सकों के कर्तव्य और कार्य.

5.1.2 मांस उत्पाद-ा सँभाल-े की स्वास्थ्यकर विधियाँ - मांस का बिजड़-ा एवं इसकी रोकथाम के उपाय- वधोपरांत मांस में भौतिक -रासायनिक परिवर्त-ा एवं इ-हें प्रभावित कर-े वाले कारक - जुजता सुधार विधियाँ - मांस में मिलावट एवं इसकी पहचा-ा - मांस व्यापार एवं उद्योज में नियामक उपबंध.

5.2 **मांस प्रौद्योजिकी :**

5.2.1 मांस के भौतिक एवं रासायनिक लजज - मांस इमल्श-ा - मांसपरीजज की विधियां - मांस एवं मांस उत्पाद-ा का संसाध-ा, डिब्बाबंदी, किरज-ा, संवेष्ट-ा, प्रसंस्करज एवं संयोज-ा.

5.3 उपोत्पाद - वधशाला उपोत्पाद एवं उ-के उपयोज - जाद्य एवं अजाद्य उपोत्पाद - वधशाला उपोत्पाद के समुचित उपयोज के सामाजिक एवं आर्थिक निहितार्थ - जाद्य एवं भैषजिक उपयोज हेतु अंज उत्पाद.

5.4 कुक्कुट उत्पाद प्रौद्योजिकी - कुक्कुट मांस के रासायनिक संघट-ा एवं पोषक मा-ा - वध की देजभाल तथा प्रबंध. वध की तक-ीकें, कुक्कुट मांस एवं उत्पादों का निरीजज, परिरजज. विधिक एवं BIS मा-क. अंडों की संरच-ा, संघट-ा एवं पोषक मा-ा. सूक्ष्मजीवी विकृति. परिरजज एवं अ-ुरजज. कुक्कुट मांस, अंडों एवं उत्पादों का विपज-ा, मूल्य वर्धित मांस उत्पाद.

5.5 जरजोश/फर वाले पशुओं की फार्मिंज - जरजोश मांस उत्पाद-ा. फर एवं ऊ-ा का निपटा-ा एवं उपयोज तथा अपशिष्ट उपोत्पादों का पु-ःश्चक्रज. ऊ-ा का कोटिनिर्धारज.

नृ विज्ञान

प्रश्-ापत्र-1

1.1 नृविज्ञान का अर्थ, विषय क्षेत्र एव विकास.

1.2 अन्य विषयों के साथ संबंध : सामाजिक विज्ञान, व्यवहारपरक विज्ञान, जीव विज्ञान, आयुर्विज्ञान, भू-विषयक विज्ञान एवं मानविकी.

1.3 नृविज्ञान की प्रमुख शाखाएं, उनका क्षेत्र तथा प्रासंगिकता :

(क) सामाजिक-सांस्कृतिक नृविज्ञान.

(ख) जैविक विज्ञान.

(ग) पुरातत्व-नृविज्ञान.

(घ) भाषा-नृविज्ञान.

1.4 मानव विकास तथा मनुष्य का आविर्भाव :

(क) मानव विकास में जैव एवं सांस्कृतिक कारक

(ख) जैव विकास के सिद्धांत (डार्विन-पूर्व, डार्विन कालीन एवं डार्विनोत्तर)

(ग) विकास का संश्लेषणात्म सिद्धांत ; विकासात्मक जीव विज्ञान की रूपावली एवं संकल्पनाओं की संक्षिप्त रूपरेखा (डॉल का नियम, कोप का नियम, गॉस का नियम, समांतरवाद, अभिसरण, अनुकूली विकिरण एवं मोज़ेक विकास)

1.5 नर-वानर की विशेषताएं ; विकासात्मक प्रवृत्ति एवं नर-वानर वर्गिकी ;

नर-वानर अनुकूलन; (वृक्षीय एवं स्थलीय) नर-वानर वर्गिकी;

नर-वानर व्यवहार, तृतीयक एवं चतुर्थक जीवाश्म नर-वानर;

जीवित प्रमुख नर-वानर; मनुष्य एवं वानर की तुलनात्मक शरीर-रचना;

नृ संस्थिति के कारण हुए कंकालीय परिवर्तन एवं हल्के निहितार्थ.

1.6 जातिवृत्तीय स्थिति, निम्नलिखित की विशेषताएं एवं भौगोलिक वितरण :

(क) दक्षिण एवं पूर्व अफ्रीका में अतिनूतन अत्यंत नूतन होमिनिड-आस्ट्रेलोपिथेसिन

(ख) होमोइरेक्टसः अफ्रीका (पैरेन्थ्रोपस), यूरोप (होमोइरेक्टस हीडेल बर्जेन्सिस), एशिया (होमोइरेक्टस जावानिकस, होमो इरेक्टस पेकाइनेन्सिस)

(ग) निएन्डरथल मानव-ला-शापेय-ओ-सैंत (क्लासिकी प्रकार), माउंट कारमेस (प्रगामी प्रकार)

(घ) रोडेसियन मानव.

(च) होमो-सैपिएन्स - क्रोमैग्नन, ग्रिमाली एवं चांसलीड.

1.7 जीवन के जीववैज्ञानिक आधार : कोशिका, DNA संरचना एवं प्रतिकृति, प्रोटीन संश्लेषण, जीन, उत्परिवर्तन, क्रोमोसोम एवं कोशिका विभाजन.

1.8 (क) प्रागैतिहासिक पुरातत्व विज्ञान के सिद्धांत/ कालानुक्रम : सापेक्ष एवं परम काल निर्धारण विधियाँ.

(ख) सांस्कृतिक विकास - प्रागैतिहासिक संस्कृति की स्थूल रूपरेखा

(i) पुरापाषाण

(ii) मध्य पाषाण

(iii) नव पाषाण

(iv) ताम्र पाषाण

(v) ताम्र-कांस्य युग

(vi) लोह युग

2.1 संस्कृति का स्वरूपः संस्कृति और सभ्यता की संकल्प-ा एवं विशेषता; सांस्कृतिक सापेजवाद की तुल-ा में -ृजाति केंद्रिकता.

2.2 समाज का स्वरूप : समाज की संकल्पना ; समाज एवं संस्कृति ; सामाजिक संस्थाएँ; सामाजिक समूह; एवं सामाजिक स्तरीकरण.

2.3 विवाह : परिभाषा एवं सार्वभौमिकता ; विवाह के नियम (अंतर्विवाह, बहिर्विवाह, अनुलोमविवाह, अगम्यगमन निषेध); विवाह के प्रकार (एक विवाह प्रथा, बहु विवाह प्रथा, बहुपति प्रथा, समूह विवाह). विवाह के प्रकार्य; विवाह विनियम (अधिमान्य, निर्दिष्ट एवं अभिनिषेधक); विवाह भुगतान (वधू धन एवं दहेज).

2.4 परिवार : परिभाषा एवं सार्वभौमिकता; परिवार, गृहस्थी एवं गृह्य समूह; परिवार्य के प्रकार्य; परिवार के प्रकार (संरचना, रक्त- संबंध, विवाह, आवास एवं उत्तराधिकार के परिप्रेक्ष्य से); नगरीकरण, औद्योगीकरण एवं नारी अधिकारवादी आंदोलनों का परिवार पर प्रभाव.

2.5 -ातेदारी : रक्त संबंध एवं विवाह संबंध ; वंशा-ुक्रम के सिद्धांत एवं प्रकार (एकरैजीय, द्वैध, द्विपजीय, उभयरैजीय) ; वंशा-ुक्रम समूह के रूप (वंशपरंपरा, जोत्र, फ्रेटरी, मोइटी एवं संबंधी); -ातेदारी शब्दावली (वर्ज-ात्मक एवं वर्जीकारक); वंशा-ुक्रम, वंशा-ुक्रमज एवं पूरक वंशा-ुक्रमज; वंशा-ुक्रम एवं सहबंध.

3. आर्थिक संजठ-ा : अर्थ, जेत्र एवं आर्थिक -ृविज्ञा-ा की प्रासंजिकता; रूपवादी एवं तत्ववादी बहस ; उत्पाद-ा, वितरज एवं समुदायों में विनिमय (अ-ो-यता, पु-र्वितरज एवं बाजार), शिकार एवं संग्रहज, मत्स्य-ा, स्विडेनिंज, पशुचारज, उद्या-ाकृषि एवं कृषि पर निर्वाह; भूमंडलीकरज एवं देशी आर्थिक व्यवस्थाएं.

4. राज-ैतिक संजठ-ा एवं सामाजिक नियंत्रज : टोली, ज-जाति, सरदारी, राज एवं राज्य ; सत्ता, प्राधिकार एवं वैधता की संकल्प-ाएं ; सरल समाजों में सामाजिक नियंत्रज, विधि एवं -याय.

5. धर्म : धर्म के अध्यय-ा में -ृवैज्ञानिक उपाजम (विकासात्मक, म-ोवैज्ञानिक एवं प्रकार्यात्मक) ; एके श्वरवाद; पवित्र एवं अपाव-ा; मिथक एवं कर्मकांड; ज-जातीय एवं कृषक समाजों में धर्म के रूप (जीववाद, जीवात्मावाद, जड़पूजा, प्रकृतिपूजा एवं जर्जाचह-ावाद); धर्म, जादू एवं विज्ञा-ा विशिष्ट; जादुई-धार्मिक कार्यकर्ता (पुजारी, शम-ा, ओझा, ऐंद्रजालिक और डाइ-ा).

6. -ृवैज्ञानिक सिद्धांत :

(क) क्लासिकी विकासवाद (टाइलर, मॉर्ज-ा एवं फ्रेजर)

(ज) ऐतिहासिक विशिष्टतावाद (बोआस) ; विसरजवाद (ब्रिटिश, जर्म-ा एवं अमरीकी)

(ज) प्रकार्यवाद (मैलि-ोव्स्की); संरच-ा-प्रकार्यवाद (रैडक्लिफ-ब्राउ-ा)

(घ) संरच-ाावाद (लेवी स्ट्राश एवं ई लीश)

(च) संस्कृति एवं व्यक्तित्व (बे-ेडिक्ट, मीड, लिंट-ा, कार्डि-र एवं कोरा-दु-बुवा)

(छ) -व-विकासवाद (चिल्ड, व्हाइट, स्ट्यूवर्ड, शाहलि-स एवं सर्विस)

(ज) सांस्कृतिक भौतिकवाद (हैरिस)

(झ) प्रतीकात्मक एवं अर्थनिरूपी सिद्धांत (ट-र, श-ाइडर, एवं जीर्ट्ज़).

(क) संज्ञा-ात्मक सिद्धांत (टाइलर कांक्लि-ा)

(ख) -ृविज्ञा-ा में उत्तर-आधुनिकतावाद

7. संस्कृति, भाषा एवं संचार : भाषा का स्वरूप, उद्जम एवं विशेषताएँ ; वाचिक एवं अवाचिक संप्रेषज ; भाषा प्रयोज के सामाजिक संदर्भ ।

8. -ृ विज्ञा-ा में अ-ुसंधा-ा पद्धतियाँ :

(क) -ृविज्ञा-ा में जेत्रकार्य परंपरा

(ज) तक-ीक, पद्धति एवं कार्य विधि के बीच विभेद

(ज) दत्त संग्रहज के उपकरज: प्रेजज, साजात्कार, अ-ुसूचियाँ, प्रश्-ावली, केस अध्यय-ा, वंशावली, मौजिक इतिवृत्त, सूच-ा के द्वितीयक स्रोत, सहभाजिता पद्धति.

(घ) दत्त का विश्लेषज, निर्वच-ा एवं प्रस्तुतीकरज.

9.1 मा-व आ-ुवंशिकी -पद्धति एवं अ-ुप्रयोज : म-ुष्य परिवार अध्यय-ा में आ-ुवंशिक सिद्धांतों के अध्यय-ा की पद्धतियाँ (वंशावली विश्लेषज, युग्म अध्यय-ा, पोष्यपुत्र, सह-युग्म पद्धति, कोशिका-ज-ानिक पद्धति, जुजसूत्री एवं के-द्रक प्ररूप विश्लेषज), जैव रसाय-ी पद्धतियाँ, रोधजमतात्मक पद्धतियाँ, D.N.A. प्रौद्योजिकी एवं पु-र्योजज प्रौद्योजिकियाँ.

9.2 म-ुष्य-परिवार अध्यय-ा में मेंडेलीय आ-ुवांशिकी, म-ुष्य में एकल उपादा-ा, बहु उपादा-ा, घातक, अवघातक एवं अ-ेक जी-ी वंशाजति.

9.3 आ-ुवंशिक बहुरूपता एवं वरज की संकल्प-ा, मेंडेलीय ज-ा संख्या, हार्डी-वी-ा वर्ज नियम; बारंबारता में कमी ला-े वाले कारज एवं परिवर्त-ा-उत्परिवर्त-ा, विलज-ा, प्रवास-ा, वरज, अंतःप्रज-ा-ा एवं आ-ुवंशिक च्युति. समरक्त एवं असमरक्त समाजम, आ-ुवंशिक भार, समरक्त एवं भजि-ी-बंधु विवाहों के आ-ुवंशिक प्रभाव.

9.4 जुजसूत्र एवं म-ुष्य में जुजसूत्री विपथ-ा, क्रियाविधि:

(क) संख्यात्मक एवं संरच-ात्मक विपथ-ा (अव्यवस्थाएँ)

(ज) लिंज जुजसूत्री विपथ-ा- क्लाइ-फेल्टर (xxy), ट-र (xo),अधिजाया (xxx),अंतर्लिंज एवं अ-य संलजजात्मक अव्यवस्थाएँ.

(ज) अलिंज सूत्री विपथ-ा- डाउ-ा संलजज, पातो, एडवर्ड एवं क्रि-दु-शाँ संलजज

(घ) मा-व रोजों में आ-ुवंशिक अध्यं-ा, आ-ुवंशिक स्क्रीनिंज, आ-ुवंशिक उपबोध-ा, मा-व DNA प्रोफाइलिंज, जी-ा मैपिंज एवं जी-ोम अध्यय-ा.

9.5 प्रजाति एवं प्रजातिवाद, दूरीक एवं अदूरीक लजजों की आकारिकीय विभिन्नताओं का जीववैज्ञानिक आधार. प्रजातीय निकष, आ-ुवंशिकता एवं पर्यावरज के संबंध में प्रजातीय विशेषक ; म-ुष्य में प्रजातीय वर्जीकरज, प्रजातीय विभेद-ा एवं प्रजाति संकरज का जीव वैज्ञानिक आधार.

9.6 आ-ुवंशिक चिह्-क के रूप में आयु, लिंज एवं ज-संख्या विभेद - ABO, Rh रक्तसमूह, HLA Hp, ट्रै-सफेरि-ा, Gm, रक्त ए-ज़ाइम. शरीर क्रियात्मक लजज- विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक-आर्थिक समूहों में Hb स्तर, शरीर वसा, स्पंद दर, श्वस-ा प्रकार्य एवं संवेदी प्रत्यजज.

9.7 पारिस्थितिक -ृविज्ञा-ा की संकल्प-ाएँ एवं पद्धतियाँ. जैव-सांस्कृतिक अ-ुकूल-ा- ज-ानिक एवं अज-ानिक कारक. पर्यावरजीय दबावों के प्रति म-ुष्य की शरीरक्रियात्मक अ-ुक्रियाएँ : जर्म मरूभूमि, शीत, उच्च तुंजता जलवायु.

9.8 जा-पदिक रोज विज्ञा-ीय -ृविज्ञा-ा : स्वास्थ्य एवं रोज. संक्रामक एवं असंक्रामक रोज. पोषक तत्वों की कमी से संबंधित रोज.

10. मा-व वृद्धि एवं विकास की संकल्प-ा : वृद्धि की अवस्थाएँ- प्रसव पूर्व, प्रसव, शिशु, बचप-ा, किशोरावस्था, परिपक्वावस्था, जरत्व.

- वृद्धि और विकास को प्रभावित कर-े वाले कारक : ज-ानिक, पर्यावरजीय, जैवरासायनिक, पोषक संबंधी, सांस्कृतिक एवं सामाजिक-आर्थिक.
- कालप्रभाव-ा एवं जरत्व. सिद्धांत एवं प्रेजज - जैविक एवं काला-ुक्रमिक दीर्घआयु. मा-वीय शरीर जठ-ा एवं कायप्ररूप. वृद्धि अध्यय-ा की क्रियाविधियाँ.

11.1 रजोदर्श-ा, रजोनिवृत्ति एवं प्रज-ा-ा शक्ति की अ-य जैव घट-ााओं की प्रासंजिकता. प्रज-ा-ा शक्ति के प्रतिरूप एवं विभेद.

11.2 ज-ांकिकीय सिद्धांत- जैविक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक.

11.3 बहुप्रजता, प्रज-ा-ा शक्ति, ज-मदर एवं मृत्युदर को प्रभावित कर-े वाले जैविक एवं सामाजिक-आर्थिक कारण.

12. -ृविज्ञा-ा के अ-ुप्रयोज : खेलों का -ृविज्ञा-ा, पोषजात्मक -ृविज्ञा-ा, रजा एवं अ-य उपकरजों की अभिकल्प-ा में -ृविज्ञा-ा, -यायालयिक -ृविज्ञा-ा, व्यक्तिजत अभिज्ञा-ा एवं पु-र्रच-ा की

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

पद्धतियाँ एवं सिद्धांत. अ-प्रयुक्त मा-व आ-ुवंशिजी- पितृत्व -िदा-ा, ज-ािज उपबोध-ा एवं सुज-ािजी, रोजों एवं आयुर्विज्ञा-ा में DNA प्रौद्योजिजी, ज-ा-ा-जीवविज्ञा-ा में सीरम-आ-ुवंशिजी तथा जोशिजा-आ-ुवंशिजी.

प्रश्-ापत्र-2

1.1 भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता जा विजास- प्राजैतिहासिज (पुरापाषाज, मध्यपाषाज, -वपाषाज तथा -वपाषाज-ताम्रपाषाज). आद्यऐतिहासिज (सिंधु सभ्यता) : हड़प्पा-पूर्व, हड़प्पाजाली-ा एवं पश्च-हड़प्पा संस्कृतियाँ. भारतीय सभ्यता में ज-ाजातीय संस्कृतियों जा योजदा-ा.

1.2 शिवालिज एवं -र्मदा द्रोणी जे विशेष संदर्भ जे साथ भारत से पुरा--ृवैज्ञानिज साक्ष्य (रामापिथिजस, शिवापिथेजस एवं -र्मदा मा-व).

1.3 भारत में -ृजाति-पुरातत्व विज्ञा-ा : -ृजाति-पुरातत्व विज्ञा-ा जी संजल्प-ाा; शिजारी, रसदजोजी, मछियारी, पशुचारज एवं कृषज समुदायों एवं जला और शिल्प उत्पादज समुदायों में उत्तरजीवज एवं समांतरज.

2. भारत जी ज-ांकिजीय परिच्छेदिजा- भारतीय ज-ासंख्या एवं उ-जे वितरज में -ृजातीय एवं भाषायी तत्व. भारतीय ज-ासंख्या- इसजी संरच-ाा और वृद्धि जो प्रभावित जर-े वाले जारज.

3.1 पारंपरिज भारतीय सामाजिज प्रजाली जी संरच-ाा और स्वरूप-वर्जाश्रम, पुरुषार्थ, जर्म, ऋज एवं पु-ार्ज-म.

3.2 भारत में जाति व्यवस्था- संरच-ाा एवं विशेषताएँ, वर्ज एवं जाति, जाति व्यवस्था जे उद्जम जे सिद्धांत, प्रबल जाति, जाति जतिशीलता, जाति व्यवस्था जा भविष्य, जजमा-ी प्रजाली, ज-ाजाति-जाति सातत्यज.

3.3 पवित्र-म-ोग्रंथि एवं प्रकृति-म-ुष्य-प्रेतात्मा म-ोग्रंथि.

3.4 भारतीय समाज पर बौद्ध धर्म, जै-ा धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म जा प्रभाव.

4. भारत में -ृविज्ञा-ा जा आविर्भाव एवं संवृद्धि- 18वीं, 19वीं एवं प्रारंभिज 20वीं शताब्दी जे शास्त्रज्ञ- प्रशासजों जे योजदा-ा. ज-ाजातीय एवं जातीय अध्यय-ों में भारतीय -ृवैज्ञानिजों जे योजदा-ा.

5.1 भारतीय ग्राम : भारत में ग्राम अध्यय-ा जा महत्व; सामाजिज प्रजाली जे रूप में भारतीय ग्राम; बस्ती एवं अंतर्जाति संबंधों जे पारंपरिज एवं बदलते प्रतिरूप; भारतीय ग्रामों में कृषिज संबंध; भारतीय ग्रामों पर भूमंडलीजरज जा प्रभाव.

5.2 भाषायी एवं धार्मिज अल्पसंख्यज एवं उ-जी सामाजिज, राज-ैतिज तथा आर्थिज स्थिति.

5.3 भारतीय समाज में सामाजिज-सांस्कृतिज परिवर्त-ा जी देशीय एवं बहिर्जात प्रक्रियाएं : संस्कृतिजरज, पश्चिमीजरज, आधुनिजीजरज; छोटी एवं बड़ी परंपराओं जा परस्पर-प्रभाव; पंचायतीराज एवं सामाजिज परिवर्त-ा; मीडिया एवं सामाजिज परिवर्त-ा.

6.1 भारत में ज-ाजातीय स्थिति- जैव ज-ािज परिवर्तिता, ज-ाजातीय ज-ासंख्या एवं उ-जे वितरज जी भाषायी एवं सामाजिज-आर्थिज विशेषताएँ.

6.2 ज-ाजातीय समुदायों जी समस्याएँ- भूमि संक्रमज, जरीबी, ऋजग्रस्तता, अल्प साजरता, अपर्याप्त शैजिज सुविधाएँ, बेरोज़जारी, अल्परोज़जारी, स्वास्थ्य तथा पोषज.

6.3 विजास परियोज-ाएँ एवं ज-ाजातीय स्था-ांतरज तथा पु-ार्वास समस्याओं पर उ-जा प्रभाव. व-ा -ीतियों एवं ज-ाजातियों जा विजास. ज-ाजातीय ज-ासंख्या पर -जरीजरज तथा औद्योजीजीजरज जा प्रभाव.

7.1 अ-ुसूचित जातियों, अ-ुसूचित ज-ाजातियों एवं अ-य पिछड़े वर्जों जे पोषज तथा वंच-ा जी समस्याएँ. अ-ुसूचित जातियों एवं अ-ुसूचित ज-ाजातियों जे लिए सांविधानिज रजोपाय.

7.2 सामाजिज परिवर्त-ा तथा समजाली-ा ज-ाजाति समाज : ज-ाजातियों तथा जमज़ोर वर्जों पर आधुनिज लोजतांत्रिज संस्थाओं, विजासजार्यक्रमों एवं जल्याज उपायों जा प्रभाव.

7.3 -ृ जातीयता जी संजल्प-ाा; -ृजातीय द्व-द्व एवं राज-ैतिज विजास; ज-ाजातीय समुदायों जे बीच अशांति : जेत्रीयतावाद एवं स्वायत्तता जी माँज; छदम ज-ाजातिवाद; औपनिवेशिज एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत जे दौरा-ा ज-ाजातियों जे बीच सामाजिज परिवर्त-ा.

8.1 ज-ाजातीय समाजों पर हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम तथा अ-य धर्मों जा प्रभाव.

8.2 ज-ाजाति एवं राष्ट्र राज्य- भारत एवं अ-य देशों में ज-ाजातीय समुदायों जा तुल-ात्मज अध्यय-ा.

9.1 ज-ाजातीय जेत्रों जे प्रशास-ा जा इतिहास, ज-ाजाति -ीतियाँ, योज-ाएँ, ज-ाजातीय विजास जे जार्यक्रम एवं उ-जा जार्या-वय-ा. आदिम ज-ाजातीय समूहों (PTGs) जी संजल्प-ाा, उ-जा वितरज, उ-जे विजास जे विशेष जार्यक्रम। ज-ाजातीय विजास में जैर सरजारी संजठ-ों जी भूमिजा.

9.2 ज-ाजातीय एवं ग्रामीज विजास में -ृविज्ञा-ा जी भूमिजा.

9.3 जेत्रीयतावाद, सांप्रदायिजता, -ृजातीय एवं राज-ैतिज आंदल-ों जो समझ-े में -ृविज्ञा-ा जा योजदा-ा.

व-ास्पति विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र - 1

1. सूज्मजैविजी एवं पादपरोज विज्ञा-ा :

विषाजु, वाइरॉइड, जीवाजु, फंजाई एवं माइजोप्लाज्मा संरच-ाा एवं ज-ा-ा. बहुजुज-ा. कृषि, उद्योज, चिजित्सा तथा वायु एवं मृदा एवं जल में प्रदूषज-नियंत्रज में सूज्मजैविजी जे अ-ुप्रयोज. प्रायो-ा एवं प्रायो-ा घट-ा. विषाजुओं, जीवाजुओं, माइजोप्लाज्मा, फंजाई तथा सूत्रकृमियों द्वारा हो-े वाले प्रमुख पादप रोज. संक्रमज और फैलाव जी विधियाँ. संक्रमज तथा रोज प्रतिरोध जे आज्विज आधार. परजीविता जी जार्यिजी और नियंत्रज जे उपाय. जवज आविष. मॉडल-ा एवं रोज पूर्वा-ुमा-ा, पादप संजरोध.

2. क्रिप्टोजेम्स :

शैवाल, जवज, लाइज-ा, ब्रायोफाइट, टेरीडोफाइट - संरच-ाा और ज-ा-ा जे विजासात्मज पहलू. भारत में क्रिप्टोजेम्स जा वितरज और उ-जा पारिस्थितिज एवं आर्थिज महत्व.

3. पुष्पोद्भिद :

अ-ावृत बीजी : पूर्व अ-ावृत बीजी जी अवधारजा. अ-ावृतबीजी जा वर्जीजरज और वितरज. साइजेडेलीज, जिजोएजीज, जो-ीफेरेलीज और -ीटेलीज जे मुख्य लजज, संरच-ाा व ज-ा-ा. साईजेडोफिलिजेलीज, बैनेटिटेलीज तथा जार्डेटेलीज जा सामा-य वर्ज-ा. भूवैज्ञानिज समयमाप-ी, जीवाश्मप्रजार एवं उ-जे अध्यय-ा जी विधियाँ. आवृतबीजी: वर्जिजी, शारीरिजी, भ्रूजविज्ञा-ा, पराजाजुविज्ञा-ा और जातिवृत्त.

वर्जिजी सोपा-ा, व-ास्पतिज -ामपद्धति जे अंतर्राष्ट्रीय जूट, संख्यात्मज वर्जिजी एवं रसाय-ा-वर्जिजी, शारीरिजी, भ्रूज विज्ञा-ा एवं पराजाजु विज्ञा-ा से साक्ष्य.

आवृत बीजियों जा उद्जम एवं विजास,

आवृत बीजियों जे वर्जीजरज जी विभिन्न प्रजालियों जा तुल-ात्मज विवरज, आवत बीजी जुलों जा अध्यय-ा - मैज-ोलिएसी, रै-ा-ाजुलैसी, ब्रैसीजेसी, रोजेसी, फेबेसी, यूफार्बिएसी, मालवेसी, डिप्टेरोजर्पेसी, एपिएसी, एस्क्लेपिडिएसी, वर्बि-ेसी, सोले-ेसी, रुबिएसी, जुजुरबिटेली, ऐस्टीरेसी, पोएसी, ओरजेसी, लिलिएसी, म्यूजेसी एवं ऑजिडेसी. रंध्र एवं उ-जे प्रजार, ग्रंथीय एवं अजंथीय ट्राइजोम, विसंजत द्वितीयज वृद्धि, सी-3 और सी-4 पौधों जा शारीर. जाइलम एवं फ्लोएम विभेद-ा, जाष्ठ शारीर.

-र और मादा युज्मजोद्भिद् जा परिवर्ध-ा, पराजज, -िषेच-ा. भ्रूजपोष - इसजा परिवर्ध-ा और जार्य. भ्रूज परिवर्ध-ा जे स्वरूप. बहुभ्रूजता, असंजज-ा-ा, पराजाजु विज्ञा-ा जे अ-ुप्रयोज, पराज भंडारज एवं टेस्ट ट्यूब-िषेच-ा सहित प्रयोजात्मज भ्रूज विज्ञा-ा.

4. पादप संसाध-ा विजास :

पादप ग्राम्य-ा एवं परिचय, कृष्ट पौधों जा उद्भव, उद्भव संबंधी वैवीलोव जे जेंद्र, खाद्य, चारा, रेशों, मसालों, पेय पदार्थों, खाद्य तेलों, औषधियों, स्वापजों, जीट-ाशियों, इमारती लजड़ी, जोंद, रेजि-ों तथा रंजजों जे स्रोतों जे रूप में पौधे, लेटेक्स, सेलुलोस, मंड और उ-जे उत्पाद. इत्रसाजी. भारत जे संदर्भ में -ृजुलव-ास्पतिजी जा महत्व. ऊर्जा वृजरोपज, व-ास्पतिज उद्या-ा और पादपालय.

5. आजारज-ा-ा :

पूर्ज शक्तता, ध्रुवजता, सममिति और विभेद-ा. जोशिजा, ऊतज, अंज एवं जीवद्रव्यज संवर्ध-ा. जायिज संजर और द्रव्य संजर. माइजोप्रोपेजेश-ा, सोमाक्लो-ल विविधता एवं इसजा अ-ुप्रयोज, पराज अजुजित, एम्ब्रियोरेस्क्यू विधियाँ एवं उ-जे अ-ुप्रयोज.

प्रश्-ापत्र - 2

1. जोशिजा जैविजी :

जोशिजा जैविजी जी प्रविधियाँ. प्राजेंद्रजी और सुजेंद्रजी जोशिजाएँ- संरच-ात्मज और परासंरच-ात्मज बारीजियाँ. जोशिजा बाह्य आधात्री अथवा जोशिजाबाह्य आव्यूह (जोशिजा भित्ति) तथा झिल्लियों जी संरच-ाा और जार्य - जोशिजा आसंज-ा, झिल्ली अभिजम-ा तथा आशयी अभिजम-ा. जोशिजा अंजजों (हरित लवज सूत्रजजिजाएँ, ईआर, डिक्टियोसोम, राइबोसोम, अंत:जाय, लय-जाय, परऑक्सीसोम) जी संरच-ाा और जार्य. साइटोस्जेलेट-ा एवं माइजोट्यूब्यूल्स, जेंद्रज, जेंद्रिज, जेंद्रजी रंध्र सम्मिश्र. क्रोमेटि-ा एवं -ुक्लियोसोम. जोशिजा संजेत-ा और जोशिजा ग्राही. संजेत पारक्रमज. समसूत्रज और अर्धसूत्रज विभाज-ा, जोशिजा चक्र जा आज्विज आधार. जुजसूत्रों में संख्यात्मज और संरच-ात्मज विभिन्नताएँ तथा उ-जा महत्व. क्रोमेटि-ा व्यवस्था एवं जी-ोम संवेष्ट-ा, पॉलिटी-ा जुजसूत्र, बी-जुजसूत्र- संरच-ाा व्यवहार और महत्व.

2. आ-ुवंशिजी, आज्विज जैविजी और विजास :

आ-ुवंशिजी जा विजास और जी-ा ब-ाम युज्मविजल्पी अवधारजा (कूट विजल्पी), परिमाजात्मज आ-ुवंशिजी तथा बहुजारज. अपूर्ज प्रभाविता, बहुज-ािज वंशाजति, बहुविजल्पी सहलज-ता तथा वि-िमय - आज्विज मा-ाचित्र (मा-ाचित्र प्रजार्य जी अवधारजा) सहित जी-ा मा-ाचित्रज जी विधियाँ. लिंज जुजसूत्र तथा लिंज सहलज-ा वंशाजति, लिंज निर्धारज और लिंज विभेद-ा जा आज्विज आधार. उत्परिवर्त-ा (जैव रासायनिज और आज्विज आधार) जोशिजाद्रव्यी वंशाजति एवं जोशिजाद्रव्यी जी-ा (-र बंध्यता जी आ-ुवंशिजी सहित).

-ूक्लीय अम्लों और प्रोटी-ों जी संरच-ाा तथा संश्लेषज. आ-ुवंशिज जूट और जी-ा अभिव्यक्ति जा नियम-ा. जी--ीरवता, बहुजी-ाजुल, जैव विजास - प्रमाज, क्रियाविधि तथा सिद्धांत. उद्भव तथा विजास में RNA जी भूमिजा.

3. पादप प्रज-ा-ा, जैव प्रौद्योजिजी तथा जैव सांख्यिजी :

पादप प्रज-ा-ा जी विधियाँ - आप्रवेश, चय-ा तथा संजरज. (वंशावली, प्रतीप संजर, सामूहिज चय-ा, व्यापज पद्धति) उत्परिवर्त-ा, बहुजुजिता, -रबंध्यता तथा संजर ओज प्रज-ा-ा. पादप प्रज-ा-ा में असंजज-ा-ा जा उपयोज. DNA अ-ुक्रमज, आ-ुवंशिज इंजीनियरी - जी-ा अंतरज जी विधियाँ, पारजी-ी सस्य एवं जैव सुरजा पहलू, पादप प्रज-ा-ा में आज्विज चिह्-जों जा विजास एवं उपयोज. उपजरज एवं तज-ीज - प्रोब, दजिजी ब्लास्टिंज, DNA फिंजर प्रिंटिंज, PCR एवं FISH. मा-ाज विचल-ा तथा विचरज जुजांज (सी बी), सार्थजता परीजज (जैड-परीजज, टी-परीजज तथा जाई-वर्ज परीजज). प्रायिजता तथा बंट-ा (सामा-य, द्विपदी तथा प्वासों बंट-ा) संबंध-ा तथा समाश्रयज.

4. शरीर क्रिया विज्ञा-ा तथा जैव रसाय-िजी :

जल संबंध, ज-िज-ा पोषज तथा आय-ा अभिजम-ा, ज-िज -यू-ताएँ. प्रजाश संश्लेषज - प्रजाश रसायनिज अभिक्रियाएँ, फोटो फोस्फोरिलेश-ा एवं जार्ब-ा फिक्सेश-ा पाथवे, C_3, C_4 और जैम दिशामार्ज. फ्लोएम परिवह-ा जी क्रियाविधि, श्वस-ा (किज्व-ा सहित अवायुजीवीय और वायुजीवीय) - इलेक्ट्रॉ-ा अभिजम-ा श्रृंखला और ऑक्सीकरजी फास्फोरिलेश-ा फोटोश्वस-ा, रसोपरासरजी सिद्धांत तथा ATP संश्लेषज. लिपिड उपापचय, -ाइट्रोज-ा स्थिरीजरज एवं -ाइट्रोज-ा उपापचय. किज्व, सहकिज्व, ऊर्जा अंतरज तथा ऊर्जा संरजज. द्वितीयज उपापचयजों जा महत्व. प्रजाशग्राहियों जे रूप में वर्जज (प्लैस्टिडियल वर्जज तथा पादप वर्जज), पादप संचल-ा, दीप्तिजालिता तथा पुष्प-ा, बसंतीजरज, जीर्ज-ा. वृद्धि पदार्थ - उ-जी रासायनिज प्रकृति, कृषि बाजवा-ी में उ-जी भूमिजा और अ-ुप्रयोज, वृद्धिसंजेत, वृद्धिजतियाँ. प्रतिबल शारीरिजी (ताप, जल, लवजता, धातु). फल एवं बीज शारीरिजी. बीजों जी प्रसुप्ति, भंडारज तथा उ-जा अंकुरज. फल जा पज-ा - इसजा आज्विज आधार तथा मैनिपुलेश-ा.

5. परिस्थितिजी तथा पादप भूजोल :

परितंत्र जी संजल्प-ाा, पारिस्थितिज जारज. समुदाय जी अवधारजाएँ और जतिजी. पादप अ-ुक्रमज. जीव मंडल जी अवधारजा. पारितंत्र, संरजज. प्रदूषज और उसजा नियंत्रज (फाइटोरेमिडिएश-ा सहित). पादप सूचज, पर्यावरज (संरजज) अधिनियम.

भारत में व-ों जे प्ररूप - व-ों जा परिस्थितिज एवं आर्थिज महत्व. व-ारोपज, व-ो-मूल-ा तथा सामाजिज वानिजी. संजटापन्न पौधे, स्थानिजता, IUCN जोटियाँ, रेड डाटा बुज. जैव विविधता एवं उसजा संरजज, संरजित जेत्र -ेटवर्ज, जैव विविधता पर सम्मेल-ा, किसा-ों जे अधिजार एवं बौद्धिज संपदा अधिजार, संपोषजीय विजास जी संजल्प-ाा, जैव-भू-रासायनिज चक्र, भूमंडलीय ताप-ा एवं जलवायु परिवर्त-ा, संक्रमज जातियाँ, पर्यावरजीय प्रभाव मूल्यांज-ा, भारत जे पादप भूजोलीय जेत्र.

रसाय-ा विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

1. परमाजु संरच-ाा : क्वांटम सिद्धांत, हाइसे-ाबर्ज जा अनिश्चितता सिद्धांत, श्रोडिंजर तरंज समीजरज (जाल अ-ाश्रित) तरंज फल-ा जी व्याख्या, एजल विमीय बॉक्स में जज, क्वांटम संख्याएँ, हाइड्रोज-ा परमाजु तरंज फल-ा. S, P, और D जजजों जी आकृति.

2. रसाय-ा आबंध : आय-ी आबंध, आय-ी यौजिजों जे अभिलजज, जालज ऊर्जा, बा-ेहिबर चक्र; सहसंयोजज आबंध तथा इसजे सामा-य अभिलजज. अजुओं में आबंध जी ध्रुवजता तथा उसजे द्विध्रुव अघूर्ज. संयोजी आबंध सिद्धांत, अ-ुा-ाद तथा अ-ुा-ाद ऊर्जा जी अवधारजा. अजु जजज सिद्धांत (LCAO पद्धति); H2+, H2, He2+ से Ne2, NO, CO, HF एवं CN. संयोजी आबंध तथा अजुजजज सिद्धांतों जी तुल-ाा, आबंध जोटि, आबंध सामर्थ्य तथा आबंध लंबाई.

3. ठोस अवस्था : क्रिस्टल पद्धति; क्रिस्टल फलजों, जालज संरच-ााओं तथा यूनिट सेल जा स्पष्ट उल्लेख. ब्रेज जा नियम, क्रिस्टल द्वारा X-रे विवर्त-ा; क्लोज़ पैजिज (ससंकुलित रच-ाा), अर्धव्यास अ-ुपात नियम, सीमांत अर्धव्यास अ-ुपात मा-ों जे आजल-ा. Nacl, ZnS, CsCl एवं CaF2 जी संरच-ाा. स्टाइजियोमीट्रिज तथा -ॉ-ा-स्टाइजियोमीट्रिज दोष, अशुद्धता दोष, अर्द्धचालज.

4. जैस अवस्था एवं परिवह-ा परिघट-ाा : वास्तविज जैसों जी अवस्था जा समीजरज, अंतराअजुज पारस्परिज क्रिया, जैसों जा द्रवीजरज तथा क्रांतिज घट-ाा, मैक्सवेल जा जति वितरज, अंतराजुज संघट्ट, दीवार पर संघट्ट तथा अभिस्पंद-ा, ऊष्मा चालजता एवं आदर्श जैसों जी श्या-ाता.

5. द्रव अवस्था : जेल्वि-ा समीजरज, पृष्ठ त-ााव एवं पृष्ठ ऊर्जा, आर्द्रज एवं संस्पर्श जोज, अंतरापृष्ठीय त-ााव एवं जोशिजा क्रिया.

6. ऊष्माजतिजी : जार्य, ऊष्मा तथा आंतरिज ऊर्जा; ऊष्माजतिजी जा प्रथम नियम, ऊष्माजतिजी जा दूसरा नियम; एंट्रॉपी एज अवस्था फल-ा जे रूप में, विभिन्न प्रक्रमों में एंट्रॉपी परिवर्त-ा, एंट्रॉपी उत्क्रमजीयता तथा अ-ुत्क्रमजीयता, मुक्त ऊर्जा फल-ा, अवस्था जा ऊष्माजतिजी समीजरज, मैक्सवेल संबंध; ताप, आयत-ा एवं U, H, A, G, Cp एवं Cv, α एवं β जी दाब निर्भरता; J-T प्रभाव एवं व्युत्क्रमज ताप; साम्य जे लिए निजष, साम्य स्थिरांज तथा ऊष्माजतिजीय राशियों जे बीच संबंध, -े-र्स्ट ऊष्मा प्रमेय तथा ऊष्माजतिजी जा तीसरा नियम.

7. प्रावस्था साम्य तथा विलय-ा : क्लासियस-क्लेपिर-ा समीजरज, शुद्ध पदार्थों जे लिए प्रावस्था आरेज; द्विआधारी पद्धति में प्रावस्था साम्य, आंशिज मिश्रजीय द्रव- उच्चतर तथा नि-ातर क्रांतिज विलय-ा ताप; आंशिज मोलर राशियाँ, उ-जा महत्व तथा निर्धारज; आधिक्य ऊष्माजतिजी फल-ा और उ-जा निर्धारज.

8. विद्युत रसाय-ा : प्रबल विद्युत अपघट्यों जा डेबाई हुजेल सिद्धांत एवं विभिन्न साम्य तथा अभिजम-ा जुजधर्मों जे लिए डेबाइ हुजेल सीमांत नियम. जेल्वे-िज सेल, सांद्रता सेल; इलेक्ट्रोजेमिजल सीरीज़, सेलों जे emf जा माप-ा और उसजा अ-ुप्रयोज; ईंध-ा सेल तथा बैटरियाँ. इलैक्ट्रोड पर प्रक्रम; अंतरापृष्ठ पर द्विस्तर; चार्ज ट्रांस्फर जी दर, विद्युत धारा घ-ात्व; अतिविभव; वैद्युत विश्लेषज तज-ीज; पोलरोग्राफी, एंपरोमिति, आय-ा वरजात्मज इलेक्ट्रोड एवं उ-जे उपयोज.

9. रासायनिज बलजतिजी : अभिक्रिया दर जी सांद्रता पर निर्भरता, शू-्य, प्रथम, द्वितीय तथा आंशिज जोटि जी अभिक्रियाओं जे लिए अवजल और समाजल दर

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

समीजरज; उत्क्र म, समा-तर, क्र माजत तथा श्रृंखला अभिक्रि याओं जे दर समीजरज; शाज-ा श्रृंखला एवं विस्फोट; दर स्थिरांज पर ताप और दाब जा प्रभाव. स्टॉप-फ्लो और रिलेक्सेश-ा पद्धतियों द्वारा द्रुत अभिक्रि याओं जा अध्यय-ा. संघट-ा और संक्र मज अवस्था सिद्धांत.

10. प्रजाश रसाय-ा : प्रजाश जा अवशोषज; विभिन्न मार्गों द्वारा उत्तेजित अवस्था जा अवसा-ा; हाइड्रोज-ा और हेलोज-ों जे मध्य प्रजाश रसाय-ा अभिक्रि या और उ-ाजी क्वांटमी लब्धि.

11. पृष्ठीय परिघट-ाा तथा उत्प्रेरज ता: ठोस अधिशोषजों पर जैसों और विलय-ों जा अधिशोषज, लैंग्म्यूर तथा BET अधिशोषज रेजा; पृष्ठीय जेत्रफल जा निर्धारज; विषमांगी उत्प्रेरजों पर अभिक्रि या अभिलजज और क्रि याविधि.

12. जैव अजार्बनिज रसाय-ा : जैविज तंत्रों में धातु आय-ा तथा भित्ति जे पार आय-ा जम-ा (आज्विज क्रि याविधि) ; ऑक्सीज-ा अपटेज प्रोटी-ा, साइटोक्र ोम तथा फेरोडोक्सि-ा.

13. सम-वय रसाय-ा :

(ज) धातु संजुल जे आबंध सिद्धांत, संयोजज ता आबंध सिद्धांत, क्रि स्टल फील्ड सिद्धांत और उसमें संशोध-ा, धातु संजुल जे चुंबजीय तथा इलेक्ट्रानिज स्पेक्ट्रम जी व्याज्या में सिद्धांतों जा अ-ाुप्रयोज.

(ज) सम-वयी यौगिजों में आइसोमेरिज्म. सम-वयी यौगिजों जा IUPAC -ाामजरज; 4 तथा 6 समायोज-ा वाले संजुलों जा त्रिविम रसाय-ा, जिलेट प्रभाव तथा बहु-ााभिजीय संजुल; परा-प्रभाव और उसजे सिद्धांत; वर्ज समतली संजुल में प्रतिस्थापनिज अभिक्रि याओं जी बलजतिजी; संजुलों जी तापजतिजी तथा बलजतिजी स्थिरता.

(ज) मैटल जार्बोनिलों जी संश्लेषज संरच-ाा तथा उ-ाजी अभिक्रि यात्मज ता; जार्बोक्सिलेट ए-ॉय-ा, जार्बोनिल हाइड्राइड तथा मेटल -ााइट्रोसील यौगिज.

(घ) एरोमैटिज प्रजाली जे संजुल, मैटल ओलेफि-ा संजुलों में संश्लेषज, संरच-ाा तथा बंध, एल्जाइ-ा तथा सायक्लोपेंटाडायनिज संजुल, सम-वयी असंतृप्तता, आक्सीडेटिव योजात्मज अभिक्रि याएँ, निवेश-ा अभिक्रि याएँ, प्रवाही अजु और उ-ाजा अभिलजज-ा, मैटल-मैटल आबंध तथा मैटल परमाजु जुच्छे वाले यौगिज.

14. मुज्य समूह रसायनिजी : बोरे-ा, बोराजाइ-ा, फास्फेजी-ा एवं चक्र ीय फास्फेजी-ा, सिलिजेट एवं सिलिजॉ-ा, इंटरहैलोज-ा यौगिज; जंधज- -ााइट्रोज-ा यौगिज, -ाॉबुल जैस यौगिज.

15. F ब्लॉज तत्वों जा सामा-य रसाय-ा : ल-थे-ााइड एवं एक्टी-ााइड; पृथक्जरज, आक्सीजरज अवस्थाएँ, चुंबजीय तथा स्पेक्ट्रमी जुजधर्म; लैंथे-ााइड संजुच-ा.

प्रश्-ापत्र-2

1. विस्थापित सहसंयोजज बंध : एरोमैटिजता, प्रतिएरोमैटिजता; ए-यूली-ा, एजुली-ा, ट्रोपोलो-स, फुल्वीन, सिड-ाो-ा.

2. (ज) अभिक्रि या क्रि याविधि : जार्बनिज अभिक्रि याओं जी क्रि याविधियों जे अध्यय-ा जी सामा-य विधियाँ (जतिज एवं जैर-जतिज दो-ाों), समस्थानिजी विधि, क्र ास-ओवर प्रयोज, मध्यवर्ती ट्रेपिंज, त्रिविम रसाय-ा, सक्रि यज ऊर्जा, अभिक्रि याओं जा ऊष्माजतिजी नियंत्रज तथा जतिज नियंत्रज.

(ज) अभिक्रि याशील मध्यवर्ती : जार्बोनियम आय-ों तथा जारबे-ााय-ों, मुक्त मूलजों (फ्री रेडिजल) जार्बी-ों बेंजाइ-ों तथा -ााइट्रे-ों जा उत्पाद-ा, ज्यामिति, स्थिरता तथा अभिक्रि या.

(ज) प्रतिस्थाप-ा अभिक्रि याएँ : SN1. SN2 एवं SNi क्रि याविधियाँ; प्रतिवेशी समूह भाजीदारी, पाइसेल, फ्यूर-ा, थियोफी-ा, इंडोल जैसे हेट्रोसाइक्लिज यौगिजों सहित ऐरोमैटिज यौगिजों जी इलेज्ट्रोफिलिज तथा -ाूक्लियोफिलिज अभिक्रि याएँ.

(घ) विलोप-ा अभिक्रि याएं : E1,E2 तथा E1cb क्रि याविधियाँ; सेजैफ तथा हॉफम-ा E2अभिक्रि याओं में दिक्वि-यास , पाइरोलिटिज Syn विलोप-ा - चुज्जीव तथा जोप विलोप-ा.

(ङ) संजल-ा अभिक्रि याएँ : C=C तथा C≡C जे लिए इलेक्ट्रोफिलिज संजल-ा, C=C तथा C≡N जे लिए -ाूक्लियोफिलिज संजल-ा, संयुज्मी ओलिफिल्स तथा जार्बोजिल्स.

(च) अभिक्रि याएँ तथा पु-ार्वि-यास : पि-ााजोल - पि-ााजोलो-ा, हॉफम-ा, बेजम-ा, बेयर विलिजर, फेवोर्स्जी, फ्राइस, क्लेसे-ा, जोप, स्टीवे-ज तथा वाज-ार - मेरबाइ-ा पु-ार्वि-यास.

(छ) एल्डोल संघ-ा-ा, क्लैसे-ा संघ-ा-ा, डीजम-ा, परजि-ा, -ाोवे-ेजेल, विटिज, क्लिमेंस-ा, वोल्फ जिश-ार, जे-िजारो तथा फ़ा-ा-रीक्टर अभिक्रि याएँ, स्टॉब, बैंजोइ-ा तथा एसिलोइ-ा संघ-ा-ा, फिशर इंडोल संश्लेषज, स्क्र ाप संश्लेषज, विश्लर-ोपिरास्जी, सैंडमेयर, रेजर टाइम-ा तथा रेफॉरमास्जी अभिक्रि याएँ.

3. परिरंभीय अभिक्रि याएँ : वर्जीजरज एवं उदाहरज; वुडवर्ड - हॉफमै-ा नियम - विद्युतचक्र ीय अभिक्रि याएँ, चक्र ी संजल-ा अभिक्रि याएँ (2+2एवं 4+2) एवं सिज्मा - अ-ाुवर्त-ी विस्थाप-ा (1,3;3,3 तथा 1,5) FMO उपाजम.

4. (i) **बहुलजों जा निर्माज और जुजधर्म :** जार्बनिज बहुलज -पोलिएथिली-ा, पोलिस्टाइरी-ा, पोलीवि-ााइल क्लोराइड, टेफ्लॉ-ा, -ााइलॉ-ा, टेरीली-ा, संश्लिष्ट तथा प्राकृतिज रबड़.

(ii) **जैव बहुलज** : प्रोटी-ा, DNA, RNA जी संरच-ााएँ.

5. अभिजारजों जे सांश्लेषिज उपयोज : O5O4, HIO4 CrO3, Pb(OAc)4, SeO2, NBS, B2H6, Na द्रव अमोनि-या, LiALH4, NaBH4, n-Buli एवं MCPBA.

6. प्रजाश रसाय-ा : साधारज जार्बनिज यौगिजों जी प्रजाश रासायनिज अभिक्रि याएँ, उत्तेजित और नि-ातम् अवस्थाएँ, एजज और त्रिज अवस्थाएँ, -ाोरिश टाइप-I और टाइप-II अभिक्रि याएँ.

7. स्पेक्ट्रोमिजी सिद्धांत और संरच-ाा जे स्पष्टीजरज में उ-ाजा अ-ाुप्रयोज.

(ज) घूर्जी- द्विपरमाजुज अजु; समस्थानिज प्रतिस्थाप-ा तथा घूर्जी स्थिरांज.

(ज) जंपनिज - द्विपरमाजुज अजु, रैजिज त्रिपरमाजुज अजु, बहुपरमाजुज अजुओं में क्रि यात्मज समूहों जी विशिष्ट आवृत्तियाँ.

(ज) इलेक्ट्रानिज : एजज और त्रिज अवस्थाएं : $n \rightarrow \pi^*$ तथा $\pi \rightarrow \pi^*$ संक्र मज ; संयुज्मित द्विआबंध तथा संयुज्मित जरबोनिजल में अ-ाुप्रयोज -वुडवर्ड - फीशर नियम ;चार्ज अंतरज स्पेक्ट्रा.

(घ) -ााभिजीय चुम्बजीय अ-ाु-ााद (1HNMR) : आधारभूत सिद्धांत; रासायनिज शिफ्ट एवं स्पि-ा - स्पि-ा अ-यो-य क्रि या एवं जपलिंज स्थिरांज.

(ङ) द्रव्यमा-ा स्पेक्ट्रोमिति : पैरैंट पीज, बेसपीज, मेटास्टेबल पीज, मैज लैफर्टी पु-ार्वि-यास.

सिविल इंजी-ाियरी

प्रश्-ापत्र-1

1. इंजी-ाियरी यांत्रिजी पदार्थ सामर्थ्य तथा संरच-ाात्मज विश्लेषज

1.1 इंजी-ाियरी यांत्रिजी :

मात्रज तथा विमाएं, SI मात्रज, सदिश, बल जी संजल्प-ाा, जज तथा दृढ़ पिंड संजल्प-ाा, संजामी, असंजामी तथा समतल पर समांतर बल, बल आघूर्ज, मुक्त पिंड आरेज, सप्रतिबंध साम्यावस्था, जल्पित जार्य जा सिद्धांत, समतुल्य बल प्रजाली.

प्रथम तथा द्वितीय जेत्र आघूर्ज, द्रव्यमा-ा जड़त्व आघूर्ज.

स्थैतिज घर्षज

शुद्धजतिजी तथा जतिजी :

जार्तीय निर्देशांज शुद्धजतिजी, समा-ा तथा असमा-ा त्वरज जे अधी-ा जति, जुरुत्वाधी-ा जति. जजतिजी, संवेज तथा ऊर्जा सिद्धांत, प्रत्यास्थ पिंडों जा संघट्ट-ा, दृढ़ पिंडों जा घूर्ज-ा.

1.2 पदार्थ-सामर्थ्य :

सरल प्रतिबल तथा विकृति, प्रत्यास्थ स्थिरांज, अजत:भारित संपीडांज, अपरूपज बल तथा बंज-ा आघूर्ज, सरल बंज-ा जा सिद्धांत, अ-ाुप्रस्थ जाट जा अपरूपज प्रतिबल वितरज, समसार्थ्य धरज.

धरज विजेप : मैजाले विधि, मोर जी आघूर्ज जेत्र विधि, अ-ारूप धरज विधि, एजांज भार विधि, शाफ्ट जी ऐंठ-ा, स्तंभों जा प्रत्यास्थ स्थायित्व. आयलर, रे-ाजाई-ा तथा सीजेट सूत्र.

1.3 संरच-ाात्मज विश्लेषज :

जास्टिलिया-ाोस प्रमेय I तथा II, धरज और जील संधियुक्त कैंची में प्रयुक्त संजत विकृति जी एजांज भार विधि, ढाल विजेप, आघूर्ज वितरज.

वेल-ा भार और प्रभाव रेजाएँ : धरज जे परिच्छेद पर अपरूपज बल तथा बंज-ा आघूर्ज जे लिए प्रभाव रेजाएँ.

जतिशील भार प्रजाली द्वारा धरज चक्र मज में अधिजतम अपरूपज बल तथा बंज-ा आघूर्ज हेतु मा-दंड. सरल आलंबित समतल जील संधि युक्त कैंची हेतु प्रभाव रेजाएँ.

डाट : त्रिजील, द्विजील तथा आबद्ध डाट- पर्शुजा लघीय-ा एवं तापमा-ा प्रभाव.

विश्लेषज जी आव्यूह विधि : अनिर्धारित धरज तथा दृढ़ ढांचों जा बल विधि तथा विस्थाप-ा विधि से विश्लेषज.

धरज और ढांचों जा प्लास्टिज विश्लेषज : प्लास्टिज बंज-ा सिद्धांत, प्लास्टिज विश्लेषज, स्थैतिज प्रजाली ; यांत्रिजी विधि.

असममित बंज-ा : जड़त्व आघूर्ज, जड़त्व उत्पाद, उदासी-ा अज और मुज्य अज जी स्थिति, बंज-ा प्रतिबल जी परिजज-ाा.

2. संरच-ाा अभिजल्प : इस्पात, जंक्रीट तथा चि-ााई संरच-ाा

2.1 संरच-ाात्मज इस्पात अभिजल्प :

संरच-ाात्मज इस्पात : सुरजा जुजज और भार जुजज. जवचित तथा वेल्डित जोड़ तथा संयोज-ा. त-ााव तथा संपीडांज इजाइयों जा अभिजल्प, संघटित परिच्छेद जा धरज, जवचित तथा वेल्डित प्लेट जर्डर, जैंदी जर्डर, बैट-ा एवं लेसिंजयुक्त स्टेंचिय-स.

2.2 जंक्रीट तथा चि-ााई संरच-ाा जा अभिजल्प :

मिश्र अभिजल्प जी संजल्प-ाा, प्रबलित जंक्रीट : जार्यजारी प्रतिबल तथा सीमा अवस्था विधि से अभिजल्प- IS पुस्तिजाओं जी सिफारिशें, व-ा-वे एवं टू-वे स्लैव जी डिज़ाइ-ा, सोपा-ा स्लैब, आयताजार T एवं L जाट जे सरल एवं सतत धरज. उत्जे-द्रता सहित अथवा रहित प्रत्यज भार जे अंतर्जत संपीडांज इजाइयाँ. विलजित एवं संयुक्त -ाींव. कैंटीलीवर एवं जाउंटर फोर्ट प्ररूप प्रतिधारज भित्ति.

जलटंजी : पृथ्वी पर रजे आयताजार एवं जोलाजार टंजियों जी अभिजल्प-ा आवश्यजताएँ.

पूर्व प्रतिबलित जंक्रीट : पूर्व प्रतिबलित जे लिए विधियाँ और प्रजालियाँ, स्थिरज स्था-ा, जार्यजारी प्रतिबल आधारित आ-ाति जे लिए परिच्छेद जा विश्लेषज और अभिजल्प, पूर्व प्रतिबलित हानि.

3. तरल यांत्रिजी, मुक्त वाहिजा प्रवाह एवं द्रवचालित मशी-ों

3.1 तरल यांत्रिजी :

तरल जुजधर्म तथा तरल जति में उ-ाजी भूमिजा, तरल स्थैतिजी जिसमें समतल तथा वक्र सतह पर जार्य जर-ो वाले बल भी शामिल हैं. तरल प्रवाह जी शुद्धजतिजी एवं जतिजी: वेज और त्वरज, सरिता रेजाएँ, सातत्य समीजरज, अघूर्जी तथा घूर्जी प्रवाह, वेज विभव एवं सरिता फल-ा. सांतत्य, संवेज एवं ऊर्जा समीजरज, -ाेवियर स्टोक्स समीजरज, आयलर जति समीजरज, तरल प्रवाह समस्याओं में अ-ाुप्रयोज, पाइप प्रवाह, स्लूइस जेट, वियर.

3.2 विमीय विश्लेषज एवं समरूपता :

बकिंघम Pi-प्रमेय, विमारहित प्राचल.

3.3 स्तरीय प्रवाह :

समांतर, अचल एवं चल प्लेटों जे बीच स्तरीय प्रवाह, ट्यूब द्वारा प्रवाह.

3.4 परिसीमा परत :

चपटी प्लेट पर स्तरीय एवं विजुब्ध परिसीमा परत, स्तरीय उपपरत, मसृज एवं रूज परिसीमाएँ, विजर्ष एवं लिफ्ट.

पाइपों द्वारा विजुब्ध प्रवाह : विजुब्ध प्रवाह जे अभिलजज, वेज वितरज एवं पाइप घर्षज जुजज जी विविधता, जलदाब प्रवजता रेजा तथा पूर्ज ऊर्जा रेजा.

3.5 मुक्त वाहिजा प्रवाह :

समा-ा एवं असमा-ा प्रवाह, आघूर्ज एवं ऊर्जा संशुद्धि जुजज, विशिष्ट ऊर्जा तथा विशिष्ट बल, क्रांतिज जहराई, तीव्र परिवर्ती प्रवाह, जलोच्छाल, क्र मश: परिवर्ती प्रवाह, पृष्ठ परिच्छेदिजा वर्जीजरज, नियंत्रज जाट, परिवर्ती प्रवाह समीजरज जे समाजल-ा जी सोपा-ा विधि.

3.6 द्रवचालित यंत्र तथा जलशक्ति :

द्रवचालित टरबाइ-ा, प्रारूप वर्जीजरज, टर्बाइ-ा चय-ा, निष्पाद-ा प्राचल, नियंत्रज, अभिलजज, विशिष्ट जति. जलशक्ति विजास जे सिद्धांत .

4. भू-तज -ाीजी इंजी-ाियरी

मृदा जे प्रजार एवं संरच-ाा, प्रवजता जज आजार वितरज, जाढ़ता सीमाएँ.

मृदा जल जेशिजीय तथा संरच-ाात्मज प्रभावी प्रतिबल तथा रंध्र जल दाब, प्रयोजशाला निर्धारज, रिस-ा दाब, बालु पंज अवस्था- जर्त-ा सामर्थ्य परीजज- मोर कूलांब संजल्प-ाा- मृदा संह-ा-ा- प्रयोजशाला एवं जेत्र परीजज. संपीड्यता एवं संपिंड-ा संजल्प-ाा- संपिंड-ा सिद्धांत- संपीड्यता स्थिरज विश्लेषज. भूदाब सिद्धांत एजं प्रतिधारज भित्ति जे लिए विश्लेषज, चादरी स्थूजाभित्ति एवं बंध-ायुक्त ज-ा-ा जे लिए अ-ाुप्रयोज. मृदा धारज जमता- विश्लेषज जे उपाजम- जेत्र परीजज- स्थिरज विश्लेषज- भूजम-ा ढाल जा स्थायित्व.

मृदाओं जा अवपृष्ठ ज-ा-ा- विधियाँ.

-ाींव- संरच-ाा -ाींव जे प्रजार एवं चय-ा मापदंड- -ाींव अभिजल्प

मापदंड- पाद एवं पाइल प्रतिबल वितरज विश्लेषज, पाइल समूह जार्य- पाइल भार परीजज.

भूतल सुधार प्रविधियाँ.

प्रश्-ापत्र-2

1. निर्माज तज-ाीजी, उपजरज, योज-ाा और प्रबंध

1.1 निर्माज तज-ाीजी :

इंजीनियरी सामजी :

निर्माज सामजी जे, निर्माज में उ-ाजे प्रयोज जी दृष्टि से, भौतिज जुजधर्म :पत्थर, ईंट तथा टाइल, चू-ाा, सीमेंट तथा विविध सुरजी मसाला एवं जंक्रीट. लोह सीमेंट जे विशिष्ट उपयोज, तंतु प्रबलित C.C., उच्च सामर्थ्य जंक्रीट. इमारती लजड़ी : जुजधर्म एवं दोष, सामा-य संरजज, उपचार.

जम लाजत जे आवास, ज-ा आवास, उच्च भव-ों जैसे विशेष उपयोज हेतु सामजी उपयोज एवं चय-ा.

1.2. निर्माज :

ईंट, पत्थर, ब्लाजों जे उपयोज जे चि-ााई सिद्धांत- निर्माज विस्तारज एवं सामर्थ्य अभिलजज.

प्लास्टर, प्वाइंटिंज, फ्लोरिंज, रूफिंज एवं निर्माज अभिलजजों जे प्रजार.

भव-ों जे सामा-य मरम्मत जार्य.

रहिवासों एवं विशेष उपयोज जे लिए भव-ा जी जार्यात्मज योज-ाा जे सिद्धांत- भव-ा जोड उपबंध.

विस्तृत एवं लजभज आजल-ा जे आधारभूत सिद्धांत- विनिर्देश लेज-ा एवं दर विश्लेषज- स्थावर संपत्ति मूल्यांज-ा जे सिद्धांत.

मृदाबंध जे लिए मशी-ारी, जंक्रीटजरज एवं उ-ाजा विशिष्ट उपयोज- उपजरज चय-ा जो प्रभावित जर-ो वाले जारज- उपजरजों जी प्रचाल-ा लाजत.

1.3 निर्माज योज-ाा एवं प्रबंध :

निर्माज जार्यजलाप- जार्यक्र म- निर्माज उद्योज जा संजठ-ा- जुजता आश्वास-ा सिद्धांत.

-ोटवर्क जे आधारभूत सिद्धांतों जा उपयोज- CPM एवं PERT जे रूप में विश्लेषज-

निर्माज मॉ-ाीटरी, लाजत इष्टतमीजरज एवं संसाध-ा नियत-ा में उ-ाजा उपयोज. आर्थिज विश्लेषज एवं विधि जे आधारभूत सिद्धांत.

परियोज-ाा लाभदायजता-

वित्तीय आयोज-ाा जे बूट उपाजम जे आधारभूत सिद्धांत- सरल टौल नियतीजरज मा-दंड.

2. सर्वेजज एवं परिवह-ा इंजी-ाियरी

2.1 सर्वेजज :

CE जार्य जी दूरी एवं जोज माप-े जी सामा-य विधियाँ एवं उपजरज, प्ले-ा टेबल में उ-ाजा उपयोज, चक्र म सर्वेजज समतल-ा, त्रिजोज-ा, रूपरेजज एवं स्थलाकृतिज मा-ाचित्र,

फोटोग्रामिति एवं दूर-संवेद-ा जे सामा-य सिद्धांत.

2.2 रेलवे इंजीनियरी :

स्थायी पथ- अवयव, प्रजार एवं उ-ाजे प्रजार्य- टर्-ा एवं क्रॉसिंज जे प्रजार्य एवं अभिजल्प घटज- ट्रैज जे भूमितीय अभिजल्प जी आवश्यजता- स्टेश-ा एवं यार्ड जा अभिजल्प.

2.3 राजमार्ज इंजीनियरी :

राजमार्ज संरेज-ा जे सिद्धांत, सड़जों जा वर्जीजरज एवं ज्यामितिज अभिजल्प अवयव एवं सड़जों जे मा-ज. -ाम्य एवं दृढ़ कुट्टिम हेतु कुट्टिम संरच-ाा, कुट्टिम जे अभिजल्प सिद्धांत एवं क्रि यापद्धति. प्ररूपी निर्माज विधियाँ एवं स्थायीकृत मृदा, WBM, बिटुमे-ाी निर्माज

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

एवं CC सड़जों जे लिए सामग्री. सड़जों जे लिए बहिस्तल एवं अधस्तल अपवाह वि-यास- पुलिया संरच-ााएँ. जुट्टिम विजोभ एवं उ-हें उपरिशायी द्वारा मजबूती प्रदा-ा ज र-ाा. यातायात सर्वेजज एवं यातायात आयोज-ाा में उ-ाजे अ-ाुप्रयोज- प्रजालित, इंटरसेक्श-ा एवं घूर्जी आदि जे लिए अभिजल्प विशेषताएँ- सिज-ाल अभिजल्प-मा-ाज यातायात चि-ह् एवं अंज-ा.

3. जल विज्ञा-ा, जल संसाध-ा एवं इंजीनियरी

3.1 जल विज्ञा-ा :

जलीय चज्र, अवजेपज, वाष्पीजरज, वाष्पोत्सर्ज-ा, अंत:स्यद-ा, अधिभार प्रवाह, जलारेख, बाढ़ आवृत्ति विश्लेषज, जलाशय द्वारा बाढ़ अ-ाुशील-ा, वाहिजा प्रवाह मार्गाभिजम-ा- मस्जिंजम विधि.

3.2 भू-तल प्रवाह :

विशिष्ट लब्धि, संचय-ा जुजांज, पारजम्यता जुजांज, परिरुद्ध तथा अपरिरुद्ध जलप्राही स्तर, एक्विटार्ड, परिरुद्ध तथा अपरिरुद्ध स्थितियों जे अंतर्जत एज जूप जे भीतर अरीय प्रवाह.

3.3 जल संसाध-ा इंजीनियरी :

भू तथा धरातल जल संसाध-ा, एजल तथा बहुउद्देशीय परियोज-ााएँ, जलाशय जी संचय-ा जमता, जलाशय हा-ियाँ, जलाशय अवसाद-ा.

3.4 सिंचाई इंजीनियरी :

(ज) फसलों जे लिए जल जी आवश्यजता : जयी उपयोज, जृत्ति तथा डेल्टा, सिंचाई जे तरीजे तथा उ-ाजी दजताएँ.

(ज) -ाहरें : -ाहर सिंचाई जे लिए आबंट-ा पद्धति, -ाहर जमता, -ाहर जी हा-ियाँ, मुज्य तथा वितरिजा -ाहरों जा संरेज-ा- अत्यधिज दज जाट, अस्तरित -ाहरें, उ-ाजे डिज़ाइ-ा, रिजीम सिद्धांत, ज्रांतिज अपरूपज प्रतिबल, तल भार.

(ज) जल-ज्रस्तता : जारज तथा नियंत्रज, लवजता.

(घ) -ाहर संरच-ाा : अभिजल्प, दाबोच्चता नियामज, -ाहर प्रपात, जलवाही सेतु, अव-ालिजा एवं -ाहर विजास जा माप-ा.

(ड) द्विपरिवर्ती शीर्ष जार्य: पारजम्य तथा अपारजम्य -ाींवों पर बाधिजा जे सिद्धांत और डिजाइ-ा, जोसला सिद्धांत, ऊर्जा जय.

(च) संचय-ा जार्य : बाँधों जी जिस्में, डिज़ाइ-ा, दृढ़ जुरुत्व जे सिद्धांत, स्थायित्व विश्लेषज.

(छ) उत्प्लव मार्ज : उत्प्लव मार्ज जे प्रजार, ऊर्जा जय.

(ज) -ादी प्रशिजज : -ादी प्रशिजज जे उद्देश्य, -ादी प्रशिजज जी विधियाँ.

4. पर्यावरज इंजीनियरी

4.1 जल पूर्ति :

जल माँज जी प्राजुक्ति, जल जी अशुद्धता तथा उसजा महत्व, भौतिज रासायनिज तथा जीवाजु विज्ञा-ा संबंधी विश्लेषज, जल से हो-ो वाली बीमारियाँ, पेय जल जे लिए मा-ाज.

4.2 जल जा अंतर्ज्रहज :

जल उपचार : स्जंद-ा जे सिद्धांत, ऊर्ज-ा तथा साद-ा, मंद-, द्रुत-, दाब फिल्टर, क्लोरी-ाीजरज, मृदूजरज, स्वाद, जंध तथा लवजता जो दूर जर-ाा.

4.3 वाहित मल व्यवस्था :

घरेलू तथा औद्योजिज अपशिष्ट, झंझावात वाहित मल- पृथज और संयुक्त प्रजालियाँ, सीवरों द्वारा बहाव, सीवरों जा डिज़ाइ-ा.

4.4 सीवेज लजज :

BOD, COD, ठोस पदार्थ, विली-ा ऑक्सीज-ा, -ााइट्रोज-ा और TOC, सामा-य जल मार्ज तथा भूमि पर निज्जास-ा जे मा-ाज.

4.5 सीवेज उपचार :

जार्यजारी नियम, इजाइयाँ, जोष्ठ, अवसाद-ा टैंज, च्वापी फिल्टर, ऑक्सीजरज पोखर, उत्प्रेरित अवपंज प्रज्रिया, सैप्टिज टैंज, अवपंज निस्तारज, अवशिष्ट जल जा पु-ा: चाल-ा.

4.6 ठोस अपशिष्ट :

जावों और शहरों में संज्रहज एवं विस्तारज, दीर्घजाली-ा जुप्रभावों जा प्रबंध.

5. पर्यावरजीय प्रदूषज : अवलंबित विजास, रेडियोऐक्टिव अपशिष्ट एवं निज्जास-ा, उष्मीय शक्ति संयंत्रों, जा-ाों, -ादी घाटी परियोज-ााओं जे लिए पर्यावरज संबंधी प्रभाव मूल्यांज-ा, वायु प्रदूषज, वायु प्रदूषज नियंत्रज अधिनियम.

वाजिज्य एवं लेजाविधि

प्रश्-ापत्र-1

भाज '1'

लेजाजरज एवं वित्त

लेजाजरज, जराधा-ा एवं लेजापरीजज

1. वित्तीय लेजाजरज :

वित्तीय सूच-ाा प्रजाली जे रूप में लेजाजरज; व्यवहारपरज विज्ञा-ाों जा प्रभाव / लेजाजरज मा-ाज, उदाहरजार्थ, मूल्यह्रास जे लिए लेजाजरज, मालसूचियां, अ-ाुसंधा-ा एवं विजास लाजतें, दीर्घावधि निर्माज संविदाएं, राजस्व जी पहचा-ा, स्थिर परिसंपत्तियां, आजस्मिज ताएं, विदेशी मुद्रा जे ले-ा-दे-ा, निवेश एवं सरजारी अ-ाुदा-ा, -ाजदी प्रवाह विवरज, प्रतिशेयर अर्ज-ा.

बो-ास शेयर, राइट शेयर, जर्मचारी स्टॉज विजल्प एवं प्रतिभूतियों जी वापसी जरीद (बाई-बैज) समेत शेयर पूंजी ले-ा-दे-ों जा लेजाजरज.

जंप-ाी अंतिम लेजे तैयार जर-ाा एवं प्रस्तुत जर-ाा.

जंप-ियों जा समामेल-ा, आमेल-ा एवं पु-ार्निर्माज.

2. लाजत लेजा जरज :

लाजत लेजाजरज जा स्वरूप और जार्य. लाजत लेजाजरज प्रजाली जा संस्थाप-ा, आय माप-ा से संबंधित लाजत संजल्प-ााएं, लाभ आयोज-ाा, लाजत नियंत्रज एवं निर्जय-ा.

लाजत निजाल-ा जी विधियां : जॉब लाजत निर्धारज, प्रज्रिया लाजत निर्धारज, जार्यजलाप आधारित लाजत निर्धारज. लाभ आयोज-ा जे उपजरज जे रूप में परिमाज-लाजत-लाभ संबंध.

जीमत निर्धारज निर्जयों जे रूप में वार्धिज विश्लेषज / विभेदज लाजत निर्धारज, उत्पाद निर्जय, निर्माज या ज्रय निर्जय, बंद जर-ो-ा निर्जय आदि. लाजत नियंत्रज एवं लाजत -यू-ाीजरज जी प्रविधियां : योज-ाा एवं नियंत्रज जे उपजरज जे रूप में बजट-ा. मा-ाज लाजत निर्धारज एवं प्रसरज विश्लेषज. उत्तरदायित्व लेजाजरज एवं प्रभाजीय निष्पाद-ा माप-ा.

3. जराधा-ा :

आयजर : परिभाषाएं; प्रभार जा आधार; जुल आय जा भाज -ा ब-ा-ो वाली आय. विभिन्न मदों, अर्थात् वेत-ा, जृह संपत्ति से आय, व्यापार या व्यवसाय से प्राप्तियां और लाभ, पूंजीजत प्राप्तियां, अ-य स्रोतों से आय, निर्धारिती जी जुल आय में शामिल अ-य व्यक्तियों जी आय. हा-ियों जा समंज-ा एवं अज्र-ाय-ा.

आय जे सजल योज से जटौतियां.

मूल्य आधारित जर (VAT) एवं सेवा जर से संबंधित प्रमुज विशेषताएं / उपबंध.

4. लेजा परीजज :

जंप-ाी लेजा परीजा: विभाज्य लाभों से संबंधित लेजा परीजा, लाभांश, विशेष जांच, जर लेजा परीजा.

बैंजिंज, बीमा एवं अ-लाभ संजठ-ाों जी लेजा परीजा; पूर्त संस्थाएं / -ाासें / संजठ-ा.

भाज '2'

वित्तीय प्रबंध, वित्तीय संस्था-ा एवं बाजार

1. वित्तीय प्रबंध :

वित्त प्रजार्य : वित्तीय प्रबंध जा स्वरूप, दायरा एवं लज्य: जोजिम एवं वापसी संबंध. वित्तीय विश्लेषज जे उपजरज: अ-ाुपात विश्लेषज, निधि प्रवाह एवं रोजड़ प्रवाह विवरज.

पूंजीजत बजट-ा निर्जय : प्रज्रिया, विधियां एवं आजल-ा विधियां. जोजिम एवं अनिश्चितता विश्लेषज एवं विधियां.

पूंजी जी लाजत : संजल्प-ाा, पूंजी जी विशिष्ट लाजत एवं तुलित औसत लाजत जा अभिजल-ा. इक्विटी पूंजी जी लाजत निर्धारित जर-ो जे उपजरज जे रूप में CAPM

वित्तीय-ा निर्जय : पूंजी संरच-ाा जा सिद्धांत - निवल आय(NI)उपाजम, निवल प्रचाल-ा आय(NOI)उपाजम, MMउपाजम एवं पारंपरिज उपाजम.

पूंजी संरच-ाा जा अभिजल्प-ा : लिवरेज जे प्रजार (प्रचाल-ा, वित्तीय एवं संयुक्त) EBIT-EPS विश्लेषज एवं अ-य जारज.

लाभांश निर्जय एवं फर्म जा मूल्यांज-ा : वाल्टर जा मॉडेल, MMथीसिस, जोर्ड-ा जा मॉडल, लिंट-ार जा मॉडल. लाभांश -ाीति जो प्रभावित जर-ो वाले जारज.

जार्यशील पूंजी प्रबंध : जार्यशील पूंजी आयोज-ाा. जार्यशील पूंजी जे निर्धारज. जार्यशील पूंजी जे घटज रोजड़, मालसूची एवं प्राप्य.

विलय-ाों एवं परिज्रहजों पर एजाज्र जंप-ाी पु-ार्संरच-ाा (जेवल वित्तीय परिप्रेज्य)

2. वित्तीय बाजार एवं संस्था-ा :

भारतीय वित्तीय व्यवस्था : विहंजावलोज-ा.

मुद्रा बाजार : सहभाजी, संरच-ाा एवं प्रपत्र / वित्तीय बैंज.

बैंजिंज जेत्र में सुधार. भारतीय रिजर्व बैंज जी मौद्रिज एवं ऋज -ाीति. नियामज जे रूप में भारतीय रिजर्व बैंज.

पूंजी बाजार : प्राथमिज एवं द्वितीयज बाजार; वित्तीय बाजार प्रपत्र एवं -ावप्रियत्मज ऋज प्रपत्र; नियामज जे रूप में SEBI वित्तीय सेवाएं : म्यूचुअल फंड्स, जोजिम पूंजी, साज मा-ाज, बीमा एवं IRDA

प्रश्-ापत्र - 2

भाज '1'

संजठ-ा सिद्धांत एवं व्यवहार, मा-ाव संसाध-ा प्रबंध एवं औद्योजिज संबंध

संजठ-ा सिद्धांत एवं व्यवहार

1. संजठ-ा सिद्धांत :

संजठ-ा जा स्वरूप एवं संजल्प-ाा; संजठ-ा जे बाह्य परिवेश - प्रौद्योजिजीय, सामाजिज, राज-ाैतिज, आर्थिज एवं विधिज; संजठ-ाि लज्य - प्राथमिज एवं द्वितीयज लज्य, एजल एवं बहुल लज्य; उद्देश्याधारित प्रबंध / संजठ-ा सिद्धांत जा विजास : क्लासिजी, -ावक्लासिजी एवं प्रजाली उपाजम.

संजठ-ा सिद्धांत जी आधुनिज संजल्प-ाा : सांजठनिज अभिजल्प, सांजठनिज संरच-ाा एवं सांजठनिज संस्जृति.

सांजठनिज अभिजल्प : आधारभूत चु-ाौतियां; पृथजीजरज एवं एजीजरज प्रज्रिया; जेंद्रीजरज एवं विजेंद्रीजरज प्रज्रिया; मा-ाजीजरज/औपचारिजीजरज एवं परस्पर समायोज-ा.

औपचारिज एवं अ-ाौपचारिज संजठ-ाों जा सम-वय. यांत्रिज एवं सावयव संरच-ाा.

सांजठनिज संरच-ाा जा अभिजल्प-ा-प्राधिजार एवं नियंत्रज; व्यवसाय एवं स्टाफ प्रजार्य, विशेषज्ञता एवं सम-वय.

सांजठनिज संरच-ाा जे प्रजार - प्रजार्यात्मज.

आधात्री संरच-ाा, परियोज-ाा संरच-ाा. शक्ति जा स्वरूप एवं आधार, शक्ति जे स्रोत, शक्ति संरच-ाा एवं राज-ाीति. सांजठनिज अभिजल्प एवं संरच-ाा पर सूच-ाा प्रौद्योजिजी जा प्रभाव.

सांजठनिज संस्जृति जा प्रबंध-ा

2. संजठ-ा व्यवहार :

अर्थ एवं संजल्प-ाा; संजठ-ाों में व्यक्ति :व्यक्तित्व, सिद्धांत, एवं निर्धारज; प्रत्यजज - अर्थ एवं प्रज्रिया. अभिप्रेरज : संजल्प-ाा, सिद्धांत एवं अ-ाुप्रयोज.

-ाेतृत्व - सिद्धांत एवं शैलियां. जार्यजीव-ा जी जुजता (QWL):अर्थ एवं निष्पाद-ा पर इसजा प्रभाव, इसे बढ़ा-ो जे तरीजे. जुजता चज्र (QC)-अर्थ एवं उ-ाजा महत्व. संजठ-ाों में द्व-द्वों जा प्रबंध. ले-ा-दे-ा विश्लेषज, सांजठनिज प्रभावजारिता, परिवर्त-ा जा प्रबंध.

भाज '2'

मा-ाव संसाध-ा प्रबंध एवं औद्योजिज संबंध

1. मा-ाव संसाध-ा प्रबंध (HRM):

मा-ाव संसाध-ा प्रबंध जा अर्थ, स्वरूप एवं जेत्र, मा-ाव संसाध-ा आयोज-ाा, जॉब विश्लेषज, जॉब विवरज, जॉब विनिर्देश-ा, नियोज-ा प्रज्रिया, चय-ा प्रज्रिया, अभिमुजीजरज एवं स्थाप-ा, प्रशिजज एवं विजास प्रज्रिया, निष्पाद-ा आजल-ा एवं 360° फीडबैज, वेत-ा एवं मजदूरी प्रशास-ा, जॉब मूल्यांज-ा, जर्मचारी जल्याज, पदोन्नतियां, स्था-ाांतरज एवं पृथक्जरज.

2. औद्योजिज संबंध (IR)

औद्योजिज संबंध जा अर्थ, स्वरूप, महत्व एवं जेत्र, ट्रेड यूनिय-ाों जी रच-ाा, ट्रेड यूनिय-ा विधा-ा, भारत में ट्रेड यूनिय-ा आंदोल-ा, ट्रेड यूनिय-ाों जी मा-यता, भारत में ट्रेड यूनिय-ाों जी समस्याएं. ट्रेड यूनिय-ा आंदोल-ा पर उदारीजरज जा प्रभाव.

औद्योजिज विवादों जा स्वरूप : हड़ताल एवं तालाबंदी, विवाद जे जारज, विवादों जा निवारज एवं निपटारा. प्रबंध-ा में जामजारों जी सहभाजिता : दर्श-ा, तर्जाधार, मौजूदा स्थिति एवं भावी संभाव-ााएं.

-याय निर्जय एवं सामूहिज सौदाजारी

सार्वजनिज उद्यमों में औद्योजिज संबंध, भारतीय उद्योजों में जैरहाजिरी एवं श्रमिज आवर्त एवं उ-ाजे जारज और उपचार.

ILO एवं इसजे प्रजार्य.

अर्थशास्त्र

प्रश्-ापत्र- 1

1. उन्नत व्यष्टि अर्थशास्त्र

(ज) जीमत निर्धारज जे मार्शलिय-ा एवं वालरासियम उपाजम.

(ज) वैजल्पिज वितरज सिद्धांत : रिजार्डो, जाल्डोर, जलीजी

(ज) बाजार संरच-ाा : एजाधिजारी प्रतियोजिता, द्विअधिजार, अल्पाधिजार

(घ) आधुनिज जल्याज मा-ादज्ड : परेटो हिक्स एवं सितोवस्जी, ऐरो जा असंभाव-ाा प्रमेय, ए. जे. से-ा जा सामाजिज जल्याज फल-ा.

2. उन्नत समष्टि अर्थशास्त्र :

नियोज-ा आय एवं ब्याजदर निर्धारज जे उपाजम : क्लासिजी, जी-स (IS-LM) वज्र, -ावक्लासिजी संश्लेषज एवं -ाया क्लासिजी, ब्याजदर निर्धारज एवं ब्याजदर संरच-ाा जे सिद्धांत.

3. मुद्रा बैंजिंज एवं वित्त :

(ज) मुद्रा जी मांज और पूर्ति : मुद्रा जा मुद्रा जुजज मात्रा सिद्धांत (फिशर, पीज एवं फ्राइडमै-ा) तथा जी-ा जा मुद्रा जे लिए मांज जा सिद्धांत, बंद और जुली अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रा प्रबंध-ा जे लज्य एवं साध-ा. जेंद्रीय बैंज और जजा-ो जे बीच संबंध. मुद्रा जी वृद्धि दर पर उच्चतम सीमा जा प्रस्ताव.

(ज) लोज वित्त और बाजार अर्थव्यवस्था में इसजी भूमिजा: पूरी जे स्वीजरज में, संसाध-ाों जा विनिधा-ा और वितरज और संवृद्धि. सरजारी राजस्व जे स्रोत, जरों एवं उपदा-ाों जे रूप, उ-ाजा भार एवं प्रभाव. जराधा-ा जी सीमाएं, ऋज, ज्राउडिंज आउट प्रभाव एवं ऋज ले-ो जी सीमाएं. लोज व्यय एवं इसजे प्रभाव.

4. अ-तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र :

(ज) अ-तर्राष्ट्रीय व्यापार जे पुरा-ो और -ाए सिद्धांत

(i) तुल-ाात्मज लाभ

(ii) व्यापार शर्तें एवं प्रस्ताव वज्र

(iii) उत्पाद चज्र एवं निर्जायज व्यापार सिद्धांत

(iv) व्यापार, संवृद्धि जे चालज जे रूप में और जुली अर्थव्यवस्था में अवविजास जे सिद्धांत.

(ज) संरजज जे स्वरूप : टैरिफ एवं जोटा

(ज) भुजता-ा शेष समायोज-ा : वैजल्पिज उपाजम

(i) जीमत ब-ााम आय, नियत विनिमय दर जे अधी-ा आय जे समायोज-ा.

(ii) मिश्रित -ाीति जे सिद्धांत

(iii) पूंजी चलिष्जुता जे अधी-ा विनिमय दर समायोज-ा.

(iv) विजासशील देशों जे लिए तिरती दरें और उ-ाजी विवजा, मुद्रा (जरेंसी) बोर्ड.

(v) व्यापार -ाीति एवं विजासशील देश

(vi) BOP, जुली अर्थव्यवस्था समष्टि मॉडल में समायोज-ा तथा -ाीति सम-वय.

(vii) सट्टा

(viii) व्यापार जुट एवं मौद्रिज संघ

(ix) विश्व व्यापार संजठ-ा (WTO): TRIM, TRIPS, घरेलू उपाय, WTO बातचीत जे विभिन्न चज्र

5. संवृद्धि एवं विजास :

(ज) (i) संवृद्धि जे सिद्धांत : हैरॅड जा मॉडल

(ii) अधिशेष श्रमिज जे साथ विजास जा ल्यूइस मॉडल

(iii) संतुलित एवं असंतुलित संवृद्धि

(iv) मा-ाव पूंजी एवं आर्थिज वृद्धि

(ज) जम विजसित देशों जा आर्थिज विजास जा प्रज्रम : आर्थिज विजास एवं संरच-ाा परिवर्त-ा जे विषय में मिर्डल एवं जुजमेंट्स : जम विजसित देशों जे आर्थिज विजास में जृषि जी भूमिजा.

(ज) आर्थिज विजास तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं निवेश, बहुराष्ट्रीयों जी भूमिजा.

(घ) आयोज-ाा एवं आर्थिज विजास : बाजार जी बदलती भूमिजा एवं आयोज-ाा, निजी- सरजारी साझेदारी.

(ड) जल्याज संजेतज एवं वृद्धि जे माप - मा-ाव विजास जे सूचज. आधारभूत आवश्यजताओं जा उपाजम.

(च) विजास एवं पर्यावरजी धारजीयता - पु-ा-ावीजरजीय एवं अपु-ा-ावीजरजीय संसाध-ा, पर्यावरजी अपजर्ष, अंतर-पीढ़ी इक्विटी विजास.

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

प्रश-ापत्र -2

1. स्वतंत्रतापूर्व युज में भारतीय अर्थव्यवस्था : भूमि प्रजाली एवं इसजे परिवर्त-ा, कृषि जा वाजिज्यीज रज, अपवह-ा सिद्धांत, अबंधता सिद्धांत एवं समालोच-ाा. निर्माज एवं परिवह-ा : जूट, जपास, रेलवे, मुद्रा एवं साज.

2. स्वतंत्रता जे पश्चात् भारतीय अर्थव्यवस्था :

ज. उदारीज रज जे पूर्व जा युज

(i) वजील, जाइजिल एवं वी. जे. आर. वी. राव जे योजदा-ा

(ii) कृषि : भूमि सुधार एवं भूमि पट्टा प्रजाली, हरित क्रांति एवं कृषि में पूंजी निर्माज.

(iii) संघट-ा एवं संवृद्धि में व्यापार प्रवृत्तियां, सरजारी एवं निजी जेत्रजों जी भूमिजा, लघु एवं कुटीर उद्योज.

(iv) राष्ट्रीय एवं प्रतिव्यक्ति आय : स्वरूप, प्रवृत्तियां, सज्ल एवं जेत्रजीय संघट-ा तथा उ-ामें परिवर्त-ा.

(v) राष्ट्रीय आय एवं वितरज जो निर्धारित जर-ो वाले स्थूल जारज, जरीबी जे माप, जरीबी एवं असमा-ाता में प्रवृत्तियां.

ज. उदारीज रज जे पश्चात जा युज

(i) -ाया आर्थिज सुधार एवं कृषि : कृषि एवं WTO, जाद्य प्रसंस्जरज, उपदा-ा, कृषि जीमतें एवं ज-ा वितरज प्रजाली, कृषि संवृद्धि पर लोज व्यय जा समाघात.

(ii) -ाई आर्थिज -ीति एवं उद्योज: औद्योजीज रज निजीज रज, विनिवेश जी जार्य -ीति, विदेशी प्रत्यज निवेश तथा बहुराष्ट्रीयों जी भूमिजा.

(iii) -ाई आर्थिज -ीति एवं व्यापार : बौद्धिज संपदा अधिजार: TRIPS, TRIMS, GATS तथा -ाई EXIM -ीति जी विवजाएं.

(iv) -ाई विनिमय दर व्यवस्था : आंशिज एवं पूर्ज परिवर्त-ीयता.

(v) -ाई आर्थिज -ीति एवं लोज वित्त : राजजोषीय उत्तरदायित्व अधिनियम, बारहवां वित्त आयोज एवं राजजोषीय संघवाद तथा राजजोषीय समेज-ा.

(vi) -ाई आर्थिज -ीति एवं मौद्रिज प्रजाली. -ाई व्यवस्था में RBI जी भूमिजा.

(vii) आयोज-ाा: जे-द्रीय आयोज-ाा से सांजेतिज आयोज-ाा तज, विजे-द्रीकृत आयोज-ाा और संवृद्धि हेतु बाजार एवं आयोज-ाा जे बीच संबंध : 73 वां एवं 74 वां संविधा-ा संशोध-ा.

(viii) -ाई आर्थिज -ीति एवं रोज़जार : रोज़जार एवं जरीबी, ग्रामीज मज़दूरी, रोज़जार सृज-ा, जरीबी उ-मूल-ा योज-ाएं, -ाई ग्रामीज रोज़जार जारंटी योज-ाा.

वैद्युत इंजीनियरी

प्रश-ापत्र - 1

1. परिपथ - सिद्धांत :

विद्युत अवयव, जाल लेजाचित्र, जेल्वि-ा धारा नियम, जेल्वि-ा वोल्टता नियम; परिपथ विश्लेषज विधियां; -ोडीय विश्लेषज; पाश विश्लेषज; आधारभूत जाल प्रमेय तथा अ-ुप्रयोज; जजिजा विश्लेषज : RL,RCएवं RLC परिपथ; ज्यावक्रीय स्थायी अवस्था विश्लेषज; अ-ु-ादी परिपथ; युग्मित परिपथ; संतुलित त्रिज्ला परिपथ. द्विजारज जाल.

2. संजे त एवं तंत्र :

सतत जाल एवं विवक्त-जाल संजे तों एवं तंत्र जा निरूपज; रैजिज जाल निश्चर तंत्र, संवल-ा, आवेज अ-ुक्रिया; संवल-ा एवं अवज्ल अंतर समीज रजों पर आधारित रैजिज जाल निश्चर तंत्रों जा समय जेत्र विश्लेषज. फूरिए रूपांतर, लेप्लास रूपांतर, जैड-रूपांतर, अंतरज फल-ा संजे तों जा प्रतिचय-ा एवं उ-ाजी प्रतिप्राप्ति. विवक्त जालतंत्रों जे द्वारा तुल्य रूप संजे तों जा DFT,FFT संसाध-ा.

3. विद्युत चुम्बजीय सिद्धांत :

मैक्सवेल समीज रज, परिबद्ध माध्यम में तरंज संचरज. परिसीमा अवस्थाएं, समतल तरंजों जा परावर्त-ा एवं अपवर्त-ा. संचरज लाइ-ों : प्रजामी एवं अप्रजामी तरंजें, प्रति बाधा प्रतितुल-ा, स्मिथ चार्ट.

4. तुल्य एवं इलेक्ट्रॉनिजी :

अभिलजज एवं डायोड जा तुल्य परिपथ (वृहत एवं लघु संजे त), द्विसंधि ट्रांजिस्टर, संधि जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर एवं धातु ऑक्साइड सामिचालज जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर. डायोड परिपथ : जर्त-ा, ग्रामी, दिष्टजारी. अभि-ातिज रज एवं अभि-ाति स्थायित्व. जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर प्रवर्धज. धारा दर्पज, प्रवर्धज : एज्ल एवं बहुचरजी, अवज्ल, संक्रियात्मज, पुनर्निवेश एवं शक्ति. प्रबंधजेंजा विश्लेषज, प्रबंधजों जी आवृति अ-ुक्रिया. संक्रियात्मज प्रबंधज परिपथ. निस्यंदज, ज्यावक्रीय दोलित्र: दोल-ा जे लिए जसौटी, एज्ल ट्रांजिस्टर और संक्रियात्मज प्रवर्धज वि-यास. फल-ा जनित्र एवं तरंज परिपथ. रैजिज एवं स्विच-ा विद्युत प्रदाय.

5. अंजीय इलेक्ट्रॉनिजी :

बूलीय बीजावली, बूलीय फल-ा जा -यू-ातमीज रज; तर्ज द्वार, अंजीय समाज लित परिपथ कुल, (DTL,TTL,ECL,MOS,CMOS)। संयुक्त परिपथ; अंज जजितीय परिपथ, जोड परिवर्तज, मल्टी प्लेयक्सर एवं विजोडित्र.

अ-ुक्रमिज परिपथ : चटज-ी एवं थपथप, जजित्र एवं विस्थाप-ा पंजीयज. तुलनित्र, जालनियामज बहुजंपित्र. प्रतिदर्श एवं धारज परिपथ, तुल्यरूप अंजीय परिवर्त(ADC)एवं अंजीय तुल्य रूप परिवर्तज (DAC)।सामिचालज स्मृतियां. प्रक्रमित युक्तियों जा प्रयोज करते हुए तर्ज जार्या-वय-ा (ROM,PLA,FPGA)।

6. ऊर्जा रूपांतरज :

वैद्युत यांत्रिजी ऊर्जा रूपांतरज जे सिद्धांत : घूर्जित मशी-ों में बल आघूर्ज एवं विद्युत चुंबजीय बल. दि.धा. मशी-ें : अभिलजज एवं निस्पाद-ा विश्लेषज, मोटरों जा प्रारंभ-ा एवं जति नियंत्रज. परिजामित्र: प्रचाल-ा एवं विश्लेषज जे सिद्धांत; विनियम-ा दजता; त्रिज्ला परिजामित्र: त्रिज्ला प्रेरज मशी-ें एवं तुल्यजालिज मशी-ें : अभिलजज एवं निष्पाद-ा विश्लेषज; जति नियंत्रज.

7. शक्ति इलेक्ट्रॉनिजी एवं विद्युत चाल-ा :

सामिचालज शक्ति युक्तियां : डायोड, ट्रांजस्टर, थाइरिस्टर, ट्रायज, GTO एवं धातु ऑक्साइड सामिचालज जेत्र प्रभाव ट्रांजिस्टर-स्थैतिज अभिलजज एवं प्रचाल-ा जे सिद्धांत, ट्रिजरिंज परिपथ, ज्ला नियंत्रज दिष्टजारी, सेतु परिवर्तज : पूर्ज नियंत्रित एवं अर्द्ध-नियंत्रित थाइरिस्टर चापर एवं प्रतीपजों जे सिद्धांत, DC-DC परिवर्तज, स्विच मोड इ-वर्टर, dcएवं ac मोटर चाल-ा जे जतिनियंत्रज जी आधारभूत संज्ल्प-ा, विचरजीय चाल चाल-ा जे अ-ुप्रयोज.

8. तुल्यरूप संचार :

यादृच्छिज चर : संतत, विविक्त; प्रायिज ता, प्रायिज ता फल-ा. सांज्यिजीय औसत; प्रायिज ता निदर्श; यादृच्छिज संजे त एवं रव : सम, रव, रवतुल्य बैंड चौड़ाई, रव सहित संजे त प्रेषज, रव संजे त अ-ुपात, रैजिज cwमॉडुल-ा: आयाम - माडुल-ा: द्विसाइड बैंड, द्विसाइड बैड - एज्ल चै-ाल (DSB-SC)एवं एज्ल साइड बैंड. मॉडुल-ा एवं विमाडुल-ा; ज्ला और आवृत्ति माडुल-ा : ज्ला माडुल-ा एवं आवृति मॉडुल-ा संजे त, संजीर्ज बैंड आवृति मॉडुल-ा, आवृति मॉडुल-ा ज्ला मॉडुल-ा जे लिए ज-ा-ा एवं संसूचन-ा, विष्प्रबल-ा, पूर्व प्रबल-ा. संवाहज तरंज मॉडुल-ा(CWM) तंत्र : परासंजरज अभिग्राही, आयाम मॉडुल-ा अभिग्राही, संचार अभिग्राही, आवृति मॉडुल-ा अभिग्राही, ज्ला पाशित लूप, एज्ल साइड बैंड अभिग्राही, आयाम मॉडुल-ा एवं आवृति मॉडुल-ा अभिग्राही जे लिए सिज-ाल-रव अ-ुपात जज-ा.

प्रश-ापत्र - 2

1. नियंत्रज तंत्र :

नियंत्रज तंत्र जे तत्व, जंड आरेज निरूपज : जुला - पाश एवं बंदपाश तंत्र, पुनर्निवेश जे सिद्धांत एवं अ-ुप्रयोज. नियंत्रज तंत्र अवयव. रैजिज जाल निश्चर तंत्र : जाल प्रजेत्र एवं रूपांतर प्रजेत्र विश्लेषज. स्थायित्व : राउथ हरविज़ जसौटी, मूल बिंदुपथ, बोडे आलेज एवं पोलर आलेज, -ाइक्विएस्ट जसौटी, अज्रपश्चता प्रतिजारज जा अभिज्ल्प-ा. साम-ुपातिज PI, PID,नियंत्रज; नियंत्रज तंत्रों जा अवस्था-विचरजीय निरूपज एवं विश्लेषज.

2. माइक्रोप्रोसेसर एवं माइक्रोजं प्यूटर :

PCसंघट-ा, CPU, अ-ुदेश सेट, रजिस्टर सेट,टाइमिंज आरेज, प्रोज्राम-ा, अंतरा-ाय-ा, स्मृति अंतरापृष्ठ-ा, IO अंतरापृष्ठ-ा, प्रोज्राम-ीय परिधीय युक्तियां.

3. माप-ा एवं मापयंत्रज :

त्रुटि विश्लेषज : धारा, वोल्टता, शक्ति, ऊर्जा, शक्ति जुजज, प्रतिरोध, प्रेरज त्व, धारिता एवं आवृति जा माप-ा, सेतु माप-ा. सिज-ाल अ-ुपूल परिपथ, इलेक्ट्रॉनिज माप-ा यंत्र : बहुमापी, जैथोड जि रज आसिलोस्जोप, अंजीय बोल्टमापी, आवृति जजित्र, Qमापी, स्पेक्ट्रम विश्लेषज, विरूपज मापी ट्रांसड्यूसर, ताप वैद्युत युज्म, थर्मिस्टर, रेजीय परिवर्त-ीय अवज्ल ट्रांसड्यूसर, विकृति प्रभावी, दाब विद्युत क्रिस्टल.

4. शक्तितंत्र : विश्लेषज एवं नियंत्रज :

सिरोपरि संचरज लाइ-ों तथा जे बलों जा स्थायी दशा निष्पाद-ा, सक्रिय एवं प्रतिघाती शक्ति अंतरज एवं वितरज जे सिद्धांत, प्रतिईजाई राशियां,बस प्रवेश्यता एवं प्रतिबाधा आव्यूह, लोड प्रवाह; बोल्टता नियंत्रज एवं शक्ति जुजज संशोध-ा; आर्थिज प्रचाल-ा; सममित घटज ; सममित एवं असममित दोष जा विश्लेषज. तंत्र स्थायित्व जी अवधारजा: स्विंज वक्र एवं समजेत्र जौटी. स्थैतिज बोल्ट ऐंपियर प्रतिघाती तंत्र. उच्च वोल्टता दिष्टधारा संचरज जी मूलभूत अवधारजाएं.

5. शक्तितंत्र रजज :

अतिधारा, अवज्ल एवं दूरी रजज जे सिद्धांत. ठोस अवस्था रिले जी अवधारजा. परिपथ वियोजज. अभिजित्र सहायता प्राप्त रजज; परिचय, लाइ-ा, बस, जनित्र, परिजामित्र रजज, संज्यात्मज रिले एवं रजज जे लिए अंजीय संजे त रजज (DSP) जा अ-ुप्रयोज.

6. अंजीय संचार :

स्पंद जोड मॉडुल-ा, अवज्ल स्पंद जोड मॉडुल-ा, डेल्टा मॉडुल-ा, अंजीय मॉडुल-ा एवं विमॉडुल-ा योज-ाएं: आयाम, ज्ला एवं आवृति जुंजीय-ा योज-ाएं. त्रुटि नियंत्रज जूटज रज: त्रुटिसंसूच-ा एवं संशोध-ा रैजिज जंड जोड, संवल-ा जोड. सूच-ाा माप एवं स्रोत कूट ज रज. आंज्ड़ा जाल, 7-स्तरीय वास्तुज ला.

भूजोल

प्रश-ापत्र - 1

भूजोल जे सिद्धांत

प्राकृतिज भूजोल

1. भूआकृति विज्ञा-ा : भूआकृति विज ास जे नियंत्रज जारज ;अंतर्जात एवं बहिर्जात बल;भूपर्पटी जा उद्जम एवं विज ास;भू-चुंबज त्व जे मूल सिद्धांत;पृथ्वी जे अंतरंज जी प्राकृतिज दशाएं.

भू-अभि-ाति;महाद्वीपीय विस्थाप-ा;समस्थिति; प्लेट विवर्तनिजी; पर्वतोत्पति जे संबंध में अभि-ाव विचार; ज्वालामुजीयता; भूकंप एवं सु-ाामी; भूआकृतिज चक्र एवं दृश्यभूमि विज ास जी संज्ल्प-ााएं; अ-ाच्छादन जाला-ुक्रम; जलमार्ज आकृतिविज्ञा-ा; अपरद-ा पृष्ठ; प्रवजता विज ास; अ-ुप्रयुक्त भूआकृति विज्ञा-ा; भूजलविज्ञा-ा, आर्थिज भूविज्ञा-ा एवं पर्यावरज.

2. जलवायु विज्ञा-ा : विश्व जे ताप एवं दाब ज टिबंध; पृथ्वी जा तापीय बजट; वायुमंडल परिसंचरज, वायुमंडल स्थिरता एवं अ-ास्थिरता. भूमंडलीय एवं स्था-ीय पव-ा; मा-ासू-ा एवं जेट प्रवाह;वायु राशि एवं वाताक्रज-ा-ा; शीतोष्ज एवं उष्जज टिबंधीय चक्रवात; वर्षज जे प्रजार एवं वितरज; मौसम एवं जलवायु; जोपे-ा, थॉ-विंट एवं त्रेवार्धा जा विश्व जलवायु वर्जीज रज; जलीय चक्र; वैश्विज जलवायु परिवर्त-ा एवं जलवायु परिवर्त-ा में मा-ाव जी भूमिजा एवं अ-ुक्रिया, अ-ुप्रयुक्त जलवायु विज्ञा-ा एवं -ाजरी जलवायु.

3. समुद्र विज्ञा-ा : अटलांटिज, हिंद एवं प्रशांत महासाजरों जी तलीय स्थलाकृति; महासाजरों जा ताप एवं लवजता; ऊष्मा एवं लवज बजट, महासाजरी निजेप; तरंज, धाराएं एवं ज्वार - भाटा; समुद्री संसाध-ा :जीवीय, जनित्र एवं ऊर्जा संसाध-ा; प्रवाल भित्तियां; प्रवाल विरंज-ा; समुद्र तल परिवर्त-ा; समुद्र नियम एवं समुद्री प्रदूषज.

4. जीव भूजोल : मृदाओं जी उत्पति; मृदाओं जा वर्जीज रज एवं वितरज; मृदा परिच्छेदिजा; मृदा अपरद-ा; -यू-ीज रज एवं संरजज; पादप एवं जंतुओं जे वैश्विज वितरज जो प्रभावित जर-ो वाले जारज ; व-ा अपरोपज जी समस्याएं एवं संरजज जे उपाय; सामाजिज वानिजी; कृषि वानिजी; व-य जीव-ा; प्रमुज जी-ा पूल जैंद्र.

5. पर्यावरजीय भूजोल : पारिस्थितिजी जे सिद्धांत; मा-ाव पारिस्थितिज अ-ुकूल-ा; पारिस्थितिजी एवं पर्यावरज पर मा-ाव जा प्रभाव; वैश्विज एवं जेत्रीय पारिस्थितिज परिवर्त-ा एवं असंतुल-ा; पारितंत्र उ-ाजा प्रबंध-ा एवं संरजज; पर्यावरजीय निम्नीज रज, प्रबंध एवं संरजज; जैव विविधता एवं संपोषजीय विज ास; पर्यावरजीय शिजा एवं विधा-ा.

मा-ाव भूजोल

1. मा-ाव भूजोल में संदर्श : जेत्रीय विभेद-ा;प्रादेशिज संश्लेषज;द्विभाज-ा एवं द्वैतवाद; पर्यावरजवाद;मात्रात्मज क्रांति एवं अवस्थिति विश्लेषज;उज्रसुधार, व्यावहारिज, मा-ावीय एवं ज ल्याज उपाजम; भाषाएं, धर्म एवं निरपेजीज रज; विश्व जे सांस्कृतिज प्रदेश;मा-ाव विज ास सूचज.

2. आर्थिज भूजोल : विश्व आर्थिज विज ास :माप एवं समस्याएं;विश्व संसाध-ा एवं उ-ाज ा वितरज; ऊर्जा संज ट;संवृद्धि जी सीमाएं;विश्व कृषि:कृषि प्रदेशों जी प्रारूपता;कृषि निवेश एवं उत्पादज ता;जाद्य एवं पोषज समस्याएं;जाद्य सुरजा;दुर्भिज :जारज, प्रभाव एवं उपचार; विश्व उद्योज; अवस्थानिज प्रतिरूप एवं समस्याएं;विश्व व्यापार जे प्रतिमा-ा.

3. ज-ासंज्या एवं बस्ती भूजोल : विश्व ज-ासंज्या जी वृद्धि और वितरज; ज-ासांज्यिजी जुज; प्रवास-ा जे ज ारज एवं परिजाम; अतिरेज - अल्प एवं अ-ुकूलतम ज-ासंज्या जी संज ल्प-ााएं;ज-ासंज्या जे सिद्धांत;विश्व ज-ासंज्या समस्याएं और -ीतियां;सामाजिज ज ल्याज एवं जीव-ा जुजवत्ता; सामाजिज पूंजी जे रूप में ज-ासंज्या.

ग्रामीज बस्तियों जे प्रज ार एवं प्रतिरूप; ग्रामीज बस्तियों में पर्यावरजीय मुद्दे; -ाजरीय बस्तियों जा पदा-ुक्रम; -ाजरीय आज ारिजी; प्रमुज शहर एवं श्रेजी आज ार प्रजाली जी संज ल्प-ाा; -ाजरों जा प्रज ार्यात्मज वर्जीज रज; -ाजरीय प्रभाव जेत्र; ग्राम -ाजर उपांत; अ-ुषंजी -ाजर; -ाजरीज रज जी समस्याएं एवं समाधा-ा; -ाजरों जा संपोषजीय विज ास.

4. प्रादेशिज आयोज-ाा : प्रदेश जी संज ल्प-ाा; प्रदेशों जे प्रज ार एवं प्रदेशीज रज जी विधियां; वृद्धि जे -द्र तथा वृद्धि ध्रुव; प्रादेशिज असंतुल-ा; प्रादेशिज विज ास जार्य-ीतियां; प्रादेशिज आयोज-ाा में पर्यावरजीय मुद्दे; संपोषजीय विज ास जे लिए आयोज-ाा.

5. मा-ाव भूजोल में मॉडल, सिद्धांत एवं नियम : मा-ाव भूजोल में प्रजाली विश्लेषज; माल्थस जा, मार्क्स जा और ज-ासांज्यिजीय संक्रमज मॉडल; क्रिस्टावर एवं लॉश जा जे-द्रीय स्था-ा सिद्धांत; पेरू एवं बूदेविए; वॉ-ा थू-ो-ा जा कृषि अवस्था-ा मॉडल; वेबर जा औद्योजिज अवस्था-ा मॉडल; ओस्तोव जा वृद्धि अवस्था माडल; अंत:भूमि एवं बहि:भूमि सिद्धांत; अंतरराष्ट्रीय सीमाएं एवं सीमांत जेत्र जे नियम.

प्रश-ापत्र - 2

भारत जा भूजोल

1. भौतिज वि-यास : पड़ोसी देशों जे साथ भारत जा अंतरिज संबंध; संरच-ाा एवं उच्चावच; अपवाहतंत्र एवं जल विभाजज ; भू-आकृतिज प्रदेश : भारतीय मा-ासू-ा एवं वर्षा प्रतिरूप, उष्जज टिबंधीय चक्रवात एवं पश्चिमी विजोभ जी क्रिया विधि; बाढ़ एवं अ-ावृष्टि; जलवायवी प्रदेश; प्राकृतिज व-ास्पति; मृदा प्रज ार एवं उ-ाज ा वितरज.

2. संसाध-ा : भूमि, सतह एवं भौमजल, ऊर्जा, जनित्र, जीवीय एवं समुद्री संसाध-ा; व-ा एवं व-य जीव-ा संसाध-ा एवं उ-ाज ा संरजज; ऊर्जा संज ट.

3. कृषि : अवसंरच-ाा : सिंचाई, बीज, उर्वरज, विद्युत; संस्थाजत जारज : जोत, भू-धारज एवं भूमि सुधार; शस्य-ा प्रतिरूप, कृषि उत्पादज ता, कृषि प्रज र्ष, फसल संयोज-ा, भूमि जमता; कृषि एवं सामाजिज वानिजी; हरित क्रांति एवं इसजी सामाजिज आर्थिज एवं पारिस्थितिज विवजा; वर्षाधी-ा जेती जा महत्व; पशुध-ा संसाध-ा एवं श्वेत क्रांति; जल कृषि, रेशम जीटपाल-ा, मधुमजिपाल-ा, एवं जुक्कुट पाल-ा; कृषि प्रादेशीज रज; कृषि जलवायवी जेत्र; कृषि पारिस्थितिज प्रदेश.

4. उद्योज : उद्योजों जा विज ास : जपास, जूट, वस्त्रोद्योज, लोह एवं इस्पात, अलुमिनियम, उर्वरज, ज ाजज, रसाय-ा एवं फार्मास्युटिज ल्स, आटोमोबाइल, कुटीर एवं कृषि आधारित उद्योजों जे अवस्थिति ज ारज ; सार्वजनिज जेत्र जे उपक्रमों सहित औद्योजिज घरा-ो एवं संकुल;औद्योजिज प्रादेशीज रज; -ाई औद्योजिज -ीतियां; बहुराष्ट्रीय कंपनियां एवं उदारीज रज; विशेष आर्थिज जेत्र; पारिस्थितिज - पर्यट-ा समेत पर्यट-ा.

5. परिवह-ा, संचार एवं व्यापार : सड़ज, रेलमार्ज, जलमार्ज, हवाई मार्ज एवं पाइपलाइ-ा -ेटवर्ज एवं प्रादेशिज विज ास में उ-ाजी पूरज भूमिजा; राष्ट्रीय एवं विदेशी व्यापार वाले पत्त-ों जा बढ़ता महत्व; व्यापार संतुल-ा; व्यापार -ीति; निर्यात प्रक्रमज जेत्र; संचार एवं

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

सूच-ा प्रौद्योजिजी में आया विज ास और अर्थव्यवस्था तथा समाज पर उ-ाज ा प्रभाव; भारतीय अंतरिज ार्यक्र म.

6. सांस्कृ तिज वि-यास : भारतीय समाज ा ऐतिहासिज परिप्रेज्य; प्रजातीय, भाषिज एवं -ृजातीय विविधताएं; धार्मिज अल्पसंज्यज ; प्रमुज ज-ाजातियां, ज-ाजातीय जेत्र तथा उ-ाजी समस्याएं; सांस्कृ तिज प्रदेश; ज-ासंज्या जी संवृद्धि, वितरज एवं घ-ात्व; ज-ासांज्यिजीय जुज : लिंज अ-ुपात, आयु संरच-ा, साजरतादर, ार्यबल, निर्भरता अ-ुपात, आयुज ाल; प्रवास-ा (अंत:प्रादेशिज , प्रदेशांतर तथा अंतरराष्ट्रीय) एवं इससे जुड़ी समस्याएं; ज-ासंज्या समस्याएं एवं -ीतिया; स्वास्थ्य सूचज .

7. बस्ती : ज्ञामीज बस्ती जे प्रज ार, प्रतिरूप तथा आज ारिजी; -ाजरीय विज ास; भारतीय शहरों जी आज ारिजी; भारतीय शहरों ज ा प्रज ार्यात्मज वर्जीज रज; सन्नजर एवं महा-ाजरीय प्रदेश; -ाजर स्वप्रसार; जंदी बस्ती एवं उससे जुड़ी समस्याएं; -ाजर आयोज-ा; -ाजरीज रज जी समस्याएं एवं उपचार.

8. प्रादेशिज विज ास एवं आयोज-ा : भारत में प्रादेशिज आयोज-ा ज ा अ-ुभव; पंचवर्षी योज-ाएं; समन्वित ज्ञामीज विज ास ार्यक्र म; पंचायती राज एवं विजें द्रीकृ त आयोज-ा; ज मा-ा जेत्र विज ास; जल विभाजज प्रबंध; पिछड़ा जेत्र, मरूस्थल, अ-ावृष्टि प्रवज, पहाड़ी, ज-ाजातीय जेत्र विज ास जे लिए आयोज-ा; बहुस्तरीय योज-ा; प्रादेशिज योज-ा एवं द्वीप जेत्रों ज ा विज ास.

9. राज-ैतिज परिप्रेज्य : भारतीय संघवाद ज ा भौजोलिज आधार; राज्य पु-ार्जठ-ा; -ाए राज्यों ज ा आविर्भाव; प्रादेशिज चेत-ा एवं अंतर्राज्य मुद्दे; भारत जी अंतर्राष्ट्रीय सीमा और संबंधित मुद्दे; सीमापार आतंज वाद; वैश्विज मामले में भारत जी भूमिज ा; दजिज एशिया एवं हिंदी महासाजर परिमंडल जी भू-राज-ीति.

10. समज ाली-ा मुद्दे : पारिस्थितिज मुद्दे : पर्यावरजीय संज ट : भू-स्जल-ा, भूज ंप, सु-ागमी, बाढ़ एवं अ-ावृष्टि, महामारी; पर्यावरजीय प्रदूषज से संबंधित मुद्दे; भूमि उपयोज जे प्रतिरूप में बदलाव; पर्यावरजीय प्रभाव आज ल-ा एवं पर्यावरज प्रबंध-ा जे सिद्धांत; ज-ासंज्या विस्फोट एवं जाद्य सुरजा; पर्यावरजीय नि-ीज रज; व-ो-मूल-ा, मरूस्थलीज रज एवं मृदा अपरद-ा; कृ षि एवं औद्योजिज अशांति जी समस्याएं; आार्थिज विज ास में प्रादेशिज असमा-ाताएं; संपोषजीय वृद्धि एवं विज ास जी संज ल्प-ा; पर्यावरजीय संचेत-ा; -ादियों ज ा सहवद्ध-ा, भूमंडलीज रज एवं भारतीय अर्थव्यवस्था.

टिप्पजी : अभ्यर्थियों ज ो इस प्रश-ापत्र में लिए जए विषयों से संजत एज अ-िवार्य मा-ाचित्र - आधारित प्रश-ा ज ा उत्तर दे-ा अ-िवार्य है .

भूविज्ञा-ा

प्रश-ापत्र-1

1. सामा-य भूविज्ञा-ा :

सौरतंत्र, उल्ज ापिंड, पृथ्वी ज ा उद्भव एवं अंतरंज तथा पृथ्वी जी आयु , ज्वालामुजी - ज ारज एवं उत्पाद, ज्वालामुजी पट्टियॉ, भूज ंप - ज ारज, प्रभाव, भारत जे भूज ंपी जेत्र, द्वीपाभ चाप, जाइयॉ एवं महासाजर -मध्य ज टज ; महाद्वीपीय अपोढ़; समु-द्र अधस्तल विस्तार, प्लेट विवर्ति-ाजी; समस्थिति.

2. भूआकृ ति विज्ञा-ा एवं सुदूर- संवेद-ा :

भूआकृ ति विज्ञा-ा जी आधारभूत संज ल्प-ा; अपजय एवं मृदा-िर्माज; स्थलरूप, ढाल एवं अपवाह; भूआकृ तिज चक्र एवं उ-ाजी विवजा; आज ारिजी एवं इसज ा संरच-ाओं एवं आश्मिजी से संबंध; तटीय भूआकृ ति विज्ञा-ा; जनि-ाज पूर्वेजज में भूआकृ ति विज्ञा-ा जे अ-ुप्रयोज, सिविल इंजी-ियरी; जल विज्ञा-ा एवं पर्यावरजीय अध्यय-ा; भारतीय उपमहाद्वीप ज ा भूआकृ ति विज्ञा-ा. वायव फोटो एवं उ-ाजी विवजा-जुज एवं सीमाएं; विद्युत चुम्बजीय स्पेक्ट्रम; ज जा- परिभ्रमज उपज्रह एवं संवेद-ा प्रजलियां; भारतीय दूर संवेद-ा उपज्रह; उपज्रह दत्त उत्पाद; भू-विज्ञा-ा में दूर संवेद-ा जे अ-ुप्रयोज; भोजोलिज सूच-ा प्रधलियां (GIS) एवं विश्वव्यापी अवस्थ-ा प्रजाली (GPS) - इसज ा अ-ुप्रयोज.

3. संरच-ात्मज भूविज्ञा-ा :

भूवैज्ञा-िज मा-ाचित्रज एवं मा-ाचित्र पठ-ा जे सिद्धांत, प्रजेप आरेज, प्रतिबल एवं विकृ ति दीर्घवृत तथा प्रत्यास्थ, सुघट्य एवं श्य-ा पदार्थ जे प्रतिबल -विकृ ति संबंध; विरूपित शैली में विकृ ति चिह्-ाज ; विरूपज दशाओं जे अंतर्जत जनि-ाजों एवं शैलों ज ा व्यवहार; वल-ा एवं भ्रंश वर्जीज रज एवं यांत्रिजी; वल-ों, शल्ज -ों, संरेजजों, जोड़ों एवं भ्रंशों, विषमवि-यासों ज ा संरच-ात्मज विश्लेषज; क्रि स्टल-ा एवं विरूपज जे बीच समय संबंध.

4. जीवाश्म विज्ञा-ा :

जाति - परिभाषा एवं -ामपद्धति; जुरू जीवाश्म एवं सूज्म जीवाश्म; जीवाश्म संरजज जी विधियां; विभिन्न प्रज ार जे सूज्म जीवाश्म; सह संबंध, पेट्रोलियम अ-ावेषज, पुराजलवायवी एवं पुरासमुद्रविज्ञा-ीय अध्यय-ों में सूज्म जीवाश्मों ज ा अ-ुप्रयोज; होमि-िडी एक्विडी एवं प्रोबोसीडिया में विज ासात्मज प्रवृति; शिवालिज प्राजिजात; जोडंवा-ा व-ास्पतिजात एवं प्राजिजात एवं इसज ा महत्व; सूचज जीवाश्म एवं उ-ाज ा महत्व.

5. भारतीय स्तरिजी :

स्तरिजी अ-ुक्र मों ज ा वर्जीज रज: अश्मस्तरिज जैवस्तरिज , ज ालस्तरिज एवं चुम्बज स्तरिज तथा उ-ाज ा अंतर्संबंध/ भारत जी जै ब्रिय-ापूर्व शै्लों ज ा वितरज एवं वर्जीज रज; प्राजिजात, व-ास्पतिजात एवं आर्थिज महत्व जी दृष्टि से भारत जी दृश्यजीवी शैलों जे स्तरिज वितरज एवं अश्मविज्ञा-ा ज ा अध्यय-ा; प्रमुज सीमा समस्याए - जै ब्रिय-ा/ जै ब्रिय-ा पूर्व,पर्मिय-ा/ट्राइऐसिज , जे टैशियस/ तृतीयज एवं प्लायोसी-ा / प्लीस्टोसी-ा; भूवैज्ञा-िज अतीत में भारतीय उपमहाद्वीप में जलवायवी दशाओं, पुराभूजोल एवं अज-ोय सक्रि यता ज ा अध्यय-ा; भारत ज ा स्तरिज ढाँचा; हिमालय ज ा उद्भव.

6. जल भूविज्ञा-ा एवं इंजी-ियरी भूविज्ञा-ा :

जल वैज्ञा-िज चक्र एवं जल ज ा ज-ा-िज वर्जीज रज; अवपृष्ठ जल ज ा संचल-ा; वृहत ज्वार; सरध्रंता, परज ाम्यता, द्रवचालित चालज ता, पारजम्यता एवं संचय-ा जुजांज , ऐक्विफर वर्जीज रज; शैलों जी जलधारी विशेषताएं; भूजल रसाय-िजी; लवजजल अंतर्बेध-ा; कूपों जे प्रज ार, वर्षाजल संज्रहज; शैलों जे इंजी-ियरी जुज-धर्म; बांधों, सुरंजों, राजमार्जों, रेलमार्जों एवं पुलों जे लिए भूवैज्ञा-िज अ-ावेषज; नि-ार्माज सामज्री जे रूप में शैल; भूस्जल-ा - ज ारज, रोज थाम एवं पु-ार्वास; भूज ंप रोधी संरच-ाएं.

प्रश-ापत्र -2

1. जनि-ाज विज्ञा-ा :

प्रजलियों एवं सममिति वर्जों में क्रि स्टलों ज ा वर्जीज रज; क्रि स्टल संरच-ात्मज संजे त-ा जी अंतर्राष्टीय प्रजाली;क्रि स्टल सममिति जो नि-ारूपित ज र-ो जे लिए प्रजेप आरेजों ज ा प्रयोज; X- जिरज क्रि स्टलिजी जे तत्व.

शैलज र सिलिजे ट जनि-ाज समूहों जे भौतिज एवं रासाय-िज जुज; सिलिजे ट ज ा संरच-ात्मज वर्जीज रज; आज्नेय एवं ज ायांतरित शैलों जे सामा-य जनि-ाज; ज ार्बो-ेट, फास्फेट, सल्फाइड एवं हेलाइड समूहों जे जनि-ाज; मृत्तिज ा जनि-ाज.

सामा-य शैलज र जनि-ाजों जे प्रज ाशिज जुजधर्म; जनि-ाजों में बहुवर्जता, विलोप ज ोज, द्विअपवर्त-ा (डबल रिफ्रैक्श-ा, बाईरेफ्रिंजेंस), यमल-ा एवं परिजेपज.

2. आज्नेय एवं ज ायांतरित शैलिजी :

मैजमा ज-ा-ा एवं क्रि स्टल-ा; ऐल्बाइट - ऐ-ॉर्थाइट ज ा क्रि स्टल-ा; डायोप्साइड- ऐ-ॉर्थाइट एवं डायोप्साइड - वोलास्टो-ाइट - सिलिज ा प्रजालियां ; बॉवे-ा ज ा अभिक्रि या सिद्धांत; मैज्मीय विभेद-ा एवं स्वांजीज रज; आज्नेय शैलों जे जठ-ा एवं सरंच-ाओं ज ा शैलज-ा-ाि-ज महत्व; ज्रे-ाइट, साइ-ाइड, डायोराइट , अल्पसिलिज एवं अत्यल्पसिलिज समूहों, चा-ोंज ाइट, अ-ॉर्थोसाइट एवं जारीय शैलों जी शैलवर्ज-ा एवं शैल ज-ा-ा; ज ार्बो-ेटाइट्स, डेज -ा ज्वालामुजी शैल-जेत्र.

ज ायांतरज प्ररूप एवं ज ारज ; ज ायांतरी ज ोटियां एवं संस्तर; प्रावस्था नि-याम; प्रादेशिज एवं संस्पर्श ज ायांतरज संलजजी; ACF एवं AKF आरेज; ज ायांतरी शैलों ज ा जठ-ा एवं संरच-ा; बालुज ामय, मृज्मय एवं अल्पसिलिज शैलों ज ा ज ायांतरज; जनि-ाज समुच्चय पश्चजतिज ज ायांतरज; तत्वांतरज एवं ज्रे-ाइटीभव-ा; भारत ज ा मिज्मेटाइट, ज जिज ाश्म शैल प्रदेश.

3. अवसादी शैलिजी :

अवसाद एवं अवसादी शैल नि-ार्माज प्रक्रि याएं , प्रसंघ-ा-ा एवं शिलीभव-ा, संजंडाश्मी एवं असंजंडाश्मी शैल - उ-ाज ा वर्जीज रज, शैलवर्ज-ा एवं नि-ाजेपज वातावरज; अवसादी संलजजी एवं ज-ा-ाजेत्र; अवसादी संरच-ाएं एवं उ-ाज ा महत्व; भारी जनि-ाज एवं उ-ाज ा महत्व; भारत जी अवसादी द्रोजियां.

4. आर्थिज भूविज्ञा-ा :

अयस्ज , अयस्ज जनि-ाज एवं जैंज, अयस्ज ज ा औसत प्रतिशत, अयस्ज नि-ाजेपों ज ा वर्जीज रज; जनि-ाज नि-ाजेपों जी नि-ार्माज प्रक्रि या; अयस्ज स्था-ीज रज जे नि-यंत्रज; अयस्ज जठ-ा एवं संरच-ाएं; धातु ज-ानि-ाज युज एवं प्रदेश; एल्युमि-ियम, क्रो-ियम, ताम्र, स्वर्ज, लोह, लेड, जिज , मैज-ीज, टिटै-ियम, युरे-ियम एवं थोरियम तथा औद्योजिज जनि-ाजों जै महत्वपूर्ज भारतीय नि-ाजेपों ज ा भूविज्ञा-ा; भारत में ज ोयला एवं पेट्रोलियम नि-ापेज; राष्ट्रीय जनि-ाज -ीति; जनि-ाज संसाध-ों ज ा संरजज एवं उपयोज; समुद्री जनि-ाज संसाध-ा एवं समुद्र नि-याम.

5. ज-ा-ा भूविज्ञा-ा :

पूर्वेजज जी विधियां - भूवैज्ञा-िज , भूभौतिज , भूरासाय-िज एवं भू-वा-ास्पतिज ; प्रतिचय-ा प्रविधियां; अयस्ज नि-चय प्राक्ज ल-ा; धातु अयस्जों औधेजिज जनि-ाजों, समुद्री जनि-ाज संसाध-ों एवं नि-ार्माज प्रस्तरों जे अ-वेषज एवं ज-ा-ा जी विधियां; जनि-ाज सज्जीज रज एवं अयस्ज प्रसाध-ा.

6. भूरासाय-िजी एवं पर्यावरजीय भूविज्ञा-ा :

तत्वों ज ा अंतरिजी बाहुल्य; ज्रहों एवं उल्ज ापिंडों ज ा संघट-ा; पृथ्वी जी संरच-ा एवं संघट-ा एवं तत्वों ज ा वितरज; लेश तत्व; क्रि स्टल रासाय-िजी जे तत्व - रासाय-िज आबंध, सम-वय संज्या, समाकृ तिज ता एवं बहुरूपता; प्रारंभिज ऊष्माजतिजी.

प्राकृ तिज संज ट - बाढ़, वृहत जरज, तटीय संज ट, भूज ंप एवं ज्वालामुजीय सक्रि यता तथा -यू-ी ज रज; -ाजरीज रज, ज-ा-ा औद्योजिज एवं रेडियोसक्रि य अपरद नि-पटा-ा, उर्वरज प्रयोज, ज-ा-ा अपरद एवं फ्लाई ऐश सन्निजेपज जे पर्यावरजीय प्रभाव; भौम एवं भू- पृष्ठ जल प्रदूषज, समुद्री प्रदूषज; पर्यावरज संरजज - भारत में विधायी उपाय; समुद्र तल परिवर्त-ा - ज ारज एवं प्रभाव.

इतिहास

प्रश-ापत्र -1

1. स्रोत :

पुरातात्विज स्रोत :

अ-वेषज, उत्ज -ा-ा, पुरालेजविद्या, मुद्राशास्त्र, स्मारज .

साहित्यिज स्रोत :

स्वदेशी :प्राथमिज एवं द्वितीयज ; ज विता, विज्ञा-ा साहित्य, साहित्य, जेत्रीय भाषाओं ज ा साहित्य, धार्मिज साहित्य.

विदेशी वर्ज-ा : यू-ा-ी, ची-ी एवं अरब लेजज

2. प्राजैतिहास एवं आद्य इतिहास :

भौजोलिज ज ारज , शिज ार एवं संज्रहज (पुरापाषाज एवं मध्यपाषाज युज); कृ षि ज ा आरंभ (-ावपाषाज एवं ताम्रपाषाज युज).

3. सिंधु घाटी सभ्यता :

उद्जम, ज ाल, विस्तार, विशेषताएं, पत-ा, अस्तित्व एवं महत्व, ज ला एवं स्थापत्य.

4. महापाषाजयुजी-ा संस्कृ तियां :

सिंधु से बाहर पशुचारज एवं कृ षि संस्कृ तियों ज ा विस्तार, सामुदायिज जीव-ा ज ा विज ास, बस्तियां, कृ षि ज ा विज ास, शिल्पज र्म, मृदभांड एवं लोह उद्योज.

5. आर्य एवं वैदिज ज ाल :

भारत में आर्यों ज ा प्रसार.

वैदिज ज ाल : धार्मिज एवं दार्शनि-ाज साहित्य; ऋजवैदिज ज ाल से उत्तर वैदिज ज ाल तज हुए रूपांतरज; राज-ैतिज , सामाजिज एवं आर्थिज जीव-ा; वैदिज युज ज ा महत्व; राजतंत्र एवं वर्ज व्यवस्था ज ा क्र म विज ास.

6. महाज-ापद ज ाल :

महाज-ापदों ज ा नि-ार्माज :जजतंत्रीय एवं राजतंत्रीय; -ाजर जे द्रों ज ा उद्भव; व्यापार मार्ज; आर्थिज विज ास; टंज ज (सिक्ज ा ढलाई); जै-ा धर्म एवं बौद्ध धर्म ज ा प्रसार; माजधों एवं -ांदों ज ा उद्भव.

ईरा-ी एवं मज दूनियाई आक्र मज एवं उ-ाजे प्रभाव.

7. मौर्य साम्राज्य :

मौर्य साम्राज्य जी -ींव, चंद्रजुप्त, जौटिल्य और अर्थशास्त्र; अशोज ; धर्म जी संज ल्प-ा; धर्मादेश; राज्य व्यवस्था; प्रशास-ा; अर्थ-व्यवस्था; ज ला, स्थापत्य एवं मूर्तिशिल्प; विदेशी संपर्ज ; धर्म; धर्म ज ा प्रसार; साहित्य.

साम्राज्य ज ा विघट-ा; शुंज एवं ज ज्व.

8. उत्तर मौर्य ज ाल (भ्ंारत - यू-ा-ी , शज , कु षाज , पश्चिमी जत्रप):

बाहरी विश्व से संपर्ज ; -ाजर-जे द्रों ज ा विज ास, अर्थ - व्यवस्था, टंज ज, धर्मों ज ा विज ास, महाया-ा, सामाजिज दशाएं, ज ला, स्थापत्य, संस्कृ ति, साहित्य एवं विज्ञा-ा.

9. प्रारंभिज राज्य एवं समाज; पूर्वी भारत, दज -ा एवं दजिज भारत में :

जारवेल, सातवाह-ा, संजमज ाली-ा तमिल राज्य; प्रशास-ा, अर्थव्यवस्था, भूमि - अ-ुदा-ा, टंज ज, व्यापारिज श्रेजियां एवं -ाजर जे द्र; बौद्ध जे -द्र, संजम साहित्य एवं संस्कृ ति; ज ला एवं स्थापत्य.

10. जुप्त वंश , वाज टज एवं वर्ध-ा वंश ;

राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा, आर्थिज दशाएं, जुप्तज ाली-ा टंज ज, भूमि अ-ुदा-ा, -ाजर जे द्रों ज ा पत-ा, भारतीय सामंतशाही, जाति प्रथा, स्त्री जी स्थिति, शिजा एवं शैजिज संस्थाएं; -ालंदा, विक्र मशिला एवं वल्लभी, साहित्य, विज्ञा-ा साहित्य, ज ला एवं स्थापत्य.

11. जुप्तज ाली-ा जेत्रीय राज्य :

ज दंबवंश, पल्लववंश, बदमी ज ा चालुक्यवंश; राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा, व्यापारिज श्रेजियां, साहित्य; वैष्जव एवं शैव धर्मों ज ा विज ास. तमिल भक्ति आंदोल-ा, शंज राचार्य; वेदांत; मंदिर संस्थाएं एवं मंदिर स्थापत्य; पाल वंश, से-ा वंश, राष्ट्रकू ट वंश, परमार वंश, राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा; सांस्कृ तिज पज. सिंध जे अरब विजेता; अलबरू-ी, ज ल्याज ज ा चालुक्य वंश, चोल वंश, होयशल वंश, पांड्य वंश; राज्य व्यवस्था एवं प्रशास-ा; स्था-ीय शास-ा; ज ला एवं स्थापत्य ज ा विज ास, धार्मिज संप्रदाय, मंदिर एवं मठ संस्थाएं, अज्रहार वंश, शिजा एवं साहित्य, अर्थव्यवस्था एवं समाज.

12. प्रारंभिज भारतीय सांस्कृ तिज इतिहास जे प्रतिपाद्य :

भाषाएं एवं मूलज्रंथ, ज ला एवं स्थापत्य जे क्र म विज ास जे प्रमुज चरज, प्रमुज दार्शनि-ाज चिंतज एवं शाजाएं, विज्ञा-ा एवं जजित जे जेत्र में विचार.

13. प्रारंभिज मध्यज ाली-ा भारत , 750-1200 :

- राज्य व्यवस्था :उत्तरी भारत एवं प्रायद्वीप में प्रमुज राज-ैतिज घट-ाक्र म, राजपूतों ज ा उद्जम एवं उदय
- चोल वंश: प्रशास-ा, ज्रामीज अर्थव्यवस्था एवं समाज
- भारतीय सामंतशाही
- कृ षि अर्थ व्यवस्था एवं -ाजरीय बस्तियां
- व्यापार एवं वाजिज्य
- समाज :ब्राह्मज जी स्थिति एवं -ाई सामाजिज व्यवस्था
- स्त्री जी स्थिति
- भारतीय विज्ञा-ा एवं प्रौद्योजिजी

14. भारत जी सांस्कृ तिज परंपरा , 750-1200 :

- दर्श-ा :शंज राचार्य एवं वेदांत , रामा-ुज एवं विशिष्टाद्वैत, मध्व एवं ब्रह्म - मीमांसा.
- धर्म : धर्म जे स्वरूप एवं विशेषताएं, तमिल भक्ति, संप्रदाय, भक्ति ज ा विज ास, इस्लाम एवं भारत में इसज ा आजम-ा, सूफी मत.
- साहित्य : संस्कृ त साहित्य, तमिल साहित्य ज ा विज ास, -ावविज ासशील भाषाओं ज ा साहित्य, ज ल्हज जी राजतरंजिजी, अलबरू-ी ज ा इंडिया.
- ज ला एवं स्थापत्य : मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प, चित्रज ला

15. तेरहवीं शताब्दी :

- दिल्ली सल्त-ात जी स्थाप-ा : जोरी जे आक्र मज - जोरी जी सफलता जे पीछे ज ारज
- आर्थिज , सामाजिज एवं सांस्कृ तिज परिजाम
- दिल्ली सल्त-ात जी स्थाप-ा एवं प्रारंभिज तुर्क सुल्ता-ा
- सुदृढ़ीज रज: इल्तुतमिश और बलब-ा ज ा शास-ा

16. चौदहवीं शताब्दी :

- जिलजी क्र ांति
- अलाउद्दी-ा जिलजी :विजय एवं जेत्र - प्रसार, कृ षि एवं आर्थिज उपाय
- मुहम्मद तुजलज : प्रमुज प्रज ल्प, कृ षि उपाय, मुहम्मद तुजलज जी अफसरशाही
- फिरोज तुजलज :कृ षि उपाय, सिविल इंजी-ियरी एवं लोज नि-ार्माज में उपलब्धियां, दिल्ली सल्त-ात ज ा पत-ा, विदेशी संपर्ज एवं इब्-ा बतूता ज ा वर्ज-ा

17. तेरहवीं एवं चौदहवीं शताब्दी ज ा समाज , संस्कृ ति एवं अर्थव्यवस्था :

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

- समाज :ग्रामीण समाज जी रच-ना, शासी वर्ज, -जर निवासी, स्त्री, धार्मिज वर्ज, सल्त-नत जे अंतर्जत जाति एवं दास प्रथा, भक्ति आ-दोल-न, सूफी आ-दोल-न
- संस्कृति :फारसी साहित्य, उत्तर भारत जी जेत्रीय भाषाओं जा साहित्य, दजिज भारत जी भाषाओं जा साहित्य, सल्त-नत स्थापत्य एवं -ए स्थापत्य रूप, चित्रजला, सम्मिश्र संस्कृति जा विजास
- अर्थ व्यवस्था : कृषि उत्पाद-न, -जरीय अर्थव्यवस्था एवं कृषीतर उत्पाद-न जा उद्भव, व्यापार एवं वाजिज्य

18. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिज सोलहवीं शताब्दी - राज-नैतिज घट-ाक्रम एवं अर्थव्यवस्था :

- प्रांतीय राजवंशों जा उदय : बंजाल, जश्मीर (जै-नुल आबदी-न),जुजरात, मालवा, बहम-नी
- विजय-जजर साम्राज्य
- लोदीवंश
- मुजल साम्राज्य, पहला चरज :बाबर एवं हुमायूं
- सूर साम्राज्य :शेरशाह जा प्रशास-न
- पुर्तजाली औप-निवेशिज प्रतिष्ठा-न

19. पंद्रहवीं एवं प्रारंभिज सोलहवीं शताब्दी :समाज एवं संस्कृति :

- जेत्रीय सांस्कृतिज विशिष्टताएं
- साहित्यिज परंपराएं
- प्रांतीय स्थापत्य
- विजय-जजर साम्राज्य जा समाज, संस्कृति, साहित्य और जला

20. अजबर :

- विजय एवं साम्राज्य जा सुदृढ़ीजरज
- जाजीर एवं म-सब व्यवस्था जी स्थाप-ना
- राजपूत -नीति
- धार्मिज एवं सामाजिज दृष्टिजोज जा विजास, सुलह - ए - जुल जा सिद्धांत एवं धार्मिज -नीति
- जला एवं प्रौद्योजिजी जो राज-दरबारी संरजज

21. सत्रहवीं शताब्दी में मुजल साम्राज्य :

- जहांजीर, शाहजहां एवंऔरंजजेब जी प्रमुज प्रशास-निज -नीतियां
- साम्राज्य एवं जमींदार
- जहांजीर, शाहजहां एवं औरंजजेब जी धार्मिज -नीतियां
- मुजल राज्य जा स्वरूप
- उत्तर सत्रहवीं शताब्दी जा संजट एवं विद्रोह
- अहोम साम्राज्य
- शिवाजी एवं प्रारंभिज मराठा राज्य

22. सोलहवीं एवं सत्रहवीं शताब्दी में अर्थ व्यवस्था एवं समाज :

- ज-संज्या, कृषि उत्पाद-न, शिल्प उत्पाद-न
- -जर, डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी जंप-नियों जे माध्यम से यूरोप जे साथ वाजिज्य : व्यापार क्रांति
- भारतीय व्यापारी वर्ज, बैंजिंज, बीमा एवं ऋज प्रजालियां
- जिसा-नों जी दशा, स्त्रियों जी दशा
- सिज समुदाय एवं जालसा पंथ जा विजास

23. मुजल साम्राज्यजाली-न संस्कृति :

- फारसी इतिहास एवं अ-य साहित्य
- हि-दी एवं अ-य धार्मिज साहित्य
- मुजल स्थापत्य
- मुजल चित्रजला
- प्रांतीय स्थापत्य एवं चित्रजला
- शास्त्रीय संजीत
- विज्ञा-न एवं प्रौद्योजिजी

24. अठारहवीं शताब्दी :

- मुजल साम्राज्य जे पत-न जे जारज
- जेत्रीय सामंत देश : निजाम जा दज-न, बंजाल, अवध
- पेशवा जे अधी-न मराठा उत्जर्ष
- मराठा राजजोषीय एवं वित्तीय व्यवस्था
- अफजा-न शक्ति जा उदय, पा-नीपत जा युद्ध - 1761
- ब्रिटिश विजय जी पूर्व संध्या में राज-नीति, संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था जी स्थिति

प्रश्-नपत्र-2

1. भारत में यूरोप जा iz0'k

प्रारंभिज यूरोपीय बस्तियां ;पुर्तजाली एवं डच, अंग्रेजी एवं फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया जंप-नियां; आधिपत्य जे लिए उ-जे युद्ध; ज-र्नाटज युद्ध; बंजाल - अंग्रेजों एवं बंजाल जे -नवाब जे बीच संघर्ष; सिराज और अंग्रेज; प्लासी जा युद्ध; प्लासी जा महत्व.

2. भारत में ब्रिटिश प्रसार :

बंजाल - मीर जाफर एवं मीर जासिम; बक्सर जा युद्ध; मैसूर; मराठा; ती-न अंग्रेज - मराठा युद्ध; पंजाब

3. ब्रिटिश राज जी प्रारंभिज संरच-ना :

प्रारंभिज प्रशास-निज संरच-ना : द्वैधशास-न से प्रत्यज नियंत्रज तज ;रेजुलेटिंज ऐक्ट (1773); पिट्स इंडिया ऐक्ट (1784);चार्टर एक्ट (1833); मुक्त व्यापार जा स्वर एवं ब्रिटिश औप-निवेशिज शास-न जा बदलता स्वरूप; अंग्रेजी उपयोजितावादी और भारत.

4. ब्रिटिश औप-निवेशिज शास-न जा आर्थिज प्रभाव :

(ज) ब्रिटिश भारत में भूमि - राजस्व बंदोबस्त; स्थायी बंदोबस्त; रैयतवारी बंदोबस्त; महालवारी बंदोबस्त; राजस्व प्रबंध जा आर्थिज प्रभाव; कृषि जा वाजिज्यीजरज; भूमिही-न कृषि श्रमिजों जा उदय; ज्रामीज समाज जा परिजीज-न.

(ज) पारंपरिज व्यापार एवं वाजिज्य जा विस्थाप-न; अ-नौद्योजीजरज; पारंपरिज शिल्प जी अव-नति; ध-न जा अपवाह ; भारत जा आर्थिज रूपांतरज; टेलीग्राफ एवं डाज सेवाओं समेत रेल पथ एवं संचार जाल; ज्रामीज भीतरी प्रदेश में दुर्भिज एवं जरीबी; यूरोपीय व्यापार उद्यम एवं इसजी सीमाएं.

5. सामाजिज एवं सांस्कृतिज विजास :

स्वदेशी शिजा जी स्थिति; इसजा विस्थाप-न; प्राच्यविद् - आंज्लविद् विवाद, भारत में पश्चिमी शिजा जा प्रादुर्भाव; प्रेस, साहित्य एवं लोज मत जा उदय; आधुनिज मातृभाषा साहित्य जा उदय; विज्ञा-न जी प्रजति; भारत में क्रिश्चिय-न मिश-नरी जे जार्यजलाप.

6. बंजाल एवं अ-य जेत्रों में सामाजिज एवं धार्मिज सुधार आंदोल-न :

राममोह-न राय, ब्रह्म आंदोल-न; देवे-द्र-नाथ टैजोर; ईश्वरच-द्र विद्यासाजर; युवा बंजाल आंदोल-न; दया-नंद सरस्वती; भारत में सती, विधवा विवाह, बाल विवाह आदि समेत सामाजिज सुधार आंदोल-न; आधुनिज भारत जे विजास में भारतीय पु-नर्जाजरज जा योजदा-न; इस्लामी पु-नरुद्धार वृत्ति - फराइजी एवं वहाबी आंदोल-न.

7. ब्रिटिश शास-न जे प्रति भारत जी अ-नुक्रिया :

रंजपुर ढींज (1783), जोल विद्रोह (1832), मालाबार में मोपला विद्रोह (1841-1920), स-थाल हुल (1855), -नील विद्रोह (1859-60), दज-न विप्लव (1875), एवं मुंडा उल्जुला-न (1899-1900) समेत 18वीं एवं 19वीं शताब्दी में हुए जिसा-न आंदोल-न एवं ज-नजातीय विप्लव ;1857 जा महाविद्रोह - उद्जम, स्वरूप, असफलता जे जारज, परिजाम; पश्च 1857 जाल में जिसा-न विप्लव जे स्वरूप में बदलाव; 1920 और 1930 जे दशजों में हुए जिसा-न आंदोल-न.

8. भारतीय राष्ट्रवाद जे ज-म जे जारज; संघों जी राज-नीति; भारतीय राष्ट्रीय जांग्रेस जी बु-नियाद; जांग्रेस जे ज-म जे संबंध में सेफ्टी वाल्व जा पज; प्रारंभिज जांग्रेस जे जार्यक्रम एवं लज्य; प्रारंभिज जांग्रेस -नेतृत्व जी सामाजिज रच-ना; -नरम दल एवं जरम दल; बंजाल जा विभाज-न (1905); बंजाल में स्वदेशी आंदोल-न; स्वदेशी आंदोल-न जे आर्थिज एवं राज-नैतिज परिप्रेज्य; भारत में क्रांतिजारी उग्रपंथ जा आरंभ.

9. जांधी जा उदय; जांधी जे राष्ट्रवाद जा स्वरूप; जांधी जा ज-नाजर्षज; रौलेट सत्याग्रह; जिलाफत आंदोल-न; असहयोज आंदोल-न; असहयोज आंदोल-न समाप्त हो-ने जे बाद से सवि-नय अवज्ञा आंदोल-न जे प्रारंभ हो-ने तज जी राष्ट्रीय राज-नीति;सवि-नय अवज्ञा आंदोल-न जे दो चरज; साइम-न जमिश-न; -नेहरू रिपोर्ट; जोलमेज परिषद; राष्ट्रवाद और जिसा-न आंदोल-न; राष्ट्रवाद एवं श्रमिज वर्ज आंदोल-न; महिला एवं भारतीय युवा तथा भारतीय राज-नीति में छात्र (1885-1947);1937 जा चु-नाव तथा मंत्रालयों जा जठ-न; क्रिप्स मिश-न; भारत छोड़ो आंदोल-न; वैवेल योज-ना; जैबि-नेट मिश-न.

10. औप-निवेशिज भारत में 1858 और 1935 जे बीच सांविधानिज घट-नाक्रम.

11. राष्ट्रीय आंदोल-न जी अ-य जड़ियां

क्रांतिजारी : बंजाल, पंजाब, महाराष्ट्र, यू.पी., मद्रास प्रदेश, भारत से बाहर. वामपज ;जांग्रेस जे अंदर जा वाम पज :जवाहर लाल -नेहरू, सुभाष च-द्र बोस, जांग्रेस समाजवादी पार्टी, भारतीय जम्यू-निष्ट पार्टी, अ-य वामदल.

12. अलजाववाद जी राज-नीति; मुस्लिम लीज; हि-दू महासभा; सांप्रदायिजता एवं विभाज-न जी राज-नीति; सत्ता जा हस्तांतरज; स्वतंत्रता.

13. एज राष्ट्र जे रूप में सुदृढ़ीजरज; -नेहरू जी विदेश -नीति; भारत और उसजे पड़ोसी (1947-1964) राज्यों जा भाषावाद पु-नर्जठ-न (1935-1947); जेत्रीयतावाद एवं जेत्रीय असमा-नता; भारतीय रियासतों जा एजीजरज; निर्वाच-न जी राज-नीति में रियासतों जे -नरेश (प्रिंस); राष्ट्रीय भाषा जा प्रश्-न.

14. 1947 जे बाद जाति एवं -नृजातित्व ; उत्तर-औप-निवेशिज निर्वाच-न - राज-नीति में पिछड़ी जातियाँ एवं ज-नजातियां; दलित आंदोल-न

15. आर्थिज विजास एवं राज-नीतिज परिवर्त-न; भूमि सुधार; योज-ना एवं ज्रामीज पु-नर्रच-ना जी राज-नीति; उत्तर औप-निवेशिज भारत में पारिस्थितिजी एवं पर्यावरज -नीति; विज्ञा-न जी तरक्जी.

16. प्रबोध एवं आधुनिज विचार :

(i) प्रबोध जे प्रमुज विचार : जांट, रूसो

(ii) उप-निवेशों में प्रबोध - प्रसार

(iii) समाजवादी विचारों जा उदय (मार्क्स तज); मार्क्स जे समाजवाद जा प्रसार

17. आधुनिज राज-नीति जे मूल स्रोत :

(i) यूरोपीय राज्य प्रजाली

(ii) अमेरिजी क्रांति एवं संविधा-न

(iii) फ्रांसिसी क्रांति एवं उसजे परिजाम, 1789-1815

(iv) अब्राहम लिंज-न जे संदर्भ जे साथ अमरीजी सिविल युद्ध एवं दासता जा उ-मूल-न.

(v) ब्रिटिश जजतंत्रात्मज राज-नीति, 1815-1850;संसदीय सुधार, मुक्त व्यापारी, चार्टरवादी.

18. औद्योजिजरज :

(i) अंग्रेजी औद्योजिज क्रांति : जारज एवं समाज पर प्रभाव

(ii) अ-य देशों में औद्योजीजरज :यू.एस.ए., जर्म-नी, रूस, जापा-न

(iii) औद्योजिजरज एवं भूमंडलीजरज

19. राष्ट्र राज्य प्रजाली :

(i) 19वीं शताब्दी में राष्ट्रवाद जा उदय

(ii) राष्ट्रवाद : जर्म-नी और इटली में राज्य निर्माज.

(iii) पूरे विश्व में राष्ट्रीयता जे आविर्भाव जे समज साम्राज्यों जा विघट-न.

20. साम्राज्यवाद एवं उप-निवेशवाद :

(i) दजिज एवं दजिज - पूर्व एशिया

(ii) लाती-न अमरीजा एवं दजिज अफ्रीजा

(iii) ऑस्ट्रेलिया

(iv) साम्राज्यवाद एवं मुक्त व्यापार : -नवसाम्राज्यवाद जा उदय.

21. क्रांति एवं प्रतिक्रांति :

(i) 19वीं शताब्दी यूरोपीय क्रांतियां

(ii) 1917-1921 जी रूसी क्रांति

(iii) फासीवाद प्रतिक्रांति, इटली एवं जर्म-नी

(iv) 1949 जी ची-नी क्रांति

22. विश्व युद्ध :

(i) संपूर्ज युद्ध जे रूप में प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध:समाजीय निहितार्थ

(ii) प्रथम विश्व युद्ध : जारज एवं परिजाम

(iii) द्वितीय विश्व युद्ध : जारज एवं परिजाम

23. द्वितीय विश्व युद्ध जे बाद जा विश्व :

(i) दो शक्तियों जा आविर्भाव

(ii) तृतीय विश्व एवं जुटनिरपेजता जा आविर्भाव

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ एवं वैश्विज विवाद

24. औप-निवेशिज शास-न से मुक्ति :

(i) लाती-न अमरीजा - बोलीवर

(ii) अरब विश्व - मिश्र

(iii) अफ्रीजा - रंजभेद से जजतंत्र तज

(iv) दजिज पूर्व एशिया - वियत-नाम

25. वि-औप-निवेशीजरज एवं अल्पविजास :

विजास जे बाधज जारज : लाती-न अमरीजा, अफ्रीजा

26. यूरोप जा एजीजरज :

(i) युद्धोत्तर स्थाप-नाएं : NATO एवं यूरोपीय समुदाय (यूरोपिय-न जम्यु-निटी)

(ii) यूरोपीय समुदाय (यूरोपिय-न जम्यु-निटी) जा सुदृढ़ीजरज एवं प्रसार

(iii) यूरोपियाई संघ

27. सोवियत यू-निय-न जा विघट-न एवं एज ध्रुवीय विश्व जा उदय :

(i) सोवियत साम्यवाद एवं सोवियत यू-निय-न जो निपात तज पहुंचा-ने वाले जारज, 1985-1991

(ii) पूर्वी यूरोप में राज-नैतिज परिवर्त-न 1989 - 2001

(iii) शीत युद्ध जा अंत एवं अजेली महाशक्ति जे रूप में US जा उत्जर्ष.

विधि

प्रश्-नपत्र - 1

सांविधिज एवं प्रशास-निज विधि :

1. संविधा-न एवं संविधा-नवाद:संविधा-न जे सुस्पष्ट लजज.
2. मूल अधिजार - लोजहित याचिजा, विधिज सहायता, विधिज सेवा प्राधिजरज.
3. मूल अधिजार - निदेशज तत्व तथा मूल जर्तव्यों जे बीच संबंध.
4. राष्ट्रपति जी संवैधानिज स्थिति तथा मंत्रिपरिषद जे साथ संबंध.
5. राज्यपाल तथा उसजी शक्तियां.
6. उच्चतम -यायालय तथा उच्च -यायाल-न :
   (ज) नियुक्ति तथा स्था-नांतरज.
   (ज) शक्तियां, जार्य एवं अधिजारिता.
7. जेंद्र, राज्य एवं स्था-नीय निजाय:
   (ज) संघ तथा राज्यों जे बीय विधायी शक्तियों जा वितरज.
   (ज) स्था-नीय निजाय
   (ज) संघ, राज्यों तथा स्था-नीय निजायों जे बीच प्रशास-निज संबंध.
   (घ) सर्वोपरि अधिजार - राज्य संपति - सामा-य संपत्ति - समुदाय संपत्ति
8. विधायी शक्तियां, विशेषाधिजार एवं उ-मुक्ति.
9. संघ एवं राज्य जे अधी-न सेवाएं :
   (ज) भर्ती एवं सेवा शर्तें ; सांविधानिज सुरजा ; प्रशास-निज अधिजरज.
   (ज) संघ लोज सेवा आयोज एवं राज्य लोज सेवा आयोज - शक्ति एवं जार्य
   (ज) निर्वाच-न आयोज - शक्ति एवं जार्य
10. आपात् उपबंध.
11. संविधा-न संशोध-न
12. -नैसर्जिज -याय जे सिद्धांत - आविर्भूत होती प्रवृत्तियां एवं -यायिज उपाजम
13. प्रत्यायोजित विधा-न एवं इसजी सांविधानिजता.
14. शक्तियों एवं सांविधानिज शास-न जा पृथक्जरज.
15. प्रशास-निज जार्रवाई जा -यायिज पु-नर्विलोज-न.
16. ओम्बड्समै-न : लोजायुक्त, लोजपाल आदि.

अंतरराष्ट्रीय विधि :

1. अंतरराष्ट्रीय विधि जी प्रकृति तथा परिभाषा.
2. अंतरराष्ट्रीय विधि तथा राष्ट्रीय विधि जे बीच संबंध.
3. राज्य मा-यता तथा राज्य उत्तराधिजार.
4. समुद्र नियम - अंतर्देशीय जलमार्ज, जेत्रीय समुद्र, समीपस्थ परिजेत्र, महाद्वीपीय उपतट, अ-न-य आर्थिज परिजेत्र तथा महासमुद्र.
5. व्यक्ति : राष्ट्रीयता, राज्यही-नता - मा-नवाधिजार तथा उ-नजे प्रवर्त-न जे लिए उपलब्ध प्रक्रियाएं.
6. राज्यों जी जेत्रीय अधिजारिता - प्रत्यर्पज तथा शरज
7. संधियां - निर्माज, उपयोज-न, पर्यवसा-न और आरजज.

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

8. संयुक्त राष्ट्र - इसके प्रमुख अंग, शक्तियां कृत्य और सुधार.
9. विवादों का शांतिपूर्ण निपटारा - विभिन्न तरीके.
10. बल का विधिपूर्ण आश्रय : आत्म रक्षा, आत्मरक्षा, हस्तक्षेप.
11. अंतरराष्ट्रीय मानवादी विधि के मूल सिद्धांत - अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों एवं समझौतों का विकास.
12. परमाणु अस्त्रों के प्रयोग की वैधता; परमाणु अस्त्रों के परीक्षण पर रोक - परमाण्वीय अप्रसार संधि, सी.टी.बी.टी..
13. अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, राज्यप्रवर्तित आतंकवाद, अपहरण, अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय.
14. नए अंतरराष्ट्रीय आर्थिक आदेश तथा मौद्रिक विधि, WTO, TRIPS, GATT, IMF, विश्व बैंक.
15. मानव पर्यावरण का संरक्षण तथा सुधार - अंतरराष्ट्रीय प्रयास.

प्रश्नपत्र-2

अपराध विधि :

1. आपराधिक दायित्व के सामान्य सिद्धांत : आपराधिक मनःस्थिति तथा आपराधिक कार्य. सांविधिक अपराधों में आपराधिक मनःस्थिति.
2. दंड के प्रकार एवं नई प्रवृत्तियाँ जैसे कि मृत्यु दंड उन्मूलन
3. तैयारियां तथा आपराधिक प्रयास
4. सामान्य अपवाद
5. संयुक्त तथा रचनात्मक दायित्व
6. दुष्प्रेरण
7. आपराधिक षडयंत्र
8. राज्य के प्रति अपराध
9. लोक शांति के प्रति अपराध
10. मानव शरीर के प्रति अपराध
11. संपत्ति के प्रति अपराध
12. स्त्री के प्रति अपराध
13. मानहानि
14. भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, 1988
15. सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 एवं उत्तरवर्ती विधायी विकास
16. अभिवयन सौदा

अपकृत्य विधि :

1. प्रकृति तथा परिभाषा.
2. त्रुटि तथा कठोर दायित्व पर आधारित दायित्व; आत्यंतिक दायित्व.
3. प्रतिनिधिक दायित्व, राज्य दायित्व सहित.
4. सामान्य प्रतिरक्षा.
5. संयुक्त अपकृत्य कर्ता
6. उपचार
7. उपेक्षा
8. मानहानि
9. उत्पात(-यूसेंस)
10. षडयंत्र
11. अप्राधिकृत बंदीकरण
12. विद्वेषपूर्ण अभियोजन
13. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम - 1986

संविदा विधि और वाजिज्यिक विधि :

1. संविदा का स्वरूप और निर्माण / ई- संविदा.
2. स्वतंत्र सम्मति को दूषित करने वाले कारक.
3. शून्य, शून्यकरणीय, अवैध तथा अप्रवर्तनीय करार
4. संविदा का पालन तथा उन्मोचन
5. संविदाकल्प
6. संविदा भंग के परिणाम
7. क्षतिपूर्ति, जारंटी एवं बीमा संविदा
8. अभिकरण संविदा
9. माल की बिक्री तथा अवक्रय (हायर परचेज)
10. भागीदारी का निर्माण तथा विघटन
11. परक्राम्य लिखत अधिनियम 1881
12. माध्यस्थम् तथा सुलह अधिनियम, 1996
13. मानक रूप संविदा

समकालीन विकास :

1. लोक हित याचिका
2. बौद्धिक संपदा अधिकार - संकल्पना, प्रकार / संभावनाएं.
3. सूचना प्रौद्योगिकी विधि, जिसमें साइबर विधियां शामिल हैं, संकल्पना, प्रयोजन / संभावनाएं.
4. प्रतियोगिता विधि - संकल्पना, प्रयोजन / संभावनाएं
5. वैकल्पिक विवाद समाधान - संकल्पना, प्रकार/ संभावनाएं.
6. पर्यावरणीय विधि से संबंधित प्रमुख न्यायालय.
7. सूचना का अधिकार अधिनियम
8. संचार माध्यमों (मीडिया) द्वारा विचारण.

निम्नलिखित भाषाओं का साहित्य

टिप्पणी :

(1) उम्मीदवार को संबद्ध भाषा में कुछ या सभी प्रश्नों के उत्तर देने पड़ सकते हैं.

(2) संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं के संबंध में लिपियां वही होंगी जो प्रधान परीक्षा से संबद्ध परिशिष्ट I के खण्ड II (ख) में दर्शाई गई हैं.

(3) उम्मीदवार ध्यान दें कि जिन प्रश्नों के उत्तर किसी विशिष्ट भाषा में नहीं देने हैं उनके उत्तरों को लिखने के लिये वे उसी माध्यम को अपनाएं जोकि उन्होंने निबंध, सामान्य अध्ययन तथा वैकल्पिक विषयों के लिये चुना है.

अरबी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर अरबी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. (क) अरबी का उद्भव और विकास –रूपरेखा
(ख) अरबी भाषा के व्याकरण, छंदविधान और अलंकारविधान की प्रमुख विशेषताएं.
(ग) अरबी में संक्षिप्त निबंध.

खंड 'ख'

2. साहित्य का इतिहास और साहित्यिक आलोचना : सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, क्लासिकी साहित्य, साहित्यिक आन्दोलन, आधुनिक प्रवृत्तियां, आधुनिक गद्य का उद्भव और विकास : नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर अरबी में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन अपेक्षित होगा. इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके :

खंड 'क'

कवि

1. इमराउल कायस : किफ़्रा नबके मिन जिकरा हवीबिन वा मंजिल (संपूर्ण) अल मौलाकातस सवा.
2. हसन बिन थबीस : लिलाही दरू इजवेतिन नदमतुहुम (संपूर्ण) दीवान हसन बिन थबीत
3. जरीर : हय्यू उमामता वजकुरू अहदान मद से जल्वास सिफाही वा दामि यातिन बिकला तक नुख़्बतुल अदब: अरबी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
4. फ़र्जदाक़ : हज़ल लज़ी तारिफुल बधा–ओ–वातातुहु (संपूर्ण) मजमुआतुन मिनान नज़्म–ए–वान नस्र, जामिया सलफ़िया, वाराणसी.
5. अल मुतानब्बी : या उख्ता ख़ैर–ए–अखीन या बिंता ख़ैर–ए–अबीन से अक़्माहुल फिकरू–बैनल लिज़–ए– बत्ताबी तक नुख्बातुल अदब, अरबी विभाग, अलीगढ़, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़.
6. अबुल अला उम्मारी : अला फी सबील माजदी भा अना फाइलू से वा या नफ्सू जिद्दी इन्ना दहराकी हज़ीलू तक. मजमुआतुल मिनानब नज्म–ए–वान नस्र, जामिया सलाफिया, वाराणसी.
7. शौक़ी : वुलीदल हुदा फल्केनतु दिआऊ से मख्तारा इला दिनकल फुकारऊ सलामुन नीली या ग़ादी (संपूर्ण) शौक़ियात
8. शाफ़िज इब्राहिम : राजातू लिनाफ्सी फलाहम्तु हस्ती (संपूर्ण) नुख़्बतुल अदब
9. ईल्या अबू मादी : दमातुन ख़ारसओ (संपूर्ण) मुख्तारत मिनाल शेर–अल–अरबी अल हादिथ, एम.एम. बदवी

खंड 'ख'

(क) लेखक

लेखक	पुस्तकें	पाठ
1. इब्नुल मुक़फ्फा	कलिलाह–वा–दिम्नाह	अल असद वल ताऊर
2. अल–जाहिज़	मुख्तारत मिन अदाबिल वरब बरिलूम	भाग–2, एस.ए. हसन अली नदवी द्वारा.
3. इकन ख़ल्दून	हकीम (संपूर्ण) मुक़द्दमा	अराउन फित तालीम (संपूर्ण)
4. महमूद तैमूर	क़लार रावी	अम मुता–वली (संपूर्ण)
5. तौफीकुल हकीम	मसराहियत	सिरूल मुन्ता–हिरा (संपूर्ण)
6. अब्बास महमूद	बकगद मूल्तारन मिन अदाबिल वरब–II	आसीदिक़ (संपूर्ण)

(ख) भारतीय लेखकों का अध्ययन

1. गुलाम अली आज़ाद बिलगरामी
2. शाह वलुल्लाह देहलवी
3. जुल्फीकार अली देवबंदी
4. अब्दुल अज़ीज मैमन
5. सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी.

असमिया

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर असमिया में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा

(क) असमिया भाषा के उद्गम और विकास का इतिहास–भारतीय–आर्य भाषाओं में उसका स्थान–इसके इतिहास के विभिन्न काल–खंड.

(ख) असमिया गद्य का विकास.

(ग) असमिया भाषा के स्वर और व्यंजन–प्राचीन भारतीय आर्यों से चली आ रही असमिया पर बलाघात के साथ स्वनिक परिवर्तन को नियम.

(घ) असमिया शब्दावली–एवं इसके स्रोत.

(ङ) भाषा का रूप विज्ञान–क्रिया रूप–पूर्वाश्रयी निर्देशन एवं अधिकपदीय पर प्रत्यय.

(च) बोलीगत वैविध्य–मानक बोलचाल एवं विशेष रूप से कामरूपी बोली.

(छ) उन्नीसवीं शताब्दी तक विभिन्न युगों में असमिया लिपियों का विकास.

खंड 'ख'

साहित्यिक आलोचना और साहित्यिक इतिहास

(क) साहित्यिक आलोचना के सिद्धांत, नई समीक्षा.

(ख) विभिन्न साहित्यिक विधाएं.

(ग) असमिया में साहित्यिक रूपों का विकास.

(घ) असमिया में साहित्यिक आलोचना का विकास.

(ङ) चर्यागीतों के काल से असमिया साहित्य के इतिहास की बिल्कुल प्रारंभिक प्रवृत्तियां और उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : आदि असमिया–शंकरदेव से पहले–शंकरदेव–शंकरदेव के बाद–आधुनिक काल (ब्रिटिश आगमन के बाद से) स्वातंत्र्योत्तर काल. वैष्णव काल, गोनाकी एवं स्वातंत्र्योत्तर काल पर विशेष बल दिया जाना है.

प्रश्नपत्र–2

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके. उत्तर असमिया में लिखने होंगे.

खंड 'क'

रामायण (केवल अयोध्या कांड)	माधव कंदली द्वारा.
पारिजात–हरण	शंकरदेव द्वारा.
रासक्रीड़ा	शंकरदेव द्वारा (कीर्तन घोष से)
बरगीत	माधवदेव द्वारा
राजसूय	माधवदेव द्वारा
कथा–भागवत (पुस्तक I एवं II)	बैकुण्ठनाथ भट्टाचार्य द्वारा
गुरू चरित–कथा (केवल शंकरदेव का भाग)–संपादक : महेश्वर नियोग.	

खंड 'ख'

मोर जीवन स्मरण	लक्ष्मीनाथ बेज़बरूआ द्वारा.
कृपाबर बराबरुआ, काकतर तोपोला	लक्ष्मीनाथ बेज़बरूआ द्वारा.
प्रतिमा	चंद्र कुमार अगरवाला.
गॉवबूढ़ा	पद्मनाथ गोहेन बरूआ द्वारा.
मनोमती	रजनीकांत बोरदोलोई द्वारा.
पुरणी असमिया साहित्य	बानीकांत काकती द्वारा
कारिआंग लिगिरी	ज्योति प्रसाद अगरवाला द्वारा
जीबनार बातत	बीना बरूआ (बिरिंचि कुमार बरूवा) द्वारा
मृत्युंजय	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य द्वारा
सम्राट	नवकांत बरूआ द्वारा.

बांगला

प्रश्नपत्र–1

भाषा और साहित्य का इतिहास

(उत्तर बांगला में लिखने होंगे)

खंड 'क'

बांगला भाषा के इतिहास के विषय

1. आद्य भारोपीय से बांगला तक का कालानुक्रमिक विकास (शाखाओं सहित वंशवृक्ष एवं अनुमानित तिथियां).
2. बांगला इतिहास के विभिन्न चरण (प्राचीन, मध्य एवं नवीन) एवं उनकी भाषा विज्ञान–संबंधी विशिष्टताएं.
3. बांगला की नीतियां एवं उनके विभेदक लक्षण.
4. बांगला शब्दावली के तत्व.
5. बांगला गद्य–साहित्य के रूप–साधु एवं पतित.
6. अपिनिहिति (विप्रकर्ष), अभिश्रुति (उम्लाउट), मूर्धन्यीभवन (प्रतिवेष्टन), नासिक्यीभवन (अनुनासिकृत), समीभवन (समीकरण), सादृश्य (एनेलोजी), स्वरागम (स्वर सन्निवेश) आदि स्वरागम, मध्य स्वरागम अथवा स्वर भक्ति, अंत्य स्वरागम, स्वर संगति (वावल हार्मनी), Y–श्रुति एवं W–श्रुति.
7. मानकीकरण की समस्याएं तथा वर्ण माला और वर्तनी तथा लिप्यंतरण और रोमनीकरण का सुधार.
8. आधुनिक बांगला का स्वनिमविज्ञान, रूपविज्ञान और वाक्य विन्यास. (आधुनिक बांगला की ध्वनियों, समुच्चयबोधक, शब्द रचनाएं, समास, मूल वाक्य अभिरचना.

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

खंड 'ख'

बांगला साहित्य के इतिहास के विषय :

1. बांगला साहित्य का काल विभाजन : प्राचीन बांगला एवं मध्यकालीन बांगला.
2. आधुनिक तथा पूर्व–आधुनिक–पूर्व बांगला साहित्य के बीच अंतर से संबंधित विषय.
3. बांगला साहित्य में आधुनिकता के अभ्युदय के आधार तथा कारण.
4. विभिन्न मध्यकालीन बांगला रूपों का विकास : मंगल काव्य, वैष्णव गीतिकाव्य, रूपांतरित आख्यान (रामायण, महाभारत, भागवत) एवं धार्मिक जीवनचरित.
5. मध्यकालीन बांगला साहित्य में धर्म निरपेक्षता का स्वरूप.
6. उन्नीसवीं शताब्दी के बांगला काव्य में आख्यानक एवं गीतिकाव्यात्मक प्रवृत्तियां.
7. गद्य का विकास.
8. बांगला नाटक साहित्य (उन्नीसवीं शताब्दी, टैगोर, 1944 के उपरांत के बांगला नाटक).
9. टैगोर एवं टैगोरोत्तर.
10. कथा साहित्य, प्रमुख लेखक :
(बंकिमचन्द्र, टैगोर, शरतचन्द्र, विभूतिभूषण, ताराशंकर, माणिक).
11. नारी एवं बांगला साहित्य : सर्जक एवं सृजित.

प्रश्नपत्र–2

विस्तृत अध्ययन के लिए निर्धारित पुस्तकें

(उत्तर बांगला में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. **वैष्णव पदावली :** (कलकत्ता विश्वविद्यालय) विद्यापति, चंडीदास, ज्ञानदास, गोविन्ददास एवं बलरामदास की कविताएं.
2. **चंडीमंगल :** मुकुन्द द्वारा कालकेतु वृतान्त, (साहित्य अकादमी).
3. **चैतन्य चरितामृत :** मध्य लीला, कृष्णदास कविराज रचित (साहित्य अकादमी)
4. **मेघनादवध काव्य :** मधुसूदन दत्त रचित.
5. **कपालकुण्डला :** बंकिमचंद्र चटर्जी रचित.
6. **समय एवं बंगदेशेर कृषक :** बंकिमचंद्र चटर्जी रचित.
7. **सोनार तारी :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.
8. **छिन्नपत्रावली :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.

खंड 'ख'

9. **रक्तकरबी :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.
10. **नबजातक :** रवीन्द्रनाथ टैगोर रचित.
11. **गृहदाह :** शरतचन्द्र चटर्जी रचित.
12. **प्रबंध संग्रह :** भाग–1, प्रमथ चौधरी रचित.
13. **अरण्यक :** विभूतिभूषण बनर्जी रचित.
14. **कहानियां :** माणिक बंद्योपाध्याय रचित :
अताशी मामी, प्रागैतिहासिक, होलुद–पोरा, सरीसृप, हारानेर, नटजमाई, छोटो–बोकुलपुरेर जात्री, कुष्ठरोगीर बौऊ, जाके घुश दिते होय.
15. **श्रेष्ठ कविता :** जीवनाचंद दास रचित.
16. **जानौरी :** सतीनाथ भादुड़ी रचित.
17. **इंद्रजीत :** बादल सरकार रचित.

बोडो

प्रश्नपत्र–1

बोडो भाषा एवं साहित्य का इतिहास

(उत्तर बोडो भाषा में ही लिखें)

खंड 'क'

बोडो भाषा का इतिहास

1. स्वदेश, भाषा परिवार, इसकी वर्तमान स्थिति एवं असमी के साथ इसका पारस्परिक संपर्क.
2. (क) स्वनिम : स्वर तथा व्यंजन स्वनिम.
(ख) ध्वनियां.
3. रूपविज्ञान : लिंग, कारक एवं विभक्तियां, बहुवचन, प्रत्यय, व्युत्पन्न, क्रियार्थक प्रत्यय.
4. शब्द समूह एवं इनके स्रोत.
5. वाक्य विन्यास : वाक्यों के प्रकार, शब्द क्रम.
6. प्रारम्भ से बोडो भाषा को लिखने में प्रयुक्त लिपि का इतिहास.

खंड 'ख'

बोडो साहित्य का इतिहास

1. बोडो लोक साहित्य का सामान्य परिचय.
2. धर्म प्रचारकों का योगदान.
3. बोडो साहित्य का कालविभाजन.
4. विभिन्न विधाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण. (काव्य, उपन्यास, लघु – कथा तथा नाटक).
5. अनुवाद साहित्य.

प्रश्नपत्र–2

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य–पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा और परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक योग्यता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

(उत्तर बोडो भाषा में ही लिखें)

खंड 'क'

(क) खोन्थई – मेथई
(मादाराम ब्रह्मा तथा रूपनाथ ब्रह्मा द्वारा संपादित)
(ख) हथोरखी – हला
(प्रमोदचंद्र ब्रह्मा द्वारा संपादित)
(ग) बोरोनी गुडी सिब्साअर्व अरोज
मादाराम ब्रह्मा द्वारा
(घ) राजा नीलांबर – द्वरेन्द्र नाथ बासुमतारी.
(ङ) बिबार (गद्य खंड)
(सतीशचंद्र बासुमतारी द्वारा संपादित)

खंड 'ख'

(क) गिबी बिठाई (आइदा नवी) : बिहुराम बोडो
(ख) रादाब : समर ब्रह्मा चोधरी
(ग) ओखरंग गोंगसे नंगोऊ : ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्मा
(घ) बैसागु अर्व हरिमू: लक्षेश्वर ब्रह्मा
(ङ) ग्वादान बोडो : मनोरंजन लहारी
(च) जुजैनी ओर : चितरंजन मुचहारी
(छ) म्वीहूर : धरानिधर वारी
(ज) होर बड़ी रव्वम्सी : कमल कुमार ब्रह्मा
(झ) जओलिया दीवान : मंगल संह होजोवरी
(ञ) हागरा गुदुनी म्वी : नीलकमल ब्रह्मा

चीनी

प्रश्नपत्र–1

इस प्रश्न पत्र द्वारा उम्मीदवारों से यह अपेक्षा की जाएगी कि उन्हें मानक चीनी–भाषा और इसकी विशेषताओं का अच्छा ज्ञान हो जिससे उनकी अभिव्यक्तिगत सांगठनिक क्षमताओं का परीक्षण हो सके. सभी प्रश्नों के चीनी से अंग्रेजी में अनुवाद के प्रश्न को छोड़कर, उत्तर चीनी भाषा में लिखने होंगे. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं.

खंड 'क'

1. किसी सामयिक विषय पर लगभग 500 चीनी अक्षरों में निबंध लेखन.
2. अनुवाद
(क) चीनी से अंग्रेजी भाषा में
(ख) अंग्रेजी से चीनी भाषा में
3. वाक्यगत और व्याकरणिक प्रयोग.

खंड 'ख'

1. चीनी भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों की व्याख्या.
2. चीनी भाषा का विकास.
3. बोधन, संक्षेपण.

प्रश्नपत्र–2

इस प्रश्न पत्र में अभ्यर्थी से यह अपेक्षा की जाएगी कि उसे चीन संबंधी अध्ययन का अच्छा ज्ञान हो और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके. सभी प्रश्नों के उत्तर चीनी में लिखने होंगे. सभी प्रश्नों के अंक समान हैं.

खंड 'क'

1. आधुनिक चीनी इतिहास (1919 से अब तक) की प्रमुख घटनाओं से संबंधित विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणियां.
2. मुक्ति पूर्व काल (1919–1949) की प्रमुख साहित्यिक कृतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन :
(क) लाओं शी – फोर जैनरेशन–रिक्शा पुलर.
(ख) बा जिन – फैमिली.
(ग) लू शुन – मेडिसिन, मैडमैंस डायरी, दि ट्रू स्टोरी आफ आह क्यू.
(घ) माओ दुन – मिडनाईट.
(ङ) एई क्विंग – कोल्स रिप्लाई (मेई डे दिहुआ), बेगर (किगाई) आई लव दिस लैंड (वो अई झे तुदी), ओल्ड मैन (लाओरेन).
(च) गुओ मोरुओ– दि गॉडेसेज़
3. चीनी समाज के विकास में दर्शन और धर्म की भूमिका.

खंड 'ख'

1. 1979 के बाद सामाजिक– आर्थिक/ राजनीतिक/ शैक्षिक/खेल–कूद/वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय विकास
2. उत्तर–मुक्ति काल (1949 से अब तक) की प्रमुख साहित्यिक कृतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन
(क) गूहुआ–दि टाउन काल्ड हिविस्कस (फुरोङझेन)
(ख) चेन राङ–टिल दि मिडिल एज (रैन दाओ झोङनियान)
(ग) लियू शिनवू – दि क्लास–इन–चार्ज (बैन झुरेन)
(घ) ल्यू याओ – दि ह्यूमन एक्जिसटैंस (रेनशेंग)
(ङ) आई क्विंग – फिश फौसिल, दि मिरर, दि गार्डनर्स ड्रीम, दि हन्टर हू ड्रयू बर्ड्स
(च) शू–तिंग – मदरलैंड, माई बिलवेड मदरलैंड.

डोगरी

प्रश्नपत्र–1

डोगरी भाषा एवं साहित्य का इतिहास

(उत्तर डोगरी में लिखे जाएं)

खंड 'क'

डोगरी भाषा का इतिहास

1. डोगरी भाषा : विभिन्न अवस्थाओं के द्वारा उत्पत्ति एवं विकास.
2. डोगरी एवं इसकी बोलियां भाषाई सीमाएं.
3. डोगरी भाषा के विशिष्ट लक्षण.
4. डोगरी भाषा की संरचना :
(क) ध्वनि संरचना :
खंडीय : स्वर एवं व्यंजन
अखंडीय : दीर्घता, बलाघात, नासिक्यरंजन, सुर एवं संधि.
(ख) डोगरी का पदरचना विज्ञान
(i) रूप रचना वर्ग : लिंग, वचन, कारक, पुरुष, काल एवं वाच्य.
(ii) शब्द निर्माण : उपसर्गो, मध्यप्रत्ययों तथा प्रत्ययों का उपयोग.
(iii) शब्द समूह : तत्सम, तद्भव, विदेशीय एवं देशज.
(ग) वाक्य रचना : सर्वांग वाक्य – उनके प्रकार तथा अवयव, डोगरी वाक्यविन्यास में अन्वय तथा अन्विति.
5. डोगरी भाषा एवं लिपि : डोगरे/डोगरा अक्खर, देवनागरी तथा फारसी.

खंड 'ख'

डोगरी साहित्य का इतिहास

1. स्वतंत्रता–पूर्व डोगरी साहित्य का संक्षिप्त विवरण पद्य एवं गद्य.
2. आधुनिक डोगरी काव्य का विकास तथा डोगरी काव्य के मुख्य प्रवृत्तियां.
3. डोगरी लघुकथा का विकास, मुख्य प्रवृत्तियां तथा प्रमुख लघुकथा लेखक.
4. डोगरी उपन्यास का विकास, मुख्य प्रवृत्तियां तथा डोगरी उपन्यासकारों का योगदान.
5. डोगरी नाटक का विकास तथा प्रमुख नाटककारों का योगदान.
6. डोगरी गद्य का विकास : निबंध, संस्मरण एवं यात्रावृत्त.
7. डोगरी लोक साहित्य का परिचय : लोकगीत, लोककथाएं तथा गाथागीत.

प्रश्नपत्र–2

डोगरी साहित्य का पाठालोचन

(उत्तर डोगरी में लिखे जाएं)

खंड 'क'

पद्य :

1. आजादी पैह्ले दी डोगरी कविता
निम्नलिखित कवि :
देवी दित्ता, लक्खू, गंगा राम, रामधन, हरदत्त, पहाड़ी गांधी बाबा कांशी राम तथा परमानंद अलमस्त.
2. आधुनिक डोगरी कविता
आजादी बाद दी डोगरी कविता
निम्नलिखित कवि :–
किशन स्माइलपुरी, तारा स्माइलपुरी, मोहन लाल सपोलिया, यश शर्मा, के.एस. मधुकर, पद्मा सचदेव, जितेन्द्र ऊधमपुरी, चरण सिंह तथा प्रकाश प्रेमी.
3. श्रीराजा डोगरी सं. 102, गज़ल अंक
निम्नलिखित कवि :
राम लाल शर्मा, वेद पाल दीप, एन.डी. जाम्वाल, शिव राम दीप, अश्विनी मगोत्रा तथा वीरेन्द्र केसर.
4. श्रीराजा डोगरी सं. 147, गज़ल अंक
निम्नलिखित कवि :–
आर.एन. शास्त्री, जितेन्द्र ऊधमपुरी, चंपा शर्मा तथा दर्शन दर्शी.
5. शम्भू नाथ शर्मा द्वारा रचित 'रामायण' (महाकाव्य) (अयोध्या काण्ड तक)
6. दीनू भाई पंत द्वारा रचित 'वीर गुलाब' (खण्ड काव्य).

खंड 'ख'

गद्य :

1. अजकणी डोगरी कहानी
निम्नलिखित लघु कथा लेखक :
मदन मोहन शर्मा, नरेन्द्र खजूरिया तथा बी.पी. साठे.
2. अजकणी डोगरी कहानी भाग–II
निम्नलिखित लघु कथा लेखक :
वेद राही, नरसिंह देव जाम्वाल, ओम गोस्वामी, छत्रपाल, ललित मगोत्रा, चमन अरोड़ा तथा रतन केसर.
3. कथा कुंज भाग–II
निम्नलिखित कथा लेखक :
ओम विद्यार्थी, चम्पा शर्मा तथा कृष्ण शर्मा.
4. बन्धु शर्मा द्वारा रचित 'मील पत्थर' (लघु कथा संग्रह)
5. देश बन्धु डोगरा नूतन द्वारा रचित 'कैदी' (उपन्यास)
6. ओ.पी. शर्मा सारथी द्वारा रचित 'नंगा रूक्ख' (उपन्यास).
7. मोहन सिंह द्वारा रचित 'नयान' (नाटक)
8. सतरंग (एकांकी नाटकी संग्रह)
निम्नलिखित नाटककार :
विश्वनाथ खजूरिया, राम नाथ शास्त्री, जितेन्द्र शर्मा, ललित मगोत्रा तथा मदन मोहन शर्मा
9. डोगरी ललित निबंध
निम्नलिखित लेखक :–
विश्वनाथ खजूरिया, नारायण मिश्रा, बालकृष्ण शास्त्री, शिवनाथ, श्याम लाल शर्मा, लक्ष्मी नारायण, डी.सी. प्रशांत, वेद घई, कुंवर वियोगी.

अंग्रेजी

इस पाठ्यक्रम के दो प्रश्न पत्र होंगे. इसमें निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में से निम्नलिखित अवधि के अंग्रेजी साहित्य का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा जिससे उम्मीदवार की समीक्षा–क्षमता की जांच हो सके.

प्रश्न पत्र–I : 1600–1900

प्रश्न पत्र–II : 1900–1990

प्रत्येक प्रश्न पत्र में दो प्रश्न अनिवार्य होंगें :

(क) एक लघु–टिप्पण प्रश्न सामान्य अध्ययन से संबंधित विषय पर होगा और

(ख) गद्य तथा पद्य दोनों के अनदेखे उद्धरणों का आलोचनात्मक विश्लेषण होगा.

प्रश्न पत्र–I

(उत्तर अंग्रेजी में लिखने होंगे)

विस्तृत अध्ययन के लिए पाठ नीचे दिए गए हैं.

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

अभ्यर्थियों से निम्नलिखित विषयों तथा घटनाओं के विस्तृत ज्ञान की अपेक्षा की जाएगी : दि रिनेसाँ; एलिजाबेथन एण्ड जेकोवियन ड्रामा, मेटाफिजीकल पोयट्री; दि एपिक एण्ड दि–मोक एपिक; नवक्लासिकीवाद; सैटायर; दि रोमान्टिक मूवमेंट; दि राइज़ ऑफ दि नावेल; दि विक्टोरियन एज.

खंड 'क'

1. विलियम शेक्सपियर : किंगलियर और दि टैम्पैस्ट
2. जान डन – निम्नलिखित कविताएं :
   1. केनोनाईजेशन
   2. डेथ बी नाइट प्राउड
   3. दि गुड मोरो
      ऑन हिज मिस्ट्रेज गोइंग टु बेड
      दि रैलिक
3. जॉन मिल्टन–पैराडाइज लॉस्ट I, II, IV, IX
4. अलेक्जेंडर पोप – दि रेप आफ दि लॉक
– विलियम वर्डस्वर्थ – निम्नलिखित कविताएं :
– ओड आन इंटिमेशंस आफ इम्मोरटैलिटी
– टिंटर्न एबे
– थ्री यीअर्स शी ग्रियू
– शी ड्वेल्ट अमंग अनट्रोडन वेज़
– माइकेल
– रेजोज्यूशन एंड इंडिपेंडेन्स
– दि वर्ल्ड इज टू मच विद अस
– मिल्टन दाउ शुड्स्ट बी लिविंग एट दिस आवर
– अपॉन वेस्टमिन्स्टर ब्रिज
5. अल्फ्रेड टेनीसन : इन मेमोरियम
6. हैनरिक इब्सेन : ए हॉल्स हाउस

खंड 'ख'

1. जोनाथन स्विफ्ट – गलिवर्स ट्रेवल्स
2. जैन ऑस्टन – प्राइड एंड प्रेजुडिस
3. हेनरी फील्डिंग – टॉम जॉन्स
4. चार्ल्स डिकन्स – हाई टाइम्स
5. जार्ज इलियट – दि मिल आन दि फ्लोस
6. टामस हार्डी – टेस आफ दि डि अर्बरविल्स
7. मार्क ट्रवेन – दि एडवेंचर्स आफ हकलबैरी फिन.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर अंग्रेजी में लिखने होंगे)

विस्तृत अध्ययन के लिए पाठ नीचे दिए गए हैं. अभ्यर्थियों से निम्नलिखित विषयों और आन्दोलनों का यथेष्ट ज्ञान भी अपेक्षित होगा.

आधुनिकतावाद : पोयट्स आफ दि थर्टीज; दि स्ट्रीम आफ कांशसनेस नावेल; एब्सर्ड ड्रामा; उपनिवेशवाद तथा उत्तर–उपनिवेशवाद; अंग्रेजी में भारतीय लेखन; साहित्य में मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणात्मक और नारीवादी दृष्टियां; उत्तर–अधुनिकतावाद.

खंड 'क'

1. विलियम बटलर यीट्स – निम्नलिखित कविताएं :
– ईस्टर 1916
– दि सैकंड कमिंग
– ऐ प्रेयर फार माई डाटर
– सेलिंग टु बाइजेंटियम
– दि टावर
– अमंग स्कूल चिल्ड्रन
– लीडा एण्ड दि स्वान
– मेरू
– लेपिस लेजुली
– द सैकेन्ड कमिंग
– बाईजेंटियम
2. टी.एस. इलियट – निम्नलिखित कविताएं :
– दि लव सोंग आफ जे. अल्फ्रेड प्रूफ्राक
– जर्नी आफ दि मेजाइ
– बर्न्ट नार्टन
3. डबल्यू एच आडेन – निम्नलिखित कविताएं
– पार्टीशन
– म्यूजी दे व्यू आर्टस
– इन मेमोरी आफ डबल्यू बी. यीट्स
– ले यूअर स्लीपिंग हैड, माई लव
– दि अननोन सिटिजन
– कन्सिडर
– मुंडस ऐट इन्फेन्स
– दि शील्ड आफ एकिलीज
– सैपटेम्बर 1, 1939
– पेटीशन
4. जॉन आसबोर्न – लुक बैक इन एंगर
5. सैम्युअल बैकेट : वेटिंग फार गोडो
6. फिलिप लारकिन – निम्नलिखित कविताएं :
– नैक्स्ट
– प्लीज
– डिसैप्शन्स
– आफ्टरनून्स
– डेज़
– मिस्टर ब्लीनी
7. ए.के. रामानुजन : निम्नलिखित कविताएं :
– लुकिंग फार ए कजन आन ए स्विंग
– ए रिवर
– आफ मदर्स, अमंग अदर थिंग्स
– लव पोयम फार ए वाईफ–1
– स्माल – स्केल रिफ्लैकशन्स
– आन ए ग्रेट हाउस
– ओबिचुएरी

(ये सभी कविताएं आर पार्थसारथी द्वारा सम्पादित तथा आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, दसवीं–बीसवीं शताब्दी के भारतीय कवियों के संग्रह में उपलब्ध हैं)

खंड 'ख'

1. जोसेफ कोनरेड : लार्ड जिम
2. जेम्स ज्वायस : पोट्रेट आफ दि आर्टिस्ट एज ए यंग मैन
3. डी.एच. लारेंस : सन्स एण्ड लवर्स
4. ई.एम. फोर्स्टर : ए पैसेज टु इंडिया
5. वर्जीनिया वूल्फ : मिसेज डेलोवे
6. राजा राव : कांथापुरा
7. वी.एस. नायपाल : ए. हाउस फार मिस्टर बिस्वास

फ्रेंच

प्रश्नपत्र–1

फ्रेंच से अंग्रेजी में अनुवाद के प्रश्न को छोड़कर उत्तर फ्रेंच में लिखने होंगे.

खंड 'क'

1. फ्रेंच साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियां

(क) क्लासिकीवाद
(ख) स्वच्छन्दतावाद
(ग) यथार्थवाद

2. फ्रांस में कला

(क) स्वच्छन्दतावाद
(ख) यथार्थवाद
(ग) प्रभाववाद

3. पांचवा गणतंत्र

(क) द गॉल एवं पांचवा गणतंत्र
(ख) मई – 1968
(ग) पांपिदु
(घ) गिस्लार्द द स्तैंग
(ङ) मित्तरां
(च) शिरॉक

4. अनुवाद : फ्रेंच से अंग्रेजी में (सामाजिक –राजनीतिक–आर्थिक प्रकृति के दो उद्धरणों का अनुवाद – प्रत्येक उद्धरण दो सौ शब्दों का).

खंड 'ख'

1. फ्रेंच साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियां

(क) प्रतीकवाद
(ख) अतियथार्थवाद
(ग) एब्सर्ड का रंगमंच

2. फ्रांस में कला

(क) अतियथार्थवाद
(ख) धनवाद
(ग) अमूर्त चित्रकला

3. पांचवा गणतंत्र

(क) फ्रांस में राजनीतिक दल
(ख) पांचवें गणतंत्र में राष्ट्रपति का स्थान एवं उसकी भूमिका
(ग) सरकार
(घ) संसद
(ङ) सीनेट

4. अनुवाद : अंग्रेजी से फ्रेंच में (सामाजिक–राजनीतिक– आर्थिक प्रकृति के दो उद्धरणों का अनुवाद – प्रत्येक उद्धरण दो सौ शब्दों का.)

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर फ्रेंच में लिखने होंगे)

खंड 'क'

इस प्रश्न पत्र में निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों का गहन अध्ययन अपेक्षित है. प्रश्न इस तरह तैयार किए जाएंगे कि अभ्यर्थियों की आलोचनात्मक योग्यता को जांचा जा सके.

1. 17वीं शताब्दी

(क) कोर्नेल : ल सीद
(ख) रासिन : आंद्रोमाक
(ग) मोलियर : ल आव्र

2. 18वीं शताब्दी

ब्यू मार्शे : ल मारिज द फिगैरो

3. 19वीं शताब्दी

(क) लामार्तिन : लिलेक, लवलों
(ख) विक्तर ह्यूगो : ल कांशियेंस, एल आवे प्रिस प्ली द में, दे ल ओब
(ग) विक्तर ह्यूगो : हरनानी
(घ) मुसे : सवनी, ल न्वीद देसांब्र
(ङ) मेरीमे : कोलोंब
(च) बाल्जाक : यूजेनी ग्रांदे
(छ) फ्लाबेयर : मदाम बावेरी
(ज) बादलेय : ल इन्विते शों ओ वयाज, टिक्वीलमों ल एल्बत्रोस
(झ) रिंबो : लोदार्मे द्यू वाल
(ञ) वर्लेन : चांर्सो द ओतम, मों रेव फमिलिये, इल प्लैयर दां मों कैर.

खंड 'ख'

4. 20वीं शताब्दी

(क) एपोलिनेयर : न्वी रेनान, लो पों मिराबो
(ख) जाक प्रेवर : पुर फैर लो पोत्रें द' आं ल द' अन्वासों बार्बरा
(ग) पॉल एलुवार : लिबर्ते
(घ) पॉल वेलेयरी : ले पा, ल फिलैस
(ङ) आन्द्रे गीद : ल सिंफेनी पास्तोरेल
(च) कामू : इ' इतरांजर
(छ) सार्त्र : ले मैन साल्स
(ज) आइनेस्को : राइनोसिरोस

फ्रेकोंफोनी

(क) जेरार्द बेसेत : ल' लायब्रेर
(ख) आनन्द देवी : लो वाल द द्रोपदी
(ग) शेख हमीदु काने : ल' आर्वेत आंबीग
(घ) अब्दलतीफ लाबी : पोयम ए आं प्रोस
1. ल' आर्ब आ पोयम्स (ल' एन्तरों दु मोन)
2. ले रेव वियेनो यूरिर श्युर ल पेज (ल' एन्तरों दु मोन)

5. समकालीन विषय पर सामान्य प्रकृति का निबन्ध.

जर्मन

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर जर्मन भाषा में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. भाषा की संरचना : अभ्यर्थियों से शब्दक्रम, वाक्य रचना तथा शब्दार्थ विज्ञान जैसे विशिष्ट पहलुओं के संदर्भ में जर्मन व्याकरण के सम्यक ज्ञान की अपेक्षा की जाती है.

2. जर्मन भाषा में निबंध : अभ्यर्थियों से अपेक्षा की जाती है कि सामान्य प्रकार के समकालीन विषय पर निबंध लिखते समय वे दिखलाएं कि जर्मन भाषा में लिखी जाने वाली अभिव्यक्ति की तकनीकों पर उनका अधिकार है.

खंड 'ख'

1. एक सामान्य विषय पर लिखे पाठ का अंग्रेजी से जर्मन में अनुवाद.
2. निम्नलिखित विषयों के विशेष संदर्भ में जर्मनी का अठारहवीं सदी से लेकर वर्तमान समय तक का सामाजिक–राजनैतिक और सांस्कृतिक इतिहास.

(क) जर्मन समाज और संस्कृति पर बोधन का प्रभाव.
(ख) जर्मनी पर प्रशियन संस्कृति का प्रभाव.
(ग) वाइमार गणराज्य में हुए सांस्कृतिक वाद–विवाद.
(घ) जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवाद के अधीन संस्कृति की अवधारणा.
(ङ) 1945 के बाद दो जर्मन साहित्य धाराओं तथा संस्कृतियों का विकास.
(च) जर्मनी का पुनरेकीकरण और सांस्कृतिक विविधता की समस्याएं.
(छ) यूरोपीय संघ में जर्मन भाषा तथा साहित्य की भूमिका और प्रासंगिकता.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर जर्मन में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. 19वीं शताब्दी से आज तक के जर्मन साहित्य का विकास : अभ्यर्थियों को प्रमुख प्रवृत्तियों, प्रतिनिधि लेखकों और उनकी महत्वपूर्ण कृतियों की जानकारी होनी चाहिए. इसके अंतर्गत केवल लेखकों और उनकी कृतियों की जानकारी प्राप्त करने पर जोर नहीं दिया जाता, बल्कि अभ्यर्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह किसी साहित्यिक काल की विशेषताओं को प्रतिनिधि रचनाओं के आधार पर पहचाने.

2. साहित्यिक विधाओं का अध्ययन : अभ्यर्थियों को रोमान, नावेले, नाटक, गाथागीत, शोकगीत, प्रयाण–गीत, युद्धगीत, कुरजेशिश्ट जैसी विभिन्न विधाओं की महत्वपूर्ण विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए.

खंड 'ख'

1. साहित्यिक व्याख्याओं के प्रत्यक्ष ज्ञान :
अभ्यर्थियों को साहित्य के आलोचनात्मक ज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों की जानकारी होनी चाहिए.

2. चुनी हुई कृतियों का अध्ययन:

(क) गोएटे : हाई लीडेन डेस जुंगेन बर्थर
(ख) शिलर – मारिया स्टुअर्ट
(ग) ईशनडोर्फ – गोडिश्टे
(घ) गोटफ्रीड कैलर – क्लिडर माशेर ल्यूटे
(ङ) टॉमस मान – डाई वरटोश्टन कोफे
(च) फात्स काफूका – वोर डेम गेसेज
(छ) फ्रीडरिख डरनमैट – डाइ फिजीकर
(ज) मैक्स फ्रिस्क – एंडोरा
(झ) हीनरिख बोल – डाई वेरलोरीन एहरे डेर कैथरिना ब्लुम
(ञ) इंगेबोर्ग बैखमन – एलेस (औस डेम एंरैलबेंड : डास ड्राईबिग्स्ट जार)
(ट) रोज ऑसलेंडर – गेडिश्टे
(ठ) क्रिस्टा वोल्फ – डेर गेटीटे हिम्मेल
(ड) गुंटर ग्रास – जुंडा जीगन

गुजराती

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर गुजराती में लिखने होंगे)

खंड 'क'

गुजराती भाषा : स्वरूप तथा इतिहास

1. गुजराती भाषा का इतिहास : आधुनिक भारतीय आर्य भाषा के पिछले एक हजार वर्ष के विशेष संदर्भ में.
2. गुजराती भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएं : स्वनिम विज्ञान, रूप विज्ञान तथा वाक्य विन्यास.
3. प्रमुख बोलियां : सूरती, पाटणी, चरोतरी तथा सौराष्ठी

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

गुजराती साहित्य का इतिहास :

मध्ययुगीन

4. जैन परम्परा
5. भक्ति परम्परा : सगुण तथा निर्गुण (ज्ञानमार्गी)
6. गैर सम्प्रदायवादी परम्परा (लौकिक परम्परा)

आधुनिक

7. सुधारक युग
8. पंडित युग
9. गांधी युग
10. अनुगांधी युग
11. आधुनिक युग

खंड 'ख'

साहित्यिक स्वरूप (निम्नलिखित साहित्यिक स्वरूपों की प्रमुख विशेषताएं, इतिहास और विकास)

(क) मध्ययुग

1. वृतान्त : रास, आख्यान तथा पद्यवार्ता
2. गीतिकाव्य : पद

(ख) लोक साहित्य

3. भवाई

(ग) आधुनिक

4. कथा साहित्य : उपन्यास तथा कहानी.
5. नाटक
6. साहित्यिक निबंध
7. गीतिकाव्य

(घ) आलोचना

8. गुजराती की सैद्धांतिक आलोचना का इतिहास
9. लोक परम्परा में नवीनतम अनुसंधान

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर गुजराती में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे उम्मीदवार की समीक्षा क्षमता की जांच हो सके.

खंड 'क'

1. मध्ययुग

(i) **वसंत विलास फागु :** अज्ञातकृत
(ii) **कादम्बरी :** भालण
(iii) **सुदामा चरित्र :** प्रेमानंद
(iv) **चंद्र चंद्रावतीनी वार्ता :** शामल
(v) **अखेगीता :** अखो

2. सुधारक युग तथा पंडित युग

(vi) **मारी हकीकत :** नर्मदाशंकर दवे
(vii) **फरबसवीरा :** दलपतराम
(viii) **सरस्वती चंद्र–भाग 1 :** गोवर्धनराम त्रिपाठी
(ix) **पूर्वालाप :** 'कांत' (मणिशंकर रत्नाजी भट्ट)
(x) **राइनो पर्वत :** रमणभाई नीलकंठ

खंड 'ख'

1. गांधी युग तथा अनुगांधी युग

(i) **हिन्द स्वराज :** मोहनदास करमचंद गांधी
(ii) **पाटणनी प्रभुता :** कन्हैयालाल मुंशी
(iii) **काव्यनी शक्ति :** राम नारायण विश्वनाथ पाठक
(iv) **सौराष्ट्रनी रसधार–भाग 1 :** भवेरचंद मेघाणी
(v) **मानवीनी भवाई :** पन्नालाल पटेल
(vi) **ध्वनि :** राजेन्द्र शाह

2. आधुनिक युग

(vii) **सप्तपदी :** उमाशंकर जोशी
(viii) **जनान्तिके :** सुरेश जोशी
(ix) **अश्वत्थामा :** सितान्शु यशरचंद्र

हिन्दी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर हिन्दी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास

(i) अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारंभिक हिन्दी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त स्वरूप.
(ii) मध्यकाल में ब्रज और अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास.
(iii) सिद्धनाथ साहित्य, खुसरो, संत साहित्य, रहीम आदि कवियों और दक्खिनी हिन्दी में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप.
(iv) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली और नागरी लिपि का विकास.
(v) हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का मानकीकरण.
(vi) स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का विकास.
(vii) भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास.
(viii) हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक और तकनीकी विकास.
(ix) हिन्दी की प्रमुख बोलियां और उनका परस्पर संबंध.
(x) नागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएं और उसके सुधार के प्रयास तथा मानक हिन्दी का स्वरूप.
(xi) मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना.

खंड 'ख'

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य की प्रासंगिकता और महत्व तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास–लेखन की परम्परा.

हिन्दी साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार कालों की साहित्यिक प्रवृत्तियां.

(क) **आदिकाल :** सिद्ध, नाथ और रासो साहित्य.
प्रमुख कवि : चंदबरदाई, खुसरो, हेमचंद्र, विद्यापति,

(ख) **भक्ति काल** : संत काव्य धारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्तिधारा और राम भक्तिधारा.
प्रमुख कवि : कबीर, जायसी, सूर और तुलसी.

(ग) **रीतिकाल** : रीतिकाव्य, रीतिबद्धकाव्य, रीतिमुक्त काव्य
प्रमुख कवि : केशव, बिहारी, पदमाकर और घनानंद.

(घ) **आधुनिक काल** :

क. नवजागरण, गद्य का विकास, भारतेन्दु मंडल
ख. **प्रमुख लेखक** : भारतेन्दु, बाल कृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण मिश्र.
ग. आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियां.
छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत, समकालीन कविता और जनवादी कविता.

प्रमुख कवि :
मैथली शरण गुप्त, जयशंकर 'प्रसाद', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर', सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, नागार्जुन.

3. कथा साहित्य

क. उपन्यास और यर्थाथवाद
ख. हिन्दी उपन्यासों का उद्भव और विकास
ग. **प्रमुख उपन्यासकार**
प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, रेणु और भीष्म साहनी.
घ. हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास
ङ **प्रमुख कहानीकार**
प्रेमचन्द, जयशंकर 'प्रसाद,' सच्चिदानंद वात्स्यायन, 'अज्ञेय,' मोहन राकेश और कृष्णा सोबती.

4. नाटक और रंगमंच

क. हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास.
ख. **प्रमुख नाटककार** : भारतेन्दु, जयशंकर 'प्रसाद,' जगदीश चंद्र माथुर, रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश.
ग. हिन्दी रंगमंच का विकास.

5. आलोचना :

क. हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास
सैद्धांतिक, व्यावहारिक, प्रगतिवादी, मनोविश्लेषणवादी, आलोचना और नई समीक्षा.
ख. **प्रमुख आलोचक**
रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा और नगेन्द्र.

6. हिन्दी गद्य की अन्य विधाएं :

ललित निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृतान्त.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर हिन्दी में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1. कबीर : कबीर ग्रंथावली (आरंभिक 100 पद)
   संपादक : श्याम सुन्दरदास
2. सूरदास : भ्रमरगीत सार (आरंभिक 100 पद)
   संपादक : रामचंद्र शुक्ल
3. तुलसीदास : रामचरित मानस (सुंदर काण्ड)
   कवितावली (उत्तर काण्ड).
4. जायसी : पदमावत (सिंहलद्वीप खण्ड और नागमती वियोग खण्ड)
   संपादक : श्याम सुन्दरदास
5. बिहारी : बिहारी रत्नाकर (आरंभिक 100 दोहे)
   संपादक : जगन्नाथ दास रत्नाकार
6. मैथिलीशरण गुप्त : भारत भारती
7. जयशंकर 'प्रसाद' : कामायनी (चिंता और श्रृदा सर्ग)
8. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : राग–विराग (राम की शक्ति पूजा और कुकुरमुत्ता)
   संपादक : राम विलास शर्मा
9. रामधारी सिंह 'दिनकर : कुरूक्षेत्र
10. अज्ञेय : आंगन के पार द्वार (असाध्य वीणा)
11. मुक्ति बोध : ब्रह्मराक्षस
12. नागार्जुन : बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा.

खंड 'ख'

1. भारतेन्दु : भारत दुर्दशा
2. मोहन राकेश : आषाढ़ का एक दिन
3. रामचंद्र शुक्ल : चिंतामणि (भाग–1) (कविता क्या है, श्रद्धा और भक्ति).
4. निबंध निलय, संपादक : डा. सत्येन्द्र.
   बाल कृष्ण भट्ट, प्रेमचन्द, गुलाब राय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, राम विलास शर्मा, अज्ञेय, कुबेर नाथ राय.
5. प्रेमचंद : गोदान, 'प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां, संपादक : अमृत राय
   मंजुषा : प्रेम चंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां, संपादक: अमृत राय
6. प्रसाद : स्कंदगुप्त
7. यशपाल : दिव्या
8. फणीश्वरनाथ रेणु : मैला आंचल
9. मन्नू भण्डारी : महाभोज
10. एक दुनिया समानान्तर, (सभी कहानियां) संपादक : राजेन्द्र यादव.

कन्नड़

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर कन्नड़ में लिखने होंगे)

खंड 'क'

(क) कन्नड़ भाषा का इतिहास

भाषा क्या है? भाषा की सामान्य विशेषताएं.

द्रविड़ भाषा परिवार और इसके विशिष्ट लक्षण. कन्नड़ भाषा की प्रचीनता. उसके विकास के विभिन्न चरण.

कन्नड़ भाषा की बोलियां : क्षेत्रीय और सामाजिक. कन्नड़ भाषा के विकास के विभिन्न पहलू : स्वनिमिक और अर्थगत परिवर्तन.

भाषा आदान.

(ख) कन्नड़ साहित्य का इतिहास

प्राचीन कन्नड़ साहित्य : प्रभाव और प्रवृत्तियां. निम्नलिखित कवियों का अध्ययन.

पंपा, जन्न, नागचंद्र : पंपा से रत्नाकार वर्णी तक इन निर्दिष्ट कवियों का विषय वस्तु, रूप विधान और अभिव्यंजना की दृष्टि से अध्ययन.

मध्ययुगीन कन्नड़ साहित्य : प्रभाव और प्रवृत्तियां.

बचन साहित्य : बासवन्ना, अक्क, महादेवी.

मध्ययुगीन कवि : हरिहर राघवंक, कुमारव्यास.

दास साहित्य : पुरन्दर और कनक.

संगतया : रत्नाकार वर्णी.

(ग) आधुनिक कन्नड़ साहित्य : प्रभाव, प्रवृत्तियां और विचारधाराएं. नवोदय, प्रगतिशील, नव्य, दलित और बन्दय.

खंड 'ख'

(क) काव्यशास्त्र और साहित्यक आलोचना :

कविता की परिभाषा और संकल्पनाएं : शब्द, अर्थ, अलंकार, रीति, रस, ध्वनि, औचित्य.

रस सूत्र की व्याख्याएं.

साहित्यिक आलोचना की आधुनिक प्रवृत्तियां : रूपवादी, ऐतिहासिक, मार्क्सवादी, नारीवादी, उत्तर–औपनिवेशिक आलोचना.

(ख) कर्नाटक का सांस्कृतिक इतिहास :

कर्नाटक की संस्कृति में राजवंशों का योगदान : साहित्यिक संदर्भ में बदामी और कल्याणी के चालुक्यों, राष्ट्रकूटों, हौशल्यों और विजयनगर के शासकों का योगदान.

कर्नाटक के प्रमुख धर्म और उनका सांस्कृतिक योगदान.

कर्नाटक की कलाएं : साहित्यिक संदर्भ में मूर्तिकला, वास्तुकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य.

कर्नाटक का एकीकरण और कन्नड़ साहित्य पर इसका प्रभाव.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर कन्नड़ में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे उम्मीदवारों की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

(क) प्राचीन कन्नड़ साहित्य :

1. पंपा का विक्रमार्जुन विजय (सर्ग 12 तथा 13), (मैसूर विश्वविद्यालय प्रकाशन).
2. बद्दराघने (सुकुमारस्वामैया काथे, विद्युत्चोरन काथे).

(ख) मध्युगीन कन्नड़ साहित्य :

1. वचन काम्मत, संपादक : के. मास्लसिद्दप्पा, के. आर. नागराज, (बंगलौर विश्वविद्यालय प्रकाशन).
2. जनप्रिय कनकसम्पुत, संपादक : डी. जवारे गौड़ा, (कन्नड़ एंड कल्चर डायरेक्टरेट, बंगलौर).
3. नम्बियन्नाना रागाले, संपादक : डी.एन. श्रीकातैया, (ता.वैम. स्मारक ग्रंथ माले, मैसूर).
4. कुमारव्यास भारत : कर्ण पर्व (मैसूर विश्वविद्यालय).
5. भारतेश वैभव संग्रह, संपादक : ता.सु. शाम राव, (मैसूर विश्वविद्यालय).

खंड 'ख'

(क) आधुनिक कन्नड़ साहित्य

1. **काव्य :** होसगन्नड कविते, संपादक : जी.एच.नायक, (कन्नड़साहित्य परिशत्तु, बंगलौर).
2. **उपन्यास :** बेलाद जीव – शिवराम कारंत, (माधवी–अनुपमा निरंजन औडालाल– देवानुरू महादेव.
3. **कहानी :** कन्नड़ सन्न, काथेगलु, सम्पादक : जी.एच. नायक, (साहित्य अकादमी, नई दिल्ली).
4. **नाटक :** शुद्र तपस्वी – कुवेम्पु. तुगलक–गिरीश कर्नाड
5. **विचार साहित्य :** देवरू – ए.एन. मूर्ति राव (प्रकाशक : डी.वी.के. मूर्ति, मैसूर).

(ख) लोक साहित्य

1. **जनपद स्वरूप :** डा. एच.एम. नायक (ता.वैम. स्मारक ग्रंथ माले, मैसूर)
2. **जनपद गीताजंली :** संपादक : डी. जवारे गौड़ा,

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

(प्रकाशक : साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)

3. **कन्नड़ जनपद : काथेगालु** संपादक :जे.एस.परमशि–वैया (मैसूर विश्वविद्यालय)
4. **बीड़ि मक्कालू : बैलेडो** संपादक : कालेगौड़ा नागवारा, (प्रकाशक : बंगलौर विश्वविद्यालय).
5. **सविरद ओगातुगालु :** संपादक : एस.जी. इमरापुर,

कश्मीरी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर कश्मीरी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. **कश्मीरी भाषा के वंशानुगत संबंध :** विभिन्न सिद्धांत
2. घटना क्षेत्र तथा बोलियां (भौगोलिक/सामाजिक)
3. **स्वनिमविज्ञान तथा व्याकरण :**
   (i) स्वर व व्यंजन व्यवस्था
   (ii) विभिन्न कारक विभक्तियों सहित संज्ञाएं तथा सर्वमान
   (iii) क्रियाएं : विभिन्न प्रकार एवं काल
4. **वाक्य संरचना :**
   (i) साधारण, कर्तृवाच्य व घोषणात्मक कथन
   (ii) समन्वय
   (iii) सापेक्षीकरण

खंड 'ख'

1. 14वीं शताब्दी में कश्मीरी साहित्य (सामाजिक–(सांस्कृतिक) तथा बौद्धिक पृष्ठभूमि; लाल दयाद तथा शेईखुल आलम के विशेष संदर्भ सहित)
2. उन्नीसवीं शताब्दी का कश्मीरी साहित्य (विभिन्न विधाओं का विकास : वत्सन; गज़ल तथा मथनवी.
3. बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कश्मीरी साहित्य (महजूर तथा आजाद के विशेष संदर्भ सहित; विभिन्न साहित्यिक प्रभाव)
4. आधुनिक कश्मीरी साहित्य (कहानी, नाटक, उपन्यास तथा नज़्म के विकास के विशेष संदर्भ सहित).

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर कश्मीरी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. उन्नीसवीं शताब्दी तक के कश्मीरी काव्य का गहन अध्ययन :
   (i) लाल दयाद
   (ii) शेईखुल आलम
   (iii) हब्बा खातून
2. कश्मीरी काव्य : 19वीं शताब्दी
   (i) महमूद गामी (वत्सन)
   (ii) मकबूल शाह (जुलरेज)
   (iii) रसूल मीर (गज़लें)
   (iv) अब्दुल अहमद नदीम (नात)
   (v) कृष्णजू राज़दान (शिव लगुन)
   (vi) सूफी कवि (पाठ्य पुस्तक संगलाब–प्रकाशन–कश्मीरी विभाग, कश्मीरी विश्व–विद्यालय)
3. बीसवीं शताब्दी का कश्मीरी काव्य (पाठ्य पुस्तक–आजिच काशिर शायरी, प्रकाशन–कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय.
4. साहित्यिक समालोचना तथा अनुसंधान कार्य : विकास एवं विभिन्न प्रवृत्तियां.

खंड 'ख'

1. कश्मीरी कहानियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन.
   (i) **अफसाना मज़मुए**–प्रकाशन–कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय
   (ii) **'काशुर अफसाना अज़'**–प्रकाशन–साहित्य अकादमी.
   (iii) **'हमासर काशुर अफसाना'**–प्रकाशन–साहित्य अकादमी
   केवल निम्नलिखित कहानी लेखक :
   अख्तर मोहि–उद्दीन, अमीन कामिल, हरिकृष्ण कौल, हृदय कौल भारती, बंसी निर्दोष, गुलशन माजिद.
2. **कश्मीरी उपन्यास :**
   (i) जीएन गोहर का **मुजरिम**
   (ii) मारून–इवानइलिचन (टॉलस्टाय की **'द डेथ आफ इलिच'** का कश्मीरी अनुवाद (कश्मीरी विभाग द्वारा प्रकाशित)
3. **कश्मीरी नाटक :**
   (i) हरि कृष्ण कौल का **'नाटुक करिव बंद'**
   (ii) **ऑक एंगी नाटुक,** सेवा मोतीलाल कीमू, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
   (iii) **राजि इडिपस** अनु. नज़ी मुनावर, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
4. **कश्मीरी लोक साहित्य :**
   (i) **काशुर लुकि थियेटर,** लेखक–मोहम्मद सुभान भगत–प्रकाशन, कश्मीरी विभाग, कश्मीर विश्वविद्यालय.
   (ii) **काशिरी लुकी बीथ** (सभी अंक) जम्मू एवं कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी द्वारा प्रकाशित.

कोंकणी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर कोंकणी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

कोंकणी भाषा का इतिहास :

(1) भाषा का उद्भव और विकास तथा इस पर पड़ने वाले प्रभाव.
(2) कोंकणी भाषा के मुख्य रूप तथा उनकी भाषाई विशेषताएं.
(3) कोंकणी भाषा में व्याकरण और शब्दकोश संबंधी कार्य–कारक, क्रिया विशेषण, अवयव तथा वाच्य के अध्ययन सहित.
(4) पुरानी मानक कोंकणी, नयी मानक कोंकणी तथा मानकीकरण की समस्याएं.

खंड 'ख'

कोंकणी साहित्य का इतिहास :

उम्मीदवारों से अपेक्षा की जाएगी कि वे कोंकणी साहित्य तथा उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भली–भांति परिचित हों तथा इससे उठने वाली समस्याओं तथा मुद्दों पर विचार करने में सक्षम हों.

(i) कोंकणी साहित्य का इतिहास–प्राचीनतम संभावित स्रोत से लेकर वर्तमान काल तक तथा मुख्य कृतियों, लेखकों और आंदोलनों सहित.

(ii) कोंकणी साहित्य के उत्तरोत्तर निर्माण की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि.

(iii) आदिकाल से आधुनिक काल तक कोंकणी साहित्य पर पड़ने वाले भारतीय और पाश्चात्य प्रभाव.

(iv) विभिन्न क्षेत्रों और साहित्यिक विधाओं में उभरने वाली आधुनिक प्रवृत्तियां–कोंकणी लोक साहित्य के अध्ययन सहित.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर कोंकणी में लिखने होंगे)

कोंकणी साहित्य की मूलपाठ विषयक समालोचना

यह प्रश्नपत्र इस प्रकार तैयार किया जाएगा कि उम्मीदवार की आलोचना तथा विश्लेषण क्षमता की जांच हो सके.

उम्मीदवारों से कोंकणी साहित्य के विस्तृत परिचय की अपेक्षा की जाएगी और देखा जाएगा कि उन्होंने निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों को मूल में पढ़ा है अथवा नहीं.

खड 'क'

गद्य :

1. (क) **कोंकणी मनसांगोत्री** (पद्य के अलावा) (प्रो. ओलिविन्हो गोम्स द्वारा संपादित.
   (ख) **ओल्ड कोकणी लैंग्वेज एंड लिट्रेचर, दी पोर्जुगीज् रोल :** प्रो. ओलिविन्हो गोम्स द्वारा संपादित.
2. (क) **ओट्मो डेन्वचरक :** ए.वी. डा. क्रुज का उपन्यास
   (ख) **वेडोल आनी वरेम :** एंटोनियो परेरा का उपन्यास
   (ग) डेवाचे कुरपेन : वी.जे. पी. सल्दाना का उपन्यास
3. (क) **वज़लिखनी–शेनॉय गोइम–बाब :** शांताराम वर्दे वलवलिकर द्वारा संपादित संग्रह.
   (ख) **कोंकणी ललित निबंध :** श्याम वेरेंकर द्वारा संपादित निबंध संग्रह.
   (ग) **तीन दशकम :** चंद्रकांत केणि द्वारा संपादित संग्रह.
4. (क) **डिमांड :** पुंडलीक नाइक का नाटक.
   (ख) **कादम्बिनी–ए मिसलेनी आफ मार्डन प्रोज् :** प्रो.ओ.जे.एफ.गोम्स तथा श्रीमती पी.एस. तदकोदकर द्वारा संपादित.
   (ग) रथा तु जे ओ घुदियो : श्रीमती जयंती नाईक

खंड 'ख'

पद्य

1. (क) **इवअणि मोरी :** एडुआर्डो बूनो डिसूजा द्वारा रचित काव्य
   (ख) अब्रवंचम यज्ञदान : लुईस मेस्केरेनहास.
2. (क) गोड्डे रामायण : आर.के. राव द्वारा संपादित
   (ख) **रत्नहार I एंड II, क्लेक्शन आफ पोयम्स:** आर. वी. पंडित द्वारा संपादित.
3. (क) **ज्यो–जुयो–पोयम्स :** मनोहर एल सरदेसाई
   (ख) कनादी माटी कोंकणी कवि : प्रताप नाईक द्वारा संपादित कविता संग्रह.
4. (क) **अह्रष्टाचे कल्ले :** पांडुरंग भंगुई द्वारा रचित कविताएं.
   (ख) **यमन :** माधव बोरकर द्वारा रचित कविताएं.

मैथिली

प्रश्नपत्र–1

मैथिली भाषा और साहित्य का इतिहास

(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

खंड 'क'

मैथिली भाषा का इतिहास :

1. भारोपीय भाषा–परिवार में मैथिली का स्थान.
2. मैथिली भाषा का उद्भव और विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली).
3. मैथिली भाषा का कालिक विभाजन (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल).
4. मैथिली एवं इसकी विभिन्न उपभाषाएं.
5. मैथिली एवं अन्य पूर्वांचलीय भाषाओं में सम्बध (बंगला, असमिया, उड़िया).
6. तिरहुता लिपि का उद्भव और विकास.
7. मैथिली में सर्वनाम और क्रियापद.

खंड 'ख'

मैथिली साहित्य का इतिहास :

1. मैथिली साहित्य की पृष्ठभूमि (धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक).
2. मैथिली साहित्य का काल–विभाजन
3. प्राक् विद्यापति साहित्य.
4. विद्यापति और उनकी परम्परा.
5. मध्यकालीन मैथिली नाटक (कीर्तनिया नाटक, अंकीया नाट, नेपाल में रचित मैथिली नाटक).
6. मैथिली लोकसाहित्य (लोकगाथा, लोकगीत, लोकनाट्य, लोककथा)
7. आधुनिक युग में विभिन्न साहित्यिक विधाओं का विकास
   (क) प्रबंधकाव्य
   (ख) मुक्तककाव्य
   (ग) उपन्यास
   (घ) कथा
   (ङ) नाटक
   (च) निबंध
   (छ) समीक्षा
   (ज) संस्मरण
   (झ) अनुवाद.
8. मैथिली पत्र–पत्रिकाओं का विकास.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मैथिली में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1. विद्यापति गीतशती–प्रकाशक–साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (गीतसंख्या 1 से 50 तक).
2. गोविन्ददास भजनावली–प्रकाशक–मैथिली अकादमी, पटना (गीतसंख्या 1 से 25 तक).
3. कृष्णजन्म–मनबोध.
4. मिथिलाभाषा रामायण–चन्दा झा (सुन्दरकाण्ड मात्र).
5. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण–लालदास (बालकाण्ड मात्र).
6. कीचकवध–तन्त्रनाथ झा
7. दत्त–वती–सुरेन्द्र झा 'सुमन' (प्रथम और द्वितीय सर्ग मात्र).
8. चित्रा–यात्री.
9. समकालीन मैथिली कविता–प्रकाशक साहित्य अकादमी, नई दिल्ली.

खंड 'ख'

10. वर्णरत्नाकर – ज्योतिरीश्वर (द्वितीय कल्लोल मात्र).
11. खट्टर ककाक तरंग – हरिमोहन झा.
12. लोरिक–विजय–मणिपद्म
13. पृथ्वीपुत्र – ललित.
14. भफाइत चाहक जिनगी – सुधांशु 'शेखर' चौधरी.
15. कृति राजकमल – प्रकाशक–मैथिली अकादमी, पटना (आरम्भ में दस कथा तक).
16. कथा–संग्रह–प्रकाशक–मैथिली अकादमी, पटना.

मलयालम

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर मलयालम में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाग–1 मलयालम भाषा की प्रारंभिक अवस्था :

1.1 विभिन्न सिद्धांत : प्राक् द्रविड़ियन, तमिल, संस्कृत से उद्भव.

1.2 तमिल तथा मलयालम का संबंध ए.आर. राजराजवर्मा के छः लक्षण (नया)

1.3 पाट्टु संप्रदाय –परिभाषा, रामचरितम, परवर्ती पाट्टु कृतियां–निराणम कृतियां तथा कृष्ण गाथा.

भाग–2 : निम्नलिखित की भाषाई विशेषताएं :

2.1 मणिप्रवालम–परिभाषा. मणि प्रवालम में लिखी प्रारंभिक कृतियों की भाषा–चम्पू, संदेशकाव्य, चन्द्रोत्सव, छुट पुट कृतियां परवर्ती मणिप्रवाल कृतियां–मध्ययुगीन चम्पू एवं आट्ट कथा.

2.2 लोक गाथा : दक्षिणी तथा उत्तरी गाथाएं, माप्पिला गीत.

2.3 प्रारंभिक मलयालम गद्य–भाषा कौटिलीयम, ब्रह्मांड पुराणम आट्ट–प्रकारम, क्रम दीपिका तथा नम्बियान तमिल.

भाग–3 मलयालम का मानकीकरण

3.1 पाणा, किलिप्पाट्टु तथा तुल्लन की भाषा की विशेषताएं.

3.2 स्वदेशी तथा यूरोपीय मिशनरियों का मलयालम को योगदान.

3.3 समकालीन मलयालम की विशेषताएं : प्रशासनिक भाषा के रूप में मलयालम. विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी साहित्य की भाषा–जन संचार की भाषा.

खंड 'ख'

साहित्य का इतिहास

भाग–4 प्राचीन तथा मध्युगीन साहित्य :

4.1 पाट्टू–राम चरितम्, निराणम कृतियां एवं कृष्ण गाथा.

4.2 मणिप्रवालम–आट्ट कथा, चंपू आदि प्रारंभिक तथा मध्ययुगीन मणिप्रवाल कृतियां.

4.3 लोक साहित्य

4.4 किलिपाट्टु, तुल्लल तथा महाकाव्य

भाग–5 आधुनिक साहित्य–कविता

5.1 वैणमणि कवि तथा समकालीन कवि

5.2 स्वच्छन्दतावाद का आगमन–कवित्रय का काव्य–आशान, उल्लूर तथा वल्लतोल

5.3 कवित्रय के बाद की कविता.

5.4 मलयालम कविता में आधुनिकतावाद.

भाग–6 आधुनिक साहित्य–गद्य

6.1 नाटक

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

6.2 उपन्यास

6.3 लघु कथा

6.4 जीवनी, यात्रा वर्णन, निबंध और समालोचना.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मलयालम में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित होगा और परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक क्षमता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

खंड 'क'

भाग–1

1.1 रामचरितम–पटलम–1

1.2 कण्णश्श रामायणम्–बालकाण्डम प्रथम 25 पद्य.

1.3 उण्णुनीलि सवेक्षम्–पूर्व भागम 25 श्लोक, प्रस्तावना सहित.

1.4 महाभारतम् : किलिप्पाट्टु–भीष्म पर्वम्

भाग–2

2.1 कुमारन् आशान–चिंता अवस्थियाय सीता

2.2 वैलोप्पिल्ली कुटियोषिक्कल

2.3 जी शंकर कुरूप–पेरुन्तच्चन

2.4 एन.वी. कृष्ण वारियार–तिवांदियिले पाट्टु

भाग–3

3.1 ओएनवी–भूमि कोरु चरम गीतिम्

3.2 अय्यप्पा पणिक्का–कुरुक्षेत्रम

3.3 आक्किट्टम पंडत्ते मेश्शांति

3.4 आट्टूर रवि वर्मा–मेघरूप

खंड 'ख'

भाग–4

4.1 ओ. चंतु मेनन–इंदुलेखा

4.2 तकषि–चेम्मीन

4.3 ओ.वी. विजयन–खाताक्किन्टे इतिहासम्

भाग–5

5.1 एमटी वासुदेवन नायर–वानप्रस्थम (संग्रह)

5.2 एनएस माधवन–हिग्विक्ता (संग्रह)

5.3 सीजे थामस–1128–इल क्राइम 27

भाग–6

6.1 कुट्टिकृष्ण मारार–भारत पर्यटनम्

6.2 एम.के. सानू–नक्षत्रंगलुटे स्नेहभाजनम्

6.3 वीटी भट्टक्षिरिपाद–कण्णीरूम किनावुम

मणिपुरी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर मणिपुरी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा

(क) मणिपुरी भाषा की सामान्य विशेषताएं और उसके विकास का इतिहास, उत्तर–पूर्वी भारत की तिब्बती–बर्मी भाषाओं की बीच मणिपुरी भाषा का महत्व तथा स्थान, मणिपुरी भाषा में अध्ययन में नवीनतम विकास, प्राचीन मणिपुरी लिपि का अध्ययन और विकास.

(ख) मणिपुरी भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएं.

i) स्वर विज्ञान : स्वनिम (फोनीम), स्वर, व्यंजन, संयोजन, स्वरक, व्यंजन समूह और इनका प्रादुर्भाव–अक्षर–इसकी संरचना, स्वरूप तथा प्रकार.

ii) रूप विज्ञान : शब्द श्रेणी, धातु तथा इसके प्रकार; प्रत्यय और इसके प्रकार; व्याकरणिक श्रेणियां–लिंग, संख्या, पुरुष, कारक, काल और इनके विभिन्न पक्ष. संयोजन की प्रक्रिया (समास और संधि).

iii) वाक्य विन्यास : शब्द क्रम, वाक्यों के प्रकार, वाक्यांश और उपवाक्यों का गठन.

खंड 'ख'

क) मणिपुरी साहित्य का इतिहास :

आरंभिक काल (17वीं शताब्दी तक) सामाजिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विषय वस्तु, कार्य की शैली तथा रीति.

मध्य काल : (अठारवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी) सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिक पृष्ठभूमि, विषयवस्तु, कार्य की शैली तथा रीति.

आधुनिक काल : प्रमुख साहित्यिक रूपों का विकास–विषयवस्तु, रीति और शैली में परिवर्तन.

(ख) मणिपुरी लोक साहित्य :

दंतकथा, लोक कथा, लोक गीत, गाथा लोकोक्ति तथा पहेली.

(ग) मणिपुरी संस्कृति के विभिन्न पक्ष :

हिन्दूपूर्व मणिपुरी आस्था, हिन्दुत्व का आगमन और समन्वयवाद की प्रक्रिया; प्रदर्शन कला–लाई हरोवा, महारस, स्वदेशी खेल–सगोल कांगजेई, खोंग कांगजेई कांग.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मणिपुरी में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का मूल अध्ययन अपेक्षित है और प्रश्नों का स्वरूप ऐसा होगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

प्राचीन तथा मध्यकालीन मणिपुरी साहित्य

(क) प्राचीन मणिपुरी साहित्य

1.ओ. मोगेश्वर सिंह (सं.)	नुमित कप्पा
2.एम. गौराचंद्र सिंह (सं.)	थ्वनथवा हिरण
3.एन. खेलचंद्र सिंह (सं.)	नौथिंगकांग फम्बल काबा
4.एम. चंद्र सिंह (सं.)	पंथोयबी खोंगल

(ख) मध्कालीन मणिपुरी साहित्य

1.एम. चंन्द्र सिंह (सं.)	समसोक गांबा
2.आर.के. स्नेहल सिंह (सं.)	रामायण आदि कांड
3.एन. खेलचंद्र सिंह (सं.)	घनंजय लाइबूनिंग्बा
4.ओ. भोगेश्वर सिंह (सं.)	चंद्रकीर्ति जिला चंगबा

खंड 'ख'

आधुनिक मणिपुरी साहित्य

(क) कविता तथा महाकाव्य

(I) कविता

(क) मणिपुरी शेरेंग (प्रकाशन) मणिपुरी साहित्य परिषद् 1988 (सं.)

ख. चोबा सिंह	पी थदोई, लैमगी चेकला आमदा लोकटक
डा. एल. कमल सिंह	निर्जनता; निरब राजनी
ए. मीनाकेतन सिंह	कमाल्दा नोंग्गमलखोडा
एल. समरेन्द्र सिंह	इंगागी नोंग ममंग लेकाई थम्बल सतले
ई. नीलकांत सिंह	मणिपुर, लमंगनबा
श्री बीरेन	तंगखुल हुई
थ. इबोपिशाक	अनौबा थंगबाला जिबा

(ख) कान्बी शेरेंग (प्रकाशन) मणिपुर विश्वविद्यालय 1998 (सं)

डा. एल. कमल सिंह	बिस्वा–प्रेम
श्री बीरेन	चफद्रबा लेइगी येन
थ. इबोपिशाक	नरक पाताल पृथिवी

(II) महाकाव्य

1.ए. दोरेन्द्र जीत सिंह	कांसा बोधा
2.एच. अंगनघल सिंह	खंबा–थोईबी शेरेंग (सन–सेनबा), लेई लंगबा, शामू खोंगी विचार)

(III) नाटक

1.एस. ललित सिंह	अरेप्पा मारुप
2.जी.सी. टोंगब्रा	मैट्रिक पास
3.ए.समरेन्द्र	जज साहेब की इमंग

(ख) उपन्यास, कहानी तथा गद्य :

I) उपयान्स

1.डा. एल. कमल सिंह:	माधबी
2.एच. अंगनघल सिंह	जहेरा
3.एच. गुणो सिंह	लामन
4.पाछा मीटेई	इम्फाल आमासुंग, मैगी इशिंग, नुंगसीतकी फिबम

II) कहानी

क) कान्बी वरिमचा (प्रकाशन) मणिपुर विश्वविद्यालय 1997 (सं.)

आर.के. शीतलजीत सिंह	कमला कमला
एम.के.बिनोदिनी	आइगी थाऊद्रबा हीट्प लालू
ख. प्रकाश–	वेनम शारेंग

ख) परिषद्की खांगतलबा वरिमचा (प्रकाशन) मणिपुरी साहित्य परिषद 1994 (सं.)

एस. नीलबिर शास्त्री	लोखात्पा
आर.के. इलंगबा	करिनुंगी

ग) अनौबा मणिपुरी वरिमचा (प्रकाशन)–दि कल्चरल फोरम मणिपुर 1992 (सं.)

एन कुंजमोहन सिंह	इजात तनबा
ई. दीनमणि	नंगथक खोंगनांग

III) गद्य

क) वारेंगी सकलोन (ड्यू पार्ट) (प्रकाशन) दि कल्चरल फोरम मणिपुर 1992 (सं.)

ख. चौबा सिंह : खंबा–थोईबिगी वारी अमासुंग महाकाव्य

कांची वारेंग (प्रकाशन)–मणिपुर विश्वविद्यालय 1998 (सं)

बी. मणिसन शास्त्री	फाजबा
च. मणिहर सिंह	लाई–हरौबा

ग) अपुनबा वारेंग (प्रकाशन)–मणिपुर विश्वविद्यालय 1986 (सं.)

च. पिशक सिंह	समाज अमासुंग संस्कृति
एम.के. बिनोदिनी	थोईबिदु वेरोहोइदा
एरिक न्यूटन	कलगी महोसा (आई.आर.बाबू द्वारा अनूदित)

घ) मणिपुरी वारेंग (प्रकाशन) दि कल्चरल फोरम मणिपुर 1999 (सं.)

एम. कृष्ण मोहन सिंह	लान

मराठी

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर मराठी में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा और लोक विधा

(क) भाषा का स्वरूप और कार्य

(मराठी के संदर्भ में)

भाषा–संकेतन प्रणाली के रूप में : लेंन्गुई और परौल, आधारभूत कार्य, काव्यात्मक भाषा, मानक भाषा तथा बोलियां, सामाजिक प्राचल के अनुसार भाषाई–परिवर्तन तेरहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी में मराठी की भाषाई विशेषताएं

(ख) मराठी की बोलियां

अहिराणी, बरहदी, डांगी

(ग) मराठी व्याकरण

शब्द–भेद (पार्ट्स आफ स्पीच), कारक व्यवस्था (केस सिस्टम), प्रयोग विचार (वाच्य)

(घ) लोक विधा के स्वरूप और प्रकार

(मराठी के विशेष संदर्भ में)

लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य

खंड 'ख'

साहित्य का इतिहास और साहित्यिक आलोचना

(क) मराठी साहित्य का इतिहास.

1. प्रारंभ से 1818 ई. तक : महानुभाव लेखक, वरकारी कवि, पंडित कवि, शाहिर्स, बाखर साहित्य के विशेष संदर्भ में.
2. 1850 ई. से 1990 तक : काव्य, कथासाहित्य (उपन्यास और कहानी) नाटक और प्रमुख साहित्य धाराओं के विशेष संदर्भ में तथा रोमांटिक, यथार्थवादी, आधुनिकतावादी, दलित, ग्रामीण और नारीवादी आंदोलनों के विकास के विशेष संदर्भ में.

(ख) साहित्यिक आलोचना

1. साहित्य का स्वरूप और कार्य.
2. साहित्य का मूल्यांकन.
3. आलोचना का स्वरूप, प्रयोजन और प्रक्रिया.
4. साहित्य, संस्कृति और समाज.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर मराठी में लिखने होंगे)

निर्धारित साहित्यिक रचनाओं का मूल पाठ विषयक अध्ययन

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसमें अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

खंड 'क'

गद्य

(1) 'स्मृति स्थल'

(2) महात्मा : जोतिबा फूले :
'शेतकारियाचा आसुद'
'सार्वजनिक सत्यधर्म'

(3) एस.वी. केतकर :
'ब्राह्मण कन्या'

(4) पी.के. अत्रे :
'शास्टांग नमस्कार'

(5) शरच्चंद मुक्ति बोध :
'जाना हे बोलातु जेथे'

(6) उद्धव शैल्के :
'शीलन'

(7) बाबू राव बागुल :
'जेव्हा मी जात चोरली होती'

(8) गौरी देशपांडे :
'एकेक पान गालाव्या'

(9) पीआई सोनकाम्बले
'आठवनीन्चे पक्षी'

खंड 'ख'

काव्य

(1) नामदेवान्ची अभंगवाणी
सम्पा–इनामदार, रेलेकर, मिराजकर, माडर्न बुक डिपो, पुणे.

(2) 'पेन्जान'
सम्पा.–एम.एन. अदवन्त
साहित्य प्रसाद केन्द्र, नागपुर

(3) दमयन्ती–स्वयंवर
द्वारा–रघुनाथ पंडित

(4) बालकविंची कविता
द्वारा–बालकवि

(5) विशाखा
द्वारा–कुसुमाग्रज

(6) मृदगंध
द्वारा–विन्दा करन्दीकर

(7) जाहिरनामा
द्वारा–नारायण सुर्वे

(8) संध्या कालचे कविता
द्वारा–ग्रेस

(9) या सत्तेत जीव रमात नाही
द्वारा–नामदेव ढसाल

नेपाली

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर नेपाली में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. नई भारतीय आर्य भाषा के रूप में नेपाली भाषा के उद्भव और विकास का इतिहास.
2. नेपाली व्याकरण और स्वनिम विज्ञान के मूल सिद्धांत :
(i) संज्ञा रूप और कोटियां–लिंग, वचन, कारक, विशेषण, सर्वनाम, अव्यय
(ii) क्रिया रूप और कोटियां : काल, पक्ष, वाच्य, धातु, प्रत्यय.
(iii) नेपाली स्वर और व्यंजन.
3. नेपाली भाषा की प्रमुख बोलियां.
4. भाषा आंदोलन (जैसे हलन्त बहिष्कार, झारोवाद आदि) के विशेष संदर्भ में नेपाली का मानकीकरण तथा आधुनिकीकरण.
5. भारत में नेपाली भाषा का शिक्षण–सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों के विशेष संदर्भ में इसका इतिहास और विकास.

खंड 'ख'

1. भारत में विकास के विशेष संदर्भ में नेपाली साहित्य का इतिहास.
2. साहित्य की मूल अवधारणाएं तथा सिद्धांत : काव्य/साहित्य, काव्य प्रयोजन साहित्यिक विधाएं, शब्द शक्ति, रस, अलंकार, त्रासदी, कामदी, सौंदर्यशास्त्र, शैली–विज्ञान.
3. प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियां तथा आन्दोलन–स्वच्छंतावाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, आयामिक आन्दोलन, समकालीन

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

नेपाली लेखन, उत्तर– आधुनिकतावाद.

4. नेपाली लोक साहित्य (केवल निम्नलिखित लोक स्वरूप)–सवाई, झाव्योरी, सेलो, संगिनी, लहारी.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर नेपाली में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य–पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जायेगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1. सांता ज्ञान्डिल दास : **उदय लहरी**
2. लेखनाथ पोड्याल : **तरुण तापसी** (केवल III, V, VI, XII, XV, XVIII विश्राम)
3. आगम सिंह गिरि : **जालेको प्रतिबिम्ब : रोयको प्रतिध्वनि** (केवल निम्नलिखित कविताएं– प्रसावकों, चिच्याहत्संग ब्यूझेको एक रात, छोरोलई, जालेको प्रतिबिम्ब : रोयको प्रतिध्वनि, हमरो आकाशमणी, पानी हुन्छा उज्यालो, तिहार).
4. हरिभक्त कटवाल : **यो जिन्दगी खाई के जिन्दगी :** (केवल निम्नलिखित कविताएं : जीवन; एक दृष्टि; यो जिन्दगी खाई के जिन्दगी, आकाश तारा के तारा, हमिलाई निरधो नासमझा, खाई मन्याता याहां, आत्मादुतिको बलिदान को.
5. बालकृष्णसामा **प्रहलाद**
6. मनबहादुर मुखिया अंध्यारोमा बांचनेहारू (केवल निम्नलिखित एंकाकी– 'अंध्यारोमा बांचनेहारू', 'सुस्केरा').

खंड 'ख'

1. इंद्र सुन्दास : **सहारा**
2. लिलबहादुर छेत्री : **ब्रह्मपुत्र को छेऊछाऊ**
3. रूप नारायण सिन्हा : **कथा नवरत्न** (केवल निम्नलिखित कहानियां– बिटेका कुरा, जिम्मेवारी कास्को, धनमातिको सिनेमा–स्वप्न, विध्वस्त जीवन).
4. इंद्रबहादुर रॉय : **विपना कटिपया :** (केवल निम्नलिखित कहानियां रातभरी हुरि चलयो, जयमया अफुमत्र लेख–माणी अईपुग, भागी, घोष बाबू, छुट्माइयो).
5. सानू लामा : **कथा संपद :** (केवल निम्नलिखित कहानियां स्वास्नी मांछे, खानी तरमा एक दिन फुरबाले गौन छाड्या, असिनाको मांछे).
6. लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा : **लक्ष्मी निबंध संग्रह :** (केवल निम्नलिखित निबंध : श्री गणेशाय नमः, नेपाली साहित्य को इतिहासमा, सर्व श्रेष्ठ पुरुष, कल्पना, कला रा जीवन, गधा बुद्धिमान की गुरू?)
7. रामकृष्णशर्मा : **दासगो रखा :** (केवल निम्नलिखित निबंध, कवि, समाज रा साहित्य, साहित्य मा सपेक्षता, साहित्यिक रूचिको प्रौढ़ता, नेपाली साहित्य को प्रगति.)

उड़िया

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर उड़िया में लिखने होंगे)

खंड 'क'

उड़िया भाषा का इतिहास :

(i) उड़िया भाषा का उद्भव और विकास, उड़िया भाषा पर ऑस्ट्रिक, द्राविड़, फारसी–अरबी तथा अंग्रेजी का प्रभाव.

(ii) स्वनिकी तथा स्वनिम विज्ञान : स्वर, व्यंजन, उड़िया ध्वनियों में परिवर्तन के सिद्धांत.

(iii) रूप विज्ञान : रूपिम (निर्बाध, परिबद्ध, समास और सम्मिश्र), व्युत्पत्ति परक तथा विभक्ति प्रधान प्रत्यय, कारक विभक्ति, क्रिया संयोजन.

(iv) वाक्य रचना : वाक्यों के प्रकार और उनका रूपान्तरण, वाक्यों की संरचना.

(v) शब्दार्थ विज्ञान : शब्दार्थ, शिष्टोक्ति में परिवर्तन के विभिन्न प्रकार.

(vi) वर्तनी, व्याकरणिक प्रयोग तथा वाक्यों की संरचना में सामान्य अशुद्धियां.

(vii) उड़िया भाषा में क्षेत्रीय भिन्नताएं (पश्चिमी, दक्षिणी और उत्तरी उड़िया) तथा बोलियां (भात्री और देसिया).

खंड 'ख'

उड़िया साहित्य का इतिहास :

(i) विभिन्न कालों में उड़िया साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक).

(ii) प्राचीन महाकाव्य, अलंकृत काव्य तथा पदावलियां.

(iii) उड़िया साहित्य का विशिष्ट संरचनात्मक स्वरूप (कोइली, चौतिसा, पोई, चौपदी, चम्पू)

(iv) काट्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध तथा साहित्यिक समालोचना की आधुनिक प्रवृत्तियां.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर उड़िया में लिखने होंगे)

पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन :

इस प्रश्न–पत्र में मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा तथा अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा ली जाएगी.

खंड 'क'

काव्य

(प्राचीन)

1. सरला दास : शांति पर्व–महाभारत से
2. जगनाथ दास : भागवत, ग्याहरवां स्कंध जादू अवधूत संबाद

(मध्यकालीन)

3. दीनाकृष्ण दास : राख कल्लोल : (16 तथा 34 छंद)
4. उपेन्द्र भांजा : लावण्यवती–(1 तथा 2 छंद)

(आधुनिक)

5. राधानाथ राय : चंद्रभागा
6. मायाघर मानसिंह : जीवन–चिता
7. सचिदानंद राउतराय : कविता–1962
8. रमाकांत रथ : सप्तम ऋतु

खंड 'ख'

नाटक :

9. मनोरंजन दास : काठ घोड़ा
10. विजय मिश्रा : ताता निरंजन

उपन्यास

11. फकीर मोहन सेनापति : छमना अथगुन्थ
12. गोनीनाथ मोहन्ती : दानापानी

कहानी

13. सुरेन्द्र मोहन्ती : मरलारा मृत्यु
14. मनोज दास : लक्ष्मीश अभिसार

निबंध

15. चित्तरंजन दास : तरंग–ओ–ताद्धित (प्रथम पांच निबंध)
16. चंद्र शेखर रथ : मन सत्यधर्म काहूछी (प्रथम पांच निबंध)

पाली

प्रश्नपत्र–1

पाली भाषा

कृपया ध्यान दें. : सभी प्रश्नों के उत्तर पाली भाषा में देवनागरी अथवा रोमन लिपि में लिखने होंगे.

खंड 'क'

1. पाली का उद्भव और उद्गम–स्थल तथा इसकी विशेषताएं.
2. पाली व्याकरण – (i) पाली व्याकरण की पारिभाषिक शब्दावली अक्खर, सर, व्यंजन, निग्गहित, नाम, सब्बनाम, आख्यात, उपसग्ग, निपात, अव्यय. (ii) कारक, (iii) समास, (iv) संधि (v) तद्धित (अपच्च बोधक और अधिकारबोधक–पच्चय). (vi) निम्नलिखित शब्दों के व्युतपत्तिमूल : बुद्धों, भिक्खु, सामनेरो सत्पा, घम्मों, लताय, पुरिसानम् तुम्हे, अम्हेमी, मुनिना, रक्षीसु फलाय, अट्ठीस, रन्नम्, संधो.
3. पाली से अंग्रेजी में दो अनदेखे उद्धरणों का अनुवाद.

खंड 'ख'

4. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 300 शब्दों का निबन्ध

(क) भगवाबुद्धो
(ख) तिलक्खणम्
(ग) अरियो अठंगिको मग्गो
(घ) चक्षारि अरियसच्चानि
(ङ) कम्मवादो
(च) पतिच्चसमुप्पादो
(छ) निब्बानम् परमम् सुखम्
(ज) तिपिटकम्
(झ) धम्मपदम्
(ञ) मज्झिमा – पतिपदा

5. पाली उद्दरणों का सार.
6. पाली काव्य की पाली भाषा में व्याख्या
7. निम्नलिखित अबिकारी (अव्यय एवं निपात) का अर्थ और अभ्यर्थी द्वारा पाली वाक्यों में उनका प्रयोग.

(1) अथ, (2) अन्तरा, (3) अद्घा, (4) कदा, (5) कित्तावता, (6) अहीरक्षम, (7) दिवा, (8) यथा, (9) चे, (10) सेय्याभीद्म (11) बिना, (12) कुदाचनम् (13) सद्धिम्, (14) अंतरेन, (15) खो, (16) मा, (17) एवम्, (18) एत्थ, (19) किर, (20) पन.

प्रश्नपत्र–2

पाली साहित्य

इसमें दो प्रश्न अनिवार्य होंगे जिनके उत्तर पाली भाषा में देवनागरी अथवा रोमन लिपि में लिखने होंगे. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो पाली अथवा उम्मीदवार द्वारा चुने हुए परीक्षा माध्यम में लिखने होंगे.

खंड 'क'

(i) पाली स्त्रोतों से बुद्ध का जीवन वृत्त और उपदेश.

(ii) निम्नलिखित पुस्तकों और लेखकों के संदर्भ में पाली साहित्य का इतिहास–प्रामाणिक और अप्रामाणिक :

महावग्ग, चुल्लवग्ग, पातिमोक्ख, दीघ–निकाय, घम्मपद, जातक, थेरगाथा, थेरीगाथा, दीपवंश, महावंश, दठवंश, शासनवंश, मिलिन्दपण्ह, पेटकोपडेस, नेट्टिप्पकरण, बुददत्त, बुद्धघोस और धम्मपाल.

खंड 'ख'

1. निम्नलिखित निर्धारित पाठों में से मूल पाठ विषयक प्रश्न, आलोचनात्मक टिप्पणियां तथा सटिप्पण अनुवाद संबंधी प्रश्न पूछे जाएंगे.

(i) दीघ – निकाय (केवल सामन्नफल – सुत्त)
(ii) सुत्त–निपात (केवल खग्ग विसणि–सुत्त और घनिय – सुत्त)
(iii) धम्मपद (केवल पहले पांच वग्ग)
(iv) मिलिंदपण्ह (केवल लखण–पण्ह)
(v) महावंश (केवल ततीय संगीति)
(vi) अभिधम्पत्थ – संघ (पहला, दूसरा और छठा पाठ)
(vii) पाली छंदविधान – बुत्तोदय – अनुट्ठुम, इंदवजिरा, उपेन्दवजिरा, बसंत तिलका, मालिनी, सिखरिणी, उपजति, तोटक, दोधक, वंसटठ.
(viii) पाली अलंकार विधान (सुबोधालंकार – यमक, अनप्पास) रूपक, उपमा, अतिसयुत्ति, व्यतिरेक, निदस्सना, अत्थंतरन्यास, दीपक, दिट्ठंत.

2. निर्धारित पाठों में से बौद्ध दर्शन पर संक्षिप्त टिप्पणियां.
3. निर्धारित पाठों में से पाली काव्य की व्याख्या.

फारसी

प्रश्नपत्र–1

इसमें दो प्रश्नों का उत्तर फारसी में देना होगा. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो फारसी में अथवा उम्मीदवार द्वारा परीक्षा के लिए चुने गए भाषा माध्यम में दिये जाने चाहिए.

खंड 'क'

(1) (क) फारसी भाषा के उद्भव और विकास का वर्णन.
(इसका उत्तर फारसी में देना होगा).
(ख) अनुप्रयुक्त व्याकरण, अलंकार, छंदशास्त्र, प्रायः प्रयुक्त होने वाले मुहावरे और लोकोक्तियां.

(i) व्याकरण : इस्म और उसके प्रकार, जमीर–ए–मुत्तासिल और मुनकासिल, मुराकाबी–तौशसिफी, मुराक्ब–ए–इज़ाफी, इस्मी–इशारा, मुशारून ईलाइह, फेल और इसके प्रकार, काल, गरदान, एकबचन और बहुबचन, जुम्ले और उनके प्रकार.

(ii) अलंकार विधान : तजनीस, इश्तिकाक, लुजुम–मा–ला–याालजुम, सयाक तुल आदाद, कल्ब, तारसी, इस्तिआरा, मारातुन नाज़ीर, लफ–ओ नश्र, इहाम, हुस्न–ए–तालील, ताजाहुली–आरेफानेह, तलमीह, तनसीक्स सिफ्त.

(iii) छंदविधान : बाहरी –मुज़ारा, रामल, मुताक़ारीब, तावील, हजाज, कामिल.

खंड 'ख'

1. फारसी में संक्षिप्त निबंध – 250 शब्दों में (इसका उत्तर फारसी में देना होगा)

2. ईरान और भारत में फारसी साहित्य का इतिहास : साहित्यिक आलोचना और शैली : क्लासिकी और आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां : सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव, नाटक, उपन्यास, कहानी सहित आधुनिक साहित्यिक विधाओं का विकास.

प्रश्नपत्र–2

दो अनिवार्य प्रश्न होंगे–जो गद्य और पद्य के मूल पाठों से एक–एक होंगे जिनके उत्तर फारसी में देने होंगे. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो फारसी में देने होंगे अथवा उम्मीदवार द्वारा परीक्षा के लिए चुने गए भाषा माध्यम में देने होंगे.

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्यक्रमों का अध्ययन अपेक्षित होगा और इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

गद्य

1. निजामी आरूजी समर कंदी : चहार मक़ाला :
   (i) दाबीरी
   (ii) शायरी
2. क़ाबुस/बी, वश्मगीर : काबुसनामा :
   (i) दार शिनाख्त–ए–हक़–ए–पीदार–वा–मादर
   (ii) दार विशी जुस्तान अज़ सुखानदानी
   (iii) दार तालिब इल्मी वा फक़ीह वा फुकाहा
3. शादी शीराज़ी : गुलिस्तां
   (i) दार ताशीर –ए–सुहबत
4. मो.अवफी : जावामियुल हिकायत :
   (i) पहली दस हिदायतें
5. ज़ियाउद्दीन बर्नी : तारीख–ए–फिरोज़शाही
   (i) वासावा–ए–सुल्तान बलबन वे फरजंद–ए–बुजुर्ग
6. अबुल फज़ल : आईन–ए–अकबरी
   (i) आईन–ख़ज़ीना–ए–आबादी

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

(ii) आईन–ए–शबिस्तान–ए–इक़बाल
(iii) आईन–ए–मंजिल दार युरीशहा
(iv) आईन–ए–चिराग आफरोज़ी

7. सादिक–ए–हिदायत :
(i) दश अकुल
(ii) गिरदाब

8. मो. हिजाज़ी
(i) खुदकुशी
(ii) पेज़ेश्क–ए–चश्म

खंड 'ख'

काव्य

1. फिरदौसी : शाहनामा
(i) रूस्तम–ओ–सोहराब
2. खय्याम : स्बाइयां
(रदीफ़ अलीफ़ और बे)
3. शादी शिराजी : बुस्तन :
दार अदल–ओ–तदबीर–ओ–राई
4. अमीर खुसरो : मजमुआ–ए–दीवान–ए–खुसरो (रदीफ दाल)
5. मौलाना रूम : मथनवी मनावी (दफ्तर दुव्वम का प्रथम भाग)
6. हाफ़िज़ (रदीफ़ अलीफ़ और दाल)
7. उर्फी शिराज़ी : कासांयद
(i) इक़बाल–ए–करम मिगाज़द अरबाबी–हिमामरा.
(ii) हर सुख्ता जाने कि बा कश्मीर दार आबद.
(iii) शबाह–ए–ईद के दार तकया गाह–ए–नाज़–ओ नईम.
8. गालिब : गज़लियात (रदीफ अलीफ)
9. बहार मशहदी :
(i) जुगहद–ए–जंग
(ii) शुकुत–ए–शाब
(iii) दमावानदिये
(iv) दुखतर–ए–बसरा
10. फुरूग़–ए–फारूर्ख़ज़ाद
(i) दार बराबर–ए–खुदा
(ii) दिव–ए–शाब
11. निमायुशिज़
(i) क्यू
(ii) ख़ार–कन

टिप्पणी : गद्य और पद्य के पाठों की व्याख्या फ़ारसी में करना अनिवार्य है.

पंजाबी

प्रश्नपत्र–I

(उत्तर पंजाबी में गुरुमुखी लिपि में लिखने होंगे)

भाग 'क'

(क) पंजाबी भाषा का उद्भव : विकास के विभिन्न चरण और पंजाबी भाषा में नूतन विकास : पंजाबी स्वर विज्ञान की विशेषताएं तथा इसकी तानों का अध्ययन : स्वर एवं व्यंजन का वर्गीकरण.

(ख) पंजाबी रूप विज्ञान : वचन–लिंग प्रणाली (सजीव एवं असजीव) उपसर्ग, प्रत्यय एवं परसर्गों की विभिन्न कोटियां. पंजाबी शब्द–रचना : **तत्सम, तद्भव रूप :** वाक्य विन्यास, पंजाबी में कर्ता एवं कर्म का अभिप्राय; संज्ञा एवं क्रिया पदबंध.

(ग) भाषा एवं बोली : बोली एवं व्यक्ति बोली का अभिप्राय : पंजाबी की प्रमुख बोलियां : पोथोहारी, माझी, दोआबी, मालवी, पुआधि : सामाजिक स्तरीकरण के आधार पर वाक् परिवर्तन की विधिमान्यता, तानों के विशेष संदर्भ में विभिन्न बोलियों के विशिष्ट लक्षण. भाषा एवं लिपि : गुरमुखी का उद्भव और विकास : पंजाबी के लिए गुरमुखी की उपयुक्तता.

(घ) शास्त्रीय पृष्ठभूमि : नाथ जोगी सहित. मध्यकालीन साहित्य : गुरमत, सूफी, किस्सा एवं वार, जनमसाखियां

भाग 'ख'

(क) आधुनिक प्रवृत्तियां : रहस्यवादी, स्वच्छंतदावादी, प्रगतिवादी एवं नव–रहस्यवादी (वीर सिंह, पूरण सिंह, मोहन सिंह, अमृता प्रीतम, बाबा बलवन्त, प्रीतम सिंह, सफ़ीर, जे. एस. नेकी).
प्रयोगवादी (जसवीर सिंह अहलूवालिया, रविन्दर रवि, अजायब कमाल).
सौंदर्यवादी (हरभजन सिंह, तारा सिंह).
नव–प्रगतिवादी (पाश, जगतार, पातर).

(ख) लोक साहित्य : लोक गीत, लोक कथाएं, पहेलियां, कहावतें.
महाकाव्य साहित्य : (वीर सिंह, अवतार सिंह आजाद, मोहन सिंह).
गीतिकाव्य : (गुरु, सूफी और आधुनिक गीतिकार–मोहन सिंह, अमृता प्रीतम, शिवकुमार, हरभजन सिंह).

(ग) नाटक : (आई.सी. नंदा, हरचरण सिंह, बलवंत गार्गी, एस. एस. सेखों, चरण दास सिद्धू).
उपन्यास : (वीर सिंह, नानक सिंह, जसवंत सिंह कंवल, करतार सिंह दुग्गल, सुखबीर, गुरदयाल सिंह, दलीप कौर टिवाणा, स्वर्ण चंदन).
कहानी : (सुजान सिंह, के.एस. विर्क, प्रेम प्रकाश, वरयाम सन्धू).

(घ) सामाजिक–सांस्कृतिक और साहित्य प्रभाव : संस्कृत, फारसी और पश्चिमी.
निबंध : (पूरण सिंह, तेजा सिंह, गुरबख्श सिंह).
साहित्य आलोचना : (एस.एस. शेखों, अतर सिंह, किशन सिंह, हरभजन सिंह, नजम हुसैन सैयद).

प्रश्नप्रत्र–2

(उत्तर पंजाबी में गुरुमुखी लिपि में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

भाग–क

(क) शेख फरीद : **आदि ग्रंथ** में सम्मिलित संपूर्ण वाणी.
(ख) गुरु नानक : जप जी, वारामाह, आसा दी वार.
(ग) बुल्ले शाह : **काफ़ियां.**
(घ) वारिस शाह : हीर

भाग–ख

(क) शाह मोहम्मद : जंगनामा (जंग सिंघान ते फिरंगियान)
धनी राम चात्रिक (कवि) : चंदन वारी, सूफी ख़ाना नवांजहां
(ख) नानक सिंह (उपन्यासकार) : चिट्टा लहू, पवित्तर पापी, एक मयान दो तलवारां
(ग) गुरूबख्श सिंह (निबंधकार) : जिन्दगी दी रास, नवां शिवाला, मेरियां अभूल यादां
बलराज साहनी (यात्रा–विवरण) : मेरा रूसी सफरनामा, मेरा पाकिस्तानी सफरनामा
(घ) बलवंत गार्गी (नाटककार) : लोहा कुट्ट, धूनी दी अग्ग, सुल्तान रजिया
संत सिंह सेखों (आलोचक) : साहित्यार्थ, प्रसिद्ध पंजाबी कवि पंजाबी काब शिरोमणि

रूसी

प्रश्नपत्र–1

(रूसी से अंग्रेजी अनुवाद के प्रश्न को छोड़कर, उत्तर रूसी में लिखने होंगे)

भाषा तथा संस्कृति

खंड 'क'

I. आधुनिक रूषी भाषा :
ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, कोश विज्ञान, कोश रचना और अर्थ विज्ञान, भाषा विज्ञान.

II. रूसी से अंग्रेजी में तथा अंग्रेजी से रूसी भाषा में अनुवाद.

खंड 'ख'

I. रूसी संघ का सामाजिक–राजनैतिक तथा आर्थिक विकास :
सन् 1812 का देशभक्तिपूर्ण युद्ध, अक्तूबर क्रांति, पेरेसत्रोइका और ग्लेसनोस्त्स, यू.एस.एस.आर. का विघटन, रूसी संघ की क्षेत्रीय और सांस्कृतिक भिन्नताएं.

II. सामान्य विषयों पर निबन्ध.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर रूसी में लिखने होंगे)

(साहित्य)

खंड 'क'

साहित्यिक इतिहास तथा साहित्यिक आलोचना : साहित्यिक आन्दोलन, भावुकतावाद, रोमांसवाद, प्रकृतिवाद, यथार्थवाद, आलोचनात्मक, यथार्थवाद, समाजवाद, पराकाष्ठावाद, प्रतीकवाद, भविष्यवाद, साहित्यिक विधाओं का उद्भव और विकास, लोक साहित्य, गीत और कविताएं–ए.एस.पुश्किन, एम.यू. लरमोन्तोव, अलेक्जेंडर व्लाक, इज़ेनिन, वी मायकोवस्की, अन्ना अख्मातोवा. महागाथा–एल.एन. टालस्टाय, एम. शोलोखोव. कहानी, उपन्यासिका, उपन्यास–पुश्किन, लरमोन्तोव, एन.वी. गोगोल, एस. श्चेन्द्रिन, आई. गोन्चारोव, आई. तर्जीनेव, एफ.एम. दोस्तोवस्की, एल.एन. टालस्टाय, ए.पी. चेखोव, एम. गोर्की, एम. शोलोखोव, आई. बुनिन, ई. जेमियातिन, बोरिस पास्तेरनकक, ए.सोल्झेनित्सीन, एम.बुल्गाकोव, चिंगीज़ आमूत्मातोव, वलेन्तीन रस्यूतीन, वी.शुक्शिन. आलोचना–बेलिन्स्की, दोब्रोल्यूबोव, चेर्नीशेव्स्की, पिसारेव.

नाटक–चेखोव, गोगोल. सामाजिक–राजनैतिक आन्दोलनों का साहित्य पर प्रभाव.

खंड 'ख'

इस खंड में निर्धारित मूल पाठ्यपुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

1.	ए.एस. पुश्किन	इन्जीनि ओनिज़िन
2.	एम.यू. लरमोन्तोव	हीरो आफ पावर टाइम्स
3.	एन. वी. गोगोल	रेविज़ोर
4.	आई. एस. तर्जिनेव	फादर्स एंड संस
5.	एफ. एम. दोस्तोव्स्की	क्राइम एंड पनिशमेंट
6.	एल. एन. टालस्टाय	1. वार एंड पीस 2. रेज़रेक्शन
7.	ए.पी. चेखोव	1. तोस्का 2. स्मर्ट चिनोवन्निका 3. कमीलियन
8.	ए.एम. गोर्की	मदर
9.	ए. ब्लॉक	दि ट्वेल्व
10.	बी.बी. क्लाउड–इन पैंट्स	मायकोव्स्की 1. 2. गुड
11.	एम. शोलोखोव	फेट आफ ए मैन
12.	बी. पास्तेरनाक	डाक्टर ज़िवागो
13.	सोल्झे नित्सीन	वन डे इन दि लाइफ ऑफ ईवान दानिसोविच
14.	वी. रस्पूतीन	झ़िवी आई पोम्नी
15.	चिंगीज़ आइत्मातोव	बैली पोरोखोद
16.	वी. शुक्शिन	शुदिक

संस्कृत

प्रश्नपत्र–1

तीन प्रश्नों जैसा कि प्रश्नपत्र में निर्देशित होगा के उत्तर संस्कृत में दिया जाना चाहिए. शेष प्रश्नों के उत्तर या तो संस्कृत में अथवा उम्मीदवार द्वारा परीक्षा के लिए चुने गये भाषा माध्यम में दिये जाने चाहिए.

खंड 'क'

1. संज्ञा, संधि, कारक, समास, कर्तरि और कर्मणी वाच्य (वाच्य प्रयोग) पर विशेष बल देते हुए व्याकरण की प्रमुख विशेषताएं. (इसका उत्तर संस्कृत में देना होगा)
2. (क) वैदिक संस्कृत भाषा की मुख्य विशेषताएं.
(ख) शास्त्रीय संस्कृत भाषा के प्रमुख लक्षण.
(ग) भाषा वैज्ञानिक अध्ययन में संस्कृत का योगदान.
3. सामान्य ज्ञान :
(क) संस्कृत का साहित्यिक इतिहास.
(ख) साहित्यिक आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां.
(ग) रामायण
(घ) महाभारत
(ङ) साहित्य विधाओं का उद्भव और विकास.
महाकाव्य
रूपक (नाटक)
कथा
आख्यायिका
चम्पू
खंड काव्य
मुक्तक काव्य

खंड 'ख'

4. भारतीय संस्कृति का सार, निम्नलिखित पर बल देते हुए :
(क) पुरूषार्थ
(ख) संस्कार
(ग) वर्णाश्रम व्यवस्था
(घ) कला और ललित कला
(ङ) तकनीकी विज्ञान
5. भारतीय दर्शन की प्रवृत्तियां
(क) मीमांसा
(ख) वेदांत
(ग) न्याय
(घ) वैशेषिक
(ङ) सांख्य
(च) योग
(छ) बुद्ध
(ज) जैन
(झ) चार्वाक
6. संस्कृत में संक्षिप्त निबंध.
7. अनदेखा पाठांश और प्रश्न; इसका उत्तर संस्कृत में देना होगा.

प्रश्नपत्र–2

वर्ग 4 से प्रश्न का उत्तर केवल संस्कृत में देना होगा. वर्ग 1, 2 और 3 के प्रश्नों के उत्तर या तो संस्कृत में अथवा उम्मीदवार द्वारा चुने गये भाषा माध्यम में देने होंगे

खंड 'क'

निम्नलिखित समुच्चयों का सामान्य अध्ययन :–

वर्ग–1
(क) रघुवंशम्–कालिदास
(ख) कुमारसंभवम्–कालिदास
(ग) किरातार्जुनीयम्–भारवि
(घ) शिशुपालवधम्–माघ
(ङ) नैषध चरितम्–श्रीहर्ष
(च) कादम्बरी–बाणभट्ट
(छ) दशकुमार चरितम्–दंडी
(ज) शिवराज्योद्यम्–एस.बी. वारनेकर

वर्ग–2
(क) ईशावास्योपनिषद
(ख) भगवद्गीता
(ग) वाल्मीकि रामायण का सुंदरकांड
(घ) कौटिल्य का अर्थशास्त्र

वर्ग–3
(क) स्वप्नवासवदत्तम्–भास
(ख) अभिज्ञान शाकुन्तलम्–कालिदास
(ग) मृच्छकटिकम्–शूद्रक
(घ) मुद्राराक्षसम्–विशाखदत्त
(ङ) उत्तररामचरितम्–भवभूति
(च) रत्नावली–श्रीहर्षवर्धन
(छ) वेणीसंहारम्–भट्टनारायण

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

वर्ग–4

निम्नलिखित पर संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पणियां :

(क) मेघदूतम्–कालिदास
(ख) नीतिशतकम्–भर्तृहरि
(ग) पंचतंत्र
(घ) राजतरंगिणी–कल्हण
(ङ) हर्षचरितम्–बाणभट्ट
(च) अमरूकशतकम्–अमरूक
(छ) गीतगोविंद्म–जयदेव

खंड 'ख'

इस खंड में निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों का पढ़ना अपेक्षित होगा.

वर्ग 1 और 2 से प्रश्नों के उत्तर केवल संस्कृत में देने होंगे. वर्ग 3 एवं 4 के प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में अथवा उम्मीदवार द्वारा चुने गये भाषा माध्यम में देने होंगे.

वर्ग–1

(क) रघुवंशम्–सर्ग 1, श्लोक 1 से 10
(ख) कुमारसंभवम्–सर्ग 1, श्लोक 1 से 10
(ग) किरातार्जुनीयम्–सर्ग 1, श्लोक 1 से 10

वर्ग–2

(क) ईशावास्योपनिषद्–श्लोक 1,2,4,6,7,15 और 18
(ख) भगवत्गीता अध्याय–II–श्लोक 13 से 25
(ग) वाल्मीकि का सुंदरकांड सर्ग 15, श्लोक 15 से 30
(गीता प्रेस संस्करण)

(वर्ग 1 और 2 से प्रश्नों के उत्तर केवल संस्कृत में देने होंगे)

वर्ग–3

(क) मेघदूतम्–श्लोक 1 से 10
(ख) नीतिशतकम्–श्लोक 1 से 10
(डी.डी. कौसाम्बी द्वारा सम्पादित, भारतीय विद्या भवन प्रकाशन)
(ग) कादम्बरी–शुकनासोपदेश (केवल)

वर्ग–4

(क) स्वपनवासवदतम्–अंक VI
(ख) अभिज्ञानशकुन्तलम–अंक IV श्लोक 15 से 30
(एम. आर. काले संस्करण)
(ग) उत्तररामचरितम्–अंक 1, श्लोक 31 से 47
(एम. आर. काले संस्करण)

संताली

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर संताली में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाग–1. संताली भाषा का इतिहास

1. प्रमुख आस्ट्रिक भाषा परिवार, आस्ट्रिक भाषाओं का संख्या तथा क्षेत्र विस्तार.
2. संताली का व्याकरणिक संरचना.
3. संताली भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताएं. ध्वनि विज्ञान, रूप विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, अनुवाद विज्ञान तथा कोश विज्ञान.
4. संताली भाषा पर अन्य भाषाओं का प्रभाव.
5. संताली भाषा का मानकीकरण.

भाग–2. संताली साहित्य का इतिहास

1. संताली साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार कालों की साहित्यिक प्रवृत्तियां

(क) आदिकाल सन् 1854 ई. के पूर्व का साहित्य.
(ख) मिशनरी काल सन् 1855 से सन् 1889 ई. तक का साहित्य.
(ग) मध्य काल सन् 1890 से सन् 1946 ई. तक का साहित्य.
(घ) आधुनिक काल सन 1947 ई. से अब तक का साहित्य.

2. संताली साहित्य के इतिहास में लेखन की परम्परा.

खण्ड 'ख'

साहित्यिक स्वरूप : निम्नलिखित साहित्यिक स्वरूपों की प्रमुख विशेषताएं, इतिहास और विकास

भाग–I. संताली में लोक साहित्य : गीत, कथा, गाथा, लोकोक्तियां, मुहावरे, पहेलियां एवं कुदुम.

भाग–II. संताली में शिष्ट साहित्य

1. पद्य साहित्य का विकास एवं प्रमुख कवि
2. गद्य साहित्य का विकास एवं प्रमुख लेखक.
   क. उपन्यास एवं प्रमुख उपन्यासकार.
   ख. कहानी एवं प्रमुख कहानीकार.
   ग. नाटक एवं प्रमुख नाटककार.
   घ. आलोचना एवं प्रमुख आलोचक.
   ङ ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृतांत आदि प्रमुख लेखक.

संताली साहित्यकार :

श्याम सुन्दर हेम्ब्रम, पं. रघुनाथ मुरमू, बाड़हा बसेरा, साधु रामचांद मुरमू, नारायण सोरेन 'तोड़ेसुताम', सारदा प्रसाद किस्कु, रघुनाथ टुडू, कालीपद सोरेन, साकला सोरेन, दिगम्बर हाँसदा, आदित्य मित्र, 'संताली', बाबुलाल मुरमू, 'आदिवासी' यदुमनी बेसरा, अर्जुन हेम्ब्रम, कृष्ण चंद टुडू, रूप चाँद हाँसदा, कलन्द्र नाथ माण्डी, महादेव हाँसदा, गौर चन्द्र मुरमू, ठाकुर प्रसाद मुरमू, हर प्रसाद मुरमू, उदय नाथ माझी, परिमल हेम्ब्रम, धीरेन्द्र नाथ बास्के, श्याम चरण हेम्ब्रम, दमयन्ती बेसरा, टी.के. रापाज, बोयहा विद्यनाथ टुडू.

भाग–III. संताल की सांस्कृतिक विरासत :

रीति रिवाज, पर्व त्योहार एवं संस्कार (जन्म, विवाह एवं मुत्यु)

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर संताली में लिखने होंगे)

खण्ड 'क'

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित पाठ्य–पुस्तकों का मूल अध्ययन आवश्यक है. परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक क्षमता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

भाग–1. प्राचीन साहित्य

गद्य :

(1) खेरवाल बोंसा धोरोम पुथी–माझी रामदास टुडू "रसिका".
(2) मारे हापडामको रेयाक काथा – एल.ओ. स्क्रेप्सरूड.
(3) जोमसिम बिन्ती लिटा – मंगेल चन्द तुडकलुमाड. सोरेन.
(4) मराड़ बुरू बिनती–कानाईलाल टुडू.

पद्य :

(1) काराम सेरेंग – नुनकू सोरेन.
(2) देवी दासांय सेरेंग–मानिन्द हांसदा
(3) होड सेरेंग–डब्ल्यू जी. आर्चर
(4) बाहा सेरेंग–बलरामळटुडू.
(5) दोंग सेरेंग–पद्मश्री भागवत मुरमू ठाकुर
(6) होर सेरेंग–रघुनाथ मुरगू.
(7) सोरोंस सेरेंग – बाबुलाल मुरमू 'आदिवासी'
(8) मोडे सिन मोडे निदा – रूप चांद हांसदा
(9) जूडासी माडवा लातार – तेज नारायण मुरमू.

खण्ड 'ख'

आधुनिक साहित्य

भाग–1. कविता

(1) ओनोडहें बाहा डालवाक् – पाउल जुझार सोरेन.
(2) आसाड बिनती – नारायण सोरेन 'तोड़े सुताम'.
(3) चांद माला – गोरा चांद टुडू
(4) अनतो बाहा माला –आदित्य मित्र 'संताली'.
(5) तिरयी तेताड़ – हरिहर हांसदा.
(6) सिसिरजोन राड़ – ठाकुर प्रसाद मुरमू.

भाग–2. उपन्यास

(1) हाडमावाक् आतो – आर कार्सटियार्स (अनुवादक – आर.आर. किस्कू रापाज).
(2) मानू माती – चन्द्र मोहन हांसदा.
(3) आतृ ओड़ाक – डोमन हांसदाक.
(4) ओजोय गाडा ढिप रे – नाथनियल मुरमू.

भाग–3. कहानी

(1) जियोन गाडा – रूपचांद हांसदा एवं यदुमनी बेसरा.
(2) माया जाल – डोमन साहू, 'समीर' एवं पद्मश्री भागवत मुर्मू 'ठाकुर.

भाग–4. नाटक

(1) खेरवाड़ बिर – पं. रघुनाथ मुरमू.
(2) जुरी खातिर – डा. कृष्ण चन्द्र टुडू.
(3) बिरसा बिर – रबिलाल टुडू.

भाग–5. जीवनी साहित्य

(1) संताल को रेन मायाड. गोहाको – डा. विश्वनाथ हांसदा.

सिन्धी

प्रश्नपत्र–1

उत्तर सिंधी (अरबी अथवा देवनागरी लिपि में लिखने होंगे)

खंड 'क'

1. (क) सिन्धी भाषा का उद्भव और विकास–विभिन्न विद्वानों के मत.
   (ख) स्वर विज्ञान, आकृति विज्ञान एवं वाक्य विन्यास के साथ सिन्धी भाषा के संबंध सहित सिन्धी की महत्वपूर्ण भाषा वैज्ञानिक विशेषताएं.
   (ग) सिन्धी भाषा की प्रमुख बोलियां.
   (घ) विभाजन के पहले और विभाजन के बाद की अवधियों में सिन्धी शब्दावली और उनके विकास कउे बाद अन्य भाषाओं और सामाजिक स्थितियों के प्रभाव के चलते भारत में सिन्धी भाषा की संरचना में परिवर्तन.

खंड 'ख'

2. विभिन्न युगों के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में सिन्धी–साहित्य :
   (क) लोक साहित्य समेत सन् 1350 ई. तक का प्रारंभिक मध्यकालीन साहित्य.
   (ख) सन् 1350 ई. से 1850 ई. तक का परवर्ती मध्यकालीन साहित्य.
   (ग) सन् 1850 ई. से 1947 ई. तक का पुनर्जागरण काल.
   (घ) आधुनिक काल सन् 1947 ई. से आगे.

(आधुनिक सिन्धी साहित्य की साहित्यिक विधाएं और कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, साहित्यिक आलोचना, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण और यात्रा विवरणों में प्रयोग)

प्रश्नपत्र–2

उत्तर सिंधी (अरबी अथवा देवनागरी लिपि में लिखने होंगे)

इस प्रश्न में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

इस खंड में पाठ्य पुस्तकों की सप्रसंग व्याखाएं और आलोचनात्मक विश्लेषण होंगे.

I. काव्य

(क) "शाह जो चूण्ड शायर", संपादक : एच.आई. सदरानप्रणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित (प्रथम सौ पृष्ठ).
(ख) "साचल जो चूण्ड कलाम" संपादक : कल्याण बी. अडवाणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित (सिर्फ कापिस).
(ग) "सामी–ए–जा चंद श्लोक" संपादक : बी. एच. नागराणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित (प्रथम सौ पृष्ठ).
(घ) "शायर–ए–बेवास"; किशिनचंद बेवास (सिर्फ सामुन्डी सिपुन भाग).
(ङ) "रौशन छंवरो"; नारायण श्याम.
(च) "विरहंगे खानपोई जी सिन्धी शायर जी चूण्ड"; संपादन : एच.आई. सदरानगणी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित.

II. नाटक

(क) "बेहतरीन सिन्धी नाटक" (एकांकी) एम. ख्याल द्वारा संपादित; गुजरात सिन्धी अकादमी द्वारा प्रकाशित.
"काको कालूमल" (पूर्णावधि नाटक) : मदन जुमाणी.

खंड 'ख'

इस खंड में पाठ्य पुस्तकों की सप्रसंग व्याखाएं और आलोचनात्मक विश्लेषण होंगे.

(क) पाखीअरा वालार खान विछड़या (उपन्यास) गोविन्द माल्ही.
(ख) सत् दीन्हण (उपन्यास) : कृशिन सतवाणी.
(ग) चूण्ड सिन्धी कहानियां (कहानियां) भाग–III; संपादक : प्रेम प्रकाश; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित.
(घ) "बंधन" (कहानियां) सुन्दरी उत्तमचंदानी.
(ङ) "बेहतरीन सिन्धी मजमून" (निबन्ध); संपादक : हीरो ठाकुर, गुजरात सिन्धी अकादमी द्वारा प्रकाशित.
(च) "सिन्धी तनक़ीद" (आलोचना); संपादक : वासवानी; साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित.
(छ) "मुमहीनजी हयाती–ए–जा–सोना रूपा वर्का" (आत्मकथा); पोपाटी हीरानंदानी.
(ज) "डा. चोइथ्रम गिडवानी" (जीवनी) : विष्णु शर्मा.

तमिल

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर तमिल में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाग–1 : तमिल भाषा का इतिहास :

प्रमुख भारतीय भाषा परिवार–भारतीय भाषाओं में, विशेषकर द्रविड परिवार में तमिल का स्थान–द्रविड भाषाओं की संख्या तथा क्षेत्र विस्तार.

संगम साहित्य की भाषा–मध्यकालीन तमिल : पल्लव युग की भाषा के संदर्भ –संज्ञा, क्रिया, विशेषण तथा क्रिया विशेषण का ऐतिहासिक अध्ययन–तमिल में काल सूचक प्रत्यय तथा कारक चिह्न.

तमिल भाषा में अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण–क्षेत्रीय तथा सामाजिक बोलियां–तमिल में लेखन की भाषा और बोलचाल की भाषा में अंतर.

भाग–2 : तमिल साहित्य का इतिहास :

तोलकाप्पियम–संगम साहित्य–अकम और पुरम की काव्य विधाएं–

संगम साहित्य की पंथनिरपेक्ष विशेषताएं–नीतिपरक साहित्य का विकास : सिलप्पदिकारम और मणिमेखल.

भाग–3 : भक्ति साहित्य : (आलवार और नायनमार)–आलकारों के साहित्य में सखी भाव (ब्राइडल मिस्टिसिज़्म)–छुटपुट साहित्यिक विधाएं (तूटटु, उला, परणि, कुरवंजि).

आधुनिक तमिल साहित्य के विकास के सामाजिक कारक : उपन्यास, कहानी और आधुनिक कविता–आधुनिक लेखन पर विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं का प्रभाव.

खंड 'ख'

भाग–1 : तमिल के अध्ययन में नई प्रवृत्तियां :

समालोचना के उपागम : सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक तथा नैतिक–समालोचना का प्रयोग–साहित्य के विविध उपादान : उल्लुरै (लक्षण), इरैच्चि, तोण्मम (मिथक), ओत्तुरूवगम (कथा रूपक), अंगदम (व्यंग्य), मेथ्प्पाडु, पडियम (बिंब), कुरियीडु (प्रतीक), इरूण्मै (अनेकार्थकता)–तुलनात्मक साहित्य की अवधारणा–तुलनात्मक साहित्य के सिद्धांत.

भाग–2 : तमिल में लोक साहित्य :

गाथाएं, गीत, लोकोक्तियां और पहेलियां–तमिल लोक गाथाओं का सामाजवैज्ञानिक अध्ययन. अनुवाद की उपयोगिता–तमिल की कृतियों का अन्य भाषाओं में अनुवाद–तमिल में पत्रकारिता का विकास.

भाग–3 : तमिल की सांस्कृतिक विरासत :

प्रेम और युद्ध की अवधारणा–अरम की अवधारणा–प्राचीन तमिलों द्वारा युद्ध में अपनाई गई नैतिक संहिता. पांचों तिणै क्षेत्रों की प्रथाएं, विश्वास, रीति–रिवाज तथा उपासना विधि.

उत्तर–संगम साहित्य में अभिव्यक्त सांस्कृतिक परिवर्तन–मध्यकाल में सांस्कृतिक सम्मिश्रण (जैन तथा बौद्ध). पल्लव, परवर्ती चौल तथा नायक के विभिन्न युगों में कलाओं और वास्तुकला का विकास. तमिल समाज पर विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक आंदोलनों का प्रभाव. समकालीन तमिल समाज के सांस्कृतिक परिवर्तन में जन माध्यमों की भूमिका.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर तमिल में लिखने होंगे)

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित पाठ्यपुस्तकों का मूल

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

अध्ययन आवश्यक है. परीक्षा में उम्मीदवार की आलोचनात्मक क्षमता को जांचने वाले प्रश्न पूछे जाएंगे.

खंड 'क'

भाग–1 : प्राचीन साहित्य :

(1) कुरून्तोकै (1 से 25 तक कविताएं)

(2) पुरनानूरू (182 से 200 तक कविताएं)

(3) तिरुक्कुरल (पोरूल पाल : अरसियलुम अमैच्चियलुम) इरैमाट्चि से अवैअंजामै तक)

भाग–2 : महाकाव्य :

(1) सिलप्पदिकारम (मदुरै कांडम)

(2) कंब रामायणम् (कुंभकर्णन वदै पडलम)

भाग–3 : भक्ति साहित्य :

(1) तिरुवाचकम : नीत्तल विण्णप्पम

(2) विरूप्पावै (सभी–पद)

खंड 'ख'

आधुनिक साहित्य

भाग–1 : कविता

(1) भारतियार : कण्णन पाट्टु

(2) भारती दासन : कुडुम्ब विलुक्कु

(3) ना. कामरासन : करूप्पु मलरकल

गद्य

(1) मु. वरदराजनार : अरमुम अरसियलुम

(2) सीएन अण्णादुरै : ऐ, तालन्द तमिलगमे.

भाग–2 : उपन्यास, कहानी और नाटक

(1) अकिलन : चित्तिरप्पावै

(2) जयकांतन : गुरूपीडम

भाग–3 : लोक साहित्य

(1) मत्तुप्पाट्टन कतै : न. वानमामलै (सं.)

(प्रकाशन : मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै)

(2) मलैयरूवि : कि.वा. जगन्नाथन (सं.)

(प्रकाशन : सरस्वती महल, तंजाऊर)

तेलुगु

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर तेलुगु में लिखने होंगे)

खंड 'क'

भाषा :

1. द्रविड़ भाषाओं में तेलुगु का स्थान और इसकी प्राचीनता–तेलुगु, तेनुगु और आंध्र का व्युत्पत्ति–आधारित इतिहास.

2. आद्य–द्रविड़ से प्राचीन तेलुगु तक और प्राचीन तेलुगू से आधुनिक तेलुगु तक स्वर–विज्ञानीय, रूपविज्ञानीय, व्याकरणिक और वाक्यगत स्तरों में मुख्य भाषायी परिवर्तन.

3. क्लासिकी तेलुगु की तुलना में बोलचाल की व्यावहारिक तेलुगु का विकास–औपचारिक और कार्यात्मक दृष्टि से तेलुगु भाषा की व्याख्या.

4. तेलुगु भाषा पर अन्य भाषाओं का प्रभाव.

5. तेलुगु भाषा का आधुनिकरण

(क) भाषायी तथा साहित्यिक आंदोलन और तेलुगु भाषा के आधुनिकीकरण में उनकी भूमिका.

(ख) तेलुगु भाषा के आधुनिकीकरण में प्रचार माध्यमों की भूमिका (अखबार, रेडियो, टेलिविजन आदि).

(ग) वैज्ञानिक और तकनीकी सहित विभिन्न वमर्शों के बीच तेलुगु भाषा में नये शब्द गढ़ते समय पारिभाषिकी और क्रियाविधि से संबंधित समस्याएं.

6. तेलुगु भाषा की बोलिया–प्रादेशिक और सामाजिक भिन्नताएं तथा मानकीकरण की समस्याएं.

7. वाक्य–विन्याय–तेलुगुवाक्योंकेप्रमुखविभाजन–सरल, मिश्रित और संयुक्त वाक्य संज्ञा और क्रिया–विद्येयन–नामिकीकरण और संबंधीकरण की प्रक्रियाएं–प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रस्तुतीकरण–परिवर्तन प्रक्रियाएं.

8. अनुवाद–अनुवाद की समस्याएं–सांस्कृतिक, सामाजिक और मुहावरा–संबंधी अनुवाद की विधियां–अनुवाद के क्षेत्र में विभिन्न दृष्टिकोण–साहित्यिक तथा अन्य प्रकार के अनुवाद– अनुवाद के विभिन्न उपयोग.

खंड 'ख'

साहित्य :

1. नान्नय–पूर्व काल में साहित्य–मार्ग और देसी कविता.

2. नान्नय काल–आंध्र महाभारत की ऐतिहासिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि.

3. शेष कवि और उनका योगदान–द्विपाद, सातक, रागद उदाहरण.

4. तिक्कन और तेलुगु साहित्य में तिक्कन का स्थान.

5. एर्रना और उनकी साहित्यिक रचनाएं–नचन सोमन और काव्य के प्रति उनका नया दृष्टिकोण.

6. श्रीनाथ और पोतन–उनकी रचनाएं तथा योगदान.

7. तेलुगु साहित्य में भक्ति कवि–तल्लपक अन्नामैया, रामदासु त्यागैया.

8. प्रबंधों का विकास–काव्य और प्रबंध.

9. तेलुगु साहित्य की दक्खिनी विचारधारा–रघुनाथ नायक, चेमाकुर वेंकटकवि और महिला कवि–साहित्य–रूप जैसे यक्षगान, गद्य और पदकविता.

10. आधुनिक तेलुगु साहित्य और साहित्य–रूप–उपन्यास, कहानी, नाटक, नाटिका और काव्य–रूप.

11. साहित्यिक आंदोलन : सुधार आंदोलन, राष्ट्रवाद, नवक्लासिकीवाद, स्वच्छन्दतावाद और प्रगतिवादी, क्रांतिकारी आंदोलन.

12. दिगम्बरकावुलु, नारीवादी अैर दलित साहित्य.

13. लोकसाहित्य के प्रमुख विभाजन–लोक कलाओं का प्रस्तुतिकरण.

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर तेलुगु में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों का अध्ययन अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिससे अभ्यर्थी की निम्नलिखित विषयों से संबंधित आलोचनात्मक क्षमता की जांच हो सके :–

(i) सौंदर्यपरक दृष्टिकोण–रस, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य–रूपसंबंधी और संरचनात्मक–बिंब योजना और प्रतीकवाद.

(ii) समाज शास्त्रीय, ऐतिहासिक, आदर्शवादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण.

खंड 'क'

1. नान्नय–दुष्यंत चरित्र (आदि पर्व चौथा सर्ग छंद 5–109)

2. तिक्कन–श्री कृष्ण रायबरामु (उद्योग पर्व–तीसरा सर्ग छंद 1–144)

3. श्रीनाथ–गुना निधि कथा (कासी खंडम–चौथा सर्ग छंद 76–133)

4. पिंगली सुरन–सुगत्रि सलिनुलकथा (कला–पुर्णोदयामु–चौथा सर्ग छंद 60–142)

5. मोल्ला–रामायनामु (अवतारिक सहित बाल कांड)

6. कसुल पुरुषोत्तम कवि–आंध्र नायक सतकामु.

खंड 'ख'

7. गुर्जद अप्पा राव–अनिमुत्थालु (कहानियां)

8. विश्वनाथ सत्यनारायण–आंध्र प्रशस्ति

9. देवुलापल्लि कृष्ण शास्त्री–कृष्णपक्षम (उर्वसी और प्रवसम को छोड़कर)

10. श्री श्री–महा प्रस्थानम्

11. जशुवा–गब्बिलम (भाग–1)

12. श्री नारायण रेड्डी–कर्पूरवसन्ता रायालु

13. कनुपरति वरलक्ष्म्मा–शारदा लेखालु (भाग–1)

14. आत्रेय–एन.जी.ओ.

15. रच कांड विश्वनाथ शास्त्री–अल्पजीवी

उर्दू

प्रश्नपत्र–1

(उत्तर उर्दू में लिखने होंगे)

खंड 'क'

उर्दू भाषा का विकास :

(क) भारतीय–आर्य भाषा का विकास

(i) प्राचीन भारतीय–आर्य

(ii) मध्ययुगीन भारतीय–आर्य

(iii) अर्वाचीन भारतीय–आर्य

(ख) पश्चिमी हिन्दी तथा इसकी बोलियां, जैसे ब्रजभाषा, खड़ी बोली, हरियाणवी, कन्नौजी, बुंदेली.

उर्दू भाषा के उद्भव से संबंधित सिद्धांत.

(ग) दिक्खिनी उर्दू–उद्भव और विकास–इसकी महत्वपूर्ण भाषा मूलक विशेषताएं.

(घ) उर्दू भाषा के सामाजिक और सांस्कृतिक आधार और उनके विभेदक लक्षण : लिपि, स्वर विज्ञान, आकृति विज्ञान, शब्द भंडार.

खंड 'ख'

(क) **विभिन्न विधाएं और उनका विकास :** (i) कविता : गज़ल, मसनवी, कृसीदा, मर्सिया, रूबाई, जदीद नज़्म.

(ii) **गद्य :** उपन्यास, कहानी, दास्तान, नाटक, इंशाइया, खुतूत, जीवनी.

(ख) **निम्नलिखित की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं :**

(i) दक्खिनी, दिल्ली और लखनऊ शाखाएं.

(ii) सरसैयद आन्दोलन, स्वच्छंदतावादी आन्दोलन, प्रगतिशील आन्दोलन, आधुनिकतावाद.

(ग) साहित्यिक आलोचना और उसका विकास : हाली, शिबली, क्लीमुद्दीन अहमद, एहतेश्याम हुसैन, आले अहमद सुरूर.

(घ) निबन्ध लेख (साहित्यिक और कल्पनाप्रधान विषयों पर)

प्रश्नपत्र–2

(उत्तर उर्दू में लिखने होंगे)

इस प्रश्न पत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और इसका प्रारूप इस प्रकार तैयार किया जाएगा जिससे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक योग्यता की परीक्षा हो सके.

खंड 'क'

1. मीर अम्मान	बागोबहार
2. गालिब	इन्तिखाह–ए–खुतूत–ए गालिब
3. मोहम्मद हुसैन आजाद	नैरंग–ए–खयाल
4. प्रेमचंद	गोदान
5. राजेन्द्र सिंह बेदी	अपने दुख मुझे दे दो
6. अबुल कलाम आज़ाद	गुबार–ए–खातिर

खंड 'ख'

1. मीर	इन्तिखाव–ए–मीर (सम्पादक : अबदुल हक)
2. मीर हसन	सहरुल बयां
3. गालिब	दीवान–ए–गालिब
4. इकबाल	बाल–ए–जिबरैल
5. फिराक़	गुल–ए–नग़मा
6. फ़ैज़	दस्त–ए–सबा
7. अखतरुलिमान	बिंत–ए–लम्हात

प्रबंध

अभ्यर्थी जो प्रबंध जी विज्ञा-ा और जला जे रूप में संजल्प-ाा और विजास जा अध्यय-ा जर-ाा चाहिए और प्रबंध जे अग्रजी विचारजों जे योजदा-ा जो आत्मसात जर-ाा चाहिए तथा जार्य-ीतिज एवं प्रचाल-ाात्मज परिवेश जो दृष्टिजत रजते हुए इसजी संजल्प-ााओं जो वास्तविज शास-ा एवं व्यवसाय ि-ार्जय-ा में प्रयोज में ला-ाा चाहिए.

प्रश्-ापत्र -1

1. प्रबंधजीय जार्य एवं प्रक्रिया :

प्रबंध जी संजल्प-ाा एवं आधार, प्रबंध चिंत-ा जा विजास; प्रबंजीय जार्य - आयोज-ाा, संजठ-ा, ि-ायंत्रज; ि-ार्जय-ा; प्रबंधज जी भूमिजा, प्रबंधजीय जौशल; उद्यमवृत्ति; -ावप्रवर्त-ा प्रबंध; विश्वव्यापी वातावरज में प्रबंध, -ाम्य प्रजाली प्रबंध-ा; सामाजिज उत्तरदायित्व एवं प्रबंधजीय आचार-ीति; प्रक्रिया एवं ग्राहज अभिवि-ायास; प्रत्यज एवं अप्रत्यज मूल्य श्रृंजला पर प्रबंधजीय प्रक्रियाएं.

2. संजठ-ाात्मज व्यवहार एवं अभिजल्प :

संजठ-ाात्मज व्यवहार जा संजल्प-ाात्मज ि-ादर्श; व्यष्टि प्रक्रियाएं - व्यक्तित्व, मूल्य एवं अभिवृत्ति, प्रत्यजज, अभिप्रेरज, अधिजम एवं पु-ार्बल-ा, जार्य त-ााव एवं त-ााव प्रबंध-ा ;संजठ-ा व्यवहार जी जति जी - सत्ता एवं राज-ीति, द्व-द्व एवं वार्ता, -ोतृत्व प्रक्रिया एवं शैलियां, संप्रेषज; संजठ-ाात्मज प्रक्रियाएं - ि-ार्जय-ा, ड्टत्यज अभिजल्प; सांजठि-ाज अभिजल्प जे क्लासिजी, -ावक्लासिजी एवं आपात उपाजम; संजठ-ाात्मज सिद्धांत एवं अभिजल्प - संजठ-ाात्मज संस्ड्टति, सांस्ड्टतिज अ-ोजता प्रबंध-ा, संजठ-ा अधिजम; संजठ-ाात्मज परिवर्त-ा एवं विजास; ज्ञा-ा आधारित उद्यम - प्रजालियां एवं प्रक्रियाएं; जालतंत्रित एवं आभासी संजठ-ा.

3. मा-ाव संसाध-ा प्रबंध :

मा-ाव संसाध-ा जी चु-ाौतियां; मा-ाव संसाध-ा प्रबंध जे जार्य; मा-ाव संसाध-ा प्रबंध जी भावी चु-ाौतियां; मा-ाव संसाध-ाों जा जार्य-ीतिज प्रबंध; मा-ाव संसाध-ा आयोज-ाा; ड्टत्यज विश्लेषज; ड्टत्यज मूल्यांज-ा; भर्ती एवं चय-ा; प्रशिजज एवं विजास, पदोन्नति एवं स्था-ाांतरज; ि-ाष्पाद-ा प्रबंध; प्रतिजर प्रबंध एवं लाभ; जर्मचारी म-ाोबल एवं उत्पादजता; संजठ-ाात्मज वातावरज एवं औद्योजिज संबंध प्रबंध; मा-ाव संसाध-ा लेजाजरज एवं लेजा परीजा; मा-ाव संसाध-ा सूच-ाा प्रजाली; अंतर्राष्ट्रीय मा-ाव संसाध-ा प्रबंध.

4. प्रबंधजों जे लिए लेजाजरज :

वित्तीय लेजाजरज - संज्ल्प-ाा, महत्व एवं जेत्र, सामा-यतया स्वीड्टत लेजाजरज सिद्धांत, तुल-ापत्र जे विश्लेषज एवं व्यवसाय आय माप-ा जे विशेष संदर्भ में वित्तीय विवरजों जो तैयार जर-ाा, सामग्री सूची मूल्यांज-ा एवं मूल्यह्रास, वित्तीय विवरज विश्लेषज, ि-ाधि प्रवाह विश्लेषज, -ाजदी प्रवाह विवरज, प्रबंध लेजाजरज - संजल्प-ाा, आवश्यजता, महत्व एवं जेत्र ;लाजत लेजाजरज - अभिलेज एवं प्रक्रियाएं, लाजत लेजर एवं ि-ायंत्रज लेजाएं, वित्तीय एवं लाजत लेजाओं जे बीच समाधा-ा एवं समाजल-ा; ऊपरी लाजत एवं ि-ायंत्रज, ड्टत्यज एवं प्रक्रिया लाजत आजल-ा, बजट एवं बजटीय ि-ायंत्रज, ि-ाष्पाद-ा बजट-ा, शू-यधारित बजट-ा, संजत लाजत - आजल-ा एवं ि-ार्जय-ा लाजत - आजल-ा, मा-ाज लाजत - आजल-ा एवं प्रसरज विश्लेषज, सीमांत लाजत आजल-ा एवं अवशोषज लाजत - आजल-ा.

5. वित्तीय प्रबंध :

वित्त जार्य जे लज्य; मूल्य एवं प्रति लाभ जी संजल्प-ााएं; बांडों एवं शेयरों जा मूल्यांज-ा; जार्यशील पूंजी जा प्रबंध; प्राक्जल-ा एवं वित्तीय-ा; -ाजदी, प्राप्यों, सामग्रीसूची एवं चालू देयताओं जा प्रबंध-ा; पूंजी लाजत; पूंजी बजट-ा; वित्तीय एवं प्रचाल-ा लेवरेज; पूंजी संरच-ाा अभिजल्प; सिद्धांत एवं व्यवहार; शेयरधारज मूल्य सृज-ा; लाभांश -ाीति, ि-ाजम वित्तीय -ाीति एवं जार्य-ाीति, ि-ाजम जुर्जी एवं पु-ार्संरच-ाा जार्य-ाीति प्रबंध; पूंजी एवं मुद्रा बाजार; संस्थाएं एवं प्रपत्र; पट्टे पर दे-ाा, जिराया जरीद एवं जोजिम पूंजी; पूंजी बाजार वि-ायम-ा; जोजिम एवं प्रतिलाभ : पोर्टफोलियो सिद्धांत; CAPM; APT; वित्तीय व्युत्पन्न : विजल्प फयूचर्स, स्वैप; वित्तीय जेत्रज में अभि-ाव सुधार.

6. विपज-ा प्रबंध :

संजल्प-ाा, विजास एवं जेत्र; विपज-ा जार्य-ाीति सूत्रीजरज एवं विपज-ा योज-ाा जे घटज; बाजार जा जंडीजरज एवं लज्यो-मुज-ा; पज्य जा अवस्था-ा-ा एवं विभेद-ा; प्रतियोजिता विश्लेषज; उपभोक्ता बाजार विश्लेषज; औद्योजिज क्रेता व्यवहार; बाजार अ-ाुसंधा-ा; उत्पाद जार्य-ाीति; जीमत ि-ार्धारज जार्य-ाीतियां; विपज-ा सरजियों जा अभिजल्प-ा एवं प्रबंध-ा; एजीड्टत विपज-ा संचार; ग्राहज संतोष जा ि-ार्माज, मूल्य एवं प्रतिधारज; सेवाएं एवं अ-ालाभ विपज-ा; विपज-ा में आचार, ग्राहज सुरजा, इंटर-ोट विपज-ा, जुदरा प्रबंध; ग्राहज संबंध प्रबंध; साजल्यवादी विपज-ा जी संजल्प-ाा.

प्रश्-ापत्र - 2

1. ि-ार्जय-ा जी परिमाजात्मज प्रविधियां :

वर्ज-ाात्मज सांज्यिजी - सारजीबद्ध , आलेजीय एवं सांज्यिज विधियां, प्रायिजता जा विषय प्रवेश, असंतत एवं संतत प्रायिजता बंट-ा, आ-ाुमाि-ाज सांज्यिजी - प्रतिदर्शी बंट-ा, जे-द्रीय सीमा प्रमेय, माध्यों एवं अ-ाुपातों जे बीच अंतर जे लिए परिजल्प-ाा परीजज, समष्टि प्रसरजों जे बारे में अ-ाुमा-ा, जाई - स्क्वैयर एवं ANOVA, सरल सहसंबंध एवं समाश्रयज, जालश्रेजी एवं पूर्वा-ाुमा-ा, ि-ार्जय सिद्धांत, सूचजांज; रैजिज प्रोग्राम-ा - समस्या सूत्रीजरज, प्रसमुच्चय विधि एवं आलेजीय हल, सुग्राहिता विश्लेषज.

2. उत्पाद-ा एवं व्यापार प्रबंध :

व्यापार प्रबंध जे मूलभूत सिद्धांत; उत्पाद-ाार्थ आयोज-ाा; समस्त उत्पाद-ा आयोज-ाा, जमता आयोज-ाा, संयंत्र अभिजल्प :प्रक्रिया आयोज-ाा, संयंत्र आजार एवं व्यापार मा-ा, सुविधाओं जा प्रबंध-ा ; लाई-ा संतुल-ा ; उपजरज प्रतिस्थाप-ा एवं अ-ाुरजज ;उत्पाद-ा ि-ायंत्रज ; पूर्तिश्रृंजला

प्रबंध-I - वि्रेता मूल्यांज-I एवं लेजापरीजा; जुजता प्रबंध-I; सांज्यिजीय प्रि्या नियंत्रज, षड सिज्मा, निर्माज प्रजालियों में नम्यता एवं स्फूर्ति; विश्व श्रेजी ज निर्माज; परियोज-II प्रबंध-I संज्ल्प-IIएं, अनुसंधा-I एवं विज़ास प्रबंध, सेवा व्यापार प्रबंध; सामग्री प्रबंध-I जी भूमिज़ा एवं महत्व, मूल्य विश्लेषज, निर्माज अथवा ्रय निर्जय; सामग्री सूची नियंत्रज, अधिज़तम जुदरा जीमत; अपशेष प्रबंध-I.

3. प्रबंध सूच-II प्रजाली :

सूच-II प्रजाली ज संज्ल्प-IIत्मज आधार; सूच-II सिद्धांत; सूच-II संसाध-I प्रबंध; सूच-II प्रजाली प्रजार; प्रजाली विज़ास - प्रजाली एवं अभिज्ल्प विहंजावलोज-I; प्रजाली विज़ास प्रबंध जीव-I - च्र, ऑ-ILाइ-I एवं वितरित परिवेशों जे लिए अभिज्ल्प-I; परियोज-II जर्या-वय-I एवं नियंत्रज; सूच-II प्रोद्योजिज़ी जी प्रवृत्तियां; ऑज़्ड़ा संसाध-I प्रबंध-I - ऑज़्ड़ा आयोज-II; DDS एवं RDBMS; उद्यम संसाध-I आयोज-II (ERP), विशेषज्ञ प्रजाली, E-बिज-ेस आर्जिटेक्चर, ई - जवर्नेंस, सूच-II प्रजाली आयोज-II, सूच-II प्रजाली में नम्यता; उपयोक्ता संबंद्धता; सूच-II प्रजाली ज मूल्यांज-I.

4. सरजार व्यवसाय अंतरापृष्ठ :

व्यवसाय में राज्य जी सहभाजिता, भारत में सरजार, व्यवसाय एवं विभिन्न वाजिज्य मंडलों तथा उद्योज जे बीच अ-यो-यि्या; लघु उद्योजों जे प्रति सरजार जी नीति; नए उद्यम जी स्थाप-II हेतु सरजार जी अनुमति; ज-I वितरज प्रजाली; जीमत एवं वितरज पर सरजारी नियंत्रज; उपभोक्ता संरजज अधिनियम (CPA)एवं उपभोक्ता अधिजारों जे संरजज में स्वैच्छिज संस्थाओं जी भूमिज़ा; सरजार जी नईऔद्योजिज नीति; उदारीजरज अ-विनियम-I एवं निजीजरज; भारतीय योज-II प्रजाली; पिछड़े जेत्रों जे विज़ास जे संबंध में सरजारी नीति; पर्यावरज संरजज हेतु व्यवसाय एवं सरजार जे दायित्व; निजम अभिशास-I; साइबर विधियां.

5. जार्य-नीतिज प्रबंध :

अध्यय-I जेत्र जे रूप में व्यवसाय नीति ; जार्य-नीतिज प्रबंध ज स्वरूप एवं विषय जेत्र , सामरिज आशय , दृष्टि , उद्देश्य एवं नीतियां ; जार्य-नीतिज आयोज-II प्रि्या एवं जार्या-वय-I ;परिवेशीय विश्लेषज एवं आंतरिज विश्लेषज, SWOT विश्लेषज ;जार्य-नीतिज विश्लेषज हेतु उपजरज एवं प्रविधियां - प्रभाव आव्यूह :अ-Iुभव व्र , BCG आव्यूह, GEC बहुलज , उद्योज विश्लेषज , मूल्य श्रृंजला जी संज्ल्प-I ; व्यवसाय प्रतिष्ठा-I जी जार्य-नीतिज परिच्छेदिज ; प्रतियोजिता विश्लेषज हेतु ढांचा ; व्यवसाय प्रतिष्ठा-I ज प्रतियोजी लाभ;वर्जीय प्रतियोजी जार्य-नीतियां; विज़ास जार्य-नीति - विस्तार , समाज्ल-I एवं विशाज-I ; ्रोड़ सजमता जी संज्ल्प-II, जार्य-नीतिज नम्यता; जार्य-नीति पु-IIराविष्जार ;जार्य-नीति एवं संरच-II; मुज्य जार्यपालज एवं परिषद्; ट-Iराउंड प्रबंध-I ; प्रबंध-I एवं जार्य-नीतिज परिवर्त-I; जार्य-नीतिज सहबंध ;विलय-I एवं अधिग्रहज; भारतीय संदर्भ में जार्य-नीति एवं निजम विज़ास.

6. अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय :

अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय परिवेश : माल एवं सेवाओं में व्यापार जे बदलते संघट-I ; भारत ज विदेशी व्यापार ; नीति एंव प्रवृत्तियां ; अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ज वित्त पोषज ; जेत्रीय आर्थिज सहयोज ; FTA; सेवा प्रतिष्ठा-IIों ज अंतर्राष्ट्रीयजरज; अंतर्राष्ट्रीय उत्पाद-I ;अंतर्राष्ट्रीय जंपनियों में व्यवसाय प्रबंध ; अंतर्राष्ट्रीय जराधा-I ; विश्वव्यापी प्रतियोजिता एवं प्रोद्योजिजीय विज़ास ; विश्वव्यापी ई-व्यवसाय ; विश्वव्यापी सांजठनिज संरच-II अभिज्ल्प-I एवं नियंत्रज ; बहुसांस्ृतिज प्रबंध ; विश्वव्यापी व्यवसाय जार्य-नीति ; विश्वव्यापी विपज-I जार्य-नीति ; निर्यात प्रबंध ; निर्यात आयात प्रि्याएं ; संयुक्त उप्रम ;विदेशी निवेश ;विदेशी प्रत्यज निवेश एवं विदेशी पोर्टफोलियो निवेश ; सीमापार विलय-I एवं अधिग्रहज ;विदशी मुद्रा जोजिम उदभ्ांस-I प्रबंध ; विश्व वित्तीय बाजार एवं अंतर्राष्ट्रीय बैंजिंज , बाह्य ऋज प्रबंध-I ; देश जोजिम विश्लेषज.

गणित

प्रश्नपत्र-1

1. रैखिक बीजगणित :

R एवं C सदिश समष्टियाँ, रैखिक आश्रितता एवं स्वतंत्रता, उपसमष्टियाँ, आधार, विमा, रैखिक रूपांतरण, कोटि एवं शून्यता, रैखिक रूपांतरण का आव्यूह.

आव्यूहों की बीजावली, पंक्ति एवं स्तंभ समानयन, सोपानक रूप, सर्वांजसमता एवं समरूपता, आव्यूह की कोटि, आव्यूह का व्युत्क्रम, रैखिक समीकरण प्रणाली का हल, अभिलक्षणिक मान एवं अभिलक्षणिक सदिश, अभिलक्षणिक बहुपद, केले-हैमिल्टन प्रमेय, सममित, विषम सममित, हर्मिटी, विषम हर्मिटी, लांबिक एवं ऐकिक आव्यूह एवं उनके अभिलक्षणिक मान.

2. कलन:

वास्तविक संख्याएँ, वास्तविक चर के फलन, सीमा, सांतत्य, अवकलनीयता, माध्यमान प्रमेय, शेषफलों के साथ टेलर का प्रमेय, अनिर्धारित रूप, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ, अनंतस्पर्शी, वक्र अनुरेजण, दो या तीन चरों के फलन : सीमा, सांतत्य, आंशिक अवकलज, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ, लाग्रांज की गुणक विधि, जैकोबी. निश्चित समाकलों की रीमान परिभाषा, अनिश्चित समाकल, अनंत (इन्फिनिट एवं इंप्रॉपर) अवकल, द्विधा एवं त्रिधा समाज्ल (केवल मूल्यांकन प्रविधियाँ), क्षेत्र, पृष्ठ एवं आयतन.

3. विश्लेषिक ज्यामिति :

त्रिविमाओं में कार्तीय एवं ध्रुवीय निर्देशांज , त्रि-चरों में द्वितीय घात समीकरण, विहित रूपों में लघूकरण, सरल रेखाएँ, दो विषमतलीय रेखाओं के बीच की लघुतम दूरी, समतल, गोलक, शंकु, बेलन, परवलपज, दीर्घवृत्तज, एक या दो पृष्ठी अतिपरवलयज एवं उनके गुणधर्म.

4. साधारण अवकल समीकरण :

अवकल समीकरणों का संरूपण, प्रथम कोटि एवं प्रथम घात का समीकरण, समाकलन गुणक, लंबकोणीय संछेदी, प्रथमघात का नहीं किंतु प्रथम कोटि का समीकरण, क्लेरो का समीकरण, विचित्र हल. नियत गुणांक वाले द्वितीय एवं उच्चतर कोटि के रैखिक समीकरण, पूरक फलन, विशेष समाकल एवं व्यापक हल. चर गुणांक वाले द्वितीय कोटि के रैखिक समीकरण, आयलर-कौशी समीकरण, प्राचल विचरण विधि का प्रयोग कर पूर्ण हल का निर्धारण जब एक हल ज्ञात हो.

लाप्लास एवं व्युत्क्रम लाप्लास रूपांतर एवं उनके गुणधर्म, प्रारंभिक फलनों के लाप्लास रूपांतर, नियत गुणांक वाले द्वितीय कोटि रैखिक समीकरणों के लिए प्रारंभिक मान समस्याओं पर अनुप्रयोग.

5. गतिकी एवं स्थैतिकी :

ऋजुरेखीय गति, सरल आवर्तगति, समतल में गति, प्रक्षेप्य (प्रोजेक्टाइल), व्यवरोध गति, कार्य एवं ऊर्जा, ऊर्जा ज संरजज जेपलर नियम , जेंद्रीय बल जे अंतर्जत जजाएं. जज निजाय ज संतुल-I, जार्य एवं स्थितिज ऊर्जा घर्षण, साधारण कटनरी, कल्पित कार्य का सिद्धांत, संतुलन का स्थायित्व, तीन विमाओं में बल संतुलन.

6. सदिश विश्लेषण :

अदिश और सदिश क्षेत्र, अदिश चर के सदिश क्षेत्र का अवकलन, कार्तीय एवं बेलनाकार निर्देशांकों में प्रवणता, अपसरण एवं कर्ल, उच्चतर कोटि अवकलन, सदिश तत्समक एवं सदिश समीकरण.

ज्यामिति अनुप्रयोग : आकाश में वक्र, वक्रता एवं ऐंठन, सेरेट-फ्रेनेट के सूत्र.

गैस एवं स्टोक्स प्रमेय, ग्रीन के तत्समज .

प्रश्नपत्र-2

1. बीजगणित :

समूह, उपसमूह, चक्रीय समूह, सहसमुच्चय, लाग्रांज़ प्रमेय, प्रसामान्य उपसमूह, विभाग समूह, समूहों की समाजारिता, आधारी तुल्याकारिता प्रमेय, क्रमचय समूह, केली प्रमेय.

वलय, उपवलय एवं गुणजावली, वलयों की समाकारिता, पूर्णांकीय प्रांत, मुख्य गुणजावली प्रांत, यूक्लिडीय प्रांत एवं अद्वितीय गुणनजंडन प्रांत, जेत्र, विभाग क्षेत्र.

2. वास्तविक विश्लेषण :

न्यूनतम उपरिसीमा गुणधर्म वाले क्रमित क्षेत्र के रूप में वास्तविक संख्या निकाय, अनुक्रम, अनुक्रम सीमा, कौशी अनुक्रम, वास्तविक रेखा की पूर्णता, श्रेणी एवं इसका अभिसरण, वास्तविक एवं सम्मिश्र पदों की श्रेणियों का निरपेक्ष तथा सप्रतिबंध अभिसरण, श्रेणी का पुनर्विन्यास.

फलनों का सांतत्य एवं एकसमान सांतत्य, संहत समुच्चयों पर सांतत्य फलनों के गुणधर्म. रीमान समाकल, अनंत समाकल, समाकलन-गणित के मूल प्रमेय. फलनों के अनुक्रमों तथा श्रेणियों के लिए एक-समान अभिसरण, सांतत्य, अवकलनीयता एवं समाकलनीयता, अनेक (दो या तीन) चरों के फलनों के आंशिक अवकलज, उच्चिष्ठ एवं अल्पिष्ठ.

3. सम्मिश्र विश्लेषण :

विश्लेषिक फलन, कौशी-रीमान समीकरण, कौशी प्रमेय, कौशी का समाकल सूत्र, विश्लेषिक फलन का घात श्रेणी निरूपण, टेलर श्रेणी, विचित्रताएं, लोरां श्रेणी, कौशी अवशेष प्रमेय, कन्टूर समाकलन.

4. रैखिक प्रोग्रामन :

रैखिक प्रोग्रामन समस्याएँ, आधारी हल, आधारी सुसंगत हल एवं इष्टतम हल, हलों की आलेखी विधि एवं एकधा विधि, द्वैतता. परिवहन तथा नियतन समस्याएँ.

5. आंशिक अवकलन समीकरण :

तीन विमाओं में पृष्ठकुल एवं आंशिक अवकल समीकरण संरूपण, प्रथम कोटि के रैखिककल्प आंशिक अवकल समीकरणों के हल, कौशी अभिलक्षण विधि, नियत गुणांकों वाले द्वितीय कोटि के रैखिक आंशिक अवकल समीकरण, विहित रूप, कंपित तंतु का समीकरण, ताप समीकरण, लाप्लास समीकरण एवं उनके हल.

6. संख्यात्मक विश्लेषण एवं कम्प्यूटर प्रोग्रामनः

संख्यात्मक विधियाँ, द्विविभाजन द्वारा एक चर के बीजगणितीय तथा अबीजीय समीकरणों का हल, रेगुला फाल्सि तथा न्यूटन-राफसन विधियाँ, गाउसीय निराकरण एवं गाउस -जॉर्डन (प्रत्यक्ष), गाउस-सीडेल (पुनरावर्ती) विधियाँ द्वारा रैखिक समीकरण निकाय का हल. न्यूटन का (अग्र तथा पश्च) अंतर्वेश-I, लाग्रांज का अंतर्वेश-I.

संख्यात्मक समाकलन : समलंबी नियम, सिंपसन नियम, गाउसीय क्षेत्रकलन सूत्र.

साधारण अवज्ल समीकरणों का संख्यात्मक हल : आयलर तथा रंजा-कुट्ट विधियाँ.

कंप्यूटर प्रोग्रामन : द्विआधारी पद्धति, अंकों पर गणितीय तथा तर्कसंगत संक्रियाएं, अष्ट आधारी तथा षोडस आधारी पद्धतियाँ, दशमलव पद्धति से एवं दशमलव पद्धति में रूपांतरण, द्विआधारी संख्याओं की बीजावली.

कंप्यूटर प्रणाली के तत्व तथा मेमरी की संकल्प-II, आधारी तर्कसंगत द्वार तथा सत्य सारणियाँ, बूलीय बीजावली, प्रसामान्य रूप.

अचिह्नित पूर्णांकों, चिह्नित पूर्णांकों एवं वास्तविक, द्विपरिशुद्धता वास्तविक तथा दीर्घ पूर्णांकों का निरूपण.

संज्यात्मज विश्लेषज समस्याओं जे हल जे लिए जल-Iविधि और प्रवाह संपित्र

7. यांत्रिकी एवं तरल गतिकी :

व्यापीकृत निर्देशांक, डीऐलंबर्ट सिद्धांत एवं लाग्रांज समीकरण, हैमिल्टन समीकरण, जड़त्व आघूर्ज, दो विमाओं में दृढ़ पिंडों की गति.

सांतत्व समीकरण , अश्यान प्रवाह के लिए आयलर का गति समीकरण, प्रवाह रेखाएं, कण का पथ, विभव प्रवाह, द्विविमीय तथा अक्षतः सममित गति, उद्गम तथा अभिगम, भ्रमिल गति, श्या-I तरल के लिए नैवियर - स्टोक समीकरण.

यांत्रिक इंजीनियरी

प्रश्नपत्र-1

1. यांत्रिकी :

1.1 दृढ़ पिंडों की यांत्रिकी

आकाश में साम्यावस्था का समीकरण एवं इसका अनुप्रयोग, क्षेत्रफल के प्रथम एवं द्वितीय आघूर्ज, घर्षण की सरल समस्याएँ, समतल गति के लिए कणों की शुद्धगतिकी, प्रारंभिक कण गतिकी.

1.2 विरूपजीय पिंडों की यांत्रिकी

व्यापीकृत हुज का नियम एवं इसका अनुप्रयोग, अक्षीय प्रतिबल पर अभिकल्प समस्याएँ, अपरूपण प्रतिबल एवं आधारक प्रतिबल, गतिक भारण के लिए सामग्री के गुण, दंड में बंकन अपरूपण एवं प्रतिबल, मुख्य प्रतिबलों एवं विकृतियों का निर्धारण - विश्लेषिक एवं आलेखी, संयुक्त एवं मिश्रित प्रतिबल, द्विअक्षीय प्रतिबल - तनु भित्तिक दाब भाज्ड , गतिक भार के लिए पदार्थ व्यवहार एवं अभिज्ल्प कारक, जेवल बंकन एवं मरोड़ी भार के लिए गोल शैफ्ट का अभिज्ल्प, स्थैतिक निर्धारी समस्याओं के लिए दंड का विजेप, भंग के सिद्धांत.

2. इंजीनियरी पदार्थ :

ठोसों की आधारभूत संकल्पनाएं एवं संरचना, सामा-य लोह एवं अलोह पदार्थ एवं उनके अनुप्रयोग, स्टीलों का ताप उपचार, अधातु - प्लास्टिक, सेरेमिक, संमिश्र पदार्थ एवं नैनोपदार्थ.

3. यंत्रों का सिद्धांत :

समतल - क्रियाविधियों का शुद्धगतिक एवं गतिक विश्लेषण. कैम, गियर एवं अधिचक्रिक जियरमालाएं, गतिपालक चक्र, अधिनियंत्रज, दृढ़ घूर्णकों का संतुलन, एकल एवं बहुसिलिंडरी इंजन, यांत्रिज त्रंत्र का रैखिक कंपन विश्लेषण (एकल स्वातंत्र्य कोटि), क्रांतिक चाल एवं शैफ्ट का आवर्तन.

4. निर्माण का विज्ञान :

4.1 निर्माण प्रक्रम :

यंत्र औजार इंजीनियरी - व्यापारी बल विश्लेषण, टेलर का औजार आयु समीकरण, रूढ़ मशीनन, NC एवं CNC मशीनन प्रक्रम, जिग एवं स्थायिक.

अरूढ़ मशीनन -EDM, ECM, पराश्रव्य, जल प्रधार मशीनन, इत्यादि, लेज़र एवं प्लाज्मा के अनुप्रयोग, ऊर्जा दर अवकलन.

रूपण एवं वेल्डन प्रक्रम - मानक प्रक्रम.

मापिकी—अ-वायोजनों एवं सहिष्णुताओं की संकल्पना, औजार एवं प्रमाप, तुलनित्र, लंबाई का निरीक्षण, स्थिति, परिच्छेदिका एवं पृष्ठ संपूर्ति.

4.2 निर्माण प्रबंध :

तंत्र अभिकल्प : फैक्टरी अवस्थिति - सरल OR मॉडल, संयंत्र अभिन्यास - पद्धति आधारित, इंजीनियरी आर्थिक विश्लेषण एवं भंग के अनुप्रयोग - उत्पादा वरण, प्र्रम वरण एवं क्षमता आयोजना के लिए विश्लेषण भी, पूर्व निर्धारित समय मानक.

प्रणाली आयोजना : समाश्रयण एवं अपघटन पर आधारित पूर्वकथन विधियाँ, बहु मॉडल एवं प्रासंभाव्य समन्वायोजन रेखा का अभिकल्प एवं संतुलन, सामग्री सूची प्रबंध - आदेश काल एवं आदेश मात्रा निर्धारण के लिए प्रायिकतात्मक सामग्री सूची मॉडल, JIT प्रणाली, युक्तिमय उद्गमीकरण, अंतर-संयंत्र संभारतंत्र.

तंत्र संक्रिया एवं नियंत्रण :

कृत्यकशाला के लिए अनुसूचक कलन विधि, उत्पाद एवं प्रक्रम गुणता नियंत्रण के लिए सांख्यिकीय विधियों का अ-प्रयोग, माध्य, परास, दूषित प्रतिशतता, दोषों की संख्या एवं प्रतियूनिट दोष के लिए नियंत्रण चार्ट अनुप्रयोग, गुणता लागत प्रणालियाँ, संसाधन, संगठन एवं परियोजना जोखिम का प्रबंधन.

प्रणाली सुधार : कुल गुणता प्रबंध, नम्य, कृश एवं दक्ष संगठनों का विकास एवं प्रबंधन जैसी प्रणालियों का कार्यान्वयन.

प्रश्नपत्र-2

1. उष्मागतिकी, गैस गतिकी एंव टर्बो यंत्र :

1.1 उष्मागतिकी के प्रथम नियम एवं द्वितीय नियम की आधारभूत संकल्पनाएं, ऐन्ट्रॉपी एवं प्रतिक्रमणीयता की संकल्पना, उपलब्धता एवं अनुपलब्धता तथा अप्रतिक्रमणीयता.

1.2 तरलों का वर्गीकरण एवं गुणधर्म, असंपीड्य एवं संपीड्य तरल प्रवाह, मैक संख्या का प्रभाव एवं संपीड्यता, सातत्य संवेग एवं ऊर्जा समीकरण, प्रसामान्य एवं तिर्यक प्रघात, एक विमीय समऐंट्रॉपी प्रवाह, तरलों का नलिका में घर्षण एवं ऊर्जाअंतरण के साथ प्रवाह.

1.3 पंखों, ब्लोअरों एवं संपीडित्रों से प्रवाह, अक्षीय एवं अपकेंद्री प्रवाह विन्यास, पंखों एवं संपीडित्रों का अभिकल्प, संपीडनों और टारबाइ-I सोपानी की सरल समस्याएं, विवृत एवं संवृत चक्र जैस टरबाइ-I, जैस टरबाइन में किया गया कार्य, पुनःताप एवं पुनर्जनन.

2. ऊष्मा अंतरण :

2.1 चालन ऊष्मा अंतरण - सामान्य चालन समीकरण - लाप्लास, प्वासों एवं फ़ूरिए समीकरण, चालन का फ़ूरिए नियम, सरल भित्ति ठोस एवं खोखले बेलन तथा गोलकों पर लगा एक विमीय स्थायी दशा ऊष्मा चालन.

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

2.2 संवहन ऊष्मा अंतरण – न्यूटन का संवहन नियम, मुक्त एवं प्रणोदित संवहन, चपटे तल पर असंपीड्य तरल के स्तरीय एवं विक्षुब्ध प्रवाह के दौरान ऊष्मा अंतरण, नसेल्ट संख्या, जलगतिक एवं ऊष्मीय सीमांतपरत एवं उनकी मोटाई की संकल्पनाएँ, प्रांटल संख्या, ऊष्मा एवं संवेग अंतरण के बीच अनुरूपता – रेनॉल्ड्स, जोलबर्न, प्रांटल अनुरूपताएँ, क्षैतिज नलिकाओं से स्तरीय एवं विक्षुब्ध प्रवाह के दौरान ऊष्मा अंतरण, क्षैतिज एवं ऊर्ध्वाधर तलों से मुक्त संवहन.

2.3 कृष्णिका विकिरण – आधारभूत विकिरण नियम, जैसे कि, स्टीफेन-बोल्ट्ज़मैन, प्लांक वितरण, वीन विस्थापन, आदि.

2.4 आधारभूत ऊष्मा विनिमयित्र विश्लेषण, ऊष्मा विनिमयित्रों का वर्गीकरण.

3. अंतर्दहन इंजिन :

3.1 वर्गीकरण, संक्रिया के ऊष्मागतिक चक्र, भंग शक्ति, सूचित शक्ति, यांत्रिक दक्षता, ऊष्मा समायोजन चादर, निष्पादन अभिक्षण का निर्वचन, पेट्रौल, गैस एवं डीजल इंजिन.

3.2 SI एवं CI इंजिनों में दहन, सामान्य एवं असामान्य दहन, अपस्फोटन पर कार्यशील प्राचलों का प्रभाव, अपस्फोटन का न्यूनीकरण, SI एवं CI इंजिनों के लिए दह-ा प्रकोष्ठ के प्रकार, योजक, उत्सर्जन.

3.3 अंतर्दहन इंजिनों की विभिन्न प्रणालियाँ – ईंधन, स्नेहन, शीतन एवं संचरज प्रणालियाँ, अंतदर्हन इंजिनों में विजल्पी ईंधन.

4. भाप इंजीनियरी :

4.1 भाप जनन – आशोधित रैंकिन चक्र विश्लेषण, आधुनिक भाप बॉयलर, क्रांतिक एवं अधिक्रांतिक दाबों पर भाप, प्रवात उपस्कर, प्राकृतिक एवं कृत्रिम प्रवात, बॉयलर ईंधन, ठोस, द्रव एवं गैसीय ईंधन, भाप टरबाइन – सिद्धांत, प्रकार, संयोजन, आवेग एवं प्रतिक्रिया टरबाइन, अक्षीय प्रणोद.

4.2 भाप तुंड – अभिसारी एवं अपसारी तुंड में भाप का प्रवाह, आर्द्र, संतृप्त एवं अधितप्त जैसी विभिन्न प्रारंभिक भाप दशाओं के साथ, अधिकतम निस्सरण के लिए कंठ पर दाब, पश्चदाब विचरण का प्रभाव, तुंडों में भाप का अधिसंतृप्त प्रवाह, विलसन रेखा.

4.3 आंतरिक एवं बाह्य अप्रतिक्रम्यता के साथ रैंकिन चक्र, पुनस्ताप गुणक, पुनस्तापन एवं पुनर्जनन, अधिनियंत्रण विधियाँ, पश्च दाब एवं उपनिकासन टरबाइन.

4.4 भाप शक्ति संयंत्र – संयुक्त चक्र शक्ति जनन, उष्मा पुनःप्राप्ति भाप जि-ात्र (HRSG) तप्त एवं अतप्त, सहजनन संयंत्र.

5. प्रशीतन एवं वातानुकूलन :

5.1 वाष्प संपीडन प्रशीतन चक्र –p-H एवं T-s आरेखों पर चक्र, पर्यावरण अनुकूली प्रशीतक द्रव्य –R 134 a, R 123, वाष्पित्र, द्रवजित्र, प्रसरण साधन जैसे तंत्र, संरल वाष्प अवशोषण तंत्र.

5.2 आर्द्रतामिति – गुणधर्म, प्रक्रम, लेखाचित्र, संवेद्य तापन एवं शीतन, आर्द्रीजरण एवं अ-ार्द्रीकरण प्रभावी तापक्रम, वातानुकूलन भार परिकलन, सरल वाहिनी अभिकल्प.

चिजित्सा विज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

1. मा-ाव शारीर :

उपरि एवं अधोशाजाओं, स्जंधसंधियों, जूल्हे एवं जलाई में रक्त एवं तंत्रिजा संभरज समेत अ-ाुप्रयुक्त शारीर.

सजलशारीर, सक्तसंभरज एवं जिह्वा जा लिंफीय अपवाह, थायरॉइड, स्त-ा ग्रंथि, जठर, यजृत, प्रॉस्टेट, ज-ा-ाग्रंथि एवं जर्भाशय.

डायाफ्राम, पेरी-ायम एवं वंजजप्रदेश जा अ-ाुप्रयुक्त शारीर.

वृक्ज, मूत्राशय, जर्भाशय -ालिजाओं, शुज्र वाहिजाओं जा रोजलजज शारीर.

भ्रूजविज्ञा-ा : अपरा एवं अपरा रोध. ह्दय, आंत्र, वृक्ज, जर्भशय, डिंबग्रंथि, वृषज जा विजास एवं उ-ाजी सामा-य ज-मजात असामा-यताएं.

जे-द्रीय एवं परिसरीय स्वसंचालित तंत्रिजा तंत्र :

मस्तिस्ज जे -िलयों, प्रमस्तिस्ज मेरू द्रव जे परिभ्रमज जा सजल एवं रोजलजज शारीर, तंत्रिजा मार्ज एवं त्वचीय संवेद-ा, श्रवज एवं दृष्टि विजति, जपाल तंत्रिजाएं, वितरज एवं रोजलाजजिज महत्व, स्वसंचालित तंत्रिजा तंत्र जे अवयव.

2. मा-ाव शरीर ज्रिया विज्ञा-ा :

अवेज जा चाल-ा एवं संचरज, संजुच-ा जी ज्रियाविधि, पंत्रिजा-पेशीय संचरज, प्रतिवर्त, संतुल-ा -ियंत्रज, संस्थिति एवं पेशी-ता-ा, अवरोही मार्ज, अ-ाुमस्तिष्ज जे जार्य, आधारी जंडिजाएं, -िद्रा एवं चेत-ाा जा ज्रियाविज्ञा-ा.

अंतःस्रावी तंत्र : हार्मो-ा ज्रिया जी ज्रियाविधि, रच-ाा, स्रवज, परिवह-ा, उपापचय, पैंज्रियाज एवं पीयूष ग्रंथि जे जार्य एवं स्रवज -ियम-ा.

ज-ा-ा तंत्र जा ज्रिया विज्ञा-ा : आर्तवचज्र, स्त-यस्रवज, सजर्भता.

रक्त : विजास, -ियम-ा एवं रक्तजोशिजाओं जा परिजाम.

हृद्वाहिजा, हृद्-िस्पाद-ा, रक्तदाब, हृद्वाहिजा जार्य जा -ियम-ा,

3. जैव रसाय-ा :

अंजजार्य परीजज - यजृत, वृक्ज, थायरॉइड

प्रोटी-ा संश्लेषज.

विटामि-ा एवं ज-िज.

-िर्ब-ध-ा विजंड दैर्ध्य बहुरुपता (RFLP)

पॉलीमेरेज श्रृंजला प्रतिज्रिया (PCR)

रेडियो -इम्यू-ाोऐसे (RIA)

4. विजृति विज्ञा-ा :

थोथ एवं विरोहज, वृद्धि विजोभ एवं जै-सर, रहयूमैटिज एवं इस्जीमिज हृदय रोज एवं डायबिटीज मेलिटस जा विजृतिज-ा-ा एवं ऊतज विजृति विज्ञा-ा.

सुदम्य, दुर्दम, प्राथमिज एवं विजेपी दुर्दमता में विभेद-ा, श्वस-ीज-यजार्सि-ाोमा जा विजृतिज-ा-ा एवं ऊतज विजृति विज्ञा-ा, स्त-ा जार्सि-ाोमा, मुज जैंसर, ग्रीवा जैंसर, ल्यूजीमिया, यजृत सिरोसिस, स्तवज वृक्ज शोथ, यज्मा, तीव्र अस्थिमज्जाशोथ जा हेतु, विजृतिज-ा-ा एवं ऊतज विजृति विज्ञा-ा.

5. सूज्मजैविजी :

देहद्रवी एवं जोशिजा माध्यमित रोजजमता

-िम्-ालिजित रोज जारज एवं उ-ाजा प्रयोजशाला -िदा-ा:

-मेंि-ाजोजॉक्जस, सालमो-ेला

-शिंजेला, हर्पीज़, डेंजू, पोलियो

-HIV/AIDS, मलेरिया, ई-हिस्टोलिटिजा, जियार्डिया

-जैंडिडा, ज्रिप्टोजॉक्जस, ऐस्पर्जिलस

6. भेषजजुज विज्ञा-ा :

-िम्-ालिजित औषधों जे जार्य जी ज्रियाविधि एवं पार्श्वप्रभाव:

-ऐं-टिपायरेटिक्स एवं ए-ाल्जेसिक्स, ऐं-टिबायोटिक्स, ऐं-टिमलेरिया, ऐं-टिजालाजार, ऐं-टिडायाबेटिक्स

-ऐं-टिहायपरटेंसिव, ऐं-टिडाइयूरेटिक्स, सामा-य एवं हृद वासोडिलेटर्स, ऐं-टिवाइरल, ऐं-टिपैरासिटिज, ऐं-टिफंजल, इम्यू-ोसप्रेशैंट्स

-ऐं-टिजैंसर

7. -याय संबंधी औषध एवं विषविज्ञा-ा :

जति एवं घावों जी -यायसंबंधी परीजा, रक्त एवं शुज्र धब्बों जी परीजा, विषाक्तता, शामज अतिमात्रा, फाँसी, डूब-ाा, जल-ाा, DNA एवं फिंजरप्रिंट अध्यय-ा.

प्रश्-ापत्र - 2

1. सामा-य जायचिजित्सा :

टेटे-ास, रैबीज, AIDS, डेंज्यू, जाला-आजार, जापा-ाी ए-सेफेलाइटिस जा हेतु, रोज लजज विशेषताएं, -िदा-ा एवं प्रबंध-ा (-िवारज सहित) जे सिद्धांत.

-िम्-ालिजित जे हेतु, रोजलजज विशेषताएं, -िदा-ा एवं प्रबंध-ा जे सिद्धांत-

इस्जीमिज ह्दय रोज, फुफ्फुस अंतः शल्यता

श्वस-ाी अस्थमा

फुफ्फुसावरजी -िःसरज, यज्मा, अपावशोषज संलजज, अम्ल पेप्टिज रोज, विषाजुज यजृतशोथ एवं यजृत सिरोसिस.

स्तवज वृक्ज शोथ एवं जोजिजा वृक्ज शोथ, वृक्ज पात, अपवृक्जीय संलजज, वृक्ज वाहिजा अतिरिक्तदाब, डायबिटीज मेलिटस जे उपद्रव, स्जंद-ाविजार, ल्यूजीमिया, अव-एवं-अति-थॉयरॉइडिज्म, मे-ि-ाजायटिस एवं ए-सेफेलाइटिस.

चिजित्सजीय समस्याओं में इमेजिंज, अल्ट्रासाउंड, ईजो जार्डियोज्राम, CT स्जै-ा, MRI.

चिंता एवं अवसाद म-ाोविजिप्ति एवं विजंडित- म-ास्जता तथा E.C.T.

2. बालरोज विज्ञा-ा :

रोजप्रतिरोधीजरज, बेबी-फ्रेंडली अस्पताल, ज-मजात श्याव हृदय रोज श्वस-ा विजोभ संलजज, श्वस-ाी-फुफ्फुसशोथ, प्रमस्तिष्जीय -ावजात जामला, IMNCI वर्जीजरज एवं प्रबंध-ा, PEM जोटिजरज एवं प्रबंध। ARI एवं पाँच वर्ष से छोटे शिशुओं जी प्रवाहिजा एवं उसजा प्रबंध.

3. त्वचा विज्ञा-ा :

सोरिएसिस, एलर्जिज डर्मेटाइटिस, स्जेबीज, एक्ज़ीमा, विटिलिजो, स्टीव-ा-जॉ-ास-ा संलजज, लाइजे-ा प्ले-ास.

4. समा-य शल्य चिजित्सा:

जंडतालु जंडोष्ठ जी रोजलजज विशेषता, जारज एवं प्रबंध जे सिद्धांत.

स्वरयंत्रीय अर्बुद, मुज एवं ईसोफेजस अर्बुद.

परिधीय धम-ाी रोज, वैरिजोज वे-स, महाधम-ाी संजुच-ा

थायरॉइड, अधिवृक्ज ग्रंथि जे अर्बुद

फोड़ा, जैंसर, स्त-ा जा तंतुग्रंथि अर्बुद एवं ग्रंथिलता

पेप्टिज अल्सर रक्तस्राव, आंत्र यज्मा, अल्सरेटिव जोलाइटिस, जठर जैंसर वृक्ज मास, प्रोस्टेट जैंसर

हीमोथोरैक्स, पित्ताशय, वृक्ज, यूरेटर एवं मूत्राशय जी पथरी. रेक्टम, ए-ास, ए-ाल जै-ाल, पित्ताशय, एवं पित्तवाहि-ाी जी शल्य दशाओं जा प्रबंध

स्प्ली-ाोमेजैली, जॉलीसिस्टाइटिस, पोर्टल अतिरक्तदाब, यजृत फोड़ा, पेरीटो-ााइटिस, पैंज्रियाज शीर्ष जार्सि-ाोमा.

रीढ़ विभंज, जोली विभंज एवं अस्थि ट्यूमर

एंडोस्जोपी

लैप्रोस्जोपिज सर्जरी

5. प्रसूति विज्ञा-ा एवं परिवार -ियोज-ा समेत स्त्री रोज विज्ञा-ा :

सजर्भता जा -िदा-ा

प्रसव प्रबंध, तृतीय चरज जे उपद्रव, प्रसवपूर्ज एवं प्रसवोत्तर रक्त स्राव, -ावजात जा पु-ारूज्जीव-ा, असामा-य स्थिति एवं जठि-ा प्रसव जा प्रबंध, जालपूर्व (प्रसव) -ावजात जा प्रबंध.

अरक्तता जा -िदा-ा एवं प्रबंध.

सजर्भता जा प्रीएक्लैंप्सिया एवं टॉक्सीमिया, रजो-िवृत्युत्तर संलजज जा प्रबंध. इंट्रा-यूटेरी-ा युक्तियाँ, जोलियाँ, ट्यूबेक्टॉमी एवं वैसेक्टॉमी.

सजर्भता जा चिजित्सजीय समाप-ा जिसमें विधिज पहलू शामिल हैं.

ग्रीवा जैंसर.

ल्यूरोटिया, श्रोजि वेद-ाा, वंध्यता, डिसफंक्श-ाल यूटेरी-ा रक्तस्राव (DUB), अमी-ाोरिया, यूटरस जा तंतुपेशी अर्बुद एवं भ्रंश.

6. समुदाय जायचिजित्सा (-िवारज एवं सामाजिज जायचिजित्सा) :

सिद्धांत, प्रजाली, उपाजम एवं जा-ापदिज रोज विज्ञा-ा जा माप-ा; पोषज, पोषज संबंधी रोज/विजार एवं पोषज जार्यज्रम

स्वास्थ्य सूच-ाा संग्रहज, विश्लेषज एवं प्रस्तुति.

-िम्-ालिजित जे -ियंत्रज/उ-मूल-ा जे लिए राष्ट्रीय जार्यज्रमों जे उद्देश्य, घटज एवं ज्रांतिज विश्लेषज :

मलेरिया, जालाआजार, फाइलेरिया एवं यज्मा; HIV/AIDS, यौ-ा संज्रमित रोज एवं डेंजू

स्वास्थ्य देजभाल प्रदाय प्रजाली जा ज्रांतिज मूल्यांज-ा स्वास्थ्य प्रबंध-ा एवं प्रशास-ा : तज-ाीज, साध-ा, जार्यज्रम जार्या-वय-ा एवं मूल्यांज-ा

ज-ा-ा एवं शिशु स्वास्थ्य जे उद्देश्य, घटज, लज्य एवं स्थिति, रास्ट्रीय ग्रामीज स्वास्थ्य मिश-ा एवं सहस्राब्दी विजास लज्य.

अस्पताल एवं औद्योजिज अपशिष्ट प्रबंध.

दर्श-ाशास्त्र

प्रश्-ापत्र-1

दर्श-ा जा इतिहास एवं समस्याएं :

1. प्लेटो एवं अरस्तूः प्रत्यय; द्रव्य; आजार एवं पुद्जल; जार्यजारज भाव; वास्तविजता एवं शक्यता.
2. तर्जबुद्धिवाद (देजार्त, स्पि-ाोजा, लीबि-ाज): देजार्त जी पद्धति एवं असंदिज्ध ज्ञा-ा; द्रव्य; परमात्मा; म-ा-शरीर द्वैतवाद; -ियतत्ववाद एवं स्वातंत्र्य.
3. इंद्रिया-ाुभव वाद (लॉज, बर्जले, ह्यूम): ज्ञा-ा जा सिद्धांत; द्रव्य एवं जुज; आत्मा एवं परमात्मा; संशयवाद.
4. जांट : संश्लेषात्मज प्राज-ाुभविज -िर्जय जी संभवताःदिज् एवं जाल; पदार्थ; तर्जबुद्धि प्रत्यय; विप्रतिषेध; परमात्मा जे अस्तित्व जे प्रमाजों जी मीमांसा.
5. हीजेल : द्वंद्वात्मज प्रजाली; परमप्रत्ययवाद.
6. मूर, रसेल एवं पूर्ववर्ती विट्जे-स्टी-ाः सामा-य बुद्धि जा मंड-ा; प्रत्ययवाद जा जंड-ा; तार्जिज परमाजवाद; तार्जिज रच-ाा; अपूर्ज प्रतीज; अर्थ जा चित्र सिद्धांत; उक्ति एवं प्रदर्श-ा.
7. तार्जिज प्रत्यजवाद : अर्थ जा सत्याप-ा सिद्धांत; तत्वमीमांसा जा अस्वीजार; अ-िवार्य प्रतिज्ञप्ति जा भाषिज सिद्धांत.
8. उत्तरवर्ती विट्जेंस्टी-ा : अर्थ एवं प्रयोज; भाषा - जेलः व्यक्ति भाषा जी मीमांसा.
9. संवृतिशास्त्र (हर्सल) : प्रजाली ;सार सिद्धांत; म-ाोविज्ञा-ापरता जा परिहार.
10. अस्तित्वपरजतावाद (जीर्जजार्द, सार्त्र, हीडेजर): अस्तित्व एवं सार; वरज, उत्तर दायित्व एवं प्रामाजिज अस्तित्व; विश्व-िसत् एवं जालसत्ता.
11. क्वाइ-ा एवं स्ट्रॉस-ा : इंद्रिया-ाुभववाद जी मीमांसा; मूल विशिष्ट एवं व्यक्ति जा सिद्धांत.
12. चार्वाज : ज्ञा-ा जा सिद्धांत; अतींद्रिय सत्वों जा अस्वीजार.
13. जै-ादर्श-ा : सत्ता जा सिद्धांत; सप्तभंजी -याय; बंध-ा एवं मुक्ति.
14. बौद्धदर्श-ा संप्रदाय : प्रतीत्यसमुत्पाद; जजिज वाद, -ैरात्म्यवाद.
15. -याय-वैशेषिज : पदार्थ सिद्धांत; आभास सिद्धांत; प्रमाज सिद्धांत; आत्मा, मुक्ति; परमात्मा; परमात्मा जे अस्तित्व जे प्रमाज; जार्यजारज-भाव जा सिद्धांत, सृष्टि जा परमाजुवादी सिद्धांत.
16. सांज्य : प्रजृति; पुरुष; जार्यजारज-भाव; मुक्ति.
17. योज : चित्त; चित्तवृत्ति; क्लेश; समाधि; जैवल्य.
18. मीमांसा : ज्ञा-ा जा सिद्धांत
19. वेदांत संप्रदाय : ब्रह्म-ा; ईश्वर; आत्म-ा; जीव; जजत; माया; अविद्या; अध्यास; मोज; अपृथज सिद्धि; पंचविधभेद.
20. अरविंद : विजास, प्रतिविजास; पूर्ज योज.

प्रश्-ापत्र - 2

सामाजिज - राज-ैतिज दर्श-ा :

1. सामाजिज एवं राज-ैतिज आदर्श् : समा-ाता, -याय, स्वतंत्रता.
2. प्रभुसत्ता : आस्टि-ा बोदाँ, लास्जी, जैटिल्य.
3. व्यक्ति एवं राज्य : अधिजार; जर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व.
4. शास-ा जे प्रजार : राजतंत्र; धर्मतंत्र एवं लोजतंत्र.
5. राज-ैतिज विचारधाराऍं : अराजजतावाद; मार्क्सवाद एवं समाजवाद.
6. मा-ाववाद; धर्म-िरपेजतावाद; बहुसंस्जृतिवाद.
7. अपराध एवं दंड : भ्रष्टाचार, व्यापज हिंसा, जातिसंहार, प्राजदंड.
8. विजास एवं सामाजिज उन्नति.
9. लिंज भेद : स्त्रीभ्रूज हत्या, भूमि एवं संपत्ति अधिजार; सशक्तिजरज.
10. जाति भेद : जाँधी एवं अंबेडजर.

धर्म दर्श-ा :

1. ईश्वर जी धारजा : जुज; म-ाुष्य एवं विश्व से संबंध (भारतीय एवं पाश्चात्य).
2. ईश्वर जे अस्तित्व जे प्रमाज और उसजी मींमांसा (भारतीय एवं पाश्चात्य).
3. अशुभ जी समस्या.
4. आत्मा : अमरता; पु-ार्ज-म एवं मुक्ति.
5. तर्जबुद्धि, श्रुति एवं आस्था.
6. धार्मिज अ-ाुभव : प्रजृति एवं वस्तु (भारतीय एवं पाश्चात्य).
7. ईश्वर रहित धर्म.
8. धर्म एवं -ैतिजता.
9. धार्मिज शुचिता एवं परम सत्यता जी समस्या.
10. धार्मिज भाषा जी प्रजृति : सादृश्यमूलज एवं प्रतीजात्मज; संज्ञा-ावादी एवं -िस्संज्ञा-ावादी.

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

भौतिजी

प्रश्-ापत्र -1

1. (ज) ज ज यांत्रिजी :

जतिनियम, उर्जा एवं संवेज जा संरजज, घूर्जी फ्रेम पर अ-ाुप्रयोज, अपजेंद्री एवं जोरियालिस त्वरज; जेंद्रीय बल जे अंतर्जत जति; जोजीय संवेज जा संरजज, जेप्लर नियम; जेत्र एवं विभव; जोलीय पिंडों जे जारज जुरूत्व जेत्र एवं विभव; जौस एवं प्वासों समीजरज, जुरूत्व स्वऊर्जा; द्विपिंड समस्या; समा-ीत द्रव्यमा-ा; रदरफोर्ड प्रजीर्ज-ा; द्रव्यमा-ा जेंद्र एवं प्रयोजशाला संदर्भ फ्रेम.

(ज) दृढ़ पिंडों जी यांत्रिजी :

जजणिजाय; द्रव्यमा-ा जेंद्र, जोजीय संवेज, जति समीजरज, उर्जा, संवेज एवं जोजीय संवेज जे संरजज प्रमेय; प्रत्यास्थ एवं अप्रत्यास्थ संघट्ट-ा; दृढ़ पिंड;स्वातंत्र्य जोटियां, आयलर प्रमेय, जोजीय वेज, जोजीय संवेज, जड़त्व आघूर्ज, समांतर एवं अभिलंब अजों जे प्रमेय, घूर्ज-ा हेतु जति जा समीजरज; आज्विज घूर्ज-ा (दृढ़ पिंडों जे रूप में); द्वि एवं त्रि - परमाज्विज अजु, पुरस्सरज जति, भ्रमि, घूर्जाजस्थापी.

(ज) संतत माध्यमों जी यांत्रिजी :

प्रत्यास्थता, हुज जा नियम एवं समदैशिज ठोसों जे प्रत्यास्थतांज तथा उ-ाजे अंतर्संबंध; प्रवाहरेजा (स्तरीय) प्रवाह, श्या-ाता, प्वाज़्य समीजरज, बर-ाूली समीजरज, स्टोज नियम एवं उसजे अ-ाुप्रयोज.

(घ) विशिष्ट आपेजिजता :

माइजल्स-ा - मोर्ले प्रयोज एवं इसजी विवजाएं; लॉरेंज रूपांतरज - दैर्ध्य -संजुंच-ा, जालवृद्धि, आपेजिजीय वेजों जा योज, विपथ-ा तथा डॉप्लर प्रभाव, द्रव्यमा-ा - ऊर्जा संबंध, जय प्रक्रि या से सरल अ-ाुप्रयोज; चतुर्विमीय संवेज सदिश; भौतिजी जे समीजरजों जे सहप्रसरज.

2. तरंज एवं प्रजाशिजी :

(ज) तरंज :

सरल आवर्त जति, अवमंदित दोल-ा, प्रजोदित दोल-ा तथा अ-ाु-ााद; विस्पंद; तंतु में स्थिर तरंजें; स्पंद-ा तथा तरंज संचायिजाएं; प्रावस्था तथा समूह वेज; हाईज-ा जे सिद्धांत से परावर्त-ा तथा अपवर्त-ा.

(ज) ज्यामितीय प्रजाशिजी :

फरमैट जे सिद्धांत से परावर्त-ा तथा अपवर्त-ा जे नियम, उपाजीय प्रजाशिजी में आव्यूह पद्धति - पतले लेंस जे सूत्र, निस्पंद तल, दो पतले लेंसों जी प्रजाली, वर्ज तथा जोलीय विपथ-ा.

(ज) व्यतिजरज :

प्रजाश जा व्यतिजरज - यंज जा प्रयोज, -ायूट-ा वलय, त-ाु फिल्मों द्वारा व्यतिजरज, माइजल्स-ा व्यतिजरजमापी; विविध जिरजुंज व्यतिजरज एवं फैब्री - पेरट व्यतिजरजमापी.

(घ) विवर्त-ा :

फ्रा-ाहोफर विवर्त-ा - एजल रेजाछिद्र, द्विरेजाछिद्र, विवर्त-ा ग्रेटिंज, विभेद-ा जमता; वित्तीय द्वारज द्वारा विवर्त-ा तथा वायवीय पैट-ा; फ्रेस-ोल विवर्त-ा; अर्द्ध आवर्त-ा जो-ा एवं जो-ा प्लेट, वृत्तीय द्वारज.

(ड़) ध्रुवीजरज एवं आधुनिज प्रजाशिजी :

रेजीय तथा वृत्तीय ध्रुवित प्रजाश जा उत्पाद-ा तथा अभिज्ञा-ा; द्विअपवर्त-ा, चतुर्थांश तरंज प्लेट; प्रजाशीय सक्रि यता; रेशा प्रजाशिजी जे सिद्धांत, जीज-ा; स्टेप इंडेक्स तथा परवलयिज इंडेक्स तंतुओं में स्पंद परिजेपज; पदार्थ परिजेपज, एजल रूप रेशा; लेसर - आइ-ास्टाइ-ा A तथा B जुजांज, रूबी एवं हीलियम नियॉ-ा लेसर; लेसर प्रजाश जी विशेषताएं - स्थानिज तथा जालिज संबद्धता; लेसर जिरज पुंजों जा फोजस-ा; लेसर क्रि या जे लिए त्रि-स्तरीय योज-ाा; होलोज्राफी एवं सरल अ-ाुप्रयोज.

3. विद्युत एवं चुंबज त्व :

(ज) स्थिर वैद्युत एवं स्थिर चुंबजीय :

स्थिर वैद्युत में लाप्लास एवं प्वासों समीजरज एवं उ-ाजे अ-ाुप्रयोज; आवेश निजाय जी ऊर्जा, अदिश विभव जा बहुध्रुव प्रसार; प्रतिबिम्ब विधि एवं उसजा अ-ाुप्रयोज; द्विध्रुव जे जारज विभव एवं जेत्र, बाह्य जेत्र में द्विध्रुव पर बल एवं बल आघूर्ज. परावैद्युत ध्रुवज; परिसीमा - मा-ा समस्या जा हल - एजसमा-ा वैद्युत जेत्र में चाल-ा एवं परवैद्युत जोलज; चुंबजीय जोश, एजसमा-ा चुंबजित जोलज, लोह चुंबजीय पदार्थ, शैथिल्य, ऊर्जाह्रास.

(ज) धारा विद्युत :

जिरचॉफ नियम एवं उ-ाजे अ-ाुप्रयोज; बायो-सवार्ट नियम, ऐम्पियर नियम, फराडे नियम, लेंज नियम; स्व एवं अ-ायो-य प्रेरज त्व; प्रत्यावर्ती धारा (AC) परिपथ में माध्य एवं वर्जमाध्य मूल (rms) मा-ा, RL एवं C घटज वाले DC एवं AC- परिपथ; श्रेजीबद्ध एवं समांतर अ-ाु-ााद; जुजता जारज; परिजामित्र जे सिद्धांत.

(ज) विद्युतचुंबजीय तरंजें एवं कृष्जिजा विकिरज :

विस्थाप-ा धारा एवं मैक्सवेल जे समीजरज; निर्वात में तरंज समीजरज, प्वाइंटिंज प्रमेय; सदिश एवं अदिश विभव; विद्युत चुंबजीय जेत्र प्रदिश, मैक्सवेल समीजरजों जा सहप्रसरज; समदैशिज परावैद्युत में तरंज समीजरज, दो परावैद्युतों जी परिसीमा पर परावर्त-ा तथा अपवर्त-ा; फ्रेस-ाल संबंध; पूर्ज आंतरिज परावर्त-ा; प्रसामा-य एवं असंजत वर्ज विजेपज; रेले प्रजीर्ज-ा; कृष्जिजा विकिरज एवं प्लैंज विकिरज नियम, स्टीफ-ा - बोल्ट्जमै-ा नियम, विये-ा विस्थाप-ा नियम एवं रेले - जी-स नियम.

4. तापीय एवं सांज्यिजीय भौतिजी :

(ज) उष्माजतिजी :

ऊष्माजतिजी जा नियम, उत्क्रम्य तथा अप्रतिक्रम्य प्रक्रम, ए-ट्रॉपी, समतापी, रूद्धोष्म, समदाब, समआयत-ा प्रक्रम एवं ए-ट्रॉपी परिवर्त-ा; ओटो एवं डीजल इंजि-ा, जिब्स प्रावस्था नियम एवं रासायनिज विभव, वास्तविज जैस अवस्था जे लिए वांडरवाल्स समीजरज, क्रांतिज स्थिरांज, आज्विज वेज जा मैक्सवेल बोल्ट्जमा-ा वितरज, परिवह-ा परिघट-ाा, समविभाज-ा एवं वीरियल प्रमेय; ठोसों जी विशिष्ट उष्मा जे ड्यूलां - पेती, आइंस्टाइ-ा, एवं डेबी सिद्धांत; मैक्सवेल संबंध एवं अ-ाुप्रयोज; क्लासियस क्लेपरॉ-ा समीजरज, रूद्धोष्म विचुंबज-ा, जूल जेल्वि-ा प्रभाव एवं जैसों जा द्रवज.

(ज) सांज्यिजीय भौतिजी :

स्थूल एवं सूज्म अवस्थाएं, सांज्यिजीय बंट-ा, मैक्सवेल - बोल्ट्जमा-ा, बोस - आइंस्टाइ-ा एवं फर्मी - दिराज बंट-ा, जैसों जी विशिष्ट ऊष्मा एवं कृष्जिजा विकिरज में अ-ाुप्रयोज; -ाजारात्मज ताप जी संजल्प-ाा.

प्रश्-ापत्र-2

1. क्वांटम यांत्रिजी :

जज तरंज द्वैतता, श्रोडिंजर समीजरज एवं प्रत्याशामा-ा; अनिश्चितता सिद्धांत, मुक्त जज, बॉक्स में जज, परिमित कूप में जज जे लिए एज विमीय श्रोडिंजर समीजरज जा हल (जाउसीय तरंज - वेस्ट-ा), रैजिज आवर्ती लोलज; पज - विभव द्वारा एवं आयताजार रोधिजा द्वारा परावर्त-ा एवं संचरज; त्रिविमीय बॉक्स में जज, अवस्थाओं जा घ-ात्व, धातुओं जा मुक्त इलेक्टॉ-ा सिद्धांत, जोजीय संवेज, हाइड्रोज-ा परमाजु; अर्द्धप्रचक्र ज जज, पाउली प्रचक्र ज आव्यूहों जे जुजधर्म.

2. परमाज्विज एवं आज्विज भौतिजी :

स्ट-र्ा - जर्लेज प्रयोज, इलेक्ट्रॉ-ा प्रचक्र ज, हाइड्रोज-ा परमाजु जी सूज्म संरच-ाा; L-S युज्म-ा, J-J युज्म-ा, परमाजु अवस्था जा स्पेक्ट्रमी संजे त-ा, जीमा-ा प्रभाव; फ्रैंज जंडो-ा सिद्धांत एवं अ-ाुप्रयोज; द्विपरमाजुज अजुजे घूर्ज-ी, जांपनिज एवं इलेक्ट्रॉनिज स्पेक्ट्रमों जा प्राथमिज सिद्धांत; रम-ा प्रभाव एवं आज्विज संरच-ाा; लेसर रम-ा स्पेक्ट्रमिजी; जजोलिजी में उदासी-ा हाइड्रोज-ा परमाजु, आज्विज हाइड्रोज-ा एवं आज्विज हाइड्रोज-ा ऑय-ा जा महत्व; प्रतिदिप्ति एवं स्फुरदीप्ति; NMR एवं EPR जा प्राथमिज सिद्धांत एवं अ-ाुप्रयोज, लैम्बसृति जी प्राथमिज धारजा एवं इसजा महत्व.

3. -ााभिजीय एवं ज ज भौतिजी :

मूलभूत -ााभिजीय जुजधर्म - आजार, बंध-ा ऊर्जा, जोजीय संवेज, समता, चुंबजीय आघूर्ज; अर्द्ध- आ-ाुभविज द्रव्यमा-ा सूत्र एवं अ-ाुप्रयोज, द्रव्यमा-ा परवलय; ड्यूटेरॉ-ा जी मूल अवस्था, चुंबजीय आघूर्ज एवं अजेंद्रीय बल; -ााभिजीय बलों जा मेसॉ-ा सिद्धांत, -ााभिजीय बलों जी प्रमुज विशेषताएं; -ााभिज जाजेश मॉडल - सफलताएं एवं सीमाएं; बीटाह्रास में समता जा उल्लंघ-ा; जामा ह्रास एवं आंतरिज रूपांतरज, मासबौर स्पेक्ट्रमिजी जी प्राथमिज धारजा; -ााभिजीय अभिक्रि याओं जा Q मा-ा; -ााभिजीय विजंड-ा एवं संलय-ा, ताराओं में ऊर्जा उत्पाद-ा; -ााभिजीय रियेक्टर.

मूल जजों जा वर्जीजरज एवं उ-ाजी अ-ायो-यक्रि याएं; संरजज नियम; हैड्रॉ-ाों जी क्वार्ज संरच-ाा; जीज वैद्युत एवं प्रबल अ-ायो-य क्रि या जा जेत्र - क्वांटा; बलों जे एजीजरज जी प्राथमिज धारजा; -ायूट्रि-ाों जी भौतिजी.

4. ठोस अवस्था भौतिजी, यंत्र एवं इलेक्ट्रॉनिजी :

पदार्थ जी क्रि स्टलीय एवं अक्रि स्टलीय संरच-ाा; विभिन्न क्रि स्टल निजाय, आजाशी समूह; क्रि स्टल संरच-ाा निर्धारज जी विधियां; X-जिरज विवर्त-ा, क्रमवीजज एवं संचरज इलेक्ट्रॉ-ा सूज्मदर्शी; ठोसों जा पट्ट सिद्धांत - चालज, विद्युतरोधी एवं अर्द्धचालज; ठोसों जे तापीय जुजधर्म, विशिष्ट ऊष्मा, डेबी सिद्धांत; चुंबजत्व; प्रति, अ-ाु एवं लोह चुंबजत्व; अतिचालजता जे अवयव, माइस-ार प्रभाव, जोसेफस-ा संधि एवं अ-ाुप्रयोज; उच्च तापक्र म अतिचालजता जी प्राथमिज धारजा.

-ौज एवं बाह्य अर्द्धचालज; p-n-p एवं n-p-n ट्रांजिस्टर, प्रवर्धज एवं दोलित्र, संक्रि यात्मज प्रवर्धज; FET, JFET एवं MOSFET; अंजीय इलेक्ट्रॉनिजी - बूलीय तत्समज, डी मॉर्ज-ा नियम, तर्ज द्वार एवं सत्य सारजियाँ; सरल तर्ज परिपथ; ऊष्म प्रतिरोधी, सौर सेल; माइक्रोप्रोसेसर एवं अंजीय जंप्यूटरों जे मूल सिद्धांत.

राज-ाीति विज्ञा-ा एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध

प्रश्-ापत्र -1

राज-ाैतिज सिद्धांत एवं भारतीय राज-ाीति :

1. राज-ाैतिज सिद्धांत :अर्थ एवं उपाजम.
2. राज्य जे सिद्धांत :उदारवादी, -ावउदारवादी, मार्क्सवादी, बहुवादी,पश्च-उपनिवेशी एवं -ाारी-अधजिारवादी.
3. -याय:रॉल जे -याय जे सिद्धांत जे विशेष संदर्भ में -याय जे संप्रत्यय एवं इसजे समुदायवादी समालोचज।
4. समा-ाता: सामाजिज, राज-ाैतिज एवं आर्थिज;समा-ाता एवं स्वतंत्रता जे बीच संबंध;सजारात्मज जार्य.
5. अधिजार: अर्थ एवं सिद्धांत; विभिन्न प्रजार जे अधिजार; मा-ावाधिजार जी संजल्प-ाा.
6. लोजतंत्र: क्लासिजी एवं समजाली-ा सिद्धांत; लोजतंत्र जे विभिन्न मॉडल - प्रतिनिधिज, सहभाजी एवं विमर्शी.
7. शक्ति, प्राधा-य, विचारधारा एवं वैधता जी संजल्प-ाा.
8. राज-ाैतिज विचारधाराएं: उदारवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद,फासीवाद,जाँधीवाद एवं -ाारी-अधिजारवाद.
9. भारतीय राज-ाैतिज चिंत-ा: धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं बौद्ध परंपराएं;सर सैयद अहमद जा-ा, श्री अरविंद, एम.जे. जाँधी, बी. आर. अम्बेडजर, एम.ए-ा.रॉय.
10. पाश्चत्य राज-ाैतिज चिंत-ा: प्लेटो अरस्तू, मैजियावेली, हॉब्स, लॉज, जॉ-ा एस.मिल, मार्क्स, ज्राम्स्जी, हान्ना आरे-ट.

भारतीय शास-ा एवं राज-ाीति :

1. भारतीय राष्ट्रवाद:
   (ज) भारत जे स्वाधी-ाता संज्राम जी राज-ाैतिज जार्य-ाीतियां : संविधा-ावाद से ज-ा सत्याज्रह, असहयोज, सवि-ाय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो; उज्रवादी एवं क्रान्तिजारी आंदोल-ा, जिसा-ा एवं जामजार आंदोल-ा.
   (ज) भारतीय राष्ट्रीय आंदोल-ा जे परिप्रेज्य :उदारवादी, समाजवादी एवं मार्क्सवादी; उज्रमा-ावतावादी एवं दलित.
2. भारत जे संविधा-ा जा निर्माज : ब्रिटिश शास-ा जा रिक्थ; विभिन्न सामाजिज एवं राज-ाैतिज परिप्रेज्य.
3. भारत जे संविधा-ा जी प्रमुज विशेषताएं : प्रस्ताव-ाा, मौलिज अधिजार तथा जर्त्तव्य, -ाीति निर्देशज सिद्धांत, संसदीय प्रजाली एवं संशोध-ा प्रक्रि या; -यायिज पु-ार्विलोज-ा एवं मूल संरच-ाा सिद्धांत.
4. (ज) संघ सरजार जे प्रधा-ा अंज : जार्यपालिजा, विधायिजा एवं सर्वोच्च -यायालय जी विचारित भूमिजा एवं वास्तविज जार्यप्रजाली .
   (ज) राज्य सरजार जे प्रधा-ा अंज : जार्यपालिजा, विधायिजा एवं उच्च -यायालयों जी विचारित भूमिजा एवं वास्तविज जार्यप्रजाली .
5. आधारिज लोजतंत्र : पंचायती राज एवं -ाजर शास-ा; 73 वें एवं 74 वें संशोध-ाों जा महत्व; आधारिज आंदोल-ा.
6. सांविधिज संस्थाएं / आयोज : निर्वाच-ा आयोज, नियंत्रज एवं महालेजा परीजज, वित्त आयोज, संघ लोज सेवा आयोज, राष्ट्रीय अ-ाुसूचित जातियां आयोज, राष्ट्रीय अ-ाुसूचित ज-ाजातियां आयोज, राष्ट्रीय महिला आयोज, राष्ट्रीय मा-ावाधिजार आयोज, राष्ट्रीय अल्पसंज्यज आयोज, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ज आयोज.
7. संघराज्य पद्धति : सांविधानिज उपबंध, जे-द्र राज्य संबंधों जा बदलता स्वरूप, एजीजरजवादी प्रवृत्तियां एवं जेत्रीय आजांजाएं; अंतर -राज्य विवाद.
8. योज-ाा एवं आर्थिज विजास : -ोहरूवादी एवं जाँधीवादी परिप्रेज्य, योज-ाा जी भूमिजा एवं निजी जेत्र, हरित क्रान्ति, भूमि सुधार एवं कृषि संबंध, उदारीजरज एवं आर्थिज सुधार.
9. भारतीय राज-ाीति में जाति, धर्म एवं -ाृजातीयता.
10. दल प्रजाली : राष्ट्रीय एवं जेत्रीय राज-ाैतिज दल, दलों जे वैचारिज एवं सामाजिज आधार, बहुदलीय राज-ाीति जे स्वरूप; दबाव समूह, निर्वाचज आचरज जी प्रवृत्तियां, विधायजों जे बदलते सामाजिज - आर्थिज स्वरूप.
11. सामाजिज आंदोल-ा : -ााजरिज स्वतंत्रताएं एवं मा-ावाधिजार आंदोल-ा; महिला आंदोल-ा, पर्यावरज आंदोल-ा.

प्रश्-ापत्र-2

तुल-ाात्मज राज-ाीति तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध

तुल-ाात्मज राज-ाैतिज विश्लेषज एवं अंतर्राष्ट्रीय राज-ाीति

1. तुल-ाात्मज राज-ाीति : स्वरूप एवं प्रमुज उपाजम; राज-ाैतिज अर्थव्यवस्था एवं राज-ाैतिज समाजशास्त्रीय परिप्रेज्य; तुल-ाात्मज प्रक्रि या जी सीमाएं.
2. तुल-ाात्मज परिप्रेज्य में राज्य; पूंजीवादी एवं समाजवादी अर्थव्यवस्थाओं में राज्य जे बदलते स्वरूप एवं उ-ाजी विशेषताएं तथा उन्नत औद्योजिज एवं विजासशील समाज.
3. राज-ाैतिज प्रतिनिधा-ा एवं सहभाजिता : उन्नत औद्योजिज एवं विजासशील समाजों में राज-ाैतिज दल, दबाव समूह एवं सामाजिज आंदोल-ा.
4. भूमंडलीजरज : विजसित एवं विजासशील समाजों से प्राप्त अ-ाुक्रि याएं.
5. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों जे अध्यय-ा जे उपाजम : आदर्शवादी, यथार्थवादी, मार्क्सवादी, प्रजार्यवादी, एवं प्रजाली सिद्धांत.
6. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में आधारभूत संजल्प-ााएं : राष्ट्रीय हित, सुरजा एवं शक्ति; शक्तिसंतुल-ा एवं प्रतिरोध; पर -राष्ट्रीय जर्ता एवं सामूहिज सुरजा; विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एवं भूमंडलीजरज.
7. बदलती अंतर्राष्ट्रीय राज-ाीति व्यवस्था :
   (ज) महाशक्तियों जा उदय; जार्य-ाीतिज एवं वैचारिज द्विध्रुवीयता, शस्त्रीजरज जी होड़ एवं शीत युद्ध; -ााभिजीय जतरा.
8. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिज व्यवस्था जा उद्भव : ब्रेट-ावुड से विश्व व्यापार संजठ-ा तज. समाजवादी अर्थव्यवस्थाएं तथा पारस्परिज आर्थिज सहायता परिषद (CMEA); -ाव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिज व्यवस्था जी तृतीय विश्व जी मांज; विश्व अर्थव्यवस्था जा भूमंडलीजरज.
9. संयुक्त राष्ट्र : विचारित भूमिजा एवं वास्तविज लेजा-जोजा; विशेषीकृत संयुक्त राष्ट्र अभिजरज -लज्य एवं जार्यजरज; संयुक्त राष्ट्र सुधारों जी आवश्यजता.
10. विश्व राज-ाीति जा जेत्रीयजरज : EU, ASEAN, APEC, SAARC, NAFTA.
11. समजाली-ा वैश्विज सरोजार : लोजतंत्र, मा-ावाधिजार, पर्यावरज, लिंज -याय, आतंजवाद, -ााभिजीय प्रसार.

भारत तथा विश्व :

1. भारत जी विदेश -ाीति : विदेश-ाीति जे निर्धारज; -ाीति निर्माज जी संस्थाएं; निरंतरता एवं परिवर्त-ा.
2. जुट निरपेजता आंदोल-ा जो भारत जा योजदा-ा : विभिन्न चरज; वर्तमा-ा भूमिजा .
3. भारत और दजिज एशिया :
   (ज) जेत्रीय सहयोज : SAARC -पिछले निष्पाद-ा एवं भावी प्रत्याशाएं.
   (ज) दजिज एशिया मुक्त व्यापार जेत्र जे रूप में.
   (ज) भारत की पूर्व अभिमुजन -ीति.
   (घ) जेत्रीय सहयोज जी बाधाएं : -ादी जल विवाद; अवैध सीमा पार उत्प्रवास-ा; -ाृजातीय द्वंद्व एवं उपप्लव; सीमा विवाद.
4. भारत एवं वैश्विज दजिज : अफ्रीजा एवं लाती-ी अमेरिजा जे साथ संबंध; NIEO एवं WTO वार्ताओं जे लिए आवश्यज -ोतृत्व जी भूमिजा.
5. भारत एवं वैश्विज शक्ति जे-द्र : संयुक्त राज्य अमेरिजा, यूरोप संघ (EU), जापा-ा, ची-ा और रूस.
6. भारत एवं संयुक्त राष्ट्र प्रजाली : संयुक्त राष्ट्र शान्ति अ-ाुरजज में भूमिजा; सुरजा परिषद में स्थायी सदस्यता जी मांज.

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

7. भारत एवं -ाभिजीय प्रश्-ा : बदलते प्रत्यजज एवं -ीति.
8. भारतीय विदेश -ीति में हाल जे विजास : अफजा-िस्ता-ा में हाल जे संजट पर भारत जी स्थिति, इराज एवं पश्चिम एशिया; U S एवं इजराइल जे साथ बढ़ते संबंध; -ई विश्व व्यवस्था जी दृष्टि.

म-ोविज्ञा-ा

प्रश्-ापत्र-1

म-ोविज्ञा-ा जे आधार

1. परिचय :
म-ोविज्ञा-ा जी परिभाषा. म-ोविज्ञा-ा जा ऐतिहासिज पूर्ववृत्त एवं 21वीं शताब्दी में प्रवृत्तियाँ. म-ोविज्ञा-ा एवं वैज्ञाि-ज पद्धति, म-ोविज्ञा-ा जा अ-य सामाजिज और प्राजृतिज विज्ञा-ों से संबंध; सामाजिज समस्याओं में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोग.

2. म-ोविज्ञा-ा जी पद्धति :
अ-ुसंधा-ा जे प्रजार- वर्ज-ात्मज, मूल्यांज-ी, -ैदाि-ज एवं पूर्वा-ुमाि-ज. अ-ुसंधा-ा पद्धति : प्रेजज, सर्वेजज, व्यक्ति अध्यय-ा एवं प्रयोज, प्रयोजात्मज तथा अप्रयोजात्मज अभिजल्प जी विशेषताएँ. परीजज सदृश अभिजल्प ; जे-द्रीय समूह चर्चा, विचारावेश, आधार सिद्धांत उपागम.

3. अ-ुसंधा-ा प्रजालियाँ :
म-ोवैज्ञाि-ज अ-ुसंधा-ा में मुज्य चरज (समस्या जथ-ा, प्राज्ल्प-ाा -िरूपज, अ-ुसंधा-ा अभिजल्प, प्रतिचय-ा, आंजड़ा संग्रह जे उपजरज, विश्लेषज एवं व्याज्या तथा विवरज लेज-ा. मूल जे विरूद्ध अ-ुप्रयुक्त अ-ुसंधा-ा, आंजड़ा संग्रह जी विधियाँ (साजात्जार, प्रेजज, प्रश्-ावली), अ-ुसंधा-ा अभिजल्प (जार्योत्तर एवं प्रयोजात्मज), सांज्यिजी प्रविधियों जा अ-ुप्रयोज (टी-परीजज, द्विमार्जी ए-ोवा, सहसंबंध, समाश्रयज एवं फैक्टर विश्लेषज), मद अ-ुक्रिया सिद्धांत.

4. मा-ाव व्यवहार जा विजास :
वृद्धि एवं विजास ; विजास जे सिद्धांत, मा-ाव व्यवहार जो -िर्धारित जर-े वाले आ-ुवंशिज एवं पर्यावरजीय जारजों जी भूमिजा; समाजीजरज में सांस्जृतिज प्रभाव; जीव-ा विस्तृति विजास- अभिलजज; विजासात्मज जार्य; जीव-ा विस्तृति जे प्रमुज चरजों में म-ोवैज्ञाि-ज स्वास्थ्य जा संवर्ध-ा.

5. संवेद-ा, अवधा-ा और प्रत्यजज :
संवेद-ा : सीमा जी संजल्प-ाा, -िरपेज एवं -्यू-ातम बोध-भेद देहली, संजेत उपलंभ-ा एवं सतर्जता; अवधा-ा जो प्रभावित जर-े वाले जारज जिसमें वि-यास एवं उद्दीप-ा अभिलजज शामिल हैं. प्रत्यजज जी परिभाषा और संजल्प-ाा, प्रत्यजज में जैविज जारज; प्रात्यजिज संजठ-ा- पूर्व अ-ुभवों जा प्रभाव; प्रात्यजिज रजा- सांतराल एवं जह-ाता प्रत्यज जो प्रभावित जर-े वाले जारज, आमाप आजल-ा एवं प्रात्यजिज तत्परता. प्रत्यजज जी सुजग्रह्यता, अतीन्द्रिय प्रत्यजज, संस्जृति एवं प्रत्यजज, अवसीम प्रत्यजज.

6. अधिजम :
अधिजम जी संजल्प-ाा तथा सिद्धांत (व्यवहारवादी, जेस्टाल्टवादी एवं सूच-ाा प्रक्रमज मॉडल). विलोप, विभेद एवं सामा-यीजरज जी प्रक्रियाएँ; जार्यक्रमबद्ध अधिजम, प्रायिजता अधिजम, आत्म अ-ुदेशात्मज अधिजम; प्रबलीजरज जी संजल्प-ााएँ, प्रजार एवं सारजियाँ; पलाय-ा, परिहार एवं दंड, प्रतिरूपज एवं सामाजिज अधिजम.

7. स्मृति :
संजेत-ा एवं स्मरज; अल्पावधि स्मृति, दीर्घावधि स्मृति, संवेदी स्मृति, प्रतिमापरज स्मृति, अ-ुरज-ा स्मृति; मल्टिस्टोर मॉडल, प्रक्रमज जे स्तर; संजठ-ा एवं स्मृति सुधार जी स्मरजज-ाज तज-ीजें; विस्मरज जे सिद्धांत; जय, व्यक्तिजरज एवं प्रत्या-या-ा विफल-ा; अधिस्मृति; स्मृतिलोप; आघातोत्तर एवं अभिघातपूर्व.

8. चिंत-ा एवं समस्या समाधा-ा :
पियाजे जा संज्ञा-ात्मज विजास जा सिद्धांत; संजल्प-ाा -िर्माज प्रक्रम; सूच-ाा प्रक्रमज, तर्ज एवं समस्या समाधा-ा, समस्या समाधा-ा में सहायज एवं बाधाजारी जारज, समस्या समाधा-ा जी विधियाँ: सृज-ात्मज चिंत-ा एवं सृज-ात्मजता जा प्रतिपोषज; -िर्जय-ा एवं अधि-िर्जय जो प्रभावित जर-े वाले जारज; अभि-ाव प्रवृत्तियाँ.

9. अभिप्रेरज तथा संवेज :
अभिप्रेरज संवेज जे म-ोवैज्ञाि-ज एवं शरीरक्रियात्मज आधार, अभिप्रेरज तथा संवेज जा माप-ा; अभिप्रेरज एवं संवेज जा व्यवहार पर प्रभाव; बाह्य एवं अंतर अभिप्रेरज; आंतर अभिप्रेरज जो प्रभावित जर-े वाले जारज; संवेजात्मज सजमता एवं संबंधित मुद्दे.

10. बुद्धि एवं अभिजमता :
बुद्धि एवं अभिजमता जी संजल्प-ाा, बुद्धि जा स्वरूप एवं सिद्धांत- स्पियरमै-ा, थर्सट-ा, जलफोर्ड बर्-ा-ा, स्टेश-बर्ज एवं जे.पी.दास; संवेजात्मज बुद्धि, सामाजिज बुद्धि, बुद्धि एवं अभिजमता जा माप-ा, बुद्धिलब्धि जी संजल्प-ाा, विचल-ा बुद्धिलब्धि, बुद्धिलब्धि स्थिरता; बहु बुद्धि जा माप-ा; तरल बुद्धि एवं क्रिस्टलित बुद्धि.

11. व्यक्तित्व :
व्यक्तित्व जी संजल्प-ाा तथा परिभाषा; व्यक्तित्व जे सिद्धांत (म-ोविश्लेषजात्मज, सामाजिज-सांस्जृतिज, अंतर्वैयक्तिज, विजासात्मज, मा-ावतावादी, व्यवहारवादी विशेष जुज एंव जाति उपाजम) ; व्यक्तित्व जा माप-ा (प्रजेपी परीजज, पेंसिल-पेपर परीजज) ; व्यक्तित्व जे प्रति भारतीय दृष्टिजोज; व्यक्तित्व विजास हेतु प्रशिजज. -वी-ातम उपाजम जैसे जि बिज-5 फैक्टर सिद्धांत; विभिन्न परंपराओं में स्व जा बोध.

12. अभिवृत्तियाँ, मूल्य एवं अभिरूचियाँ :
अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं अभिरुचियों जी परिभाषाएँ ; अभिवृत्तियों जे घटज ; अभिवृत्तियों जा -िर्माज एवं अ-ुरजज ; अभिवृत्तियों, मूल्यों एवं अभिरुचियों जा माप-ा. अभिवृत्ति परिवर्त-ा जे सिद्धांत, मूल्य प्रतिपोषज जी विधियाँ. रूढ़ धारजाओं एवं पूर्वाग्रहों जा -िर्माज, अ-य जे व्यवहार जो बदल-ाा, जुजारोप जे सिद्धांत, अभि-ाव प्रवृत्तियाँ.

13. भाषा एवं संज्ञाप-ा :
मा-ाव भाषा- जुज, संरच-ाा एवं भाषाजत सोपा-ा; भाषा- अर्ज-ा - पूर्वा-ुजूलता, क्रांतिज अवधि, प्राज्ल्प-ाा; भाषा विजास जे सिद्धांत (स्जी-ार, चोम्स्जी) ; संज्ञाप-ा जी प्रक्रिया एवं प्रजार; प्रभावपूर्ज संज्ञाप-ा एवं प्रशिजज.

14. आधुि-ज समजाली-ा म-ोविज्ञा-ा में मुद्दे एवं परिप्रेज्य :
म-ोवैज्ञाि-ज प्रयोजशाला एवं म-ोवैज्ञाि-ज परीजज में जम्प्यूटर अ-ुप्रयोज; जृत्रिम बुद्धि; साइजोसाइबर-ेटिक्स; चेत-ाा--ींद-जाजरज जार्यक्रमों जा अध्यय-ा; स्व-ा, उद्दीप-ा वंच-ा, ध्या-ा, हि-ोटिज/ औषध प्रेरित दशाएँ; अतीन्द्रिय प्रत्यजज; अंतरीन्द्रिय प्रत्यजज मिथ्याभास अध्यय-ा.

प्रश्-ापत्र-2

म-ोविज्ञा-ा : विषय और अ-ुप्रयोज

1. व्यक्तिजत विभिन्नताओं जा वैज्ञाि-ज माप-ा :
व्यक्तिजत भिन्नताओं जा स्वरूप, मा-ाजीजृत म-ोवैज्ञाि-ज परीजजों जी विशेषताएँ और संरच-ाा, म-ोवैज्ञाि-ज परीजजों जे प्रजार; म-ोवैज्ञाि-ज परीजजों जे उपयोज, दुरुपयोज तथा सीमाएँ. म-ोवैज्ञाि-ज परीजाओं जे प्रयोज में -ीतिपरज विषय.

2. म-ोवैज्ञाि-ज स्वास्थ्य तथा मा-ासिज विजार :
स्वास्थ्य- अस्वास्थ्य जी संजल्प-ाा, सजारात्मज स्वास्थ्य, जल्याज, मा-ासिज विजार (चिंता विजार, म-ा:स्थिति विजार सीजोफ्रेनियाँ तथा भ्रमिज विजार, व्यक्तित्व विजार, तात्विज दुर्व्यवहार विजार), मा-ासिज विजारों जे जारज तत्व, सजारात्मज स्वास्थ्य, जल्याज, जीव-शैली तथा जीव-ा जी जुजवत्ता जो प्रभावित जर-े वाले जारज.

3. चिजित्सात्मज उपाजम :
म-ोजतिज चिजित्साएँ. व्यवहार चिजित्साएँ; रोजीजेन्द्रित चिजित्साएँ, संज्ञा-ात्मज चिजित्साएँ. देशी चिजित्साएँ (योज, ध्या-ा). जैव पु-र्निवेश चिजित्सा. मा-ासिज रूज्जता जी रोजथाम तथा पु-र्स्थाप-ाा. क्रमिज स्वास्थ्य प्रतिपोषज.

4. जार्यात्मज म-ोविज्ञा-ा तथा संजठ-ात्मज व्यवहार :
जार्मिज चय-ा तथा प्रशिजज. उद्योज में म-ोवैज्ञाि-ज परीजजों जा उपयोज. प्रशिजज तथा मा-ाव संसाध-ा विजास. जार्य-अभिप्रेरज सिद्धांत- हर्ज वर्ज, मास्लो, एडम ईक्विटी सिद्धांत, पोर्टर एवं लावलर, ब्रूम ; -ेतृत्व तथा सहभाजी प्रबंध-ा. विज्ञाप-ा तथा विपज-ा. दबाव एवं इसजा प्रबंध-ा; श्रमदजता शास्त्र, उपभोक्ता म-ोविज्ञा-ा, प्रबंधजीय प्रभाविता, रूपांतरज-ेतृत्व, संवेद-ाशीलता प्रशिजज, संजठ-ों में शक्ति एवं राज-ीति.

5. शैजिज जेत्र में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज :
अध्याप-ा-अध्यय-ा प्रक्रिया जो प्रभावी ब-ाा-े में म-ोवैज्ञाि-ज सिद्धांत. अध्यय-ा शैलियाँ. प्रदत्त, मंदज, अध्यय-ा-हेतु-अजम और उ-जा प्रशिजज. स्मरज शक्ति बढ़ा-े तथा बेहतर शैजजिज उपलब्धि जे लिए प्रशिजज. व्यक्तित्व विजास तथा मूल्य शिजा. शैजिज, व्यावसायिज मार्जदर्श-ा तथा जीविजोपार्ज-ा परामर्श. शैजिज संस्थाओं में म-ोवैज्ञाि-ज परीजज. मार्जदर्श-ा जार्यक्रमों में प्रभावी जार्य-ीतियाँ.

6. सामुदायिज म-ोविज्ञा-ा :
सामुदायिज म-ोविज्ञा-ा जी परिभाषा और संजल्प-ाा. सामाजिज जार्यजलाप में छोटे समूहों जी उपयोजिता. सामाजिज चेत-ाा जी जाजृति और सामाजिज समस्याओं जो सुलझा-े जी जार्यवाही. सामाजिज परिवर्त-ा जे लिए सामूहिज -िर्जय ले-ाा और -ेतृत्व प्रदा-ा जर-ाा. सामाजिज परिवर्त-ा जे लिए प्रभावी जार्य -ीतियाँ.

7. पु-र्वास म-ोविज्ञा-ा :
प्राथमिज, माध्यमिज तथा तृतीयज -िवारज जार्यक्रम. म-ोवैज्ञाि-जों जी भूमिजा- शारीरिज, मा-ासिज तथा सामाजिज रूप से चु-ौती प्राप्त व्यक्तियों, जैसे वृद्ध व्यक्तियों जे पु-र्वास-ा जे लिए सेवाओं जा आयोज-ा. पदार्थ दुरूपयोज, जिशोर अपराध, आपराधिज व्यवहार से पीड़ित व्यक्तियों जा पु-र्वास. हिंसा जे शिजार व्यक्तियों जा पु-र्वास. HIV/AIDS रोजियों जा पु-र्वास. सामाजिज अभिजरजों जी भूमिजा.

8. सुविधावंचित समूहों पर म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज :
सुविधावंचित, वंचित जी संजल्प-ााएँ, सुविधावंचित तथा वंचित समूहों जे सामाजिज, भौतिज, सांस्जृतिज तथा आर्थिज परिजाम. सुविधावंचितों जा विजास जी ओर शिजज तथा अभिप्रेरज. सापेज एवं दीर्घजालिज वंच-ा.

9. सामाजिज एजीजरज जी म-ोवैज्ञाि-ज समस्या :
सामाजिज एजीजरज जी संजल्प-ाा. जाति, वर्ज, धर्म, भाषा विवादों और पूर्वाग्रह जी समस्या. अंतर्समूह तथा बहिर्समूह जे बीच पूर्वाग्रह जा स्वरूप तथा अभिव्यक्ति. ऐसे विवादों और पूर्वाग्रहों जे जारज तत्व. विवादों और पूर्वाग्रहों से -िपट-े जे लिए म-ोवैज्ञाि-ज -ीतियाँ. सामाजिज एजीजरज पा-े जे उपाय.

10. सूच-ाा प्रौद्योजिजी और ज-ासंचार में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज :
सूच-ाा प्रौद्योजिजी और ज-ा-संचार-जूँज जा वर्तमा-ा परिदृश्य और म-ोवैज्ञाि-जों जी भूमिजा. सूच-ाा प्रौद्योजिजी और ज-ा संचार जेत्र में जार्य जे लिए म-ोविज्ञा-ा व्यवसायियों जा चय-ा और प्रशिजज. सूच-ाा प्रौद्योजिजी और ज-ा-संचार माध्यम से दूरस्थ शिजज. ई-जॉमर्स जे द्वारा उद्यमशीलता. बहुस्तरीय विपज-ा, दूरदर्श-ा जा प्रभाव एवं सूच-ाा प्रौद्योजिजी और ज-ा-संचार जे द्वारा मूल्य प्रतिपोषज. सूच-ाा प्रौद्योजिजी में अभि-ाव विजास जे म-ोवैज्ञाि-ज परिजाम.

11. म-ोविज्ञा-ा तथा आर्थिज विजास :
उपलब्धि, अभिप्रेरज तथा आर्थिज विजास. उद्यमशील व्यवहार जी विशेषताएँ. उद्यमशीलता तथा आर्थिज विजास जे लिए लोजों जा अभिप्रेरज तथा प्रशिजज. उपभोक्ता अधिजार तथा उपभोक्ता संचेत-ाा. महिला उद्यमियों समेत युवाओं में उद्यमशीलता जे संवर्ध-ा जे लिए सरजारी -ीतियाँ.

12. पर्यावरज तथा संबद्ध जेत्रों में म-ोविज्ञा-ा जा अ-ुप्रयोज:
पर्यावरजीय म-ोविज्ञा-ा- ध्वि-ा, प्रदूषज तथा भीड़भाड़ जे प्रभाव. ज-ासंज्या म-ोविज्ञा-ा - ज-ासंज्या विस्फोट-ा और उच्च ज-ासंज्या घ-ात्व जे म-ोवैज्ञाि-ज परिजाम. छोटे परिवार जे मा-दंड जा अभिप्रेरज. पर्यावरज जे अवक्रमज पर द्रुत वैज्ञाि-ज और प्रौद्योजिजीय विजास जा प्रभाव.

13. म-ोविज्ञा-ा जे अ-य अ-ुप्रयोज :

(ज) सै-य म-ोविज्ञा-ा :
चय-ा, प्रशिजज, परामर्श में प्रयोज जे लिए रजा जार्मिजों जे लिए म-ोवैज्ञाि-ज परीजजों जी रच-ाा; सजारात्मज स्वास्थ्य संवर्ध-ा जे लिए रजा जार्मिजों जे साथ जार्य जर-े जे लिए म-ोवैज्ञाि-जों जा प्रशिजज; रजा में मा-ाव-इंजी-ियरी.

(ज) जेल म-ोविज्ञा-ा :
एथलीटों एवं जेलों जे -िष्पाद-ा में सुधार में म-ोवैज्ञाि-ज हस्तजेप; व्यष्टि एवं टीम जेलों में भाज ले-े वाले व्यक्ति.

(ज) समाजो-मुज एवं समाजविरोधी व्यवहार पर संचार माध्यमों जा प्रभाव,

(घ) आतंजवाद जा म-ोविज्ञा-ा.

14. लिंज जा म-ोविज्ञा-ा :
भेदभाव जे मुद्दे, विविधता जा प्रबंध-ा ; ज्लास सीलिंज प्रभाव, स्वत: साधज भविष्योक्ति, -ारी एवं भारतीय समाज.

लोज प्रशास-ा

प्रश्-ापत्र-1

प्रशासि-ज सिद्धांत

1. प्रस्ताव-ाा:
लोज प्रशास-ा जा अर्थ, विस्तार तथा महत्व, विल्स-ा जे दृष्टिजोज से लोज प्रशास-ा, विषय जा विजास तथा इसजी वर्तमा-ा स्थिति, -या लोज प्रशास-ा, लोज विजल्प उपाजम, उदारीजरज जी चु-ौतियां, -िजीजरज, भूमंडलीजरज; अच्छा अभिशास-ा : अवधारजा तथा अ-ुप्रयोज, -या लोज प्रबंध.

2. प्रशासि-ज चिंत-ा :
वैज्ञाि-ज प्रबंध और वैज्ञाि-ज प्रबंध आंदोल-ा, क्लासिजी सिद्धांत, वेबर जा -ौजरशाही मॉडल, उसजी आलोच-ाा और वेबर पश्चात् जा विजास, जतिशील प्रशास-ा (मेयो पार्जर फॉले), मा-ाव संबंध स्कूल (एल्टो-ा मेयो तथा अ-य), जार्यपालिजा जे जार्य (सी.आई. ब-ार्ड), साइम-ा -िर्जय-ा सिद्धांत, भाजीदारी प्रबंध (मैज ग्रेजर, आर. लिजर्ट, सी. आर्जीरिस).

3. प्रशासि-ज व्यवहार :
-िर्जय-ा प्रक्रिया एवं तज-ीज, संचार, म-ोबल, प्रेरजा सिद्धांत - अंतर्वस्तु, प्रक्रिया एवं समजाली-ा; -ेतृत्व सिद्धांत : पारंपरिज एवं आधुि-ज.

4. संजठ-ा :
सिद्धांत - प्रजाली, प्रासंजिजता; संरच-ाा एवं रूप : मंत्रालय तथा विभाज, -िजम, जंप-ियां, बोर्ड तथा आयोज - तदर्थ तथा परामर्शदाता -िजाय मुज्यालय तथा जेत्रीय संबंध. -ियामज प्राधिजारी; लोज - -िजी भाजीदारी.

5. उत्तरदायित्व तथा -ियंत्रज :
उत्तरदायित्व और -ियंत्रज जी संजल्प-ााएं, प्रशास-ा पर विधायी, जार्यजारी और -यायिज -ियंत्रज. -ाजरिज तथा प्रशास-ा; मीडिया जी भूमिजा, हित समूह, स्वैच्छिज संजठ-ा, सिविल समाज, -ाजरिजों जा अधिजार-पत्र (चार्टर). सूच-ाा जा अधिजार, सामाजिज लेजा परीजा.

6. प्रशासि-ज जा-ू-ा :
अर्थ, विस्तार और महत्व, प्रशासि-ज विधि पर Dicey, प्रत्यायोजित विधा-ा - प्रशासि-ज अधिजरज.

7. तुल-ात्मज लोज प्रशास-ा :
प्रशासि-ज प्रजालियों पर प्रभाव डाल-े वाले ऐतिहासिज एवं समाज वैज्ञाि-ज जारज; विभिन्न देशों में प्रशास-ा एवं राज-ीति; तुल-ात्मज लोज प्रशास-ा जी अद्यत-ा स्थिति; पारिस्थितिजी एवं प्रशास-ा; रिज्सिय-ा मॉडल एवं उ-जे आलोचज.

8. विजास जतिजी :
विजास जी संजल्प-ाा; विजास प्रशास-ा जी बदलती परिच्छेदिजा; 'विजास विरोधी अभिधारजा'; -ौजरशाही एवं विजास; शक्तिशाली राज्य ब-ाम बाजार विवाद; विजासशील देशों में प्रशास-ा पर उदारीजरज जा प्रभाव; महिला एवं विजास स्वसहायता समूह आंदोल-ा.

9. जार्मिज प्रशास-ा :
मा-ाव संसाध-ा विजास जा महत्व, भर्ती प्रशिजज, जीविजा विजास, हैसियत वर्जीजरज, अ-ुशास-ा, -िष्पाद-ा मूल्यांज-ा, पदो-्नति, वेत-ा तथा सेवा शर्तें, -ियोक्ता-जर्मचारी संबंध, शिजायत -िवारज क्रिया विधि, आचरज संसिहता, प्रशासि-ज आचार--ीति.

10. लोज -ीति :
-ीति -िर्माज जे माडल एवं उ-जे आलोचज; संप्रत्ययीजरज जी प्रक्रियाएं, आयोज-ा, जार्या-वय-ा, मा-ीटर-ा, मूल्यांज-ा एवं पु-रीजा एवं उ-जी सीमाएं; राज्य सिद्धांत एवं लोज -ीति सूत्रज.

11. प्रशासि-ज सुधार तज-ीजें :
संजठ-ा एवं पद्धति, जार्य अध्यय-ा एवं जार्य प्रबंध-ा; ई-जव-ेंस एवं सूच-ाा प्रौद्योजिजी; प्रबंध-ा सहायता उपजरज जैसे जि -ेटवर्ज विश्लेषज, MIS, PERT, CPM

12. वित्तीय प्रशास-ा :
वित्तीय तथा राजजोषीय -ीतियां, लोज उधार ग्रहज तथा लोज ऋज. बजट प्रजार एवं रूप, बजट - प्रक्रिया, वित्तीय जवाबदेही, लेजा तथा लेजा परीजा.

प्रश्-ापत्र - 2

भारतीय प्रशास-ा

1. भारतीय प्रशास-ा जा विजास :
जौटिल्य जा अर्थशास्त्र; मुजल प्रशास-ा; राज-ीति एवं प्रशास-ा में ब्रिटिश शास-ा जा रिक्थ - लोज सेवाओं जा भारतीयजरज, राजस्व प्रशास-ा, जिला प्रशास-ा, स्था-ीय स्वशास-ा.

2. सरजार जा दार्शि-ज एवं सांविधाि-ज ढांचा :
प्रमुज विशेषताएं एवं मूल्य आधारिजाएं; संविधा-वाद;

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

राज-ैतिज संस्कृति;-ौज रशाही एवं लोज तंत्र; -ौज रशाही एवं विज ास.

3. सार्वजनि-ज जेत्र जे उपज म :

आधुनि-ज भारत में सार्वजनि-ज जेत्र;सार्वजनि-ज जेत्र उपज मों जे रूप; स्वायत्ता, जवाबदेही एवं नियंत्रज जी समस्याएं; उदारीज रज एवं नि-जीज रज ज ा प्रभाव.

4. संघ सरज ार एवं प्रशास-ा :

ज ार्य पालिज ा, संसद, विधायिज ा - संरच-ा, ज ार्य, ज ार्य प्रक्रियाएं;हाल जी प्रवृतियां; अंतराशासजीय संबंध; जै बि-ेट सचिवालय, प्रधा-ामंत्री ज ार्यालय; जेंद्रीय सचिवालय; मंत्रालय एवं विभाज; बोर्ड, आयोज, संबद्ध ज ार्यालय; जेत्र संजठ-ा.

5. योज-ाएं एवं प्राथमिज ताएं :

योज-ा मशी-री; योज-ा आयोज एवं राष्ट्रीय विज ास परिषद जी भूमिज ा, रच-ा एवं ज ार्य; 'संजे तात्मज ' आयोज-ा; संघ एवं राज्य स्तरों पर योज-ा नि-र्माज प्रक्रिया; संविधा-ा संशोध-ा (1992) एवं आर्थिज विज ास तथा सामाजिज -याय हेतु विजें द्रीज रज आयोज-ा .

6. राज्य सरज ार एवं प्रशास-ा :

संघ - राज्य प्रशासनि-ज , विधायी एवं वित्तीय संबंध; वित्त आयोज जी भूमिज ा; राज्यपाल; मुज्यमंत्री; मंत्रिपरिषद; मुज्य सचिव; राज्य सचिवालय; नि-देशालय.

7. स्वतंत्रता जे बाद से जिला प्रशास-ा :

ज लेक्टर जी बदलती भूमिज ा; संघ - राज्य - स्था-ीय संबंध; विज ास प्रबंध एवं विधि एवं अ-य प्रशास-ा जे विध्यर्थ; जिला प्रशास-ा एवं लोज तांत्रिज विजें द्रीज रज.

8. सिविल सेवाएं :

सांविधानि-ज स्थिति; संरच-ा, भर्ती, प्रशिजज एवं जमता नि-र्माज; सुशास-ा की पहल; आचरज संहिता एवं अ-ुशास-ा; ज र्मचारी संघ; राज-ीतिज अधिज ार; शिज ायत नि-वारज प्रक्रियाविधि; सिविल सेवा जी तटस्थता; सिविल सेवा सक्रि यतावाद.

9. वित्तीय प्रबंध :

राज-ीतिज उपज रज जे रूप में बजट; लोज व्यय पर संसदीय नि-यंत्रज; मौद्रिज एवं राजजोषीय जेत्र में वित्त मंत्रालय जी भूमिज ा; लेजाज रज तज -ीज ; लेजापरीजा; लेजा महानि-यंत्रज एवं भारत जे नि-यंत्रज एवं महालेजा परीजज जी भूमिज ा.

10. स्वतंत्रता जे बाद से हुए प्रशासनि-ज सुधार :

प्रमुज सरोज ार; महत्वपूर्ज समितियां एवं आयोज; वित्तीय प्रबंध एवं मा-ाव संसाध-ा विज ास में हुए सुधार; ज ार्या-वय-ा जी समस्याएं.

11. ज ामीज विज ास :

स्वतंत्रता जे बाद से संस्था-ा एवं अभिज रज;ज ामीज विज ास ज ार्यक्रम;फोज स एवं ज ार्य-ीतियां; विजे -द्रीज रज पंचायती राज; 73वां संविधा-ा संशोध-ा.

12. -ाजरीय स्था-ीय शास-ा :

-ाजरपालिज ा शास-ा : मुज्य विशेषताएं, संरच-ा, वित्त एवं समस्या जेत्र, 74वां संविधा-ा संशोध-ा; विश्वव्यापी स्था-ीय विवाद; -ाया स्थानि-ज तावाद; विज ास जतिजी; -ाजर प्रबंध जे विशेष संदर्भ में राज-ीति एवं प्रशास-ा.

13. ज ा-ू-ा व्यवस्था प्रशास-ा :

ब्रिटिश रिक्थ; राष्ट्रीय पुलिस आयोज; जांच अभिज रज; विधि व्यवस्था ब-ाए रज-े तथा उपप्लव एवं आतंज वाद ज ा साम-ा ज र-े में पैरामिलिटरी बलों समेत जें द्रीय एवं राज्य अभिज रजों जी भूमिज ा; राज-ीति एवं प्रशास-ा ज ा अपराधीज रज; पुलिस लेज संबंध; पुलिस में सुधार.

14. भारतीय प्रशास-ा में महत्वपूर्ज मुद्दे :

लोज सेवा में मूल्य; नि-यामज आयोज; राष्ट्रीय मा-ावाधिज ार आयोज; बहुदलीय शास-ा प्रजाली में प्रशास-ा जी समस्याएं; -ाजरिज प्रशास-ा अंतराफलज ; भ्रष्टाचार एवं प्रशास-ा; विपदा प्रबंध-ा.

समाजशास्त्र

प्रश्-ापत्र-1

समाजशास्त्र जे मूलभूत सिद्धांत

1. समाजशास्त्र : विद्याशाजा :

(ज) यूरोप में आधुनि-ज ता एवं सामाजिज परिवर्त-ा तथा समाजशास्त्र ज ा आविर्भाव.

(ज) समाजशास्त्र ज ा विषय-जेत्र एवं अ-य सामाजिज विज्ञा-ों से इसजी तुल-ा.

(ज) समाजशास्त्र एवं सामा-य बोध

2. समाजशास्त्र विज्ञा-ा जे रूप में :

(ज) विज्ञा-ा, वैज्ञानि-ज पद्धति एवं समीजा

(ज) अ-ुसंधा-ा प्रक्रियाविधि जे प्रमुज सैद्धांतिज तत्व

(ज) प्रत्यजवाद एवं इसजी समीजा

(घ) तथ्य, मूल्य एवं उद्देश्यपरज ता

(ङ) अ-प्रत्यजवादी प्रक्रियाविधियाँ

3. अ-ुसंधा-ा पद्धतियाँ एवं विश्लेषज :

(ज) जुजात्मज एवं मात्रात्मज पद्धतियाँ

(ज) दत्त संग्रहज जी तज -ीज

(ज) परिवर्त, प्रतिचय-ा, प्राक्ज ल्प-ा, विश्वस-ीयता एवं वैधता.

4. समाजशास्त्री चिंतज :

(ज) ज ार्लमार्क्स- ऐतिहासिज भौतिज वाद, उत्पाद-ा विधि, विसंबंध-ा, वर्ज संघर्ष.

(ज) इमाईल दुर्जीम- श्रम विभाज-ा, सामाजिज तथ्य, आत्महत्या, धर्म एवं समाज.

(ज) मैक्स वेबर- सामाजिज प्रक्रिया, आदर्श प्ररूप, सत्ता, अधिज ारीतंत्र, प्रोटेस्टैंट -ीतिशास्त्र और पूंजीवाद जी भाव-ा.

(घ) तालज ॉट पार्स-स- सामाजिज व्यवस्था, प्रतिरूप परिवर्त.

(ङ) रॉबर्ट जे .मर्ट-ा- अव्यक्त तथा अभिव्यक्त प्रज ार्य, अ-ुरूपता एवं विसामा-यता, संदर्भ समूह

(च) मीड- आत्म एवं तादात्म्य

5. स्तरीज रज एवं जतिशीलता :

(ज) संज ल्प-ाएँ- समा-ाता, असमा-ाता, अधिक्रम, अपवर्ज-ा, जरीबी एवं वंच-ा.

(ज) सामाजिज स्तरीज रज जे सिद्धांत- संरच-ात्मज प्रज ार्यवादी सिद्धांत, मार्क्सवादी सिद्धांत, वेबर ज ा सिद्धांत.

(ज) आयाम- वर्ज, स्थिति समूहों, लिंज, -ृजातीयता एवं प्रजाति ज ा सामाजिज स्तरीज रज.

(घ) सामाजिज जतिशीलता- जुली एवं बंद व्यवस्थाएँ, जतिशीलता जे प्रज ार, जतिशीलता जे स्रोत एवं ज ारज.

6. ज ार्य एवं आर्थिज जीव-ा :

(ज) विभिन्न प्रज ार जे समाजों में जर्य ज ा सामाजिज संजठ-ा- दास समाज, सामंती समाज, औद्योजिज/ पूँजीवादी समाज.

(ज) ज ार्य ज ा औपचारिज एवं अ-ौपचारिज संजठ-ा.

(ज) श्रम एवं समाज

7. राज-ीति एवं समाज :

(ज) सत्ता जे समाजशास्त्रीय सिद्धांत.

(ज) सत्ता प्रव्रज ा, अधिज ारीतंद्ध, दबाव समूह, राज-ैतिज दल.

(ज) राष्ट्र, राज्य, -ाजरिज ता, लोज तंत्र, सिविल समाज, विचारधारा.

(घ) विरोध, आंदोल-ा, सामाजिज आंदोल-ा, सामूहिज क्रि या, क्रांति.

8. धर्म एवं समाज :

(ज) धर्म जे समाजशास्त्रीय सिद्धांत.

(ज) धार्मिज ज र्म जे प्रज ार : जीववाद, एज तत्ववाद, बहुतत्ववाद, पंथ, उपास-ा पद्धतियाँ.

(ज) आधुनि-ज समाज में धर्म : धर्म एवं विज्ञा-ा, धर्मनि-रपेजीज रज, धार्मिज पु-ा:प्रवर्त-ावाद, मूलतत्ववाद.

9. -ातेदारी जी व्यवस्थाएँ :

(ज) परिवार, जहस्थी, विवाह.

(ज) परिवार जे प्रज ार एवं रूप.

(ज) वंश एवं वंशा-ुक्रम.

(घ) पितृतंत्र एवं श्रम ज ा लिंजाधारित विभाज-ा.

(ङ) समसामयिज प्रवृत्तियाँ.

10. आधुनि-ज समाज में सामाजिज परिवर्त-ा :

(ज) सामाजिज परिवर्त-ा जे समाजशास्त्रीय सिद्धांत.

(ज) विज ास एवं पराश्रितता.

(ज) सामाजिज परिवर्त-ा जे ज ारज .

(घ) शिजा एवं सामाजिज परिवर्त-ा.

(ङ) विज्ञा-ा, प्रौद्योजिजी एवं सामाजिज परिवर्त-ा.

प्रश्-ापत्र-2

भारतीय समाज : संरच-ा एवं परिवर्त-ा

ज. भारतीय समाज ज ा परिचय :

(i) भारतीय समाज जे अध्यय-ा जे परिप्रेज्य

(ज) भारतीय विद्या (जी. एस. घुर्ये)

(ज) संरच-ात्मज प्रज ार्यवाद (एम. ए-ा. श्रीनि-वास)

(ज) मार्क्सवादी समाजशास्त्र (ए. आर. देसाई)

(ii) भारतीय समाज पर औपनि-वेशिज शास-ा ज ा प्रभाव

(ज) भारतीय राष्ट्रवाद जी सामाजिज पृष्ठभूमि

(ज) भारतीय परंपरा ज ा आधुनि-जीज रज.

(ज) औपनि-वेशिज ज ाल जे दौरा-ा विरोध एवं आंदोल-ा

(घ) सामाजिज सुधार.

ज. सामाजिज संरच-ा :

(i) ग्रामीज एवं कृषिज सामाजिज संरच-ा

(ज) भारतीय ग्राम ज ा विचार एवं ग्राम अध्यय-ा.

(ज) कृषिज सामाजिज संरच-ा- पट्टेदारी प्रजाली ज ा विज ास, भूमि सुधार

(ii) जाति व्यवस्था

(ज) जाति व्यवस्था जे अध्यय-ा जे परिप्रेज्य- (जी. एस. घुर्ये, एम. ए-ा. श्रीनि-वास, लुई द्यूमाँ, आ-द्रे बेतेय).

(ज) जाति व्यवस्था जे अभिलजज

(ज) अस्पृश्यता - रूप एवं परिप्रेज्य.

(iii) भारत में ज -ाजातीय समुदाय

(ज) परिभाषीय समस्याएँ.

(ज) भौजोलिज विस्तार.

(ज) औपनि-वेशिज -ीतियाँ एवं ज -ाजातियाँ.

(घ) एजीज रज एवं स्वायत्ता जे मुद्दे.

(iv) भारत में सामाजिज वर्ज

(ज) कृषिज वर्ज संरच-ा.

(ज) औद्योजिज वर्ज संरच-ा.

(ज) भारत में मध्यम वर्ज

(v) भारत में -ातेदारी जी व्यवस्थाएँ

(ज) भारत में वंश एवं वंशा-ुक्रम.

(ज) -ातेदारी व्यवस्थाओं जे प्रज ार.

(ज) भारत में परिवार एवं विवाह.

(घ) परिवार घरेलू आयाम.

(ङ) पितृतंत्र, हज दारी एवं श्रम ज ा लिंजाधारित विभाज-ा

(vi) धर्म एवं समाज

(ज) भारत में धार्मिज समुदाय

(ज) धार्मिज अल्पसंज्यजों जी समस्याएँ.

ज. भारत में सामाजिज परिवर्त-ा :

(i) भारत में सामाजिज परिवर्त-ा जी दृष्टियाँ

(ज) विज ास आयोज-ा एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था ज ा विचार.

(ज) संविधा-ा, विधि एवं सामाजिज परिवर्त-ा.

(ज) शिजा एवं सामाजिज परिवर्त-ा.

(ii) भारत में ज ामीज एवं कृ षिज रूपांतरज

(ज) ज ामीज विज ास ज ार्यक्रम, समुदाय विज ास ज ार्यक्रम, सहज ारी संस्थाएं, जरीबी उल्मूल-ा योज-ाएं.

(ज) हरित क्रांति एवं सामाजिज परिवर्त-ा.

(ज) भारतीय कृषि में उत्पाद-ा जी बदलती विधियाँ.

(घ) ज ामीज मज़दूर, बँधुआ एवं प्रवास-ा जी समस्याएं.

(iii) भारत में औद्योजिजीज रज एवं -ाजरीज रज

(ज) भारत में आधुनि-ज उद्योज ज ा विज ास.

(ज) भारत में -ाजरीय बस्तियों जी वृद्धि.

(ज) श्रमिज वर्ज : संरच-ा, वृद्धि, वर्ज संघट-ा.

(घ) अ-ौपचारिज जेत्रज , बाल श्रमिज .

(ङ) -ाजरी जेत्रों में जंदी बस्ती एवं वंच-ा.

(iv) राज-ीति एवं समाज

(ज) राष्ट्र, लोज तंत्र एवं -ाजरिज ता.

(ज) राज-ैतिज दल, दबाव समूह, सामाजिज एवं राज-ैतिज प्रव्रज ा.

(ज) जेत्रीयतावाद एवं सत्ता ज ा विजे -द्रीज रज.

(घ) धर्मनि-रपेजीज रज.

(v) आधुनि-ज भारत में सामाजिज आंदोल-ा

(ज) कृषज एवं जि सा-ा आंदोल-ा.

(ज) महिला आंदोल-ा.

(ज) पिछड़ा वर्ज एवं दलित आंदोल-ा.

(घ) पर्यावरजीय आंदोल-ा.

(ङ) -ृजातीयता एवं अभिज्ञा-ा आंदोल-ा.

(vi) ज -ासंज्या जतिजी

(ज) ज -ासंज्या आज ार, वृद्धि संघट-ा एवं वितरज.

(ज) ज -ासंज्या वृद्धि जे घटज : ज -म, मृत्यु, प्रवास-ा.

(ज) ज -ासंज्या -ीति एवं परिवार नि-योज-ा.

(घ) उभरते हुए मुद्दे : ज ालप्रभाव-ा, लिंज अ-ुपात, बाल एवं शिशु मृत्युदर, ज -ा-ा स्वास्थ्य.

(vii) सामाजिज रूपांतरज जी चु-ौतियाँ

(ज) विज ास ज ा संज ट : विस्थाप-ा, पर्यावरजीय समस्याएं एवं संपोषजीयता.

(ज) जरीबी, वंच-ा एवं असमा-ताएँ.

(ज) स्त्रियों जे प्रति हिंसा.

(घ) जाति द्व-द्व.

(ङ) -ृजातीय द्व-द्व, सांप्रदायिज ता, धार्मिज पु-ा:प्रवर्त-ावाद.

(च) असाजरता तथा शिजा में असमा-ताएं.

सांज्यिजी

प्रश्-ापत्र- 1

प्रायिज ता :

प्रतिदर्श समष्टि एवं अ-ुवृत्त, प्रायिज ता माप एवं प्रायिज ता समस्टि,मेयफल-ा जे रुप में यादृच्छिज चर, यादृच्छिज चर ज ा बंट-ा फल-ा, असंतत एवं संतत-प्ररुप यादृच्छिज चर, प्रायिज ता द्रव्यमा-ा फल-ा,प्रायिज ता घ-ात्व-फल-ा,सदिशमा-ा यादृच्छिज चर, उपांत एवं सप्रतिबंध बंट-ा,अ-ुवृत्तों ज ा एवं यादृच्छिज चरों ज ा प्रसंभाव्य स्वातंत्र्य, यादृच्छिज चर जी प्रत्याशा एवं आघूर्ज, सप्रतिबंध प्रत्याशा, यादृच्छिज चर ज ा अ-ुक्रम में अभिसरज,बंट-ा में, प्रायिज ता में p-th माध्य में, एवं लजभज हर जजह, उ-ाज ा नि-ज ष एवं अंतसंबंध, शेबीशेव असमिज ा तथा जिंशि-ा ज ा वृहद् संज्याओं ज ा दुर्बल नि-यम, वृहद् संज्याओं ज ा प्रबल नि-यम एवं जोल्मोजोरोफ प्रमेय, प्रायिज ता ज -ा-ा फल-ा, आघूर्ज ज -ा-ा फल-ा, अभिलजज फल-ा, प्रतिलोम-ा प्रमेय, जें द्रीय सीमा प्रमेय जे लिंडरबर्ज एवं लेवी प्ररुप, मा-ाज असंतत एवं संतत प्रायिज ता बंट-ा.

सांज्यिजीय अ-ुमिति :

संजति, अ-ाभि-तता, दजता,पूर्जता, सहायज आँज ड़े, जुज -ाजंड-ा -प्रमेय, बंट-ा चरघांताजी ुल और इसजे जुजधर्म, एज समा-ा अल्पतम-प्रसरज अ-ाभि-ात (UMVU) आज ल-ा, राव-ब्लैज वेल एवं लेहमै-ा-शीफ प्रमेय, एज ल प्राचल जे लिए क्रेमर-राव असमिज ा, आघूर्ज विधियों द्वारा आज ल-ा, अधिज तम संभाविता, अल्पतम वर्ज, -यू-ातम ज ाई-वर्ज एवं रूपांतरित -यू-ातम ज ाई-वर्ज, अधिज तम संभाविता एवं अ-य आज लजों जे जुजधर्म, उपजामी दजता, पूर्व एवं पश्च बंट-ा, हानि फल-ा, जोजिम फल-ा तथा अल्पमहिष्ठ आज लज , बेज आज लज अयादृच्छिजीकृ त तथा यादृच्छिजीकृ त परीजज, क्रांतिज फल-ा, MP परीजज, -ेमै-ा-पिअर्स-ा प्रमेयिज ा, UMP परीजज, एज दिष्ट संभाविता अ-ुपात, समरुप एवं अ-ाभि-ात परीजज, एज ल प्राचल जे लिए UMPU परीजज, संभाविता अ-ुपात परीजज एवं इसज ा उपजामी बंट-ा. विश्वास्यता परिबंध एवं परीजजों जे साथ इसज ा संबंध.

समंज-ा-सुष्ठुता एवं इसजी संजति जे लिए जोल्मोजोरोफ परीजज, चिह्-ा परीजज एवं इसज ा इष्टतमत्व. विलज ॉक्स-ा चिह्-ात-जोटि परीजज एवं इसजी संजति, जोल्मोजोरोफ-स्मिर-ोफ द्वि-प्रतिदर्श परीजज, र-ा परीजज,विलज ॉक्स-ा-मै-ा व्हिट-ी परीजज एवं माध्यिज ा परीजज, उ-ाजी संजति तथा उपजामी प्रसामा-यता.

वाल्ड ज ा SPRT एवं इसजे जुजधर्म, ब-ूंली,प्वासों, प्रसामा-य एवं चरघातांजी बंट-ों जे लिए प्राचलों जे बारे में परीजजों जे लिए OC एवं ASN फल-ा. वाल्ड ज ा मूल तत्समज .

रैजिज अ-ुमिति एवं बहुचर विश्लेषज

रैजिज सांज्यिजीय नि-दर्श, -यू-ातमवर्ज सिद्धांत एवं प्रसरज विश्लेषज, जॉस-मारज ोफ सिद्धांत, प्रसामा-य समीज रज, -यू-ातमवर्ज आज ल-ा एवं उ-ाजी परिशुद्धता, एज मार्जी, द्विमार्जी एवं त्रिमार्जी वर्जीकृ त -यास में-यू-ातमवर्ज सिद्धांत पर आधारित अंतराल आज ल तथा सार्थज ता परीजज, समाश्रयज विश्लेषज रैजिज समाश्रयज, वज्रेजी समाश्रयज एवं लांबिज बहुपद, बहुसमाश्रयज, बहु एवं आंशिज सहसंबंध, प्रसरज एवं सहप्रसरज घटज आज ल-ा, बहुचर प्रसामा-य बंट-ा, महाल-ोबिस-D^2 एवं हॉटेलिंज T^2 आँज ड़े तथा उ-ाज ा अ-ुप्रयोज एवं जुजधर्म, विविक्तज र विश्लेषज, विहित सहसंबंध, मुज्य घटज विश्लेषज.

प्रतिचय-ा सिद्धांत एवं प्रयोज अभिज ल्प

स्थिर-समष्टि एवं अधि-समष्टि उपाजमों जी रुपरेजा, परिमित समष्टि प्रतिचय-ा जे विविक्तज ारी लजज,प्रायिज ता प्रतिचय-ा अभिज ल्प, प्रतिस्थाप-ा जे साथ या उसजे बि-ा सरल यादृच्छिज प्रतिचय-ा,स्तरित यादृच्छिज प्रतिचय-ा, क्रमबद्ध प्रतिचय-ा एवं इसजी जमता, जुच्छ प्रतिचय-ा, द्विचरज एवं बहुचरज प्रतिचय-ा, एज या दो सहायज चर शामिल ज रते हुए आज ल-ा जी अ-ुपात एवं समाश्रयज विधियां,द्विप्रावस्था प्रतिचय-ा, प्रतिस्थाप-ा जे साथ या उसजे बि-ा आमाप आ-ुपातिज प्रायिज ता, हैंसे-ा-हरविट्ज एवं हॉरविट्ज-थॉम्पस-ा आज लज , हॉरविट्ज-थॉम्पस-ा,आज लज जे संदर्भ मे क्रजेतर

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

प्रसरज आज्लन, अप्रतिचयन त्रुटियां. नियम प्रभाव निदर्श (द्विमार्जी वर्जीज्रज) यादृच्छिज एवं मिश्रित प्रभाव निदर्श (प्रतिसेल समान प्रेक्षज ज्े साथ द्विमार्जी वर्जीज्रज) CRD,RBD,LSD एवं उनज्े विश्लेषज, अपूर्ज ब्लॉज अभिज्ल्प, लांबिज्ता एवं संतुलन ज्ी संज्ल्पनाएं, BIBD, अप्राप्त जेत्रज प्रविधि, बहु-उपादानी प्रयोज तथा बहु-उपादानी प्रयोज में 2^n एवं 3^2 संज्रज, विभक्त जेत्र एवं सरल जालज अभिज्ल्पना, ऑज्ड़ा रुपांतरज डंज्न ज्ा बहुपरासी परीजज.

प्रश्न-पत्र-2

I. औद्योगिज सांख्यिज्ी :

प्रज्रिया एवं उत्पाद नियंत्रज, नियंत्रज, चार्टो ज्ा सामान्य सिद्धांत, चरों एवं जुजों ज्े लिए विभिन्न प्रज्ार ज्े नियंत्रज चार्ट, X, R,s,p,np एवं C-चार्ट, संचयी योज चार्ट। जुजों ज्े लिए एज्शः, द्विशः बहुज् एवं अनुज्रमिज प्रतिचयन योजनाएं, OC, ASN, AOQ एवं ATI वज्र, उत्पादज् एवं उपभोक्ता जोखिम ज्ी संज्ल्पनाएं, AQL, LTPD एवं AOQL, चरों ज्े लिए प्रतिचयन योजना, डॉज-रोमिज सारजियों ज्ा प्रयोज.

विश्वास्यता ज्ी संज्ल्पना, विफलता दर एवं विश्वास्यता फलन, श्रेजियों, समांतर प्रजालियों एवं अन्य सरल विन्यासों ज्ी विश्वास्यता, नवीज्रज घनत्व एवं नवीज्रज फलन, विफलता प्रतिदर्श : चरघातांज्ी, वीबुल, प्रसामान्य, लॉज प्रसामान्य.

आयु परीजज में समस्याएं, चरघातांज्ी निदर्शों ज्े लिए जंडवर्जित एवं रुंदित प्रयोज.

II. इष्टतमीज्रज प्रविधियां :

संज्रिया विज्ञान में विभिन्न प्रज्ार ज्े निदर्श, उनज्ी रचना एवं हल ज्ी सामान्य विधियां, अनुज्ार एवं मॉन्टे-ज्ार्लो विधियां, रैखिज प्रोग्राम (LP) समस्या ज्ा सूत्रीज्रज, सरल LP निदर्श एवं इसज्ा आलेखीय हल, प्रसमुच्चय प्रज्रिया, ज्ृत्रिम चरों ज्े साथ M-प्रविधि एवं द्विप्रावस्था विधि, LP ज्ा द्वैध सिद्धांत एवं इसज्ी आर्थिज विवजा, सुजाहिता विश्लेषज, परिवहन एवं नियतन समस्या, आयतीय जेल, दो - व्यक्ति शून्य योज जेल, हल विधियां (आलेखीय एवं बीजीय) ।

ह्रासशील एवं विज्ृत मदों ज्ा प्रतिस्थापन, समूह एवं व्यष्टि प्रतिस्थापन नीतियां, वैज्ञानिज सामज्री - सूची प्रबंधन ज्ी संज्ल्पना एवं सामज्री सूची समस्याओं ज्ी विश्लेषी संरचना, अज्ञात ज्ाल ज्े साथ या उसज्े बिना निर्धारजात्मज एवं प्रसंभाव्य मांजों ज्े साथ सरल निदर्श, डैम प्ररूप ज्े विशेष संदर्भ ज्े साथ भंडारज निदर्श. समांजी विविक्त ज्ाल मार्ज्ोव श्रृंजलाएं, संज्रमज प्रायिज्ता आव्यूह, अवस्थाओं एवं अभ्यतिप्राय प्रमेयों ज्ा वर्जीज्रज, समांजी सतत ज्ाल, मार्ज्ोव श्रृंजला, प्वासों प्रज्रिया, पंक्ति सिद्धांत ज्े तत्व, M/M/1, M/M/K, G/M/1 एवं M/G/1 पंक्तियां.

ज्ंप्यूटरों पर SPSS जैसे जाने माने सांख्यिज्ीय सॉफ्टवेयर पैज्ेजों ज्ा प्रयोज ज्र सांख्यिज्ीय समस्याओं ज्े हल प्राप्त ज्रना.

III. मात्रात्मज अर्थशास्त्र एवं राजज्ीय आंज्ड़े :

प्रवृत्ति निर्धारज, मौसमी एवं चज्रीय घटज्, बॉक्स - जेन्ज्निंस विधि, अनुपात श्रेजी परीजज, ARIMA निदर्श एवं स्वसमाश्रयी तथा जतिमान माध्य घटज्ों ज्ा ज्रम निर्धारज, पूर्वानुमान. सामान्य प्रयुक्त सूचज्ांज् - लास्पियर, पाशे एवं फिशर ज्े आदर्श सूचज्ांज्, श्रृंजला आधार सूचज्ांज्, सूचज्ांज्ों ज्े उपयोज और सीमाएं, थोज् ज्ीमतों, उपभोक्ता ज्ीमतों, ज्ृषि उत्पादन एवं औद्योगिज उत्पादन ज्े सूचज्ांज्, सूचज्ांज्ों ज्े लिए परीजज - आनुपातिज्ता, ज्ाल - विपर्यय, उपादान उत्ज्रमज एवं वृत्तीय.

सामान्य रैखिज निदर्श, साधारज न्यूनतम वर्ज एवं सामान्यीज्ृत न्यूनतम वर्ज, प्राक्ज्लन विधियां, बहुसंरेजता ज्ी समस्या, बहुसंरेजता ज्े परिजाम एवं हल, स्वसहबंध एवं इसज्ा परिजाम, विजोभों ज्ी विषम विचालिता एवं इसज्ा परीजज, विजोभों ज्े स्वातंत्र्य ज्ा परीजज, संरचना ज्ी संज्ल्पना एवं युजपत समीज्रज निदर्श, अभिनिर्धारज समस्या - अभिज्ञेयता ज्ी जोटि एवं ज्रम प्रतिबंध, प्राक्ज्लन ज्ी द्विप्रावस्था न्यूनतम वर्ज विधि.

भारत में जनसंज्या, ज्ृषि, औद्योगिज उत्पादन, व्यापार एवं ज्ीमतों ज्े संबंध में वर्तमान राजज्ीय सांख्यिज्ीय प्रजाली, राजज्ीय आंज्ड़े ज्रहज ज्ी विधियां, उनज्ी विश्वसनीयता एवं सीमाएं, ऐसे आंज्ड़ों वाले मुज्य प्रज्ाशन, आँज्ड़ों ज्े संज्रहज ज्े लिए जिम्मेवार विभिन्न राजज्ीय अभिज्रज एवं उनज्े प्रमुज ज्ार्य.

IV. जनसांख्यिज्ी एवं मनोमिति :

जनजजना, पंजीज्रज, NSS एवं अन्य सर्वेजजों से जनसांख्यिज्ीय आंज्ड़े, उनज्ी सीमाएं एवं उपयोज, व्याज्या, जन्म मरज दरों और अनुपातों ज्ी रचना एवं उपयोज, जननजमता ज्ी माप, जनन दरें, रुज्जता दर, मानज्ीज्ृत मृत्युदर, पूर्ज एवं संजिप्त वय सारजियां, जन्म मरज आंज्ड़ों एवं जनजजना विवरजियों से वय सारजियों ज्ी रचना, वय सारजियों ज्े उपयोज, वृद्धिघात एवं अन्य जनसंज्या वृद्धि वज्र, वृद्धि घात वज्र समंजन, जनसंज्या प्रजेप, स्थिर जनसंज्या, स्थिरज्ल्प जनसंज्या, जनसांख्यिज्ीय प्राचलों ज्े आज्लन में प्रविधियां, मृत्यु ज्े ज्ारज ज्े आधार पर मानज् वर्जीज्रज, स्वास्थ्य सर्वेजज एवं अस्पताल आंज्ड़ों ज्ा उपयोज.

मापनियों एवं परीजजों ज्े मानज्ीज्रज ज्ी विधियां, Z-समंज्, मानज् समंज्, T-समंज्, शततमज् समंज्, बुद्धि लब्धि एवं इसज्ा मापन एवं उपयोज, परीजज समंज्ों ज्ी वैधता एवं विश्वसनीयता एवं इसज्ा निर्धारज, मनोमिति में उपादान विश्लेषज एवं पथविश्लेषज ज्ा उपयोज.

प्राजी विज्ञान

प्रश्न-पत्र-1

1. अरज्जुज्ी और रज्जुज्ी :

(ज्) विभिन्न फाइलों ज्ा उपवज्ों तज् वर्जीज्रज एवं संबंध; एसीलोमेटा और सीलोमेटा; प्रोटोस्टोम और ड्यूटेरोस्टोम, बाइलेटेरेलिया और रेडिएटा, प्रोटिस्टा पैराज़ोआ, ओनिज्ोफोरा तथा हेमिज्ॉरडाटा ज्ा स्थान; सममिति.

(ज) प्रोटोज़ोआ : जमन, पोषज तथा जनन, लिंज पैरामीशियम, मॉनोसिस्टिस प्लाज़्मोडियम तथा लीशमैनिया ज्े सामान्य लजज एवं जीवन - वृत्त.

(ज) पोरिफेरा : ज्ंज्ाल, नालतंत्र तथा जनन.

(घ) नीडेरिया : बहुरूपता; रजा संरचनाएं तथा उनज्ी ज्रियाविधि; प्रवाल भित्तियां और उनज्ा निर्माज, मेटाजेनेसिस, ओबीलिया और औरीलिया ज्े सामान्य लजज एवं जीवन - वृत्त.

(ङ) प्लैटिहेल्मिंथीज़ :परजीवी अनुज्ूलन; फैसिओला तथा टीनिया ज्े सामान्य लजज एवं जीवन - वृत्त तथा उनज्े रोजजनज् लजज.

(च) नेमेट्हेल्मिंथीज़: एस्ज्ेरिस एवं वुचेरेरिया ज्े सामान्य लजज, जीवन वृत्त तथा परजीवी अनुज्ूलन.

(छ) एनेलीडा : सीलोम और विजंडता, पॉलीज्ीटों में जीवन - विधियां, नेरीस (नीऐंथीस), ज्ेंचुआ (फ़ेरिटिमा) तथा जोंज् ज्े सामान्य लजज तथा जीवन -वृत्त.

(ज) आर्थोपोडा: ज्रस्टेशिया में डिंभप्रज्ार और परजीविता, आर्थोपोडा (झींजा, तिलचट्टा तथा बिच्छू) में दृष्टि और श्वसन; ज्ीटों (तिलचट्टा, मच्छर, मक्खी, मधुमक्खी तथा तितली) में मुजांजों ज्ा रूपांतरज, ज्ीटों में ज्ायांतरज तथा इसज्ा हार्मोनी नियमन, दीमज्ों तथा मधु - मक्खियों ज्ा सामाजिज व्यवहार.

(झ) मोलस्ज्ा : अशन, श्वसन, जमन, लैमेलिडेन्स, पाइला, तथा सीपिया ज्े सामान्य लजज एवं जीवन वृत्त, जैस्ट्रोपोडों में ऐंठन तथा अव्यावर्तन.

(ञ) एज्इनोडर्मेटा :अशन, श्वसन, जमन, डिम्ब प्रज्ार, एस्टीरियस ज्े सामान्य लजज तथा जीवन वृत्त.

(ट) प्रोटोज्ॉर्डेटा : रज्जुज्ियों ज्ा उद्भव, ब्रैंज्ियोस्टोमा तथा हर्डमानिया ज्े सामान्य लजज तथा जीवन वृत्त.

(ठ) पाइसीज :श्वसन, जमन तथा प्रवासन.

(ड) एम्फिबिया : चतुष्पादों ज्ा उद्भव, जनज्ीय देजभाल, शावज्ांतरज.

(ढ) रेप्टीलिया वर्ज : सरीसृपों ज्ी उत्पति, ज्रोटि ज्े प्रज्ार, स्फेनोडॉन तथा मजरमच्छों ज्ा स्थान.

(ज) एवीज़; पजियों ज्ा उद्भव, उड्डयन - अनुज्ूलन तथा प्रवासन.

(त) मैमेलिया : स्तनधारियों ज्ा उद्भव, दंतविन्यास, अंडा देने वाले स्तनधारियों, जोष्ठधारी, स्तनधारियों, जलीय स्तनधारियों तथा प्राइमेटों ज्े सामान्य लजज, अंत:स्रावी ज्ंथियां (पीयूष ज्ंथि, अवटु ज्ंथि, परावटु ज्ंथि, अधिवृक्ज ज्ंथि, अज्न्याशय, जनन ज्ंथि) तथा उनमें अंतर्संबंध.

(थ) ज्शेरूज्ी प्राजियों ज्े विभिन्न तंत्रों ज्ा तुलनात्मज् ज्ार्यात्मज शारीर (अध्यावरज तथा इसज्े व्युत्पाद, अंत: ज्ंज्ाल, चलनअंज, पाचनतंत्र, श्वसनतत्र, हृदय तथा महाधमनी चापों सहित परिसंचारी तंत्र, मूत्र - जननतंत्र, मस्तिष्ज तथा ज्ञानेन्द्रियां (आंज तथा ज्ान)).

2. पारिस्थितिज्ी :

(ज्) जीवमंडल : जीवमंडल ज्ी संज्ल्पना; बायोम, जैवभूरसायन चज्र, ज्रीन हाउस प्रभाव सहित वातावरज में मानव प्रेरित परिवर्तन, पारिस्थितिज अनुज्रम, जीवोम तथा ईज्ोटोन. सामुदायिज पारिस्थितिज्ी.

(ज) पारितंत्र ज्ी संज्ल्पना, पारितंत्र ज्ी संरचना एवं ज्ार्य, पारितंत्र ज्े प्रज्ार, पारिस्थितिज अनुज्रम, पारिस्थितिज अनुज्ूलन.

(ज) समष्टि, विशेषताएं, समष्टि जतिज्ी, समष्टि स्थिरीज्रज.

(घ) प्राज्ृतिज संसाधनों ज्ा जैव विविधता एवं विविधता संरजज.

(ङ) भारत ज्ा वन्य जीवन.

(च) संपोषजीय विज्ास ज्े लिए सुदूर सुज्राहीज्रज.

(छ) पर्यावरजीय जैवनिम्नीज्रज, प्रदूषज तथा जीवमंडल पर इसज्े प्रभाव एवं उसज्ी रोज्थाम.

3. जीव पारिस्थितिज्ी :

(ज्) व्यवहार : संवेदी निस्यंदन, प्रतिसंवेदिता, चिह्न उद्दीपन, सीजना एवं स्मृति, वृत्ति, अभ्यास, प्रानुज्ूलन, अध्यंज्न.

(ज) चालन में हार्मोनों ज्ी भूमिज्ा, संचेतन प्रसार में फ़ीरोमोनों ज्ी भूमिज्ा; जोपज्ता, परभजी पहचान, परभजी तौर तरीज्े, प्राइमेटों में सामाजिज सोपान, ज्ीटों में सामाजिज संजठन.

(ज) अभिविन्यास, संचालन, अभीजृह, जैविज लय; जैविज नियतज्ालिज्ता, ज्वारीय, ऋतुपरज् तथा दिवसप्राय लय.

(घ) यौन द्वन्द्व, स्वार्थपरता, नातेदारी एवं परोपज्ारिता समेत प्राजी व्यवहार ज्े अध्ययन ज्ी विधियां.

4. आर्थिज प्राजि विज्ञान :

(ज्) मधुमक्खी पालन, रेशमज्ीट पालन, लाजज्ीट पालन, शफरी संवर्ध, सीप पालन, झींजा पालन, ज्ृमि संवर्ध.

(ज) प्रमुज संज्रामज एवं संचरजीय रोज (मलेरिया, फाइलेरिया, जय रोज, हैजा तथा एड्स), उनज्े वाहज्, रोजाजु तथा रोज्थाम.

(ज) पशुओं तथा मवेशियों ज्े रोज, उनज्े रोजाजु (हेलमिन्थस) तथा वाहज् (चिचड़ी, ज्ुटज्ी, टेबेनस, स्टोमोक्सिस).

(घ) जन्ने ज्े पीड़ज् (पाइरिला परपुसिएला), तिलहन ज्ा पीड़ज् (ऐज्ियाजनाटा) तथा चावल ज्ा पीड़ज् (सिटोफिलस ओरिज़े).

(ङ) पारजीनी जंतु.

(च) चिज्ित्सीय जैव प्रौद्योजिज्ी, मानव आनुवंशिज रोज एवं आनुवंशिज ज्ाउंसलिंज, जीन चिज्ित्सा.

(छ) विधि जैव प्रौद्योजिज्ी.

5. जैवसांख्यिज्ी :

प्रयोजों ज्ी अभिज्ल्पना; निराज्रजी परिज्ल्पना; सहसंबंध, समाश्रयज, ज्ेन्द्रीय प्रवृत्ति ज्ा वितरज एवं मापन, ज्ाई - स्ज्वेयर, विद्यार्थी - टेस्ट, एफ - टेस्ट (एज्मार्जी तथा द्विमार्जी एफ - टेस्ट)

6. उपज्रजीय पद्धति :

(ज्) स्पेक्ट्रमी प्रज्ाशमापित्र प्रावस्था विपर्यास एवं प्रतिदीप्ति सूज्म दर्शिज्ी, रेडियोऐक्टिव अनुरेजज्, द्रुत अपज्ेंद्रित्र, जेल एलेक्ट्रोफोरेसिस, PCR,ALISA,FISH एवं जुजसूत्रपेंटिंज.

(ज) इलेक्ट्रॉन सूज्मदर्शी (TEM,SEM).

प्रश्न-पत्र-2

1. ज्ोशिज्ा जीव विज्ञान :

(ज्) ज्ोशिज्ा तथा इसज्े ज्ोशिज्ांजों (ज्ेंद्रज्, प्लाज़्मा, झिल्ली, माइटोज्ॉन्ड्रिया, जॉल्ज़ीज्ाय, अंतर्द्रवी जालिज्ा, राइबोसोम तथा लाइसोसोम्स) ज्ी संरचना एवं ज्ार्य, ज्ोशिज्ा - विभाजन (समसूत्री और अर्द्धसूत्री), समसूत्री तर्ज़ु तथा समसूत्री तंत्र, जुजसूत्र जति. ज्रोमोसोम प्रज्ार पॉलिटीन एवं लैंब्रश, ज्रोमैटिन ज्ी व्यवस्था, ज्ोशिज्ा चज्र नियमन.

(ज) न्यूक्लीइज् अम्ल सांस्थितिज्ी, DNA अनुज्ल्प, DNA प्रतिज्ृति, अनुलेजन, RNA प्रज्मज, स्थानांतरज, प्रोटीन वलन एवं परिवहन.

2. आनुवंशिज्ी :

(ज्) जीन ज्ी आधुनिज संज्ल्पना, विभक्त जीन, जीन - नियमन, आनुवंशिज - ज्ूट.

(ज) लिंज जुजसूत्र एवं उनज्ा विज्ास, ड्रोसोफिला तथा मानव में लिंज - निर्धारज.

(ज) वंशाजति ज्े मेंडलीय नियम, पुनर्योजन, सहलज्नता, बहुयुज्म विज्ल्पी, रक्त समूहों ज्ी आनुवंशिज्ी, वंशावली विश्लेषज, मानव में वंशाजत रोज.

(घ) उत्परिवर्तन तथा उत्परिवर्तजन.

(ङ) पुनर्योजज DNA प्रौद्योजिज्ी, वाहज्ों ज्े रूप में प्लैज़्मिड्स, ज्ॉसमिड्स, ज्ृत्रिम जुजसूत्र, पारजीनी, DNA क्लोनिंज तथा पूर्ज क्लोनिंज (सिद्धांत तथा प्रज्रिया पद्धति).

(च) प्रोज्ेरियोट्स तथा यूज्ेरियोट्स में जीन नियमन तथा जीन अभिव्यक्ति.

(छ) संज्ेत अजु, ज्ोशिज्ा मृत्यु, संज्ेतन पथ में दोष तथा परिजाम.

(ज) RFLP, RAPD एवं AFLP तथा फिंजरप्रिंटिंज में अनुप्रयोज, राइबोजाइम प्रौद्योजिज्ी, मानव जीनोम परियोजना, जीनोमिक्स एवं प्रोटोमिक्स.

3. विज्ास :

(ज्) जीवन ज्े उद्भव ज्े सिद्धांत

(ज) विज्ास ज्े सिद्धांत; प्राज्ृतिज वरज, विज्ास में उत्परिवर्तन ज्ी भूमिज्ा, विज्ासात्मज प्रतिरूप, आज्विज ड्राइव, अनुहरज, विभिन्नता, पृथक्ज्रज एवं जाति उद्भवन.

(ज) जीवाश्म आंज्ड़ों ज्े प्रयोज से घोड़े, हाथी तथा मानव ज्ा विज्ास.

(घ) हार्डी - वीनबर्ज नियम.

(ङ) महाद्वीपीय विस्थापन तथा प्राजियों ज्ा वितरज.

4. वर्जीज्रज - विज्ञान :

(ज्) प्राजिवैज्ञानिज नामावली, अंतर्राष्ट्रीय नियम, क्लैडिस्टिक्स, आज्विज वर्जिज्ी एवं जैव विविधता.

5. जीव रसायन :

(ज्) ज्ार्बोहाइड्रेटों, वसाओं, वसाअम्लों एवं ज्ोलेस्टेरॉल, प्रोटीनों एवं अमीनोअम्लों, न्यूक्लिइज् अम्लों ज्ी संरचना एवं भूमिज्ा. बायो एनर्जेटिक्स.

(ज) ज्लाइज्ोलाइसिस तथा ज्रेब्स चज्र, ऑक्सीज्रज तथा अपचयन, ऑक्सीज्रजी फास्फोरिलेशन, ऊर्जा संरजज तथा विमोचन, ATP चज्र, चज्रीय AMP-इसज्ी संरचना तथा भूमिज्ा.

(ज) हार्मोन वर्जीज्रज (स्टेराइड तथा पेप्टाइड हार्मोन), जैव संश्लेषज तथा ज्ार्य.

(घ) एंजाइम : ज्रिया ज्े प्रज्ार तथा ज्रिया विधियां.

(ङ) विटामिन तथा ज्ो- एंजाइम.

(च) इम्यूनोज्लोब्यूलिन एवं रोधजमता.

6. ज्ार्यिज्ी (स्तनधारियों ज्े विशेष संदर्भ में) :

(ज्) रक्त ज्ी संघटना तथा रचज्, मानव में रक्त समूह तथा RH ज्ारज्, स्ज्ंदन ज्े ज्ारज् तथा ज्रिया विधि; लोह उपापचय, अम्ल जारज् साम्य, तापनियमन, प्रतिस्ज्ंदज्.

(ज) हीमोज्लोबिन : रचना प्रज्ार एवं ऑक्सीजन तथा ज्ार्बनडाईऑक्साइड परिवहन में भूमिज्ा.

(ज) पाचन एवं अवशोषज : पाचन में लार ज्ंथियों, यज्ृत, अज्न्याशय तथा आंत्र ज्ंथियों ज्ी भूमिज्ा.

(घ) उत्सर्जन : नेफ्रान तथा मूत्र विरचन ज्ा नियमन; परसरज नियमन एवं उत्सर्जी उत्पाद.

(ङ) पेशी : प्रज्ार, ज्ंज्ाल पेशियों ज्ी संज्ुचन ज्ी ज्रिया विधि, पेशियों पर व्यायाम ज्ा प्रभाव.

(च) न्यूरॉन: तंत्रिज्ा आवेज - उसज्ा चालन तथा अंतर्ग्रंथी संचरज : न्यूरोट्रांसमीटर.

(छ) मानव में दृष्टि, श्रवज तथा घ्राजबोध.

(ज) जनन ज्ी ज्ार्यिज्ी, मानव में यौवनारंभ एवं रजोनिवृति.

7. परिवर्धन जीवविज्ञान :

(ज्) युज्मज् जनन; शुज्र जनन, शुज्र ज्ी रचना, मैमेलियन शुज्र ज्ी पात्रे एवं जीवे धारिता. अंडजनन, पूर्ज शक्तता, निषेचन, मार्फोजेनेसिस एवं मार्फोजेन, ब्लास्टोजेनेसिस, शरीर अज रचना ज्ी स्थापना, फेट मानचित्र, मेढज् एवं चूजे में जेस्टुलेशन, चूजे में विज्ासाधीन जीन, अंजांतरज जीन, आँज एवं हृदय ज्ा विज्ास, स्तनियों में अपरा.

(ज) ज्ोशिज्ा वंश परंपरा, ज्ोशिज्ा - ज्ोशिज्ा अन्योन्य ज्रिया, आनुवंशिज एवं प्रेरित विरूपजज्ता, एंफीविया में ज्ायांतरज ज्े नियंत्रज में वायरोक्सिन ज्ी भूमिज्ा, शावजीनन एवं चिरभ्रूजता, ज्ोशिज्ा मृत्यु, ज्ालप्रभावन.

(ज) मानव में विज्ासीय जीन, पात्रे निषेचन एवं भ्रूज अंतरज, क्लोनिंज.

(घ) स्टेमज्ोशिज्ा : स्रोत, प्रज्ार एवं मानव ज्ल्याज में उनज्ा उपयोज.

(ङ) जाति अवर्तन नियम.

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

परिशिष्ट-II (क)

ऑनलाइन आवेदन के लिए अनुदेश

उम्मीदवार लिंक **http://www.upsconline.nic.in** का उपयोग करके ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं. ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र की प्रणाली की प्रमुख विशेषताएं निम्नानुसार हैं :-

- ऑनलाइन आवेदनों को भरने के लिए विस्तृत अनुदेश उपर्युक्त वेबसाइट पर उपलब्ध हैं.
- उम्मीदवारों को ड्रॉप डाउन मेनू के माध्यम से उपर्युक्त साइट में उपलब्ध अनुदेशों के अनुसार दो चरणों अर्थात् भाग-I और भाग-II में निहित ऑनलाइन आवेदन प्रपत्र को पूरा करना अपेक्षित होगा.
- ऑनलाइन आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को कम किए गए 50/- रु. के शुल्क (महिला/अ.जा./अ.ज.जा./विकलांग उम्मीदवारों, जिन्हें शुल्क के भुगतान से छूट प्राप्त है, को छोड़कर) या तो भारतीय स्टेट बैंक की किसी शाखा में नकद जमा करके या भारतीय स्टेट बैंक की नेट बैंकिंग सुविधा का उपयोग करके या वीजा/मास्टरथ्क्रेडिट/डेबिट कार्ड का उपयोग करके भुगतान करना अपेक्षित है.
- ऑनलाइन आवेदन भरना आरंभ करने से पहले उम्मीदवार को अपना फोटोग्राफ और हस्ताक्षर ऐसे तरीके से .पीएनजी या .जेपीजी प्रारूप में विधिवत रूप से स्कैन करना है कि प्रत्येक 40 केबी से अधिक नहीं हो.
- ऑनलाइन आवेदन (भाग-I और भाग-II) को **दिनांक 19 फरवरी, 2011 से 21 मार्च 2011 रात 11.59 बजे** तक भरा जा सकता है जिसके पश्चात् लिंक निरूपयोज्य होगा.
- **उम्मीदवारों को सख्त सलाह दी जाती है कि ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तारीख का इंतजार किए बिना समय सीमा के भीतर ऑनलाइन आवेदन करें।**

परिशिष्ट-II (ख)

सामान्य अनुदेश :

1. उम्मीदवार, **परिशिष्ट-III में सूचीबद्व) किसी भी विनिर्दिष्ट प्रधान डाकघर/डाकघर से खरीदी गई सूचना विवरणिका पुस्तिका के साथ दी गई ओ एम आर प्रविष्टियों पर आधारित केवल नए सम्पेरा प्रपत्र (फार्म-ई) (मूल्य ₹ 30/-) का ही इस्तेमाल करें । वे किसी भी स्थिति में प्रपत्र की छाया प्रति/प्रतिलिपि/अनधिकृत मुद्रित प्रति का प्रयोग न करें । आयोग कार्यालय द्वारा प्रपत्र की आपूर्ति नहीं** की जाएगी ।
2. उम्मीदवारों को आवेदन प्रपत्र अपने हस्तलेख में ही भरना चाहिए । चूंकि, इस आवेदन प्रपत्र की जांच कंप्यूटर मशीन द्वारा की जाएगी, उम्मीदवार **आवेदन प्रपत्र को संभालने औ दें । गोलों को काला करने के लिए वे केवल काले बाल प्वाइंट पेन का इस्तेमाल करें । लिखने के लिए भी उन्हें काला बाल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करना चाहिए ।**
   चूंकि कंप्यूटरीकृत मशीनों पर आवेदन प्रपत्रों की जांच करते समय उम्मीदवार द्वारा गोलों को काला करके की गई प्रविष्टियों पर ही ध्यान दिया जाएगा, इसलिए अपनी प्रविष्टियां काफी सावधानी से औ रूप में भरनी चाहिएं ।
3. उम्मीदवारों को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उनके द्वारा सभी स्थानों अर्थात् उनके आवेदन प्रपत्र, उपस्थिति सूची आदि औ
   किसी प्रकार की कोई भिन्नता न हो । यदि उनके द्वारा विभिन्न स्थानों पर उम्मीदवार द्वारा अनुबद्व किए गए हस्ताक्षरों में कोई अंतर पाया जाता है
4. मूल आवेदन प्रपत्र में की गयी प्रविष्टियों में किसी भी स्थिति में परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
5. उम्मीदवारों को उनके हित में सलाह दी जाती है **यह सुनिश्चित कर लें कि उनका आवेदन पत्र अंतिम तारीख को या उससे पूर्व आयोग के कार्यालय में पंहुच जाए ।** अंतिम तारीख के बाद आयोग कार्यालय में प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा ।
6. उम्मीदवार अपना आवेदन प्रपत्र भरते समय, अपने परीक्षा केंद्र के चयन का निर्णय सावधानीपूर्वक करें।
7. **उम्मीदवारों को चाहिए कि वे पावती कार्ड पर अपना आवेदन प्रपत्र सं. औ "सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011" लिखें ।** उन्हें पावती कार्ड पर साफ-साफ औ में अपने पत्राचार का पता लिखना चाहिए औ **डाक टिकट** चिपकाना चाहिए । **पावती कार्ड को आवेदन प्रपत्र के साथ स्टेपल या आलपिन लगाकर नत्थी न करें या प्रपत्र के साथ न चिपकाएं ।**

पात्रता शर्तें (संक्षेप में)

(i) **आयु सीमा :**
सभी सेवाओं/पदों के लिए आयु सीमाएं 1 अगस्त, 2011 को 21 से 30 वर्ष है
वर्गों तथा नोटिस के पै ii) में यथानिर्दिष्ट कतिपय अन्य वर्गों के उम्मीदवारों के लिए, ऊपरी आयु सीमा में छूट है
(ii) **शै**
किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से डिग्री अथवा समकक्ष योग्यता [नोटिस का पै iii)]
(iii) **प्रयासों की अनुमत संख्या :**
चार (अ.पि.व. औ
अ.जा./अ.ज.जा. के उम्मीदवारों के लिए कोई सीमा नहीं) [नोटिस का पै iv)]
(iv) **शुल्क :**
100/-रू. (केवल सौ
शुल्क नहीं)

सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011 के लिए आवेदन प्रपत्र (प्रपत्र-ई) भरने हेतु उम्मीदवारों के लिए अनुदेश।

महत्वपूर्ण : इस प्रपत्र को भरने के लिए केवल काले बॉल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करें।

आवेदन प्रपत्र का पृष्ठ-1

कॉलम-1 : आवेदित परीक्षा (यदि पात्र है
परीक्षा का नाम CIVIL SERVICES (PRELIMINARY) EXAMINATION (केवल अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में लिखें) ।
परीक्षा का वर्ष, 2011 लिखें ।
परीक्षा कोड के रूप में वृत्त 04 को काला करें ।
कालम 2 : उम्मीदवार का नाम
इस कालम को भरने के लिए, बॉक्सों में पहले अपना पूरा नाम (अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में) ठीक वै
जै
एक ही अक्षर लिखें। नाम के दो हिस्सों के बीच के एक बॉक्स को खाली छोड़ें । तत्पश्चात, प्रत्येक अक्षर के नीचे के वृत्त को काला करें । खाली बॉक्स के नीचे वाले वृत्त को काला न करें । अपने नाम से पहले किसी उपसर्ग जै
कालम - 3: जन्म की तारीख ।
अपने मै
औ
कालम - 4: लिंग
अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।
कालम - 5: राष्ट्रीयता
अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।
कालम - 6: वै
अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।
कालम - 7: केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट
सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा, 2011 के लिए देय शुल्क 100/- रू. (केवल सौ महिला/अ.जा./अ.ज.जा औ
शुल्क **केवल केन्द्रीय भर्ती शुल्क टिकट** (न कि डाक टिकट) के माध्यम से ही देय है
अन्य तरीका स्वीकार्य नहीं है
अच्छी प्रकार से बॉक्स के अंदर चिपका दें । के.भ.शु. टिकट चिपकाने के बाद, उसे उसी डाकघर से, जहां से वह खरीदी गई थी, यथास्थान पर निरस्त करवा लें । के.भ.शु. टिकट को स्टेपल न करें ।
कालम - 8: पिता का नाम
अपने पिता का नाम (अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में) लिखें । प्रत्येक बॉक्स में एक ही अक्षर लिखें , नाम के दो हिस्सों के बीच के एक बॉक्स को खाली छोड़ें । नाम से पहले किसी उपसर्ग जै
न करें ।
कालम - 9: माता का नाम
अपनी माता का नाम (अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में) लिखें । प्रत्येक बॉक्स में एक ही अक्षर लिखें । नाम के दो हिस्सों के बीच के एक बॉक्स को खाली छोड़ें । नाम से पहले किसी उपसर्ग जै
न करें ।
कालम - 10: परीक्षा केन्द्र कोड
नीचे दी गई सूची में से उस उपयुक्त परीक्षा केन्द्र कोड का चयन करें, जहां आप परीक्षा में सम्मिलित होना चाहते है

सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा के केंद्रों की सूची औ

केंद्र	कोड	केंद्र	कोड	केंद्र	कोड
अगरतला	45	दिसपुर	09	नागपुर	13
अहमदाबाद	01	गंगटोक	42	पणजी (गोवा)	36
ऐजल	47	है	10	पटना	15
अलीगढ़	21	इम्फाल	44	पुदुचेरी	20
इलाहाबाद	02	ईटानगर	48	पोर्ट ब्लेयर	37
औ	38	जयपुर	11	रायपुर	49
बंगलुरू	03	जम्मू	34	रांची	41
बरेली	54	जोधपुर	22	संबलपुर	53
भोपाल	04	जोरहाट	46	शिलांग	16
चंडीगढ़	35	कोच्चि	24	शिमला	17
चेन्नई	12	कोहिमा	43	श्रीनगर	18
कटक	07	कोलकाता	06	तिरूवनन्तपुरम	19
देहरादून	14	लखनऊ	26	तिरूपति	50
दिल्ली	08	मदुरै	40	उदयपुर	52
धारवाड़	39	मुम्बई	05	विशाखापट्नम	51

कालम 11: शै
नीचे दिए गए समुचित शै
गोले को काला करें ।

कोड	शै
1	यदि आपने डिग्री अथवा समकक्ष परीक्षा पहले ही उत्तीर्ण कर ली है
2	यदि आप डिग्री अथवा समकक्ष परीक्षा में बै

कालम 12: आयु में छूट संबंधी कोड
(i) यदि आप आयु में छूट का दावा कर रहे है
तथा अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें ।

कोड सं.	वर्ग	आयु सीमा में अनुमेय छूट
01	अ.जा. एवं अ.ज.जा. के लिए	5 वर्ष
02	अ.पि.व.के लिए	3 वर्ष
03	दृष्टिहीन,मूक-बधिर एवं अस्थि विकलांग व्यक्तियों के लिए	10 वर्ष
04	दृष्टिहीन,मूक-बधिर एवं अस्थि विकलांग व्यक्ति+अ.जा./अ.ज.जा.	15 वर्ष
05	दृष्टिहीन,मूक-बधिर एवं अस्थि विकलांग व्यक्ति+अ.पि.व.	13 वर्ष
06	किसी दूसरे देश के साथ संघर्ष में या किसी अशांतिग्रस्तक्षेत्र में फौ कार्यवाही के दौ गए रक्षा सेवा कार्मिक	3 वर्ष
07	रक्षा सेवा के कार्मिक (जै) +अ.जा./अ.ज.जा.	8 वर्ष
08	रक्षा सेवा के कार्मिक (जै) +अ.पि.व.	6 वर्ष
09	कमीशन प्राप्त अधिकारियों तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त / अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित जिन भूतपूर्व सै ने 1 अगस्त, 2011 को कम से कम 5 वर्ष की सै (i) कदाचार या अक्षमता के आधार पर बर्खास्त या निर्मुक्त न होकर अन्य कारणों से कार्यकाल के समाप्त होने पर कार्यमुक्त हुए है (इनमें वे भी सम्मिलित है वर्ष के अंदर पूरा होना है ii) सै अपंगता या (iii) अशक्तता के कारण कार्यमुक्त हुए है	5 वर्ष

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

कोड सं.	वर्ग	आयु सीमा में अनुमेय छूट
10	कमीशन प्राप्त तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त /अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित भूतपूर्व सै (जै)+ अजा/अजजा	10 वर्ष
11	कमीशन प्राप्त तथा आपातकालीन कमीशन प्राप्त /अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों सहित भूतपूर्व सै (जै) + अ.पि.व.	8 वर्ष
12	आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारी /अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारी, जिन्होंने 1 अगस्त, 2011 को सै की प्रारंभिक अवधि पूरी कर ली है आगे बढ़ाया गया है का एक प्रमाणपत्र जारी करता है आवेदन कर सकते है प्राप्त होने की तारीख से तीन माह के नोटिस पर उन्हें कार्यभार से मुक्त कर दिया जाएगा।	5 वर्ष
13.	आपातकालीन कमी ान प्राप्त/अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारी(जै) + अ.जा./अ.ज.जा.	10 वर्ष
14.	आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्पकालिक सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारी (जै) + अ.पि.व.	8 वर्ष
15.	ऐसे उम्मीदवार, जिन्होंने 01 जनवरी, 1980 से 31 दिसम्बर,1989 तक की अवधि के दौ अधिवास किया हो,	5 वर्ष
16.	ऐसे उम्मीदवार जिन्होंने साधारणतया जम्मू औ राज्य में अधिवास किया हो (जै) + अ.जा./अ.ज.जा.	10 वर्ष
17.	ऐसे उम्मीदवार जिन्होंने साधारणतया जम्मू औ किया हो (जै) + अ.पि.व.	8 वर्ष

कालम 13: सुदूर क्षेत्र / विदेश संबंधी कोड
यदि आप सुदूर क्षेत्र या विदेश में रह रहे है
उपयुक्त गोले को काला करें ।

सुदूर क्षेत्रों तथा विदेश के लिए क्षेत्र कोड

क्षेत्र	कोड	क्षेत्र	कोड
असम	01	जम्मू औ	09
मेघालय	02	हिमाचल प्रदेश का लाहौ तथा चंबा जिले का पांगी उप-मंडल	10
अरूणाचल प्रदेश	03		
मिज़ोरम	04		
मणिपुर	05	अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह	11
नागालै	06	लक्षद्वीप	12
त्रिपुरा	07	विदेश	13
सिक्किम	08		

कृपया ध्यान दें: परीक्षा के नोटिस में निर्दिष्ट सुदूर क्षेत्र में अथवा विदेशों में रह रहे उम्मीदवार आवेदन प्रपत्र केवल डाक से जमा कराने के लिए एक सप्ताह के अतिरिक्त समय के हकदार होंगे।

कालम 14: अदा की गई शुल्क की राशि
यदि आपने अपेक्षित शुल्क अदा किया है ; अथवा यदि आपने अपेक्षित शुल्क अदा नहीं किया है
में छूट प्राप्ति का दावा किया है 'शुल्क में छूट' के गोले को काला करें ।

कृपया ध्यान दें: कालम 7 में दिए गए अनुदेशों के अनुसार शुल्क केवल केंद्रीय भर्ती शुल्क टिकट के रूप में देय है

कालम 15: समुदाय
आप जिस समुदाय से संबंधित है

टिप्पणी-1: अन्य पिछड़े वर्ग के उन उम्मीदवारों को, जो 'क्रीमी लेयर' में आते है वर्ग के लिए आरक्षण के पात्र नहीं है 'सामान्य-वर्ग' के रूप में दर्शाना चाहिए ।

टिप्पणी-2: वे उम्मीदवार जो न तो अ.जा., अ.ज.जा. के औ कालम में (सामान्य-वर्ग) को काला करना चाहिए तथा उसे खाली **नहीं** छोड़ना चाहिए।

टिप्पणी-3: उम्मीदवार द्वारा अपने आवेदन प्रपत्र में दर्शाए गए समुदाय की स्थिति में, आयोग द्वारा साधारणत: बाद में किसी स्तर पर परिवर्तन की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

कालम 16: अल्पसंख्यक संबंधी स्थिति
यदि आप किसी भी विनिर्दिष्ट अल्पसंख्यक समुदाय (मुस्लिम/ईसाई/सिक्ख/ बौ) से संबंधित है अपने मामले में लागू उपयुक्त गोले को काला करें।

कालम 17: शारीरिक रूप से विकलांग
यदि आप किसी भी विनिर्दिष्ट शारीरिक रूप से विकलांग वर्ग (अस्थि विकलांग / दृष्टि बाधित/श्रवण बाधित) से संबंधित है

कालम 18: पता
अपना पूरा डाक का पता, जिसमें आपका नाम अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में इस प्रयोजन के लिए दिए गए बॉक्स में लिखें । दिए गए बॉक्स में पिन कोड भी लिखें । केवल **काले बॉल प्वाइंट पेन** से लिखें । बॉक्स के बाहर न लिखें । कृपया नोट कर लें कि आपको भेजे जाने वाले सभी पत्रों पर इसी पते की फोटो कापी का प्रयोग किया जाएगा औ

कालम 19: फोटोग्राफ एवं हस्ताक्षर
अपना हाल ही का 3.5 से.मी. x 4.5 से.मी. आकार का फोटोग्राफ, जिसमें **आपका नाम एवं जन्म की तारीख मुद्रित हो, दिए गए स्थान में अच्छी तरह से चिपका दें । फोटोग्राफ को स्टेपल न करें । फोटोग्राफ न तो आपके द्वारा हस्ताक्षरित हो औ**
से फोटोग्राफ के नीचे दिए गए स्थान पर भी करें ।
आवेदन प्रपत्र का पृष्ठ 2

कालम 20: पहले किए गए प्रयासों की संख्या
सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा में आपके द्वारा पहले किए गए प्रयासों की संख्या के लिए समुचित गोले को काला करें । उदाहरण के लिए, यदि आप एक बार परीक्षा में बै
इससे पहले सिविल सेवा (प्रारंभिक) परीक्षा में नहीं बै

कालम 21: सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए

21 (I) यदि आपने भारतीय भाषा के प्रश्न पत्र में बै "हां" या "नहीं", जै भी मामला हो, के समुचित गोले को काला करें ।

21 (II) भारतीय भाषाओं के लिए कोड
यदि आपने उपर्युक्त कालम **21 (I)** में "नहीं" को काला किया है
का चयन करें तथा आपके द्वारा चुनी गई भारतीय भाषा के लिए उपयुक्त गोलों को काला करें ।

कोड	विवरण	कोड	विवरण	कोड	विवरण
01	असमिया	09	उड़िया	17	कोंकणी
02	बंगाली	10	पंजाबी	18	मणिपुरी
03	गुजराती	11	संस्कृत	19	नेपाली
04	हिंदी	12	सिंधी (देवनागरी लिपि)	91	बोडो
05	कन्नड़	13	सिंधी (अरबी लिपि)	92	डोगरी
06	कश्मीरी	14	तमिल	93	मै
07	मलयालम	15	तेलुगु	94	संथाली(देवनागरी लिपि)
08	मराठी	16	उर्दू	95	संथाली (ओलचिकी लिपि)

21 (III) सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए वै
नीचे दी गई तालिका से सही कोड चुने तथा दोनों वै

कोड	विषय
21	कृषि विज्ञान
22	वनस्पति विज्ञान
23	रसायन विज्ञान
24	सिविल इंजीनियरी
25	वाणिज्य तथा लेखा शास्त्र
26	अर्थशास्त्र
27	वै
28	भूगोल
29	भू-विज्ञान
30	इतिहास
31	विधि
32	प्रबंधन
33	गणित
34	यांत्रिक इंजीनियरी
35	दर्शन शास्त्र
36	भौ
37	राजनीति शास्त्र तथा अंतरराष्ट्रीय संबंध
38	मनोविज्ञान
39	समाज शास्त्र
40	प्राणि विज्ञान
41	सांख्यिकी
42	पशुपालन तथा पशु चिकित्सा विज्ञान
43	मानव विज्ञान
44	लोक प्रशासन
45	चिकित्सा विज्ञान
51	असमिया भाषा का साहित्य
52	बंगला भाषा का साहित्य
53	गुजराती भाषा का साहित्य
54	हिन्दी भाषा का साहित्य
55	कन्नड़ भाषा का साहित्य
56	कश्मीरी भाषा का साहित्य
57	मराठी भाषा का साहित्य
58	मलयालम भाषा का साहित्य
59	उड़िया भाषा का साहित्य
60	पंजाबी भाषा का साहित्य
61	संस्कृत भाषा का साहित्य
62	सिंधी देवनागरी भाषा का साहित्य
63	सिंधी अरबी भाषा का साहित्य
64	संस्कृत भाषा का साहित्य
65	तेलुगु भाषा का साहित्य
66	उर्दू भाषा का साहित्य
67	अरबी भाषा का साहित्य
68	फारसी भाषा का साहित्य
69	जर्मन भाषा का साहित्य
70	फ्रेंच भाषा का साहित्य
71	रूसी भाषा का साहित्य
72	अंग्रेजी भाषा का साहित्य
73	चीनी भाषा का साहित्य
74	पाली भाषा का साहित्य
75	कोंकणी भाषा का साहित्य
76	मणिपुरी भाषा का साहित्य
77	नेपाली भाषा का साहित्य
78	बोडो भाषा का साहित्य
79	डोगरी भाषा का साहित्य
80	मै
81	संताली भाषा का साहित्य

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

टिप्पणी (i) उम्मीदवारों को निम्नलिखित विषय एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी :-

(क) राजनीति विज्ञान तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध तथा लोक प्रशासन ;
(ख) वाणिज्य शास्त्र तथा लेखा विधि तथा प्रबंध;
(ग) मानव विज्ञान तथा समाज शास्त्र;
(घ) गणित तथा सांख्यिकी;
(ड) कृषि विज्ञान तथा पशुपालन एवं पशुचिकित्सा विज्ञान;
(च) प्रबंध तथा लोक प्रशासन;
(छ) इंजीनियरी विषयों जै
विषय नहीं ;
(ज) पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान ।

[टिप्पणी : यह कालम अर्थात 21 (III) वै
उम्मीदवार सिविल सेवा (प्रारंभिक) 2011 में अर्हता प्राप्त करते है
(डी ए एफ) को भरते समय सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा 2011 के लिए प्रस्तुत करनी होगी ।]

21 (IV) सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए परीक्षा केन्द्र के कोड

सिविल सेवा (प्रधान) परीक्षा के लिए नीचे दी गई परीक्षा केन्द्रों की सूची में से अपनी पसंद के केन्द्र के लिए समुचित गोले को काला कर दें ।

कोड	केन्द्र	कोड	केन्द्र
01	अहमदाबाद	11	जयपुर
02	इलाहाबाद	12	चेन्नई
03	बंगलौ	15	पटना
04	भोपाल	16	शिलांग
05	मुंबई	17	शिमला
06	कोलकाता	19	तिरूवनंतपुरम
07	कटक	26	लखनऊ
08	दिल्ली	34	जम्मू
09	दिसपुर गुवाहाटी	35	चंडीगढ़
10	है		

21 (V) सिविल सेवा प्रधान लिखित परीक्षा के माध्यम के लिए कोड

लिखित परीक्षा के लिए नोटिस में दिए गए कोड में से अपने माध्यम उचित कोड का चुनाव करें औ संबंधित गोले को काला कर दें ।

कोड	विषय	कोड	विषय	कोड	विषय
01	असमिया	09	उड़िया	17	कोंकणी
02	बंगला	10	पंजाबी	18	मणिपुरी
03	गुजराती	11	संस्कृत	19	नेपाली
04	हिंदी	12	सिंधी (देवनागरी लिपि)	91	बोडो
05	कन्नड	13	सिंधी (अरबी लिपि)	92	डोगरी
06	कश्मीरी	14	तमिल	93	मै
07	मलयालम	15	तेलुगु	94	संताली (देवनागरी लिपि)
08	मराठी	16	उर्दू	95	संताली (आलचिकी लिपि)

22 – 27: सिविल सेवा परीक्षा के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों को इनमें से कोई भी कॉलम भरने की आवश्यकता नहीं है

कॉलम 28: घोषणा

उम्मीदवार हस्ताक्षर करने से पूर्व घोषणा को सावधानीपूर्वक पढ़ लें ।

कॉलम 29: अपना नाम अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में इस उद्देश्य के लिए दिए गए समुचित बाक्स में लिख दें ।

कॉलम 30: उम्मीदवार के हस्ताक्षर

निर्धारित बॉक्स में **काले बॉल पै** से अपने सामान्य हस्ताक्षर करें । आपके हस्ताक्षर, दिए गए बॉक्स के बाहर या उसकी सीमा को स्पर्श न करें । हस्ताक्षर के स्थान पर केवल अंग्रेजी के बड़े अक्षरों में अपना **नाम न लिखें**। अहस्ताक्षरित आवेदन पत्र को तुरंत रद्द कर दिया जाएगा।

फार्म भेजने का स्थान औ
पर अवश्य करें ।

कॉलम 31: दिए गए निर्धारित बॉक्स में एस टी डी कोड सहित अपना टेलीफोन सं. लिखें ।

कॉलम 32: निर्धारित दिए गए बॉक्स में अपना मोबाइन नम्बर लिखें ।

कॉलम 33: दिए गए निर्धारित बॉक्स में अपना ई मेल आई डी लिखें ।

संक्षिप्त जांच सूची

आवेदन प्रपत्र भेजने से पहले निम्नलिखित की जांच कर लें

1.	कि आपने केवल निर्दिष्ट किए गए प्रधान डाकघर / डाकघर से संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए 30 रू मूल्य वाला समान आवेदन प्रपत्र का प्रयोग किया है
2.	कि आपने आवेदन प्रपत्र के सभी संगत कालमों के उपयुक्त गोलों को काला करके भर दिया है (1 से 21 तथा 28 से 33)
3.	कि आपने आवेदन प्रपत्र के कॉलम 19 में अपना हाल ही का पासपोर्ट आकार का फोटो (अहस्ताक्षरित तथा असत्यापित) जिस पर आपका नाम तथा जन्मतिथि छपी हो, चिपका दिया है
4.	कि यदि आपके द्वारा शुल्क दिया जाना अपेक्षित है आवेदन पत्र के कॉलम 7 में लगा दिया है है
5.	कि आपने आवेदन प्रपत्र के कॉलम 19 के नीचे तथा कॉलम 30 में दिए गए स्थान पर अपने हस्ताक्षर कर दिए है
6.	कि आपने अपना पावती पत्र भर दिया है अपना पता स्पष्ट रूप से लिख दिया है
7.	कि आपने अपने पावती पत्र पर 6 रू.(छः रू.)की डाक टिकट लगा दी है
8.	कि आप विवरणिका के साथ आपको दिए गए लिफाफे में आप केवल अपना एक आवेदन प्रपत्र तथा एक पावती पत्र भेज रहे है
9.	कि आपने आवेदन प्रपत्र एवं पावती कार्ड के लिफाफे के उपर परीक्षा का नाम अर्थात "सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा 2011" लिख दिया है

परिशिष्ट-3

मुख्य डाकघरों/डाकघरों की सूची जहां संघ लोक सेवा आयोग का आवेदन प्रपत्र उपलब्ध है.

आंध्रप्रदेश मंडल : हैदराबाद जी.पी.ओ., हैदराबाद जुबली, काचिगुडा स्टेशन, खैरताबाद, सिकन्दराबाद, त्रिमूलगेरी, अदिलाबाद, अनन्तपुर, अरूंडेलपेट (गुंटूर), चित्तूर, कुड्डापा, एलूरू, काकीनाडा, करीमनगर, खम्माम, कुरनूल, मछलीपटनम, महबूबनगर, मेढक, नालगोंडा, नेल्लोर, निजामाबाद, ओंगोल, श्रीकाकुलम, विजियानगरम, विजयवाड़ा, विकाराबाद, विशाखापटनम, वारांगल.

असम मंडल : गुवाहाटी, बरपेटा, धुबरी, डिब्रुगढ़, डिफू, गोलाघाट, हैलाकांदी, जोरहाट, करीमगंज, कोकराझार, मंगलदोई, नगांव, नलबारी, उत्तर लखीमपुर, शिवसागर, सिलचर, तेजपुर, तिनसुकिया.

बिहार मंडल : पटना जी.पी.ओ., बॉकीपुर, आरा, औरंगाबाद, बी. देवघर, बोकारो स्टील सिटी, बँका, बट्टियॉ, बेगुसराय, भागलपुर, बिहार शरीफ, बक्सर, चाईबासा, छपरा, डालटेनगंज, दरभंगा, धनबाद, दुमका, गया, गिरिडीह, गोपालगंज, गुमला, हाजीपुर, हजारीबाग, जमशेदपुर, कटिहार, मधुबनी, मोतीहारी, मुंगेर, मुजफ्फरपुर, नवादा, पुर्णिया, रांची, सहरसा, समस्तीपुर, सासाराम, सीतामढ़ी, सीवान.

दिल्ली मंडल : दिल्ली जी.पी.ओ., नई दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ, रमेशनगर, सरोजिनी नगर, लोधी रोड, कृष्ण नगर, अशोक विहार, संसद मार्ग, यू.पी.एस.सी. डाकघर.

गुजरात मंडल : गांधीनगर, अहमदाबाद, अमरेली, आनन्द, भरूच, भावनगर, भुज, दहोड, गोधरा, हिम्मतनगर, जामनगर, जूनागढ़, खेडा, मेहेसाना, नवरंगपुर, नवसारी, पालनपुर, पाटन, पोरबन्दर, राजकोट, रेबडी बाजार, सूरत, सुरेन्द्रनगर, वलसाड, वडोदरा.

हरियाणा मंडल : अम्बाला जी.पी.ओ., अम्बाला सिटी, बहादुरगढ, भिवानी, फरीदाबाद, गुडगांव, हिसार, जीन्द, करनाल, कुरूक्षेत्र, नारनौल, पानीपत, रोहतक, सिरसा, सोनीपत.

हिमाचल प्रदेश मंडल : शिमला, बिलासपुर, चम्बा, हमीरपुर, कांगडा, केलांग, कुल्लू, मंडी, नाहन, रिकांग, पो, सोलन, ऊना.

जम्मू एवं कश्मीर मंडल : श्रीनगर, अनन्तनाग, बारामूला, जम्मू, कथुआ, लेह, रजौरी, उधमपुर, गांधी नगर मुख्यालय, जानीपुर, जम्मू कैंट, सांबा.

कर्नाटक मंडल : बंगलौर जी.पी.ओ., बंगलौर सिटी, बासावनगुडी, हाल II स्टेज, जयनगर, आर.टी. नगर, बगलकोट, रायचूर, राजाजीनगर, बेलगांव, बेल्लारी, बिदर, बीजापुर, चिक्मगलूर, चित्रदुर्गा, दावेनगेर, धारवाड़, गडग, गुलबर्गा, हासन, हावेरी, हुबली, कारवार, कोलार, मदीकेरे, मानड्या, मंगलौर, मनीपाल, मैसूर, नानजागुड, शिमोंगा, सिरसी, तुमकूर, उडूपी.

केरल मंडल : त्रिवेन्द्रम, अल्लीप्पे (अलाप्पुझा), कालीकट, कन्नानोर, एर्नाकूलम, कालपेट्टा, कासरगौड, कट्टप्पना, कोट्टायम, मलप्पुरम, पालघाट, पाथनमथीट्टा, क्विलोन, त्रिचूर, कावारत्ती (**लक्षद्वीप**).

मध्य प्रदेश मंडल : भोपाल जी.पी.ओ., बिलासपुर, अम्बिकापुर, बालाघाट, बैतूल, भिन्ड, छत्तरपुर, छिन्दवारा, दामोह, देवास, घाड़, दुर्ग, गुणा, होशंगाबाद, इन्दौर, जबलपुर, जगदलपुर, झाबुआ, खण्डवा, खारगोन, लश्कर, मंडला, मंडसौर, मुरैना, नरसिंहपुर, नीमुच, रायगढ़, रायपुर, रायसेन, राजगढ़ (बिओरा), राजनंदगांव, रतलाम, रीवा, सागर छावनी, सतना, सिहोर, सिओनी, शहडोल, शाजापुर, शिवपुरी, सिधी, टीकमगढ़, उज्जैन, विदिशा.

महाराष्ट्र मंडल : मुम्बई जी.पी.ओ., मुम्बई मध्य, अंधेरी, बोरीवली, चेम्बूर, चिनेहबन्दर, दादर, गिरगांव, कालबादेवी, माहीम, मान्डवी, अहमदनगर, अकोला, अलीबाग, अमरावती, औरंगाबाद, बीड, भन्डारा, बुलधाना, चन्द्रपुर, धूले, जलगांव, जालना, कराड, कोल्हापुर, लातूर, नागपुर जी.पी.ओ., नानदेड, नासिक, उस्मानाबाद, परभनी, पूणे, रत्नागिरी, सांगली, सतारा, सावंतवाडी, सोलापुर, थाणे, वर्धा, योतमल, मरगांव **(गोवा)**, पणजी **(गोवा)**.

उत्तर–पूर्व मंडल : अगरतला, ऐजल, धर्मनगर, इम्फाल, ईटानगर, कोहिमा, राधाकिशोरपुर, शिलांग, तूरा.

उड़ीसा मंडल : भुवनेश्वर जी.पी.ओ., अंगुल, बोलंगीर, बालासोर, बारगढ़, बारीपदा, बरहामपुर, भद्रक, भवानीपटना, कटक जी.पी.ओ., धेंकानाल, जगतसिंहपुर, जाजपुर, जयपुर (के), झारसुगुडा, केंद्रपारा, केंयोंझारगढ़, कोरापुट, नयागढ़, परलाखेमुंडी, फूलबनी, पुरी, रायगाडा, सम्बलपुर, सुन्दरगढ़.

पंजाब मंडल : अमृतसर, भटिन्डा, फरीदकोट, फिरोजपुर, गुरदासपुर, होशियारपुर, जलन्धर सिटी, कपूरथला, लुधियाना, मोगा, पटियाला, रोपड़, संगरूर, **चन्डीगढ़**.

राजस्थान मंडल : जयपुर जी.पी.ओ., जवाहर नगर, शास्त्रीनगर, अजमेर, अलवर, बॉसवाड़ा, बारन, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, चुरू, दौसा, धौलपुर, डुंगरपुर, हनुमानगढ़, हिन्दौन, जैसलमेर, जालोर, झालावाड़, झूंझुनू, जोधपुर, कन्क्रोली, कोटा, नागौर, पाली मारवाड़, सवाईमाधोपुर, शास्त्री मंडल उदयपुर, सीकर, सीरोही, श्रीगंगानगर, टौंक.

तमिलनाडु मंडल : चेन्नई जी.पी.ओ., अन्ना रोड, संत थॉमस माउन्ट, टी. नगर, बोडिनायाकनूर, चेन्गलपट्टु, चिदाम्बरम्, कोयमबटूर, कुड्डालोर, धर्मापुरी, डिंडीगुल, इरोड, कांचीपुरम, कारूर, मदुरै, नागपट्टीनम, नागरकोईल, नामाक्कल, पुडुकोट्टाई, रामनाथपुरम, सालेम, शिवगंगई, ताम्बरम, थान्जावूर, थीरूवन्नामलाई, तिरूचिरापल्ली, तिरूनेलवेली, तिरूवल्लूर, तिरूवायूर, तुराईयूर, तूतीकोरीन, उधागमंडलम्, वेल्लोर, विल्लुपुरम, विरूधुनगर, **पुडुचेरी**.

उत्तर प्रदेश मंडल : लखनऊ, लखनऊ चौक, आगरा, अकबरपुर, अलीगढ़, इलाहाबाद, इलाहाबाद कचहरी, अलमोड़ा, ओरैया, आजमगढ़, बहरैच, बलिया, बलरामपुर, बांदा, बंसी, बाराबंकी, बरेली, बस्ती, बिजनौर, बुदौन, बुलन्दशहर, देहरादून, देवरिया, धामपुर, एटा, इटावा, फैजाबाद, फतेहगढ़, फतेहपुर, फिरोजाबाद, गाजियाबाद, गाजीपुर, गोन्डा, गोपेश्वर, गोरखपुर, हलद्वानी, हमीरपुर, हरदोई, जौनपुर, झांसी, कानपुर, खेरी, ललितपुर, मैनपुरी, मथुरा, मऊ, मेरठ, मिर्जापुर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, नैनीताल, ओराई, पौरी, पडरौना, पीलीभीत, पिथौरागढ़, प्रतापगढ़, राय बरेली, रामपुर, रूड़की, साहारनपुर, शाहजहांपुर, सीतापुर, सुल्तानपुर, टिहरी, उन्नाव, वाराणसी.

पश्चिम बंगाल मंडल : कलकत्ता जी.पी.ओ., अलीपुर, बड़ाबाजार, बेलियाघाट, बेलघरिया, कासीपुर, पार्क स्ट्रीट, टालीगंज, बालूरघाट, बांकुड़ा, बारासत, बहरामपुर, वर्धमान, चिन्सूरा, कूच बिहार, दार्जीलिंग, हावड़ा, जलपाईगुड़ी, कृष्णनगर, मालदा, मिदनापुर, पुरूलिया, सूरी, सिलिगुड़ी, पोर्ट ब्लेयर **(अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह)**, गंगटोक **(सिक्किम)**.

1. सैंट्रल बेस डाकघर (सी.बी.पी.ओ), 56 ए.पी.ओ.
2. सी.बी.पी.ओ. (99 ए.पी.ओ.) द्वारा चुनिंदा फील्ड डाकघर

www.upscportal.com

UPSC PORTAL
Downloaded from: http://www.upscportal.com

परिशिष्ट–4
वस्तुपरक परीक्षणों हेतु उम्मीदवार के लिए विशेष अनुदेश

1. परीक्षा हाल में निम्नलिखित वस्तुएं लाने की अनुमति होगी

क्लिप बोर्ड या हार्ड बोर्ड (जिस पर कुछ न लिखा हो) उत्तर पत्रक पर प्रत्युत्तर को अंकित करने के लिए अच्छी किस्म की एच.बी. पेंसिल, रबड़, पेंसिल शार्पनर तथा नीली या काली स्याही वाला पेन. उत्तर पत्रक और कच्चे कार्य हेतु कार्य पत्रक निरीक्षक द्वारा दिए जाएंगे.

2. परीक्षा हाल में निम्नलिखित वस्तुएं लाने की अनुमति नहीं होगी

ऊपर दर्शाई गई वस्तुओं के अलावा अन्य कोई वस्तु जैसे पुस्तकें, नोट्स, खुले कागज, इलैक्ट्रानिक या अन्य किसी प्रकार के कैलकुलेटर, गणितीय तथा आरेक्ष उपकरण, लघुगणक सारणी, मानचित्रों के स्टेंसिल, स्लाइड रूल, पहले सत्र (सत्रों) से संबंधित परीक्षण पुस्तिका और कच्चे कार्यपत्रक, आदि परीक्षा हाल में न लाएं.

मोबाइल फोन, पेजर एवं अन्य संचार यंत्र उस परिसर में जहां परीक्षा आयोजित की जा रही है लाना मना है. इन निर्देशों का उल्लंघन करने पर अनुशासनिक कार्यवाही के साथ–साथ भविष्य में आयोजित की जाने वाली परीक्षाओं से प्रतिबंधित किया जा सकता है.

उम्मीदवारों को उनके स्वयं के हित में सलाह दी जाती है कि वे मोबाइल फोन सहित कोई भी वर्जित वस्तु परीक्षा परिसर में न लाएं क्योंकि इनकी अभिरक्षा के लिए व्यवस्था की गारंटी नहीं ली जा सकती.

3. गलत उत्तरों के लिए दंड

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-पत्रों में, ऐसे कुछेक प्रश्नों को छोड़कर जिनमें श्रृणात्मक अंकन (नेगेटिव मार्किंग) ऐसे प्रश्नों के लिए 'सर्वाधिक उपयुक्त' तथा 'इतना उपयुक्त नहीं' उत्तर को दिए जाने वाले विभिन्न अंकों के रूप में अन्तर्निहित होगी, उम्मीदवार द्वारा दिए गए गलत उत्तरों के लिए दंड (श्रृणात्मक अंकन) दिया जाएगा.

(i) प्रत्येक प्रश्न के लिए चार वै
उत्तर के लिए प्रश्न हेतु नियत किए गए अंकों का **1/3 (0.33)** दंड के रूप में काटा जाएगा.

(ii) यदि कोई उम्मीदवार एक से अधिक उत्तर देता है **गलत उत्तर** माना जाएगा, यद्यपि दिए गए उत्तरों में से एक उत्तर सही होता है
दंड दिया जाएगा.

(iii) यदि उम्मीदवार द्वारा कोई प्रश्न हल नहीं किया जाता है
तो उस प्रश्न के लिए **कोई दंड नहीं** दिया जाएगा.

4. अनुचित तरीकों की सख्ती से मनाही

कोई भी उम्मीदवार किसी भी अन्य उम्मीदवार के पेपरों से न तो नकल करेगा न ही अपने पेपरों से नकल करवाएगा, न ही किसी अन्य तरह की अनियमित सहायता देगा, न ही सहायता देने का प्रयास करेगा, न ही सहायता प्राप्त करेगा और न ही प्राप्त करने का प्रयास करेगा.

5. परीक्षा भवन में आचरण

कोई भी परीक्षार्थी किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार न करें तथा परीक्षा हाल में अव्यवस्था न फैलाएं तथा परीक्षा के संचालन हेतु आयोग द्वारा तैनात स्टाफ को परेशान न करें. ऐसे किसी भी दुराचरण के लिए कठोर दंड दिया जाएगा.

6. उत्तर पत्रक विवरण

(i) उत्तर पत्रक के ऊपरी सिरे के निर्धारित स्थान पर आप अपना केन्द्र और विषय, परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला (कोष्ठकों में) विषय कोड और अनुक्रमांक स्याही अथवा बाल प्वाइंट पैन से लिखें. उत्तर पत्रक में इस प्रयोजन के लिए निर्धारित वृतों में अपनी परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला (ए.बी.सी.डी., यथास्थिति), विषय कोड तथा अनुक्रमांक (पेंसिल से) कूटबद्ध करें. उपर्युक्त विवरण लिखने तथा उपर्युक्त विवरण कूटबद्ध करने के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत अनुबंध में दिए गए हैं. यदि परीक्षण पुस्तिका पर पुस्तिका श्रृंखला मुद्रित न हुई हो अथवा उत्तर पत्रक बिना संख्या के हों तो कृपया निरीक्षक को तुरंत रिपोर्ट करें और परीक्षण पुस्तिका/उत्तर पत्रक को बदल लें.

(ii) अनुक्रमांक लिखते समय उम्मीदवार और निरीक्षक को सभी शुद्धियों और परिवर्तनों पर हस्ताक्षर करने चाहिए और पर्यवेक्षक द्वारा प्रतिहस्ताक्षर किए जाने चाहिए.

(iii) परीक्षा आरंभ होने के तत्काल बाद कृपया जांच कर लें कि आपको जो परीक्षण पुस्तिका दी गई है उसमें कोई पृष्ठ या मद आदि अमुद्रित या फटा हुआ अथवा गायब तो नहीं है. यदि ऐसा है तो उसे उसी श्रृंखला तथा विषय की पूर्ण परीक्षण पुस्तिका से बदल लेना चाहिए.

7. उत्तर पत्रक/परीक्षण पुस्तिका/कच्चे कार्य पत्रक में मांगी गई विशिष्ट मदों की सूचना के अलावा कहीं पर भी अपना नाम या अन्य कुछ नहीं लिखें.

8. उत्तर पत्रकों को न मोड़ें या न विकृत करें अथवा न बर्बाद करें अथवा उसमें न ही कोई अवांछित/असंगत निशान लगाएं. उत्तर पत्रक के पीछे की ओर कुछ भी न लिखें.

9. उत्तर अंकित करने के लिए एच.बी. पेंसिल का प्रयोग करें

चूंकि उत्तर पत्रकों का मूल्यांकन कम्प्यूटरीक त मशीनों द्वारा किया जाएगा, उम्मीदवार उत्तर पत्रकों को इस्तेमाल करने एवं भरने में समुचित सावधानी बरतें । उन्हें वृतों को काला करने के लिए केवल एच. बी. पेंसिल का ही इस्तेमाल करना चाहिए । बॉक्सों में लिखने के लिए, उन्हें नीला या काला पेन इस्तेमाल करना चाहिए । चूंकि उम्मीदवार द्वारा काले किए गए वृतों की प्रविष्टियों को, कम्प्यूटरीकृत मशीनों पर उत्तर पत्रकों का मूल्यांकन करते समय ध्यान में रखा जाएगा, उम्मीदवारों को इन प्रविष्टियों को बहुत सावधानीपूर्वक भरना चाहिए ।

10. उत्तर अंकित करने का तरीका

'वस्तुपरक परीक्षा' में, आप उत्तर नही लिखते है
के लिए कई सुझाए गए उत्तर (जिन्हें इसके बाद प्रत्युत्तर कहा जाएगा) दिए जाते है
के लिए आपको उनमें से एक प्रत्युत्तर चुनना है
प्रश्न पत्र परीक्षण – पुस्तिका के रूप में होगा । पुस्तिका में क्र म संख्या 1,2,3 ..... आदि के क्र म में प्रश्नांश दिए गए होंगे । प्रत्येक प्रश्नांश के नीचे (ए) , (बी), (सी)औ
अंकित होंगे । आपका कार्य सही प्रत्युत्तर को चुनना होगा । यदि आपको एक से अधिक प्रत्युत्तर सही लगें, तो उनमें से आपको जो भी सर्वोत्तम प्रत्युत्तर लगे उसका चुनाव करें ।
किसी भी स्थिति में, प्रत्येक प्रश्नांश के लिए आपको एक ही प्रत्युत्तर का चुनाव करना होगा । यदि आप एक से अधिक प्रत्युत्तर चुनते है
उत्तर पत्रक में क्र म संख्या 1 से 160 छपी है
चिन्ह वाले वृत है
दिए गए प्रत्युत्तरों मे से कौ
पेंसिल से पूरी तरह से काला बनाकर अंकित करना है
स्याही का प्रयोग न करें।
उदाहरण के तौ
अनुसार पेंसिल से पूरी तरह काला कर देना चाहिए :-
उदाहरण (ए) ● (सी) (डी)
गलत अंकित करने पर उसे बदलने के लिए, इसे पूरी तरह मिटाकर, अपनी नई पसन्द के अनुसार पुन: – अकित करें ।

11. उपस्थिति सूची पर हस्ताक्षर

आपको, दिए गए उत्तर पत्रक तथा परीक्षण पुस्तिका की क्र म संख्या तथा परीक्षण पुस्तिका की श्रृंखला उपस्थिति सूची में लिखनी है
में किसी भी परिवर्तन या संशोधन को, उम्मीदवार द्वारा अपने हस्ताक्षर से प्रमाणित किया जाना चाहिए ।

12. कृपया परीक्षण पुस्तिका के आवरण पर दिए गए अनुदेशों को पढ़ लें औ
उम्मीदवार अनियमित अथवा अनुचित व्यवहार करता है
द्वारा उचित समझे जाने वाले दंड का भागी होगा ।

अनुबंध
परीक्षा भवन में वस्तुपरक प्रकार के परीक्षणों के उत्तर पत्रक कै

कृपया इन अनुदेशों का अत्यन्त सावधानीपूर्वक पालन करें । आप यह नोट कर लें कि चूंकि उत्तर-पत्रक का अंकन मशीन द्वारा किया जाएगा, इन अनुदेशों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन आपके प्राप्तांकों को कम कर सकता है

उत्तर पत्रक पर अपना प्रत्युत्तर अंकित करने से पहले आपको इसमें कई तरह के विवरण भरने होंगे ।

उम्मीदवार को उत्तर-पत्रक प्राप्त होते ही यह जांच कर लेनी चाहिए कि इसमें नीचे संख्या दी गई है
संख्या न दी गई हो तो उम्मीदवार को उस पत्रक को किसी संख्या वाले पत्रक के साथ तत्काल बदल लेना चाहिए।
आप उत्तर-पत्रक में देखेंगे कि आपको सबसे ऊपर की पंक्ति में इस प्रकार लिखना होगा ।

केन्द्र	विषय	विषय-कोड		अनु मांक					

मान लें कि यदि आप के प्रश्नपत्र के लिए परीक्षा में दिल्ली केन्द्र पर उपस्थित हो रहे है
081276 है 'ए' है
भरना चाहिए :-
* यह एक उदाहरण मात्र है

केन्द्र	दिल्ली	विषय प्रश्न पत्र-। (ए)	विषय-कोड	0	1	अनु मांक	0	8	1	2	7	6

आप, केन्द्र औ
परीक्षण पुस्तिका की श्रृंखला, पुस्तिका के सबसे ऊपर दाहिनी तरफ के कोने पर वर्ण म ए ,बी ,सी अथवा डी के अनुसार निर्दिष्ट है
आप स्याही से अपना ठीक वही अनु मांक इस प्रयोजनार्थ दिए गए बॉक्स में लिखें जो आपके प्रवेश प्रमाण पत्र में है
आपको अगली कार्रवाई यह करनी है
पुस्तिका श्रृंखला, विषय कोड तथा अनु मांक को इस प्रयोजन के लिए निर्धारित वर्षों में कूटबद्व करने का कार्य एच. बी. पै
परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला को लिखने औ
श्रृंखला की पुष्टि करने के पश्चात् ही करना चाहिए ।
'ए' परीक्षण **पुस्तिका श्रृंखला के प्रश्न पत्र-।** के लिए आपको विषय कोड सं. 01 लिखनी है
लिखें ।

Booklet Series (A)	Subject	0	1
पुस्तिका क्रम (ए)	विषय	0	1
●		●	⓪
Ⓑ		①	●
Ⓒ		②	②
Ⓓ		③	③
		④	④
		⑤	⑤
		⑥	⑥
		⑦	⑦
		⑧	⑧
		⑨	⑨

बस इतना भर करना है कि परीक्षण पुस्तिका श्रृंखला के नीचे दिए गए अंकित वृत्त 'ए' को पूरी तरह से काला कर दें और विषय कोड के नीचे '0' के लिए (पहले उर्ध्वाधर कालम में) और 01 के लिए (दूसरे उर्ध्वाधर कालम में) वृत्तों को पूरी तरह काला कर दें. तब आप अनुक्रमांक 081276 को कूटबद्ध करें. इसे उसी के अनुरूप इस प्रकार करेंगे.

Roll Numbers
अनुक्रमांक

0	8	1	2	7	6
●	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪
①	①	●	①	①	①
②	②	②	●	②	②
③	③	③	③	③	③
④	④	④	④	④	④
⑤	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤
⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	●
⑦	⑦	⑦	⑦	●	⑦
⑧	●	⑧	⑧	⑧	⑧
⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨

महत्वपूर्ण : कृपया यह सुनिश्चित कर लें कि आपने अपना विषय, परीक्षण पुस्तिका क्रम तथा अनुक्रमांक ठीक से कूटबद्ध किया है. यदि आपने कोई गलती कर दी है तो उसे पूरी तरह मिटाकर पुन: ठीक से भरें.

*यह केवल एक उदाहरण है और आपकी परीक्षा से संबंधित नहीं है।

डीएवीपी 55104/14/0058/1011 रो.स.48/1

www.upscportal.com